152 RAHMAT BHARI HIKAYAAT

92 बुज़ुर्गों के मुख़्तसर ह़ालात, फ़रमूदात और मग़फ़िरत के वाक़िआ़त पर मुश्तमिल 111 किताबों से मुरत्तब की गई मुनफ़रिद किताब

152
रह़मत भरी ह़िकायात

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)
SC 1286

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी *किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये* اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ *जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :*

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हि़क्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : *अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।*

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *: सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)*

(تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तबलीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक **दा 'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**152 रहमत भरी हिकायात**" उर्दू ज़बान में पेश की है। मजलिसे तराजिम, बरोडा **(हिन्दी–गुजराती)** ने इस किताब को हिन्द (**INDIA**) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-
(**1**) कम्पोज़िंग (**2**) सेटिंग (**3**) कम्पयूटर तक़ाबुल (**4**) तक़ाबुल बिल किताब (**5**) सिंगल रीडिंग (**6**) कम्पयूटर करेक्शन (**7**) करेक्शन चेकिंग (**8**) फ़ाइनल रीडिंग (**9**) फ़ाइनल करेक्शन (**10**) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुतालआ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** रखी गई है और बतौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (–) और और साकिन (जज़्म वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ–लमा** (عُلَمَاء) में "**–ल**" मफ़्तूह और **रह्म** (رَحْم) में "**ह्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم" और "رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, **e-mail** या **sms**) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئِ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, हिन्दी - गुजराती (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.barod@dawateislami.net

﴾92﴿ बुज़ुर्गों के मुख़्तसर ह़ालात, फ़रमूदात और मग़फ़िरत के वाक़िआ़त पर मुश्तमिल ﴾111﴿ किताबों से मुरत्तब की गई मुनफ़रिद किताब

152 रह़मत भरी ह़िकायात

-: मुरत्तिबीन :-
मदनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی الک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : 152 रह़मत भरी ह़िकायात

मुरत्तिबीन : मदनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : जमादिल अव्वल, सि.1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली -6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : यकुम रबीउ़ल आख़िर 1432 हि. ह़वाला नम्बर : 170

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہ و اصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"152 रह़मत भरी ह़िकायात" (उर्दू)

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

07-03-2011

E - mail : ilmia@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	14	इन्तिक़ाल के बा'द घर में होने वाले	
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	15	वाक़िआ़त बता दिये	37
पहले इसे पढ़ लीजिये !	17	हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	40
﴾1﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते		﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी	41
सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़	26	ह़ालात	41
ह़ालात	26	विसाल	42
फ़रामीन	27	फ़रामीन	43
﴾1﴿ रह़मत भरी हि़कायत	28	﴾4﴿ रह़मत भरी हि़कायत	44
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	29	तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया	44
﴾2﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते		हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	44
सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब	30	﴾5﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना	
ह़ालात	30	उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान	45
मदनी फूल	31	ह़ालात	45
फ़रामीन	33	फ़रामीन	46
मदनी फूल	34	﴾5﴿ रह़मत भरी हि़कायत	47
﴾2﴿ रह़मत भरी हि़कायत	35	सब्ज़ लिबास	47
मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती	35	﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्माईल मुर्रह	47
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	35	ह़ालात	47
﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन		﴾6﴿ रह़मत भरी हि़कायत	48
जष्षामा बिन क़ैस लैषी	36	नूरानी पेशानी	48
ह़ालात	36	﴾7﴿ रह़मत भरी हि़कायत	48
विसाल	37	﴾7﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते	
﴾3﴿ रह़मत भरी हि़कायत	37	सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़	49

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा
ह़ालात	49	हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	62
फ़रामीन	50	﴾13﴿ रह़मत भरी हि़कायत	63
﴾8﴿ रह़मत भरी हि़कायत	50	आस्मानों के दरवाज़े खुल गए	63
जन्नते अ़दन	50	﴾14﴿ रह़मत भरी हि़कायत	64
﴾9﴿ रह़मत भरी हि़कायत	51	जन्नत के बादशाह	64
इस्तिग़फ़ार को अफ़्ज़ल अ़मल पाया	51	﴾11﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رضی اللہ عنہ	65
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	51	ह़ालात	65
﴾8﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़त़िय्या رضی اللہ عنہ	52	फ़रामीन	66
ह़ालात	52	﴾15﴿ रह़मत भरी हि़कायत	67
﴾10﴿ रह़मत भरी हि़कायत	53	थोड़ी देर की घबराहट	67
तक्बीर के सबब बख़्शिश	53	हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	67
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	53	﴾12﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन कुहैल رضی اللہ عنہ	69
﴾9﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رضی اللہ عنہ	55	ह़ालात	69
ह़ालात	55	﴾16﴿ रह़मत भरी हि़कायत	69
फ़रामीन	55	मेहरबान रब عَزَّوَجَلَّ	69
﴾11﴿ रह़मत भरी हि़कायत	56	हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	70
70 दरजे बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़	56	﴾13﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना कुमैत बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ	71
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	57	ह़ालात	71
﴾10﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رضی اللہ عنہ	58	﴾17﴿ रह़मत भरी हि़कायत	72
ह़ालात	58	आले रसूल की मदह़ बख़्शिश का ज़रीआ़ बन गई	72
फ़रामीन	59	हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	73
ह़सन बसरी को ख़ुश ख़बरी दे दो	60	﴾14﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رضی اللہ عنہ	74
﴾12﴿ रह़मत भरी हि़कायत	61	ह़ालात	74
फ़िक्रे आख़िरत और ख़ौफ़े ख़ुदा	61	फ़रामीन	75

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
﴾18﴿ रहमत भरी हिकायत	75	हालात	86
नेकियों की मजालिस की मिस्ल कोई मजलिस नहीं देखी	75	फ़रामीन	88
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	76	﴾23﴿ रहमत भरी हिकायत	88
जन्नतियों में हो गए	77	मुझे बख़्श दिया गया	88
﴾15﴿ सय्यिदुना मन्सूर बिन मुअ़्तमिर رحمۃ اللہ علیہ	77	﴾19﴿ सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رحمۃ اللہ علیہ	89
हालात	77	हालात	89
दरख़्त का तना	77	फ़रामीन	89
﴾19﴿ रहमत भरी हिकायत	78	﴾24﴿ रहमत भरी हिकायत	90
﴾16﴿ हज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या	79	अहले आस्मान की ख़ुशी	90
हालात	79	﴾20﴿ हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رحمۃ اللہ علیہ	91
सारी रात इबादत	79	हालात	91
फ़रामीन	80	फ़रामीन	92
मोहलत बहुत थोड़ी है	80	﴾25﴿ रहमत भरी हिकायत	93
﴾20﴿ रहमत भरी हिकायत	81	उ़-लमा का दरजा	93
सब्ज़ रंग की उ़म्दा पोशाक	81	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	93
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	83	﴾21﴿ सय्यिदुना इमाम वासिती رحمۃ اللہ علیہ	94
﴾21﴿ रहमत भरी हिकायत	83	हालात	94
नूरानी तबाक़	83	﴾26﴿ रहमत भरी हिकायत	95
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	84	ख़िदमते हदीष के सबब मग़फ़िरत हो गई	95
﴾17﴿ सय्यिदुना अय्यूब बिन मिस्कीन رحمۃ اللہ علیہ	85	﴾22﴿ हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رحمۃ اللہ علیہ	96
हालात	85	हालात	96
﴾22﴿ रहमत भरी हिकायत	85	फ़रामीन	97
नमाज़ रोज़े की बरकत	85	﴾27﴿ रहमत भरी हिकायत	98
﴾18﴿ हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ	86	रोज़ाना दो मरतबा दीदारे इलाही	98

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
﴾28﴿ रहमत भरी हिकायत	98	फ़रामीन	106
तलबे हदीष के सबब बख़्शिश हो गई	98	﴾36﴿ रहमत भरी हिकायत	107
﴾29﴿ रहमत भरी हिकायत	99	जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अता फ़रमाई	107
सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब	99	﴾26﴿ सय्यिदुना हसन बिन सालेह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه	107
﴾30﴿ रहमत भरी हिकायत	99	हालात	107
तक़्वा के सबब नजात	99	फ़रामीन	108
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	100	﴾37﴿ रहमत भरी हिकायत	109
﴾31﴿ रहमत भरी हिकायत	101	सब से बेहतर अमल	109
दूसरा क़दम जन्नत में	101	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	110
﴾32﴿ रहमत भरी हिकायत	101	﴾38﴿ रहमत भरी हिकायत	110
रात में इबादत के सबब बख़्शिश हो गई	101	कषरत से गिर्या व ज़ारी के सबब मग़फ़िरत	110
﴾23﴿ सय्यिदुना हम्माम बिन यह्या बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه	102	﴾27﴿ सय्यिदुना ख़लील बिन अहमद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه	112
हालात	102	हालात	112
﴾33﴿ रहमत भरी हिकायत	103	फ़रामीन	113
एहसान जताने वाला जहन्नम में	103	﴾39﴿ रहमत भरी हिकायत	113
﴾24﴿ सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	103	अफ़्ज़ल अमल	113
हालात	103	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	114
फ़रामीन	104	﴾28﴿ सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه	115
﴾34﴿ रहमत भरी हिकायत	104	हालात	115
आख़िरत की भलाई	104	फ़रामीन	116
﴾35﴿ रहमत भरी हिकायत	105	﴾40﴿ रहमत भरी हिकायत	116
इस्तिक़बाल के लिये जन्नत सजाई गई	105	जनाज़ा देख कर दुआ पढ़ने की बरकत	116
﴾25﴿ सय्यिदुना हम्माद बिन सलमह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه	106	﴾29﴿ सय्यिदुना इमाम सीबवैह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه	117
हालात	106	हालात	117

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
﴾41﴿ रहमत भरी हिकायत	117	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	126
इमामुन्नहूव की बख़्शिश का सबब	117	﴾33﴿ सय्यिदुना ख़ालिद बिन हारिष رحمۃ اللہ علیہ	128
﴾30﴿ सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर رحمۃ اللہ علیہ	118	हालात	128
हालात	118	﴾48﴿ रहमत भरी हिकायत	128
मदनी फूल	118	आख़िरत का मुआमला सख़्त, मगर बख़्शिश हो गई	128
फ़रामीन	119	﴾34﴿ सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رحمۃ اللہ علیہ	129
﴾42﴿ रहमत भरी हिकायत	120	हालात	129
मुआमले को आसान पाया	120	मदनी फूल	131
﴾31﴿ सय्यिदुना इब्ने मुबारक رحمۃ اللہ علیہ	121	फ़रामीन	131
हालात	121	﴾49﴿ रहमत भरी हिकायत	132
फ़रामीन	121	मुसीबत पर सब्र	132
﴾43﴿ रहमत भरी हिकायत	122	﴾35﴿ सय्यिदुना इमाम मुहम्मद رحمۃ اللہ علیہ	133
जंग में शिर्कत के सबब मग़फ़िरत	122	हालात	133
﴾44﴿ रहमत भरी हिकायत	122	फ़रामीन	134
बेहतरीन रफ़ीक़	122	﴾50﴿ रहमत भरी हिकायत	135
﴾45﴿ रहमत भरी हिकायत	123	मेरी रूह कब निकली ?	135
अज़ीम मग़फ़िरत	123	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	135
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	123	﴾51﴿ रहमत भरी हिकायत	136
﴾46﴿ रहमत भरी हिकायत	125	इमामे आ'ज़म आ'ला इल्लिय्यीन में	136
हदीष की ख़ातिर सफ़र	125	﴾36﴿ सय्यिदुना यहया बरमकी رحمۃ اللہ علیہ	136
﴾32﴿ सय्यिदुना अबू मुआविया رحمۃ اللہ علیہ	125	हालात	136
हालात	125	फ़रामीन	137
﴾47﴿ रहमत भरी हिकायत	126	﴾52﴿ रहमत भरी हिकायत	138
नवाफ़िल की कषरत जन्नत में ले गई	126	आलिमे दीन की ख़िदमत का सिला	138

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	138	﴾56﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	150
﴾37﴿ सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यज़ीद वासिती رحمۃ اللہ علیہ	139	अच्छे अश्आ़र बख़्शिश का ज़रीआ़ बन गए	150
ह़ालात	139	﴾57﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	151
﴾53﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	140	बख़्शिश का सबब	151
दुआ़ए वली की तासीर	140	﴾41﴿ सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी رحمۃ اللہ علیہ	152
ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	140	ह़ालात	152
﴾38﴿ सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम رحمۃ اللہ علیہ	142	फ़रामीन	152
ह़ालात	142	मह़ब्बते इलाही में मदहोश	153
फ़रामीन	142	﴾58﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	154
﴾54﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	143	फ़ुक़रा से मह़ब्बत	154
इस्लामी सरह़द पर पहरादारी	143	﴾42﴿ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رحمۃ اللہ علیہ	155
﴾39﴿ सय्यिदुना अबू मुह़म्मद رحمۃ اللہ علیہ	143	ह़ालात	155
ह़ालात	143	फ़रामीन	156
बह़्रे इ़ल्म	144	﴾59﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	156
ज़िन्दगी की तक़्सीम	144	सोने की कुरसी	156
ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब ग़शी त़ारी हो गई	145	﴾60﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	156
मदनी फूल	145	दुरूदे पाक के सबब बख़्शिश	156
फ़रामीन	146	﴾43﴿ सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رحمۃ اللہ علیہ	157
﴾55﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	147	ह़ालात	157
सब से अफ़्ज़ल अ़मल	147	फ़रामीन	158
ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	147	﴾61﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	159
﴾40﴿ शाइ़र अबू नुवास ह़सन बिन हानी	149	क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़	159
ह़ालात	149	ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	159
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़फ़्वो करम बहुत बड़ा है	149	﴾62﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	160

उनवान	सफ़ह़ा	उनवान	सफ़ह़ा
ज़िक्र की मह़ाफ़िल इख़्तियार करने की फ़ज़ीलत	160	ह़ालात	173
﴾63﴿ रह़मत भरी हिकायत	161	फ़रामीन	174
दुगना अज्र अ़ता फ़रमाया	161	﴾69﴿ रह़मत भरी हिकायत	174
﴾44﴿ सय्यिदुना अबू सुलैमान رحمۃ اللہ علیہ	163	3 बातों का सुवाल	174
ह़ालात	163	﴾48﴿ सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी رحمۃ اللہ علیہ	175
फ़रामीन	163	ह़ालात	175
दिल में मख़्लूक़ का ख़याल	166	फ़रामीन	176
﴾64﴿ रह़मत भरी हिकायत	166	﴾70﴿ रह़मत भरी हिकायत	176
मग़फ़िरत हो गई	166	लोबिया की ख़्वाहिश	176
﴾45﴿ सय्यिदतुना ज़ुबैदा رضی اللہ تعالٰی عنھا	167	﴾71﴿ रह़मत भरी हिकायत	176
ह़ालात	167	जनाज़े के साथ चलने वालों की मग़फ़िरत	176
﴾65﴿ रह़मत भरी हिकायत	168	﴾72﴿ रह़मत भरी हिकायत	177
अच्छी निय्यत के सबब बख़्शिश हो गई	168	कभी ह़क़ अदा न कर पाता	177
हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	168	﴾73﴿ रह़मत भरी हिकायत	177
﴾66﴿ रह़मत भरी हिकायत	169	मह़बूबे इलाही	177
एह़तिरामे अज़ान के सबब बख़्शिश हो गई	169	﴾74﴿ रह़मत भरी हिकायत	178
﴾67﴿ रह़मत भरी हिकायत	170	जन्नती ने'मतों के दस्तर ख़्वान	178
4 दुआइय्या कलिमात	170	﴾49﴿ सय्यिदुना अबू नस्र तम्मार رحمۃ اللہ علیہ	179
﴾46﴿ सय्यिदुना फ़त्ह़ मौसिली رحمۃ اللہ علیہ	171	ह़ालात	179
ह़ालात	171	﴾75﴿ रह़मत भरी हिकायत	180
फ़रामीन	171	सब्र और ग़रीबी का सिला	180
﴾68﴿ रह़मत भरी हिकायत	172	﴾50﴿ सय्यिदुना अबू अ़ली رحمۃ اللہ علیہ	181
ख़ून के आंसू	172	ह़ालात	181
﴾47﴿ सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رحمۃ اللہ علیہ	173	﴾76﴿ रह़मत भरी हिकायत	182

उनवान	सफ़्ह़ा	उनवान	सफ़्ह़ा
जनाज़े में शिर्कत करने वालों की बख़्शिश	182	ह़ालात	192
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	182	﴾81﴿ रह़मत भरी हि़कायत	192
﴾51﴿ सय्यिदुना यह़्या बिन मईन رحمۃ اللہ علیہ	183	पैरवी करने वालों की मग़्फ़िरत	192
ह़ालात	183	﴾56﴿ सय्यिदुना यह़्या बिन अकषम رحمۃ اللہ علیہ	193
विसाल	184	ह़ालात	193
फ़रामीन	184	फ़रामीन	194
﴾77﴿ रह़मत भरी हि़कायत	185	﴾82﴿ रह़मत भरी हि़कायत	195
300 हूरों के साथ निकाह़	185	वाह ! येह तो ख़ुशी की बात है !	195
﴾52﴿ सय्यिदुना सुलैमान बसरी رحمۃ اللہ علیہ	185	﴾57﴿ सय्यिदुना ह़ारिष बिन मिस्कीन رحمۃ اللہ علیہ	196
ह़ालात	185	ह़ालात	196
﴾78﴿ रह़मत भरी हि़कायत	186	﴾83﴿ रह़मत भरी हि़कायत	197
किताबों की ता'ज़ीम के सबब बख़्शिश हो गई	186	सिफ़ारिश क़बूल कर ली गई	197
हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	186	﴾58﴿ सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رحمۃ اللہ علیہ	197
﴾53﴿ सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رحمۃ اللہ علیہ	187	ह़ालात	197
ह़ालात	187	फ़रामीन	199
फ़रमान	189	﴾84﴿ रह़मत भरी हि़कायत	199
मदनी फूल	189	बारगाहे मुस्त़फ़ा में इमाम बुख़ारी का इन्तिज़ार	199
﴾79﴿ रह़मत भरी हि़कायत	190	﴾59﴿ सय्यिदुना इमाम सरी सक़त़ी رحمۃ اللہ علیہ	200
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम क़दीम है	190	ह़ालात	200
﴾54﴿ सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुसफ़्फ़ा رحمۃ اللہ علیہ	191	फ़रामीन	201
ह़ालात	191	﴾85﴿ रह़मत भरी हि़कायत	201
﴾80﴿ रह़मत भरी हि़कायत	191	ह़ाशिये में नाम लिखा था	201
साहि़बे सुन्नत	191	﴾60﴿ सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رحمۃ اللہ علیہ	202
﴾55﴿ सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ख़िदाश رحمۃ اللہ علیہ	192	ह़ालात	202

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
इल्म का ख़ज़ाना	203	फ़रामीन	214
उस्ताज़ का अदब	203	﴾90﴿ रहमत भरी हिकायत	214
विसाल	204	सन्जीदगी की बरकत	214
﴾86﴿ रहमत भरी हिकायत	204	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	214
जन्नत मुबाह फ़रमा दी	204	﴾64﴿ सय्यिदुना ख़ैरुन्नस्साज رحمۃ اللہ علیہ	215
﴾61﴿ सय्यिदुना इस्माईल बिन बुलबुल رحمۃ اللہ علیہ	205	हालात	215
हालात	205	विसाल से पहले नमाज़ पढ़ना	216
इन्तिक़ाले पुर मलाल	206	﴾91﴿ रहमत भरी हिकायत	217
﴾87﴿ रहमत भरी हिकायत	206	मैली दुन्या से आराम पा चुका हूं	217
तकलीफ़ बरदाश्त करने के सबब मग़फ़िरत	206	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	217
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	206	﴾65﴿ सय्यिदुना इमाम महामिली رحمۃ اللہ علیہ	218
﴾62﴿ सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رحمۃ اللہ علیہ	208	हालात	218
हालात	208	विसाल	219
सिर्फ़ हक़ बात ही कहता हूं	209	﴾92﴿ रहमत भरी हिकायत	219
सच्चाई क्या है ?	209	अहले बग़दाद की बलाओं से हिफ़ाज़त	219
इल्हामी कलाम	210	﴾66﴿ सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رحمۃ اللہ علیہ	220
फ़रामीन	210	हालात	220
﴾88﴿ रहमत भरी हिकायत	211	फ़रामीन	220
सुब्ह की तस्बीहात काम आ गईं	211	﴾93﴿ रहमत भरी हिकायत	221
﴾89﴿ रहमत भरी हिकायत	211	बिल्ली पर रह्म के सबब मग़फ़िरत	221
सहर के वक़्त की रक्अतें काम आ गईं	211	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	222
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	212	﴾94﴿ रहमत भरी हिकायत	224
﴾63﴿ सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी رحمۃ اللہ علیہ	213	सब से बड़ा सआदत मन्द	224
हालात	213	﴾95﴿ रहमत भरी हिकायत	224

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
सब से बड़ा ख़सारा	224	हालात	234
﴾96﴿ रहमत भरी हिकायत	225	﴾102﴿ रहमत भरी हिकायत	235
निहायत ही सख़्ती से हिसाब	225	मुझे बख़्श दिया गया	235
﴾67﴿ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद رحمۃ اللہ علیہ	225	﴾73﴿ सय्यिदुना सह्ल सो'लूकी رحمۃ اللہ علیہ	236
हालात	225	हालात	236
﴾97﴿ रहमत भरी हिकायत	226	﴾103﴿ रहमत भरी हिकायत	236
ख़ूब सूरत बुज़ुर्ग	226	शरई मसाइल बताने की वजह से बख़्शिश	236
﴾68﴿ सय्यिदुना हाकिम कबीर رحمۃ اللہ علیہ	228	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	237
हालात	228	﴾74﴿ सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ رحمۃ اللہ علیہ	238
﴾98﴿ रहमत भरी हिकायत	228	हालात	238
नजात पाने वाला फ़िर्क़ा	228	फ़रामीन	238
﴾69﴿ सय्यिदुना अहमद बिन हुसैन رحمۃ اللہ علیہ	229	﴾104﴿ रहमत भरी हिकायत	239
﴾99﴿ रहमत भरी हिकायत	229	मग़फ़िरत का मुआमला बड़ी बात नहीं	239
﴾70﴿ सय्यिदुना अहमद बिन मन्सूर رحمۃ اللہ علیہ	230	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	239
हालात	230	﴾75﴿ सय्यिदुना इमाम हाकिम رحمۃ اللہ علیہ	241
﴾100﴿ रहमत भरी हिकायत	230	हालात	241
दुरूदे पाक की वजह से बख़्शिश हो गई	230	फ़रमान	242
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	231	विसाल	242
﴾71﴿ सय्यिदुना इमाम दारे क़ुत़्नी رحمۃ اللہ علیہ	232	﴾105﴿ रहमत भरी हिकायत	243
हालात	232	हदीष लिखने में नजात है	243
विसाल	233	﴾76﴿ सय्यिदुना हिबतुल्लाह رحمۃ اللہ علیہ	243
﴾101﴿ रहमत भरी हिकायत	234	हालात	243
जन्नत में इमाम कह कर बुलाया जाता है	234	﴾106﴿ रहमत भरी हिकायत	244
﴾72﴿ सय्यिदुना इब्ने अबी ज़ैद رحمۃ اللہ علیہ	234	सुन्नत पर अ़मल की बरकत	244

उनवान	सफ़ह़ा	उनवान	सफ़ह़ा
﴾77﴿ सय्यिदुना ख़त़ीब बग़दादी शाफ़ेई رحمۃ اللہ علیہ	245	﴾113﴿ रह़मत भरी हि़कायत	255
ह़ालात	245	मख्खी पर रह़्म की बरकत	255
﴾107﴿ रह़मत भरी हि़कायत	246	﴾82﴿ सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ رحمۃ اللہ علیہ	256
सफ़ेद इमामा और सफ़ेद लिबास	246	ह़ालात	256
﴾108﴿ रह़मत भरी हि़कायत	247	फ़रामीन	257
चैन के बाग़ात में	247	﴾114﴿ रह़मत भरी हि़कायत	257
﴾109﴿ रह़मत भरी हि़कायत	247	सोने का तख़्त	257
अल्लाह عزوجل ने मुझे बख़्श दिया	247	﴾83﴿ सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़नी رحمۃ اللہ علیہ	258
﴾78﴿ सय्यिदुना अबुल क़ासिम क़ुशैरी رحمۃ اللہ علیہ	248	ह़ालात	258
ह़ालात	248	फ़रामीन	259
फ़रामीन	249	﴾115﴿ रह़मत भरी हि़कायत	259
﴾110﴿ रह़मत भरी हि़कायत	250	अ़र्श के नीचे कुरसी	259
कामिल राह़त	250	﴾84﴿ सय्यिदुना शैख़ इमादुद्दीन رحمۃ اللہ علیہ	260
﴾79﴿ सय्यिदुना अह़मद बिन मुअज़्ज़िन رحمۃ اللہ علیہ	250	ह़ालात	260
ह़ालात	250	﴾116﴿ रह़मत भरी हि़कायत	261
﴾111﴿ रह़मत भरी हि़कायत	251	बा'दे विसाल सब्ज़ इमामा	261
कषरते दुरूद ने हलाकत से बचा लिया	251	﴾85﴿ सय्यिदुना बहराम शाह رحمۃ اللہ علیہ	262
﴾80﴿ सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'द ज़न्जानी رحمۃ اللہ علیہ	251	ह़ालात	262
ह़ालात	251	﴾117﴿ रह़मत भरी हि़कायत	262
﴾112﴿ रह़मत भरी हि़कायत	252	हि़फ़ाज़ते ईमान के लिये कुढ़न	262
मुह़द्दिषीन की हर मजलिस के इवज़ जन्नत में घर	252	हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	263
﴾81﴿ सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ	253	﴾86﴿ सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अह़मद رحمۃ اللہ علیہ	264
ह़ालात	253	ह़ालात	264
फ़रामीन	254	﴾118﴿ रह़मत भरी हि़कायत	265

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
आ़लिमे बा अ़मल के तुफ़ैल बख़्शिश	265	आ'ला ह़ज़रत رضی اللہ عنہ पर करमे मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ وسلم	277
﴾87﴿ सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार رضی اللہ عنہ	265	﴾91﴿ ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्त़ारी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	278
ह़ालात	265	ह़ालात	278
फ़रामीन	266	﴾124﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	279
﴾119﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	267	सरकार صلی اللہ علیہ وسلم के दरबार में इन्तिज़ार	279
शुरकाए इजतिमाअ़ की बख़्शिश हो गई	267	﴾92﴿ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	280
ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	267	ह़ालात	280
﴾120﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	268	फ़रामीन	282
﴾88﴿ सय्यिदुना उ़त्बा बिन अबान رضی اللہ عنہ	269	﴾125﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	283
ह़ालात	269	जनाज़ा सुन्हरी जालियों के सामने	283
मदनी फूल	269	﴾126﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	283
फ़रामीन	270	फ़िरिश्तों के झुरमट में	283
﴾121﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	271	﴾......26 रह़मत भरी ह़िकायात.....﴿	284
दुआ़ की बरकत से जन्नत में दाख़िला	271	﴾127﴿ सूई न लौटाने का नतीजा	284
﴾89﴿ सय्यिदुना ई़सा बिन ज़ाज़ान رضی اللہ عنہ	272	﴾128﴿ हर अच्छे अ़मल पर षवाब दिया जाएगा	284
ह़ालात	272	﴾129﴿ गन्दुम का दाना तोड़ने की सज़ा	285
शैत़ान आंखों में रहेगा	272	﴾130﴿ बा आवाज़े बुलन्द दुरूद शरीफ़ की बरकत	285
﴾122﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	273	﴾131﴿ एक मुठ्ठी मिट्टी	286
रोज़ों ने बचा लिया	273	ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	286
ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	274	﴾132﴿ करीम सिर्फ़ करम करता है	287
﴾90﴿ आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	275	﴾133﴿ सिद्दीक़ व उ़मर का वसीला काम आ गया	288
ह़ालात	275	ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स	288
विसाल	276	सिद्दीक़ व उ़मर के गुस्ताख़ का अन्जाम	289
﴾123﴿ रह़मत भरी ह़िकायत	277	﴾134﴿ क़लमे क़ुदरत की तह़रीर	290

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
﴾135﴿ फ़िरिश्तों ने फ़ख़्र किया	292	﴾145﴿ बद मज़्हबों से बचो	305
﴾136﴿ इलाही ! उस के हाथों को भी बख़्श दे	292	﴾146﴿ साहिबे क़ब्र से बात चीत	305
﴾137﴿ नूर चमक रहा है	293	﴾147﴿ मरा हुवा कुत्ता होने की तमन्ना पर इन्आम	306
﴾138﴿ नेक शख़्स के दुरूदे पाक पढ़ने का फ़ाइदा	294	﴾148﴿ आतश परस्त पर रह़मत	307
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	296	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	308
﴾139﴿ जनाज़ा पढ़ने से इजतिनाब	297	﴾149﴿ एक तिन्के का वबाल	308
﴾140﴿ रोटी, चावल और मछली	298	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	309
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	298	﴾150﴿ रमज़ान का दीवाना	309
﴾141﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत	299	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	310
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	299	﴾151﴿ अम्रद को देखने का वबाल	311
﴾142﴿ वोह कुछ अ़ता फ़रमाया जिस की उम्मीद न थी	301	हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	311
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	301	﴾152﴿ काश ! ज़मानए नबवी में होता !	312
﴾143﴿ जन्नत में भी ग़मगीन	302	माख़ज़ो मराजेअ़	313
हिकायत से हासिल होने वाला दर्स	303	अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का तआ़रूफ़	317
﴾144﴿ सफ़ेद रोटियां	303	❁❁❁❁❁❁	

ख़ताकारों में से बेहतर

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सारे इन्सान ख़ताकार हैं और ख़ताकारों में से बेहतर वोह हैं जो तौबा कर लेते हैं।"

(سنن ابن ماجه،كتاب الزهد،باب ذكرالتوبه،الحديث:۴۲۵۱،ج۴،ص۴۹۱)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"रह़मत भरी हि़कायत" के 12 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "12 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :- نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

या'नी : मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲،ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ *बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।*

﴾2﴿ *जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।*

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वुस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾7﴿ जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾8﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾9﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾10﴿ इस ह़दीषे पाक "تَھَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص ۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा। ﴾11﴿ अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश करूंगा। ﴾12﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। (اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى الله تعالٰى عليه وآله وسلَّم)

रमज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स तकब्बुर, ख़यानत और दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (سنن الترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث: ١٥٧٨، ج٣، ص٢٠٨)

पहले इसे पढ़ लीजिये !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक दिन इन्सान को मरना और अपनी करनी का फल भुगतना है। अगर ज़िन्दगी में नेक आ'माल किये होंगे तो आख़िरत में इस की जज़ा पाएगा और अगर बुरे आ'माल किये होंगे तो आख़िरत में इस की सज़ा पाएगा। जब इन्सान की रूह़ क़ब्ज़ होती है तो रूह़ को जिस्म के तसर्रुफ़ से रोक दिया जाता है। येही वजह है कि मरने के बा'द अजसाम ह़रकत नहीं करते बल्कि वोह ख़ुश्क लकड़ी की त़रह़ हो जाते हैं और मौत के बा'द अ़क़्ल, ईमान और मा'रिफ़त रूह़ के साथ जाते हैं। अलबत्ता मौत के बा'द रूह़ का अपने जिस्म से तअ़ल्लुक़ बाक़ी रहता है और नींद भी एक क़िस्म की मौत है लिहाज़ा जब इन्सान सो जाता है तो उस की रूह़ आ़लमे मलकूत में चली जाती है और मुर्दा इन्सान की रुह़ से मुलाक़ात करती है। ज़िन्दा और मुर्दा की रूह़ों का आपस में मुलाक़ात करना षाबित है और येह बात भी षाबित है कि मरने के बा'द ज़िन्दा लोग किसी को ख़्वाब में देखते हैं और उस के ह़ाल के बारे में पूछते हैं।

चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾

(پ۲۴، الزمر: ۴۲)

__तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :__ अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है और दूसरी एक मीआ़दे मुक़र्रर तक छोड़ देता है बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं सोचने वालों के लिये।

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللّٰہ تعالٰی عنہما फ़रमाते हैं : "मुझे मा'लूम हुवा है कि ज़िन्दा और मुर्दा लोगों की रूहें ख़्वाब में एक दूसरे से मुलाक़ात करती और सुवालात करती हैं। पस मुर्दों की अरवाह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोक लेता है और ज़िन्दों की अरवाह़ को उन के अजसाम में लौटा देता है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "जब बन्दा मर जाता है तो उस की रूह़ को एक महीने तक उस के घर के इर्द गिर्द और एक साल तक उस की क़ब्र के इर्द गिर्द घुमाया जाता है। फिर इसे उस मक़ाम पर पहुंचा दिया जाता है जहां ज़िन्दों और मुर्दों की अरवाह़ बाहम मुलाक़ात करती हैं।"(2)

मरने वालों से मुलाक़ात पर एक दलील येह भी है कि ज़िन्दा शख़्स मुर्दे को ख़्वाब में देखता है और वोह मुर्दा उस ज़िन्दा को उमूरे ग़ैबिय्या की ख़बर देता है और वोह इसी त़रह़ होती है जैसी कि उस ने ख़बर दी है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی इरशाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने इरशाद फ़रमाया कि "मुर्दा जो बात बताए वोह ह़क़ होती है क्यूंकि वोह दारे ह़क़ (या'नी बरज़ख़) में होता है।"(3)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ह़दीषे मुबारका "مَنْ زَارَ قَبْرَ اَبَوَیْہِ اَوْ اَحَدَھُمَا فِیْ کُلِّ جُمُعَۃٍ غُفِرَلَہٗ وَکُتِبَ بَرًّا" या'नी : जो अपने मां बाप या इन में से एक की क़ब्र की हर जुमुआ में ज़ियारत

---

(1) المعجم الاوسط، الحدیث:۱۲۲، ج۱، ص۴۸۔

(2) فردوس الاخبار، الحدیث:۱۹۹۰، ج۲، ص۳۶۴۔

(3) شرح الصدور، باب تلاقی الارواح الموتی......الخ، ص۲۶۹۔

किया करे तो उस की बख़्शिश की जाएगी और वोह भलाई करने में लिखा जाएगा।)''[1] नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : ''येह ह़दीष नस्स है इस बात में कि मुर्दा ज़ाइर पर मुत्तलअ़ होता (या'नी क़ब्र पर आने वाले को पहचानता) है वरना उसे ज़ाइर कहना सह़ीह़ न होता कि जिस की मुलाक़ात को जाए जब उसे ख़बर ही न हो तो येह नहीं कह सकते कि उस से मुलाक़ात की। तमाम आ़लम इस लफ़्ज़ से येही मा'ना समझता है।'' कुछ आगे चल कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی की इबारत नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जब ज़ाइर क़ब्र के पास आता है तो उसे क़ब्र से और ऐसे ही साहि़बे क़ब्र को उस से एक ख़ास तअ़ल्लुक़ ह़ासिल होता है और इन दोनों तअ़ल्लुक़ात की वजह से दोनों के दरमियान मा'नवी मुलाक़ात और एक ख़ास रबत़ (तअ़ल्लुक़) ह़ासिल हो जाता है, अब अगर साहि़बे क़ब्र ज़ियादा क़ुव्वत वाला है तो ज़ाइर मुस्तफ़ीज़ होता है और बर अ़क्स है तो बर अ़क्स होता है।''[2]

ऐसे बे शुमार वाक़िआ़त हैं जो इस बात पर दलालत करते हैं कि ज़िन्दों और मुर्दों की अरवाह़ की आपस में मुलाक़ात होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन शुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی ने अपनी मशहूर तस्नीफ़ ''شَرْحُ الصُّدُوْرِفِی اَحْوَالِ الْمَوْتٰی وَالْقُبُوْرِ'' में इस त़रह़ की कषीर रिवायात नक़्ल फ़रमाई हैं। चुनान्चे,

एक औ़रत का हाथ शल था वोह अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ में से किसी के पास ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की, कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मेरा हाथ दुरुस्त फ़रमा दे।'' उन्हों ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ''तुम्हारा हाथ किस त़रह़ शल हुवा ?'' उस ने बताया कि मेरे वालिद बहुत मालदार थे जब कि

1 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی برالوالدین،الحدیث:۷۹۰۱،ج۶،ص۲۰۱۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, जि.9, स.763-775

मेरी वालिदा सदक़ा नहीं दिया करती थी, अलबत्ता एक मरतबा हमारे यहां एक गाए ज़ब्ह़ हुई तो मेरी वालिदा ने थोड़ी सी चर्बी एक मिस्कीन को दे दी और एक फटा पुराना कपड़ा भी उसे दे दिया। जब मेरे वालिदैन का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने अपने वालिद को ख़्वाब में देखा वोह एक नह्र पर हैं और लोगों को सैराब कर रहे हैं। मैं ने कहा : "ऐ अब्बा जान ! क्या आप ने अम्मी को देखा है ?" उन्हों ने कहा : "नहीं।" फिर मैं अपनी वालिदा को तलाश करने लगी। चुनान्चे, मैं ने उन्हें इस ह़ाल में पाया कि उन के जिस्म पर उस फटे पुराने कपड़े के इलावा कोई कपड़ा न था जो उन्हों ने सदक़ा किया था और हाथ में वोही चर्बी का टुकड़ा था जो उन्हों ने सदक़ा किया था वोह उसे दूसरे हाथ पर मारतीं और उस का अषर जो हाथ पर लगता उसे चूस लेतीं और कहतीं : "हाए प्यास ! हाए प्यास !" मैं ने कहा : "ऐ अम्मी जान ! क्या मैं आप को पानी न पिलाऊं ?" उन्हों ने कहा : "हां क्यू नहीं।" चुनान्चे, मैं अपने वालिद के पास आई और उन से एक बरतन ले कर अपनी वालिदा को पानी पिला दिया। वहां पर मौजूद एक शख़्स ने कहा कि "इस औ़रत को पानी किस ने पिलाया ? जिस ने इसे पिलाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का हाथ शल कर दे।" लिहाज़ा जब मैं बेदार हुई तो मेरा हाथ शल हो चुका था।[1]

फिर येह कि ख़्वाबों की शरई हैषिय्यत क्या है और इन्हें लोगों से बयान करने का हुक्म क्या है ? इस सिलसिले में सह़ीह़ अह़ादीषे मुबारका से षाबित है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अच्छे ख़्वाब को नबुव्वत का छियालीसवां ह़िस्सा क़रार दिया है। चुनान्चे,

---

1 ......كتاب الجامع لمعمرمع المصنف لعبد الرزاق،باب سنن من كان قبلكم، الحديث:٢٠٩٣٣،ج١٠،ص٣١٥۔
شرح الصدور، باب تلاقی الارواح الموتی ......الخ،ص ٢٧٢۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नेक मुसलमान का ख़्वाब नबुव्वत का छियालीसवां ह़िस्सा है।"(1)

दूसरी रिवायत में है कि "नबुव्वत ख़त्म हो गई। अब मेरे बा'द नबुव्वत न होगी, हां ! बिशारतें होंगी।" अ़र्ज़ की गई : "वोह बिशारतें क्या हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "अच्छा ख़्वाब आदमी ख़ुद देखे या उस के लिये देखा जाए।"(2)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो उसे भला मा'लूम हो तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और उसे चाहिये कि उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाए और लोगों के सामने बयान करे।"(3)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से ख़्वाब के बारे में एक सुवाल किया गया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस के जवाब में इरशाद फ़रमाया : "ख़्वाब चार क़िस्म (के) है : **एक ह़दीषे नफ़्स** कि दिन में जो ख़यालात क़ल्ब पर ग़ालिब रहे जब सोया और उस त़रफ़ से ह़वास मुअ़त्तल (या'नी सुस्त) हुवे आ़लमे मिषाल (या'नी ख़याली दुन्या) बक़दरे इस्ति'दाद मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) हुवा इन्हीं तख़य्युलात की शक्लें सामने आईं येह ख़्वाब मुह़मल व बे मा'ना है और इस में दाख़िल है वोह जो किसी

1 ......صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب الرؤیا، الحدیث:۶۹۸۳، ج۴، ص ۴۰۳۔
2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۳۰۵۱، ج۳، ص ۱۷۹۔
3 ......صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب الرؤیا،الحدیث:۶۹۸۵، ج۴، ص ۴۰۳۔

ख़ल्त़ (या'नी मिलावट)[1] के ग़लबे इस के मुनासिबात नज़र आते हैं मषलन सफ़रावी आग देखे बलग़मी पानी।"

"**दूसरा ख़्वाब :** इल्क़ाए शैत़ान है और वोह अकषर वह़शत नाक होता है शैत़ान आदमी को डराता या ख़्वाब में उस के साथ खेलता है, इस को फ़रमाया कि किसी से ज़िक्र न करो कि तुम्हें ज़रर न दे। ऐसा ख़्वाब देखे तो बाईं त़रफ़ तीन बार थूक दे और **तअ़व्वुज़** पढ़े और बेहतर येह है कि वुज़ू कर के दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े।"

"**तीसरा ख़्वाब :** इल्क़ाए फ़िरिश्ता होता है इस से गुज़श्ता व मौजूदा व आइन्दा ग़ैब ज़ाहिर होते हैं मगर अकषर पर्दा तावील क़रीब या बईद में, व लिहाज़ा मोह़ताजे ता'बीर होता है।"

"**चौथा ख़्वाब :** कि रब्बुल इ़ज़्ज़त बिला वासित़ा इल्क़ा फ़रमाए वोह साफ़ स़रीह़ होता है और एह़तियाजे ता'बीर से बरी।"[2] (وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام ने फ़रमाया कि अच्छा ख़्वाब वह़्य की अक़्साम में से है। पस सोया हुवा शख़्स मा'रिफ़ते इलाही में से जिस शै से नावाक़िफ़ होता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस पर मुत्त़लअ़ फ़रमाता है और इस का वुक़ूअ़ व ज़ुहूर ह़ालते बेदारी में होता है। येही वजह है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सुब्ह़ करते तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين से इस्तिफ़सार फ़रमाते : "क्या आज की शब तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा ?" और येह इस लिये था कि अच्छा ख़्वाब सब का सब आषारे नबुव्वत में से है। पस उम्मत के सामने इसे ज़ाहिर फ़रमाना लाज़िम ठहरा और लोग इस मर्तबे से बिल्कुल

1..... जिस्म की चार ख़ल्तें होती हैं : सफ़रा, सोदा, ख़ून, बलग़म (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात)
2.....फ़तावा रज़विय्या, जि.29, स.87।

नावाक़िफ़ हैं जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहम्मिय्यत देते और इस के मुतअ़ल्लिक़ रोज़ाना दरयाफ़्त फ़रमाते जब कि अकषर लोग ख़्वाब देख कर इस पर ए'तिमाद करने वाले का मज़ाक़ उड़ाते हैं।(1)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने किताब............ مَاذَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ بَعْدَ الْمَوْت (مطبوعہ:مؤسسة الكتب الثقافية بيروت لبنان،الطبعة الاولى:١٤٢٠ ھ) तर्जमे के लिये शो'बए तराजिमे कुतुब के सिपुर्द की, शो'बे के मदनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने इस का तर्जमा किया। फिर इस मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ा हि़कायात को दीगर कुतुब से देखा तो ज़ेहन बना कि इस तर्जमे में मज़ीद रह़मत भरी हि़कायात का इज़ाफ़ा किया जाए। चुनान्चे, बाहम मश्वरे से येह तै पा गया और फिर दर्जे ज़ैल कुतुब :

(1)......كتاب المنامات ﴿للامام ابن ابى الدنيا﴾ (المكتبة العصرية١٤٢٦ھ)

(2)......الرسالة القشيرية ﴿لابى القاسم القشيرى﴾ (دار الكتب العليمه١٤١٨ھ)

(3)......احياء العلوم ﴿للامام الغزالى﴾ (دار صادربيروت٢٠٠٠ء)

(4)......الزهد ﴿للامام احمدبن حنبل﴾ (دار الغد الجديد١٤٢٦ھ)

(5)......حلية الاولياء وطبقات الاصفياء ﴿لابى نعيم﴾ (دار الكتب العليمه١٤١٨ھ)

(6)......سيراعلام النبلاء ﴿للامام الذهبى﴾ (دارالفكر بيروت١٤١٧ھ)

वग़ैरा से मज़ीद हि़कायात का तर्जमा कर के इस में जम्अ़ कर दिया और इन अस्ह़ाबे हि़कायात के ह़ालात और फ़रमूदात भी कुतुबे सैर व अस्माउर्रिजाल और कुतुबे तारीख़ व तसव्वुफ़ से तर्जमा कर के इस में शामिल कर दिये हैं। लिहाज़ा इस की ह़ैषिय्यत सिर्फ़ किसी एक किताब के तर्जमे की नहीं रही बल्कि येह एक तालीफ़ बन गई है।

---

(1)......فيض القدير،تحت الحديث:١٤١٣،ج٣،ص٢٦٢.

इस तालीफ़ का नाम क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने "**152 रह़मत भरी ह़िकायात**" अ़ता फ़रमाया है। इस में **92** फ़ौत शुदा ह़ज़रात की मग़फ़िरत और जन्नत के आ'ला दरजात पाने वालों के ख़्वाबों की ह़िकायात और इन के साथ साह़िबे ह़िकायत के मुख़्तसर ह़ालात भी जम्अ़ किये गए हैं और इन **92** ह़ज़रात के मुतअ़ल्लिक़ **126** रह़मत भरी ह़िकायात बयान की गई हैं। इस के इलावा **26** ऐसी ह़िकायात जम्अ़ की गई हैं जिन में साह़िबे ह़िकायत का नाम नहीं और अगर नाम है तो उन के ह़ालात न मिल सके।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ताओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं से इस किताब को मुरत्तब करने के लिये "**शो'बए तराजिमे कुतुब**" के मदनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने बहुत ज़ियादा तलाश व जुस्त्जू से काम लिया और मुस्तनद अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू कुतुब से इन्तिहाई अ़रक़ रैज़ी के साथ ह़ालात, फ़रामीन, ह़िकायात और मदनी फूल जम्अ़ किये हैं। किताब को मुरत्तब करने की क़दरे तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

(1)....ह़त्तल मक़्दूर कोशिश की गई है कि तह़रीर का अन्दाज़ आसान हो, ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई इस किताब से फ़ाइदा उठा सकें।

(2)....ह़ालात व फ़रमूदात कमो बेश **111** कुतुब की मदद से जम्अ़ किये गए हैं।

(3)....किताब **545** तख़ारीज (ह़वालाजात) से मुज़य्यन व आरास्ता है।

(4)....कई ह़िकायात के बा'द नसीह़त आमोज़ दर्स भी लिखा गया है।

(5)....कहीं बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल के बा'द **मदनी फूल** तह़रीर किये गए हैं।

(6)....**मदनी इन्अ़ामात**[1] पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये मौक़अ़ की मुनासबत से बा'ज़ मक़ामात पर मदनी इन्अ़ामात भी नक़्ल किये गए हैं।

(7)....जिन बुज़ुर्गाने दीन का **फ़िक़्ही मस्लक** मिल सका वोह दर्ज कर दिया गया है ताकि मा'लूम हो कि बडे बड़े औलिया व उ़-लमा भी किसी न किसी इमाम के मुक़ल्लिद थे।

(8)...मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी ब्रेकेट में लिख दिये गए हैं नीज़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब का एहतिमाम किया गया है।

(9)....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि "**हमें अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये मदनी इन्अ़ामात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

(اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

❶....मदनी इन्अ़ामात के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से "जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता" नामी किताब और "**मदनी इन्अ़ामात**" का रिसाला हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये।

﴾1﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ालात :

ख़लीफ़ए अव्वल, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी इस्मे गिरामी अ़ब्दुल्लाह बिन उ़षमान बिन आ़मिर बिन अम्र बिन का'ब बिन सा'द और कुन्यत अबू बक्र है। सिद्दीक़ व अ़तीक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अल्क़ाबात हैं और आ़मुल फ़ील के तक़रीबन अढ़ाई बरस बा'द मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में पैदा हुवे[1] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मत में सब से अफ़्ज़ल, सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा, सब से बड़े आ़लिम, इल्मे अन्साब के माहिर, इल्मे ता'बीर के आ़लिम, साइबुर्राए, उम्मत में सब से ज़ियादा रह़्म दिल थे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में नबुव्वत के झूटे दा'वेदार मुस्लिमा कज़्ज़ाब से जंग हुई। येह ह़ज़रते सय्यिदुना वह़्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों क़त्ल हुवा। उस वक़्त इस की उ़म्र **150** साल थी।[2]

इस जंग में सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे और इस दिन मुसलमानों की पहचान **"या मुह़म्मदाह"** थी।[3]

---

1 ......اسد الغابة الرقم:٣٠٦٤عبدالله بن عثمان ابو بكر، ج٣،ص٣١٥۔
عاشق اکبر، ص ۴،۳۔

2 ......تاريخ الخلفاء، ابو بكرالصديق،ص٥٨۔

3 ......تاريخ الامم والملوک للطبری،ذكر بقية خبر مسيلمة،ج٢،ص ٢٨١، مُلَخَّصًا۔

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में सब से पहले क़ुरआन शरीफ़ को जम्अ़ करवाया।(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन्हों ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में बैतुल माल क़ाइम किया।(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 2 साल 7 माह मस्नदे ख़िलाफ़त पर रोनक़ अफ़रोज़ रह कर 22 जुमादल उख़रा 13 हि. को पीर शरीफ़ का दिन गुज़ार कर वफ़ात पाई।(3)

फ़रामीन :

......एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जब मैं खुली फ़ज़ा में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जाता हूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या की वजह से अपने ऊपर कपड़ा डाल लेता हूं।"(4)

......अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ख़ुत़बे में येह फ़रमाया करते : "कहां हैं रोशन व ख़ूब सूरत चेहरों वाले ! जिन्हें अपनी जवानियों पे नाज़ था ? और कहां हैं वोह बादशाह ! जिन्हों ने शहर बनाए और अपनी ह़िफ़ाज़त

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ابو بکر الصدیق، ص ۵۹۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ابو بکر الصدیق، ص ۶۰۔

3 ......عاشقِ اکبر، ص ۴۔

4 ......الزھد لابن المبارک، باب الھرب من الخطایاوالذنوب، الحدیث:۳۱۶، ص ۱۰۷۔

के लिये फ़सीलें (बुलन्द व मज़बूत दीवारें) ता'मीर करवाईं ? कहां हैं वोह फ़ातिहीन ! जंगों में कामयाबी जिन के क़दम चुमती थी ? ज़माने ने उन का नामो निशान तक मिटा डाला, अब वोह क़ब्र के अन्धेरों में पड़े हैं। जल्दी करो जल्दी ! नजात हासिल करो नजात !"[1]

۞......अगर लोग एक रस्सी या एक बकरी का बच्चा जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में ज़कात दिया करते थे, अब उस के देने से इन्कार करेंगे तो मैं उन से जंग करूंगा।[2]

﴾1﴿ रहमत भरी हिकायत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़्वाब में देख कर अ़र्ज़ की गई कि आप अपनी ज़बान के बारे में हमेशा फ़रमाया करते थे कि इस ने मुझे तबाही की जगहों पर पहुंचा दिया, فَمَا ذَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? इरशाद फ़रमाया : "मैं ने इस ज़बान के साथ कलिमए तृय्यिबा पढ़ा पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।"[3]

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

मदफ़न हो अ़ता मीठे मदीने की गली में
लिल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) पड़ोसी मुझे जन्नत में बना लो

1......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل،الحدیث:۱۰۵۹۵،ج۷، ص ۳۶۴۔

2......تاریخ الاسلام للذهبی،ج۳،ص۲۷۔

3......احیاء علوم الدین ،کتاب ذکر الموت وما بعده، بیان منامات تکشف... الخ ج۵،ص ۲۶۴۔

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई ग़लत चलने वाली ज़बान इन्सान को बहुत परेशान करती है। इन्सान इसी ज़बान से गालियां निकाल कर, झूट बोल कर, ग़ीबतें कर के चुग़लियां खा कर अपनी आख़िरत दाव पर लगा देता है। ज़बान अगर टेढ़ी चलती है तो बा'ज़ अवक़ात फ़सादात बरपा हो जाते हैं, इसी ज़बान से अगर मर्द अपनी बीवी को तलाक़ कह दे तो (कई सूरतों में) तलाक़े मुग़ल्लज़ा वाक़ेअ़ हो जाती है, इसी ज़बान से अगर किसी को बुरा भला कहा और उस को तैश (या'नी गुस्सा) आ गया तो बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गिरी तक नौबत पहुंच जाती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाने या'नी अपने आप को फ़ुज़ूल बातों से बचाने ही में आफ़िय्यत है। ख़ामोशी की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ गुफ़्तगू लिख कर या इशारे से कर लिया करना बे हद मुफ़ीद है।

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ज़बान का बे बाक हो कि हर भली बुरी बात बे धड़क मुंह से निकाल दे तो समझ लो उस का दिल सख़्त है उस में ह़या नहीं। सख़्ती वोह दरख़्त है जिस की जड़ इन्सान के दिल में है और उस की शाख़ दोज़ख़ में है ऐसे बे धड़क इन्सान का अन्जाम येह होता है कि वोह अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم) की बारगाह में भी बे अदब हो कर काफ़िर हो जाता है।"(1) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ुज़ूल गोई से बचने का ज़ेहन देते हुवे मदनी इन्आ़म नम्बर 46 में फ़रमाते हैं :

---

1 ......مراۃ المناجیح، ج ٦، ص ١٦١ ـ

क्या आज आप ने ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाते हुवे फ़ुज़ूल गोई से बचने की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ इशारे से और कम अज़ कम चार बार लिख कर गुफ़्तगू की ?

﴾2﴿ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हालात :

खलीफ़ए दुवुम, जा नशीने पैग़म्बर, वज़ीरे नबिय्ये अतहर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू हफ़्स" और लक़ब "फ़ारूक़े आ'ज़म" है। एक रिवायत में है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 39 मर्दों के बा'द, सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ से ए'लाने नबुव्वत के छटे साल ईमान लाए, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **मुतम्मिमुल अरबईन** या'नी "40 का अदद पूरा करने वाला" कहते हैं।(1) सब से पहले आप ही को "अमीरुल मोअमिनीन" का लक़ब दिया गया।(2) आप के ज़मानए ख़िलाफ़त में एक बार ज़बरदस्त क़ह्त पड़ा। आप ने बारिश तलब करने के लिये हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ नमाज़े इस्तिसक़ा (तलबे बारिश के लिये पढ़ी जाने वाली नमाज़) अदा फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना इब्ने औन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ

---

(1) .....करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म, स. 7-8.

(2) .....الاعلام للزرکلی، عمر بن الخطاب، ج۵، ص۴۵۔

पकड़ा और उस को बुलन्द कर के इस त़रह़ बारगाहे इलाही में दुआ़ की : "اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْكَ بِعَمِّ نَبِیِّكَ اَنْ تَذْھَبَ عَنَّا الْمَحْلَ وَاَنْ تَسْقِیَنَا الْغَیْثَ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरे नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा को वसीला बना कर तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं कि क़ह़त़ और खु़श्क साली को ख़त्म फ़रमा दे और हम पर रह़मत वाली बारिश नाज़िल फ़रमा।" येह दुआ़ मांग कर अभी वापस भी नहीं हुवे थे कि बारिश शुरूअ़ हो गई और कई रोज़ तक मुसलसल होती रही।(1)

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के वसीले से बारिशें आतीं, खु़श्क साली दूर होती, दुआ़एं क़बूल होतीं और ह़ाजतें बर आती हैं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को वसीला बनाया, इस से येह षाबित नहीं होता कि विसाल पा जाने वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن को वसीला बनाना जाइज़ नहीं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बजाए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इस लिये वसीला बनाया ताकि लोगों पर वाज़ेह़ हो जाए कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़लावा हस्तियों को भी वसीला बनाना जाइज़ है और इस में कोई ह़रज नहीं। तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इस लिये ख़ास किया ताकि अहले बैत की इ़ज़्ज़त व शराफ़त ज़ाहिर हो। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी वफ़ात के बा'द भी सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان का आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1)......تاریخ الخلفاء، فصل فی خلافته، ص ۱۰۴۔

को वसीला बनाना षाबित है । हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि लोग अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अहदे ख़िलाफ़त में क़हूत में मुब्तला हो गए तो एक शख़्स नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के लिये बारिश की दुआ फ़रमाएं, लोग हलाकत के क़रीब पहुंच गए हैं ।" फिर वोह ख़्वाब में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उमर बिन ख़त्ताब के पास जा कर उन्हें सलाम कहो और बताओ कि उन्हें बारिश से सैराब किया जाएगा और उन से कहना कि अक़्ल मन्दी का दामन हाथ से मत छोड़ना ।" चुनान्चे, वोह शख़्स अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया और आप को इस बात की ख़बर दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रो पड़े और अर्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस काम से मैं आजिज़ नहीं होता उस में कोताही नहीं करता ।"(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अंगूठी पर येह इबारत नक़्श थी : "كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا يَاعُمَر *या'नी ऐ उमर ! नसीहत के लिये मौत काफ़ी है ।"*

विसाल :

23 हि. ब मुताबिक़ **644** ई. को नमाज़े फ़ज्र में एक मजूसी गुलाम अबू लुअ-लुअ फ़ीरोज़ फ़ारसी ने धोके से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहलू में ख़न्जर घोंप दिया जिस की वजह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत वाक़ेअ हुई ।(2)

---

1 ......دلائل النبوة للبيهقى، باب ماجاء فى رؤية النبى صلّى اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم فى المنام، ج ۷، ص ۴۷۔

2 ......الاعلام للزركلى، عمر بن الخطاب، ج ۵، ص ۴۵۔

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़ए रसूल की दीवार गिर पड़ी और लोगों ने इस की ता'मीर 87 हि. में शुरूअ़ की तो (बुन्याद खोदते वक़्त) एक क़दम ज़ाहिर हुवा। तो सब लोग घबरा गए और लोगों को ख़याल हुवा कि शायद येह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दम मुबारक है और वहां कोई जानने वाला नहीं मिला तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ''لَا وَاللّٰہِ مَا ھِیَ قَدَمُ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا ھِیَ اِلَّا قَدَمُ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ'' या'नी ख़ुदा की क़सम येह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दम शरीफ़ नहीं बल्कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़दम मुबारक है।''[1]

या'नी तक़रीबन 64 साल के बा'द भी अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जिस्म मुबारक ब दस्तूर साबिक़ रहा इस में किसी क़िस्म की तब्दीली नहीं हुई।

ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर
अल्लाह अल्लाह मौत को किस ने मसीह़ा कर दिया

फ़रामीन :

۞....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं जब आले किस्रा के ख़ज़ानों को आप के पास लाया गया तो आप रोने लगे। मैं ने कहा : या अमीरल मोअमिनीन ! किस चीज़ ने आप को रुलाया है ? आज तो शुक्र का दिन है, फ़रह़त व सुरूर का दिन है। इरशाद फ़रमाया : ''जिस क़ौम के पास भी इस (माल)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی قبرالنبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم وابی بکروعمر رضی اللّٰہ تعالی عنہما، الحدیث: ۱۳۹۰، ج۱، ص۴۶۹۔

की कषरत हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान बुग़्ज़ व अदावत डाल देता है।" [1]

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह फ़रमाना कि "जिस क़ौम के पास भी माल की कषरत हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान बुग़्ज़ व अदावत डाल देता है।" हो सकता है कि आप ने येह बात इस लिये कही हो कि जिस का माल ज़ियादा होता है उसे लोगों की हाजत भी ज़ियादा होती है और जो लोगों का मोहताज हो उस का लोगों के साथ मुनाफ़क़त करना नागुज़ीर है और वोह लोगों की रिज़ा मन्दी हासिल करने के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करता है और मख़्लूक़ की तरफ़ हाजत से दोस्ती और दुश्मनी दोनों पैदा होती हैं और इस से हसद, कीना, रिया, तकब्बुर, झूट, चुग़ली, ग़ीबत और ऐसे तमाम गुनाह पैदा होते हैं जो दिल और ज़बान के साथ ख़ास हैं और फिर येह तमाम आ'ज़ा की तरफ़ मुतअद्दी होते हैं और येह सब माल की नुहूसत की वजह से होता है। [2]

....किसी की ता'रीफ़ करना गोया उसे ज़ब्ह करना है। [3]

....आदमी के बे अक़्ल होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि उसे जब भी किसी चीज़ के खाने की ख़्वाहिश हो तो उसे खा ले। [4]

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کلام عمر بن الخطاب، ج ۸، ص ۱۴۷۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل... الخ، بیان تفصیل آفات المال... الخ، ج ۳، ص ۲۹۲۔

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عمر بن الخطاب، الرقم: ۶۱۴، ص ۱۴۶۔

4 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عمر بن الخطاب، الرقم: ۶۵۱، ص ۱۵۱۔

﴾2﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के विसाल के बा'द ख़्वाब में देखने की शदीद ख़्वाहिश थी। तक़रीबन एक साल बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी पेशानी से पसीना पोंछ रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि "मैं अभी अभी (ह़िसाबो किताब) से फ़ारिग़ हुवा हूं अगर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ को रऊफ़ो रह़ीम न पाता तो क़रीब था कि मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में अरबाबे इक़्तिदार लोगों के लिये बड़ी इ़ब्रत है कि कल बरोज़े क़ियामत रिआ़या से मुतअ़ल्लिक़ उन की पूछ गछ होगी जिस की ह़ुकूमत जितनी वसीअ़ होगी उस का ह़िसाब भी उतना ज़ियादा होगा। सल्त़नत व ह़ुकूमत कल बरोज़े क़ियामत ज़ालिम के लिये रुस्वाई और आ़दिल के लिये नदामत व शर्मिन्दगी होगी और उस वक़्त वोह कहेगा कि काश ! अय्यामे ह़ुकूमत इ़बादत में गुज़ारे होते। ह़दीषे मुबारका में

(1) ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم: ۲۲، ج۳، ص ۱۳۔

है कि "हुकूमत अमानत है और येह क़ियामत के दिन रुस्वाई व नदामत है सिवाए उस शख़्स के जो इसे ह़क़ के साथ ले और वोह ज़िम्मेदारियां पूरी करे जो इस में हैं।"(1) मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "सल्त़नत व हुकूमत नफ़्सानी ख़्वाहिश, दुन्यावी माल और इ़ज़्ज़त की लालच से त़लब करना ह़राम है कि ऐसे त़ालिबे जाह लोग ह़ाकिम बन कर ज़ुल्म करते हैं।"(2)

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन जष्षामा बिन क़ैस लैषी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन जष्षामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ बहादुर सह़ाबा में से थे। ज़मानए रिसालत में कई ग़ज़्वात में शिर्कत की, फ़त्ह़े इस्त़ख़्र और फ़त्ह़े फ़ारस में भी शरीक हुवे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक़ामे अब्वा या मक़ामे वद्दान में हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में जंगली दराज़ गोश बत़ौरे तोह़्फ़ा पेश किया तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे क़बूल न फ़रमाया और जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ के रन्जीदा होने को मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो इरशाद फ़रमाया : "येह मैं ने आप को इस लिये वापस लौटाया कि मैं ह़ालते एह़राम में हूं।"(3)

---

❶......صحیح مسلم،الحدیث:۱۸۲۵،ص۱۰۱۵۔

❷......مراۃ المناجیح،ج۵،ص۳۴۸۔

❸......या'नी जब हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का शिकार वापस किया

विसाल :

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल **45** हि. ब मुत़ाबिक़ **646** ई. को अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में हुवा।(1)

﴾3﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

इन्तिक़ाल के बा'द घर में होने वाले वाक़िआ़त बता दिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन जष्षामा और ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दरमियान भाई चारा था। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि "हम में से जिस का इन्तिक़ाल पहले होगा वोह दूसरे को अपने साथ पेश आने वाले ह़ालात से आगाह करेगा।"

तो उन्हें रन्ज हुवा, जिस का अषर उन के चेहरे पर मह़सूस हुवा तब हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की तसल्ली इस इरशादे आ़ली से फ़रमा दी, अगर ज़िन्दा शिकार को वापस फ़रमाया है तब तो ह़दीष बिल्कुल ज़ाहिर है कि मुह़रिम को ज़िन्दा शिकार न पकड़ना दुरुस्त है, न पकड़ा हुवा रखना या ज़ब्ह़ करना दुरुस्त है, और अगर उस का गोश्त वापस फ़रमाया है तो इस की वजह शवाफ़ेअ़ के हां तो येह है कि ह़ज़रते (सय्यिदुना) सा'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये शिकार किया था, अह़नाफ़ के हां इस लिये रद्द फ़रमाया कि इस शिकार में किसी मुह़रिम ने कोई मदद की थी, और हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस का पता था, येह वाक़िआ़ हु़ज्जतुल वदाअ़ का है कि हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब अब्वा पहुंचे तो ह़ज़रते (सय्यिदुना) सा'ब (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने हु़ज़ूर की मेज़बानी इस त़रह़ की जिस का नतीजा येह हुवा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि.**4** स.**191**)

(1)......الأعلام للزرکلی، الصعب بن جثامة، ج۳،ص۲۰۴۔

صحیح البخاری، کتاب جزاء الصید، الحدیث:۱۸۲۵، ج۱،ص۶۰۳۔

हज़रते सय्यिदुना औफ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "क्या येह हो सकता है ?" हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "जी हां ।" चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन जष्षामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रते सय्यिदुना औफ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़्वाब में इस त़रह़ देखा गोया कि वोह उन के पास आए हैं । हज़रते सय्यिदुना औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! आप के साथ क्या मुआमला किया गया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "चन्द मसाइब के बा'द मुझे बख़्श दिया गया ।" मैं ने उन की गर्दन पर सियाह चमक देखी तो पूछा : "ऐ मेरे भाई ! येह क्या है ?" जवाब दिया : "येह वोह दस दीनार हैं जो मैं ने फ़ुलां यहूदी से क़र्ज़ लिये थे । वोह मेरे थेले में मौजूद हैं । आप वोह उस यहूदी को दे दीजिये ! और ऐ मेरे भाई ! यक़ीन करो कि मेरे इन्तिक़ाल के बा'द मेरे घर वालों में जो भी वाक़िआ़ पेश आया मुझे उस की ख़बर मिल गई, यहां तक कि हमारी एक बिल्ली जो चन्द दिन पहले मर गई, उस की ख़बर भी मिल गई और जान लो कि छे दिन तक मेरी बेटी का इन्तिक़ाल हो जाएगा, पस उस के साथ अच्छा सुलूक करना ।"

हज़रते सय्यिदुना औफ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने सोचा कि इस मुआ़मले की तह़क़ीक़ करनी चाहिये ।" फिर मैं हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर वालों के पास आया तो उन्हों ने कहा : "ख़ुश आमदीद ! क्या आप अपने भाइयों के लवाह़िक़ीन के साथ ऐसा सुलूक करते हैं कि जब से हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा है, आप हमारे हां तशरीफ़ नहीं लाए ।" मैं ने अपना उ़ज़्र बयान कर

दिया फिर मेरी नज़र उस थेले पर पड़ी, मैं ने उसे उतार कर देखा (Check किया) तो जो उस में था वोह निकाल लिया। फिर मैं ने जल्दी से वोह बटवा लिया जिस में दीनार थे और उस यहूदी को बुलवाया और उस से पूछा : "क्या सा'ब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ज़िम्मे तुम्हारा कुछ क़र्ज़ है ?" उस ने कहा "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर रह़म फ़रमाए ! वोह मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बेहतरीन अस्ह़ाब में से थे। वोह उन्हीं का है (या'नी उस ने अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया)।" मैं ने कहा : "बताओगे कि वोह क्या है ?" उस ने कहा : "हां ! मैं ने उन्हें दस दीनार क़र्ज़ दिये थे।" तो मैं ने वोह दीनार उस यहूदी के ह़वाले कर दिये, उस ने कहा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह तो बिल्कुल वोही हैं।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा "चलो एक बात तो पूरी हुई।" फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर वालों से पूछा कि "क्या उन के इन्तिक़ाल के बा'द तुम्हारे यहां कोई नया वाक़िआ़ हुवा है ?" उन्हों ने कहा : "जी हां ! फ़ुलां फ़ुलां वाक़िआ़त रूनुमा हुवे हैं।" मैं ने कहा : "कोई वाक़िआ़ बयान करो ?" उन्हों ने कहा : "चन्द दिन हुवे हैं हमारी बिल्ली मर गई है।" तो मैं ने (दिल में) कहा : "दो बातें हो गईं।" फिर मैं ने पूछा : "मेरी भतीजी कहां है ?" घर वालों ने बताया कि "वोह खेल रही है।" मैं उस के पास गया और उस को छुवा तो उसे बुख़ार था। मैं ने उन से कहा : "इस बच्ची के साथ अच्छा बरताव रखो।" फिर वोह बच्ची छे दिन बा'द इन्तिक़ाल कर गई।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन

(1) موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الحدیث:۲۵، ج۳،ص۳۵ ۔

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा हिकायत से ज़ाहिर है कि मरने के बा'द रूहे इन्सानी का आलम क्या होता है इस से मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं कि "इस (मरने वाले की रूह़) के अफ़्आ़ल व इदराकात जैसे देखना, बोलना, सुनना, आना–जाना, चलना, फिरना, सब ब दस्तूर रहते हैं, बल्कि इस की कुव्वतें बा'दे मर्ग और साफ़ व तेज़ हो जाती हैं, ह़ालते ह़यात में जो काम इन आलाते ख़ाकी या'नी आंख, कान, हाथ, पाउं, ज़बान से लेते थे अब बिग़ैर इन के करती है। (जैसा कि) रूह़ का पसे अज़ मर्ग आस्मानों पर जाना, अपने रब के हुज़ूर सजदे में गिरना, नेक हमसायों से नफ़्अ़ पाना, बद हमसायों से ईज़ा उठाना, मलाइका का इन के पास तोह़्फ़े लाना, इन की मिज़ाज पुर्सी को आना, क़ब्र का इन से ब ज़बाने फ़सीह़ बातें करना, ज़िन्दों के आ'माल इन्हें सुनाए जाना, नेकियों पर खुश होना, बुराइयों पर ग़म करना, इन के मिलने का मुश्ताक़ रहना, रूहों का बाहम मिलना जुलना, अगले अम्वात का मुर्दए नौ के इस्तिक़्बाल को आना, इस का गुज़रे करीबों को देख कर पहचानना, उन से मिल कर शाद होना, उन का इस से बाक़ी अ़ज़ीज़ों दोस्तों के ह़ाल पूछना, आपस में ख़ूबी कफ़न से मुफ़ाख़रत करना, बुरे कफ़न वाले का हम चश्मों में शर्माना, अपने आ'माले ह़सना या सय्यिआ को देखना (वग़ैरा)।" [1]

❁❁❁❁❁❁

1.....फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा) जि. 9, स. 703 मुलख़्ख़सन।

﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ालात :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम इस्लाम क़बूल करने से पहले माबह बिन बूदख़्शान बिन मुर्सलान बिन बहबूज़ान था और इस्लाम क़बूल करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस्लाम की त़रफ़ मन्सूब करते हुवे सलमान बिन इस्लाम कहा जाता था। कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है।(1) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम थे, फ़ारसिय्युन्नस्ल रा–महुरमुज़ की अवलाद से हैं और फ़ारस के शहर अस्फ़हान के अ़लाक़े के रहने वाले थे। तलाशे दीन में देस छोड़ कर परदेसी बने, पहले ईसाई बने उन की किताबें पढ़ीं। बहुत मुसीबतें झेलीं ह़त्ता कि बा'ज़ अ़रबियों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ग़ुलाम बना लिया और यहूद के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। आक़ा ने आप को मुकातब कर दिया। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माले किताबत अदा कर के आप को आज़ाद कर दिया।(2) ग़ज़्वए अह़ज़ाब के साल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निशान लगा कर ख़न्दक़ की निशान देही की (कि इस जगह ख़न्दक़ खोदनी है) तो सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان का ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में इख़्तिलाफ़ हो गया क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़वी व त़ाक़तवर शख़्स थे, मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان कहने

1 ......معرفة الصحابة،الرقم:۱۲۰۷ سلمان الفارسی،ج۲،ص۴۵۵ ۔

2 ......مراۃ المناجیح،حالات صحابہ ترجمہ اکمال،ج۸، ص۳۳ ۔

लगे : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में से हैं। अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان कहने लगे : हम में से हैं। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सलमान हमारे अहले बैत से हैं।"[1] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र साढ़े तीन सो साल हुई और येह भी कहा गया कि ढ़ाई सो साल हुई। हमेशा अपने हाथ की कमाई से खाते थे और बैतुल माल से मिलने वाले वज़ीफ़े को सदक़ा कर दिया करते थे।[2]

विसाल :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल मदाइन में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के आख़िरी दौर में 35 हि. में हुवा और येह भी कहा गया कि 36 हि. के शुरूअ़ में हुवा।[3]

मदाइन का नाम अब सलमान पाक है येह जगह बग़दाद शरीफ़ से 30 मील दूर है इन के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान और ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के मज़ारात हैं। मदीनए मुनव्वरा के अ़वाली में ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाग़ है इस में दो खजूर के दरख़्त ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लगाए हुवे हैं। (मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं :) "फ़क़ीर ने ज़ियारत की है।"[4]

---

1 ......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الحدیث : ۲۵۹۹، ج۲۱، ص۴۰۸۔

2 ......معرفة الصحابة،الرقم:۱۲۰۷ سلمان الفارسی، ج۲، ص۴۵۵۔

3 ......الاستیعاب، الرقم:۱۰۱۹ سلمان الفارسی، ج۲، ص۱۹۷۔

4 ....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 33.

फ़रामीन :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी को ज़लीलो रुस्वा या हलाक करने का इरादा फ़रमाता है तो उस से ह़या छीन लेता है, फिर तुम उस से इस ह़ाल में मिलोगे कि वोह लोगों से नफ़रत करता और लोग उस से नफ़रत करते हैं और जब वोह लोगों से नफ़रत करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मेहरबानी व शफ़्क़त से मह़रूम कर देता है। फिर तुम उस से इस ह़ाल में मिलोगे कि वोह सख़्त दिल और बद मिज़ाज हो जाता है जब वोह इस ह़ालत को पहुंचता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से अमानत दारी सल्ब फ़रमा लेता है। अब जब तुम उसे मिलोगे तो इस ह़ालत में देखोगे कि वोह लोगों से ख़यानत करता और लोग उस से ख़यानत करते हैं। जब वोह इस ह़ालत को पहुंच जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ईमान भी सल्ब फ़रमा लेता है जिस की वजह से वोह मलऊ़न हो जाता है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेशक इ़ल्म बहुत ज़ियादा और उ़म्र बहुत थोड़ी है लिहाज़ा दीन का ज़रूरी इ़ल्म ह़ासिल करो और इस के मा सिवा को छोड़ दो क्यूंकि इस पर तुम्हारी मदद नहीं की जाएगी।"(2)

---

1 ......حلیة الاولیاء،الرقم۳۴،سلمان الفارسی،الحدیث:۶۲۸،ج۱،ص۲۶۲۔

2 ......حلیة الاولیاء،الرقم:۳۴،سلمان الفارسی،الحدیث:۲۰۶،ج۱،ص۲۶۴۔

﴾4﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिले और फ़रमाया : "अगर तुम मुझ से पहले इन्तिक़ाल कर जाओ तो पेश आने वाले ह़ालात से मुझे आगाह करना और अगर मैं तुम से पहले फ़ौत हो गया तो मैं तुम्हें आगाह करूंगा।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल पहले हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! कैसे हैं ?" जवाब दिया : "ख़ैरिय्यत से हूं।" फिर पूछा : "आप ने कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल पाया ?" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया।"[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम अपने तमाम मुआ़मलात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दें, उस की रिज़ा पर राज़ी रहें और हर मुआ़मले में उसी पर तवक्कुल व भरोसा किया करें। **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! तवक्कुल की एक ता'रीफ़ येह भी है कि "सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इनायत पर भरोसा करे और जो कुछ लोगों के पास है उस से मायूस हो जाए।"[2]

---

1 ......حلیۃ الاولیاء،الرقم:۳۴،سلمان الفارسی، الحدیث: ۶۵۵،ج ا،ص ۲۶۴۔

2 ......الرسالۃ القشیریۃ،باب التوکل ،ص ۲۰۶۔

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुवक्किल की तीन अ़लामात हैं,

ला यसअल : सुवाल नहीं करता,
ला यरुद्दु : किसी चीज़ को रद्द भी नहीं करता, और
ला यह़बिसु : अपने पास रोकता भी नहीं ।[1]

इस को आसान लफ़्ज़ों में ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, क़ुत़्बे मदीना, मुर्शिदे अ़त्तार, ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی यूं फ़रमाते थे : "त़म्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं ।"[2]

﴿5﴾ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

ह़ालात :

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का नाम उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान बिन अबिल आ़स बिन उमय्या, कुन्यत अबू अ़म्र और लक़ब ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) है, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दो शहज़ादियां यके बा'द दीगर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के निकाह़ में दी थीं । बहुत ख़ूब सूरत, इ़बादत गुज़ार, बा ह़या और सख़ी थे । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आग़ाज़े इस्लाम ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ुलफ़ाए राशिदीन (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب التوكل، ص ٢٠٠ـ
2 ....सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना, स.12

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) में तीसरे ख़लीफ़ा हैं और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को "साहिबुल हिजरतैन" भी कहा जाता है क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पहले हबशा और फिर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की तरफ़ हिजरत फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! बेशक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल की, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ पढ़ी और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रहमते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दामाद बनने का शरफ़ पाया है।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक मैं ऐसा ही हूं जिस त़रह़ तुम ने कहा है।"

विसाल :

18 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम 35 हि. जुमुआ़ के दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ निहायत मज़लूमिय्यत के साथ शहीद कर दिये गए और हफ़्ते की रात मग़रिब व इशा के दरमियान मक़ामे "ह़श्शि कवकब" में सिपुर्दे ख़ाक किये गए।"(1)

फ़रामीन :

۞....अगर तुम्हारे दिल पाक होते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलाम से तुम्हारा जी कभी न भरता।

---

(1)......معرفۃ الصحابۃ، الرقم:۳معرفۃنسبۃعثمان بن عفان،ج ۱ ، ص ۷۹تا۸۵۔

الاصابۃ لابن حجر،الرقم:۵۴۶۲عثمان بن عفان،ج۴،ص۳۷۷تا۳۷۹۔

बयानाते अ़त्तारिय्या, हिस्सा. 3, रिसाला करामाते उ़षमाने ग़नी, स. 39.

❁....अगर मुझे जन्नत और जहन्नम के दरमियान खड़ा किया जाए और मुझे येह मा'लूम न हो कि मुझे किस की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाएगा तो मैं येह जानने से पहले ही राख होना पसन्द करूंगा।(1)

﴾5﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सब्ज़ लिबास :

मुत़र्रिफ़ कहते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़्वाब में देखा कि सब्ज़ लिबास में मल्बूस हैं। मैं ने पूछा : "या अमीरल मोअमिनीन ! کَیْفَ فَعَلَ اللّٰہُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ कैसा मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे साथ भलाई का मुआ़मला फ़रमाया।" मैं ने पूछा : "कौन सा दीन बेहतर है ?" फ़रमाया : "दीने क़य्यिम जो ख़ून नहीं बहाता।"(2)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

❁❁❁❁❁❁

﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्माईल मुर्रह बिन शराह़ील عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل

ह़ालात :

ह़ाफ़िज़ इब्ने कषीर दिमश्क़ी ने बयान किया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्माईल मुर्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल अदा फ़रमाया करते थे और जब उ़म्र रसीदा हो गए तो 400

---

1 ......الزھدللامام احمدبن حنبل، زھد عثمان بن عفان،ص۱۵۴،۱۵۵۔

2 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، عثمان بن عفان.. الخ،ج ۳۹،ص۵۳۳۔

नवाफ़िल पढ़ते थे।" हारिष गनवी कहते हैं कि "एक बार आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इतना तवील सजदा किया हत्ता कि मिट्टी ने पशानी को नुक़्सान पहुंचाया।" 76 हि. में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल हुवा।

﴾6﴿ रहमत भरी हिकायत

नूरानी पेशानी :

जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो अहले ख़ाना में से किसी ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में इस हाल में देखा गोया कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सजदे की जगह चमकदार सितारे की मानिन्द रोशन है, तो अर्ज़ की : "येह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के चेहरे पर क्या है ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मेरी पेशानी को मिट्टी के नुक़्सान पहुंचाने की वजह से नूरानी कर दिया गया है।" अर्ज़ की : "आख़िरत में आप को क्या मक़ाम हासिल हुवा ?" फ़रमाया : "बेहतरीन घर है, जिस के अहल यहां से मुन्तक़िल होते हैं न ही उन्हें मौत आती है।"(1)

﴾7﴿ रहमत भरी हिकायत

येह भी मन्क़ूल है कि इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा कि सजदे की जगह नूर बन गई है तो पूछा : "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहां हैं ?" जवाब दिया : "मैं ऐसे घर में हूं जिस के अहल यहां से कूच करेंगे न उन्हें मौत आएगी।"(2)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।* ***आमीन***﴿

---

1 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۲۵،ج۳، ص۵۸،۵۹۔

2 ......البدایۃ والنہایۃ لابن کثیر، مُرَّۃ بن شراحیل الہمدانی،ج۵،ص۵۶۵۔

﴾7﴿ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ालात :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मरवान बिन ह़कम और कुन्यत अबू ह़फ़्स है। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अवलाद से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 61 हि. को पैदा हुवे। कुरआने पाक बचपन ही में ह़िफ़्ज़ कर लिया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद ने इब्तिदाई ता'लीम के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا भेजा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार खुलफ़ाए राशिदीन में होता है। नेक सीरत, परहेज़गार, इ़बादत गुज़ार, ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले और आ़दिल ख़लीफ़ा थे। कषीर अह़ादीषे मुबारका आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी हैं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिशारत दी थी कि **"मेरी अवलाद में से एक शख़्स के चेहरे पर ज़ख़्म का निशान होगा जो ज़मीन को अ़द्लो इन्साफ़ से भर देगा।"** लोग ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वोह शख़्स समझ रहे थे क्यूंकि इन के चेहरे पर मस्सा (बड़ा तिल) था फिर लोगों ने देखा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सूरत में येह बिशारत पूरी हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रजबुल मुरज्जब 101 हि. को ज़हर खिलाए जाने की वजह से विसाल फ़रमा गए।[1]

---

(1)......تاریخ الخلفاء،عمربن عبدالعزیز،ص۱۹۷-۱۸۳۔
تھذیب التھذیب، الرقم:۵۰۹۸عمر بن عبد العزیز، ج۶،ص۸۳-۸۱۔

फ़रामीन :

۞....जो शख़्स झगड़े, ग़ुस्से और लालच से बचाया गया वोह फ़लाह़ पा गया।

۞....एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और ए'तिदाल के साथ रिज़्क़ त़लब करो, अगर तुम में से किसी का रिज़्क़ पहाड़ की चोटी पर या ज़मीन के अन्दर होगा तो वोह उस को ज़रूर मिलेगा।"

۞....ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं अपने वालिद के साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वालिद साह़िब से मेरे बारे में पूछा, फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाने लगे "इस को फ़िक़्हे अक्बर की ता'लीम दो।" उन्हों ने पूछा : "फ़िक़्हे अक्बर क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "क़नाअ़त इख़्तियार करना और किसी को तक्लीफ़ न देना।"(1)

﴾8﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

जन्नते अ़दन :

मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : या अमीरल मोअमिनीन ! काश मुझे मा'लूम होता कि मौत के बा'द दो ह़ालतों में से कौन सी ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ? फ़रमाया : "ऐ मस्लमा ! मैं अभी अभी ह़िसाबो किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे अभी तक सुकून नहीं मिला है।" मैं ने पूछा : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहां हैं ? फ़रमाया : "जन्नते अ़दन में अइम्मए हुदा के साथ हूं।(2)

---

1 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن عبد العزیز، ص ۱۸۳،۱۸۵ـ

2 ......شرح الصدور،باب نبذ من اخبار من رای الموت،ص ۲۷۶

﴾9﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

इस्तिग़्फ़ार को अफ़्ज़ल अ़मल पाया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने बयान किया कि मैं ने अपने वालिदे गिरामी को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बाग़ में मौजूद हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे चन्द सेब अ़त़ा फ़रमाए मैं ने उन की ता'बीर अवलाद से की। फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस अ़मल को सब से अफ़्ज़ल पाया ?" जवाब दिया : "ऐ बेटे ! इस्तिग़्फ़ार को।"(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

۞۞۞۞۞۞

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि तौबा व इस्तिग़्फ़ार करने का मा'मूल बनाएं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तौबा करो, बेशक मैं भी दिन में सो मरतबा इस्तिग़्फ़ार करता हूं।"(2)

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم: ۲۶، ج۳، ص۳۶۔

2 ......صحیح مسلم ، کتاب الذکر..الخ، باب استحباب الاستغفار و الاستکثار منه، الحدیث: ۲۷۰۲، ص ۱۴۴۹۔

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! इस्तिग़फ़ार करने का फ़ाइदा येह होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मुश्किलात दूर फ़रमा कर हमें बे हिसाब रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तमाम मुश्किलों में आसानी, हर ग़म से आज़ादी और बे हिसाब रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।"(1)

नीज़ जो इस्लामी भाई सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या में दाख़िल हैं वोह शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَه का अ़ता कर्दा शजरा शरीफ़ पढ़ने का मा'मूल बनाएं, इस में इस्तिग़फ़ार के साथ साथ दीगर अवरादो वज़ाइफ़ भी हैं। चुनान्चे, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَه मदनी इन्आ़म नम्बर 5 में इरशाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने अपने शजरे के कुछ न कुछ अवराद और कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिये ?

﴾8﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़तिय्या बिन हुज़ैफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़तिय्या बिन हुज़ैफ़ा ख़त़फ़ा बिन बद्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़बीला बनू तमीम से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, अपने ज़माने के बहुत बड़े शाइ़र थे। 28 हि. ब मुत़ाबिक़ 650 ई. को यमामा के मक़ाम पर पैदा हुवे। निहायत पाक बाज़ बुज़ुर्ग थे। मुतअ़द्दद मरतबा दिमश्क़ गए। 110 हि. ब मुत़ाबिक़ 728 ई. में सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो गए।(2)

---

1 ......سنن ابی داوٗد، کتاب الوتر،باب فی الاستغفار ، الحدیث:١٥١٨،ج٢ص ١٢٢ ـ

2 ......الأعلام للزرکلی،جریر،ج ٢،ص١١٩ ـ البدایة والنهایة لابن کثیر،ج٦،ص ٤٠٣

﴾10﴿ रहमत भरी हिकायत

तक्बीर के सबब बख़्शिश :

हाफ़िज़ इब्ने कषीर ने लिखा है कि हज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अतिय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दुन्या से चले जाने के बा'द एक शख़्स ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" पूछा : "किस सबब से ?" इरशाद फ़रमाया : "उस तक्बीर (या'नी **अल्लाह अक्बर**) के सबब जो मैं ने जंगल में कही थी।" उस ने फिर पूछा फ़र्ज़दक़ (शाइर) का क्या हुवा ? फ़रमाया : "अफ़्सोस ! वोह पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाने की वजह से हलाक हो गया।"[1]

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन*﴿

❁❁❁❁❁❁

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी शख़्स की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी में उस पर झूट बांधना बोहतान कहलाता है। इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि बुराई न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रूबरू वोह बुराई उस की तरफ़ मन्सूब कर दी तो येह बोहतान हुवा मषलन किसी को पीठ पीछे या सामने रियाकार कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई षुबूत न हो क्यूंकि रियाकारी का तअ़ल्लुक़ बातिनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस तरह किसी को रियाकार कहना

---

1 ......البداية والنهاية لابن كثير، ج٦، ص٤٠٩۔

बोहतान हुवा, लोगों पर गुनाहों की तोहमत लगाने वालों के अ़ज़ाब की दिल हिला देने वाली रिवायत मुलाह़ज़ा कीजिये । चुनान्चे, जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुवे कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को ज़बानों से लटकाया गया था । मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि "येह लोगों पर बिला वजह इलज़ाम लगाने वाले थे ।"[1]

हाए ! हाए ! हाए ! हम ने न जाने ज़िन्दगी में कितनों पर बोहतान बांधे होंगे ! आह !

हर जुर्म पे जी चाहता है फूट के रोऊं
अफ़्सोस मगर दिल की क़सावत नहीं जाती

आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, मह्ताबे रज़विय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें तोहमत और गाली गलोच से बचा कर राहे जन्नत पर गामज़न करने की सअ्य करते हुवे मदनी इन्आ़म नम्बर 33 में फ़रमाते हैं : आज आप ने (घर में और बाहर) किसी पर **तोहमत** तो नहीं लगाई ? किसी का नाम तो नहीं बिगाड़ा ? किसी से **गाली गलोच** तो नहीं की ? (किसी को सुवर, गधा, चोर, लम्बू, ठिगू वग़ैरा न कहा करें ।)

---

1 ......شرح الصدور، ص ۱۸۳، ۱۸۴ ـ

﴾9﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمُبِيۡن

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمُبِيۡن 33 हि. ब मुत़ाबिक़ 653 ई. में पैदा हुवे। ताबेई बुज़ुर्ग और बसरा में उ़लूमे दीनिय्या में अपने वक़्त के इमाम थे आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه कपड़े का कारोबार करते थे और ऊंचा सुनते थे, इ़ल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल किया और ह़दीष की रिवायत भी की, तक़्वा व परहेज़गारी और ख़्वाबों की ता'बीर बताने में मशहूर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने फ़ारस में इन्हें अपना कातिब मुक़र्रर किया। आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम थे।[1] आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की वफ़ात 110 हि. ब मुत़ाबिक़ 729 ई. को हुई।

फ़रामीन :

....मैं ने दुन्या की चीज़ पर किसी से ह़सद नहीं किया क्यूंकि अगर वोह जन्नती है तो मैं दुन्या की चीज़ पर उस से कैसे ह़सद कर सकता हूं ह़ालांकि वोह जन्नत की त़रफ़ जा रहा है और अगर वोह जहन्नमी है तो मैं दुन्या की चीज़ पर उस से कैसे ह़सद कर सकता हूं ह़ालांकि वोह जहन्नम की त़रफ़ जा रहा है।[2]

1 ......الاعلام للزركلی،ابن سیرین (محمدبن سیرین)،ج۲،ص۱۵۴۔

2 ......تاریخ مدینة دمشق،الرقم:۶۴۴۴محمد بن سیرین ،ج۵۳،ص۲۱۶۔

۞....जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उस के दिल में एक वाइज़ पैदा फ़रमा देता है (जो उसे नेकी का हुक्म देता और बुराई से मन्अ़ करता है) ।(1)

۞....शे'र उस क़ौम का इल्म है जिन के पास इस के इलावा दूसरा इल्म नहीं है और शे'र तो मह़ज़ कलाम है तो जो शे'र अच्छा है वोह अच्छा कलाम है और जो बुरा है वोह बुरा कलाम है ।(2)

﴾11﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

70 दरजे बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ :

ह़कम बिन ह़ज्ल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के गहरे दोस्त थे । जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन्तिक़ाल फ़रमा गए तो इन्हें सख़्त सदमा पहुंचा, यहां तक कि इन की इस त़रह़ इयादत की जाने लगी जिस त़रह़ मरीज़ की इयादत की जाती है इन्हों ने बताया कि मैं ने अपने भाई को ख़्वाब में ऐसी ऐसी ह़ालत में देखा और उन से पूछा : "ऐ मेरे भाई ! मैं ने आप को तो ख़ुश कुन ह़ालत में देख लिया है, येह बताइये कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के साथ क्या मुआ़मला पेश आया ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह मुझ से 70 दरजे बुलन्द मक़ाम व मर्तबे पर फ़ाइज़ हैं । मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐसा क्यूं ह़ालांकि हम तो आप को इन से अफ़्ज़ल गुमान करते थे ?" इरशाद फ़रमाया : "इस लिये कि वोह दुन्या में बहुत ज़ियादा रन्जीदा और ग़मगीन रहा करते थे ।"(3)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन﴿

---

(1)......تاریخ مدینة دمشق، الرقم: ۶۴۴۴ محمد بن سیرین، ج ۵۳، ص ۲۲۱۔

(2)......المرجع السابق، ص ۲۲۴۔ (3)......المرجع السابق، ص ۲۴۲۔

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत से मा'लूम हुवा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन फ़िक्रे आख़िरत में बहुत ज़ियादा ग़मगीन रहा करते थे गोया हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत और इरशादात इन ह़ज़रात के पेशे नज़र हुवा करते थे। जैसा कि मीठे मुस्त़फ़ा, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर ग़मगीन दिल से मह़ब्बत फ़रमाता है।"(1)

ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में आता है कि "आप मुसलसल रन्जीदा और दाइमी फ़िक्र में डूबे रहते थे, आप को किसी पल राह़त व आराम न था, अकषर अवक़ात ख़ामोश रहा करते और ह़ाजत के बिग़ैर कलाम न फ़रमाते थे।"(2)

साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी इन्आ़म नम्बर 15 में इरशाद फ़रमाते हैं : "क्या आज आप ने यक्सूई के साथ कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासबा) करते हुवे जिन जिन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी फ़रमाई ?" और मदनी इन्आ़म नम्बर 49 में फ़रमाते हैं : "क्या आज आप ने ज़रूरी गुफ़्तगू भी कम से कम अल्फ़ाज़ मे निमटाने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ौरन नादिम हो कर इस्तिग़फ़ार या दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया ?"

---

1 ......المستدرک علی الصحیحین، کتاب الرقاق، ج۵، ص ۴۴۹۔

2 ......الشمائل المحمدیۃ للترمذی،باب کیف کان کلام رسول اللّٰہ ﷺ، ص ۱۳۵۔

﴾10﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ह़सन बिन यसार अल मा'रूफ़ ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बसरा के ताबेई बुज़ुर्ग हैं। अहले बसरा के इमाम और अपने ज़माने के सब से बड़े आ़लिम थे। फ़क़ीह, फ़सीह़, बहादुर और इबादत गुज़ार थे। **21** हि. ब मुत़ाबिक़ **642** ई. को मदीनए मुनव्वरा में विलादत हुई और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के सायए आ़तिफ़त में परवरिश पाई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हुक्मरानों के पास जा कर उन को भी नेकी की दा'वत देते और बुराई से मन्अ़ करते थे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी से ख़ौफ़ज़दा नहीं होते थे।

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का कलाम तमाम लोगों से ज़ियादा अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के कलाम के मुशाबेह था और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरत सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सीरत से बहुत मिलती जुलती थी, बहुत फ़सीहुल्लिसान थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुंह से हर वक़्त इल्मो ह़िक्मत के अनमोल मोती झड़ते थे। ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के दौर में आप के उस के साथ कई वाक़िआ़त पेश आए लेकिन उस के फ़ितने से मह़फ़ूज़ रहे।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्नदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे तो इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़त़ लिखा कि "मुझे ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सोंप दी गई है आप मुझे चन्द ऐसे लोगों की निशान देही फ़रमाएं जो इस मुआ़मले में मेरी मुआ़वनत करें।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "दुन्यादारों को आप पसन्द नहीं करेंगे और दीनदार आप को पसन्द नहीं करेंगे। इस लिये आप इस मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद त़लब करें।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से कसीर अह़ादीसे त़य्यिबा मरवी हैं और इस के इलावा कसीर ता'दाद में आप के मल्फ़ूज़ाते शरीफ़ा भी हैं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़ज़ाइले मक्का पर एक किताब भी तस्नीफ़ फ़रमाई है। आप की वफ़ात **110** हि. ब मुत़ाबिक़ **728** ई. को बसरा में हुई।(1)

फ़रामीन :

۞....अगर उ़-लमा न होते तो लोग चोपायों की त़रह़ होते या'नी उ़-लमा इन को ता'लीम के ज़रीए़ चोपाए की ह़ालत से निकाल कर इन्सानिय्यत की ह़ालत में लाए हैं।(2)

۞....उ़-लमा की सज़ा दिल की मौत है और दिल की मौत उख़रवी अ़मल के ज़रीए़ दुन्या त़लब करना है।(3)

---

(1)......الأعلام للزرکلی، الحسن البصری، ج۲، ص۲۲۶۔

احیاء علوم الدین، کتاب العلم، الباب السادس فی آفات العلم، ج ۱، ص ۱۱۰۔

(2)......احیاء علوم الدین، باب فضیلۃ التعلیم، ج ۱، ص۲۸۔

(3)......احیاء علوم الدین، الباب السادس فی آفات العلم..الخ، ج ۱، ص۸۷۔

❁....ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ न पढ़ो जो उ-लमा के पास नहीं जाता ।[1]

❁....जिस नमाज़ में दिल हाज़िर न हो उस की सज़ा जल्दी मिलती है ।[2]

❁....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! कोई बन्दा तिलावते कलामे पाक के साथ सुब्ह़ नहीं करता मगर उस का ग़म ज़ियादा और ख़ुशी कम हो जाती है उस का रोना ज़ियादा और हंसना कम होता है उस की थकावट और मश्ग़ूलिय्यत ज़ियादा जब कि राह़त और फ़राग़त कम हो जाती है ।[3]

❁....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो शख़्स औ़रत की (नाजाइज़) ख़्वाहिशात पर उस की इत़ाअ़त करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में औंधा डालेगा ।[4]

ह़सन बसरी को ख़ुश ख़बरी दे दो !

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़म्ज़ा इस्ह़ाक़ बिन रबीअ़ अ़त़्त़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के पास बैठा था कि अचानक उन के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : ऐ अबू सईद ! मैं ने गुज़श्ता शब ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, मैं ने देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बनू सुलैम के क़बीले मुरजियह के लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं और एक बेहतरीन जुब्बा ज़ैबे तन फ़रमाया हुवा है ।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़सन बसरी आ रहे हैं ।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتا ب اسرارالصلوۃ، الباب الاول، ج ۱، ص ۲۰۳۔

2 ......المرجع السابق، ص ۲۱۳۔ 3 ......المرجع السابق، ص ۳۷۹۔

4 ......احیاء علوم الدین، کتا ب آداب النکاح، الباب الثالث ، ج ۲، ص ۵۸۔

“इन्हें खुश ख़बरी दे दो, फिर खुश ख़बरी दे दो, फिर खुश ख़बरी दो।”

हज़रते सय्यिदुना अबू हम्ज़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं इतना सुनना था कि हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की आंखों से आंसू जारी हो गए और उस शख़्स से फ़रमाने लगे : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी आंखें हमेशा ठन्डी रखे !” सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है कि “जिस ने मुझे ख़्वाब में देखा तो बेशक उस ने मुझे ही देखा क्यूंकि शैत़ान मेरी सूरत कभी इख़्तियार नहीं कर सकता।”(1)

﴾12﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

फ़िक्रे आख़िरत और ख़ौफ़े ख़ुदा :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देखा कि उन का रंग चमक रहा था, चेहरए मुबारक नूर बार था और चेहरे की मुकम्मल सफ़ेदी की वजह से आंसूओं की लड़ी भी चमक रही थी। मैं ने पूछा : “ऐ अबू सईद ! क्या आप का इन्तिक़ाल नहीं हो गया है ?” इरशाद फ़रमाया : “हां !” मैं ने फिर पूछा : “इन्तिक़ाल के बा'द आप को क्या मक़ाम व मर्तबा मिला ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने तो अपनी सारी ज़िन्दगी फ़िक्रे आख़िरत के सबब ग़मों और ख़ौफ़े ख़ुदा में रोते हुवे गुज़ार दी।” आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुस्कुराते हुवे इरशाद फ़रमाया : “फ़िक्रे आख़िरत और ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गिर्या व ज़ारी ही को तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये नेक लोगों के

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۱۳۱، ج۳، ص۸۴۔

दरजात पाने का ज़रीआ़ बना दिया और हमें मुत्तक़ीन के दरजात पर फ़ाइज़ फ़रमा दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह हम पर हमारे रब عَزَّوَجَلَّ का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।" मैं ने कहा : 'ऐ अबू सईद ! मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये !" फ़रमाया : "दुन्या के अन्दर जो लोग सब से ज़ियादा ग़मगीन रहते हैं वोह क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा ख़ुश होंगे।"(1)

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर काम चाहे अच्छा हो या बुरा इस का अषर हमारे बात़िन पर ज़रूर पड़ता है बुरे अ़मल का अषर तो येह है कि गुनाह करते ही हमारे दिल पर एक सियाह नुक़्त़ा लगा दिया जाता है जब कि नेकियों का अषर ब हुक्मे क़ुरआनी येह है कि اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ (پ۱۲،ھود:۱۱٤) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।" चुनान्चे, नेकियों की बरकत से दिल साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ हो जाते हैं और दिल कि इन्सान के जिस्म का बादशाह है और ब हुक्मे ह़दीष "अगर येह दुरुस्त हो जाए तो सारा जिस्म ही दुरुस्त रहता है।" और इन्सान साह़िबे रूह़ानिय्यत हो जाता है फिर वोह बड़ी बड़ी इ़बादात व मुजाहदात पाबन्दी व इस्तिक़ामत के साथ बजा लाता है जैसा कि इस ह़िकायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने अपनी सारी ज़िन्दगी फ़िक्रे आख़िरत के सबब ग़मों और ख़ौफ़े ख़ुदा में रोते हुवे गुज़ार दी।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रूह़ानिय्यत ह़ासिल करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते**

(1) ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۳۹، ج۳، ص۴۵۔

इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर मदनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये । चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी इन्आ़म नम्बर 59 में इरशाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने साबिक़ा मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के अपने ज़ैली निगरान को जम्अ़ करवा दिया ? नीज़ मदनी इन्आ़म नम्बर 60 में इरशाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस माह जदवल के मुत़ाबिक़ कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया ?

﴾13﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आस्मानों के दरवाज़े खुल गए :

जिस रात ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का विसाल हुवा, उस रात किसी ने ख़्वाब में देखा कि गोया आस्मानों के दरवाज़े खुले हैं और एक मुनादी ए'लान कर रहा है कि "सुनो ! ह़सन बसरी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िर हो गए हैं और वोह इन से राज़ी है ।"(1)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । **आमीन***﴿

❁❁❁❁❁❁

(1)......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم ، ص ۴۱۸۔

﴾14﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

जन्नत के बादशाह :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बयान करते हैं कि अबू सालेह़ को यह़्या बिन अय्यूब ने बयान किया कि दो आदमियों का आपस में भाई चारा था उन्हों ने एक दूसरे से अ़हद किया कि "उन में से जो पहले फ़ौत होगा वोह मरने के बा'द दूसरे को वहां के अह़वाल बताएगा।" फिर जब उन में से एक फ़ौत हो गया तो दूसरे ने उसे ख़्वाब में देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उस ने कहा : "वोह जन्नत में बादशाहों की त़रह़ हैं (उन के ख़ुद्दाम) उन की नाफ़रमानी नहीं करते।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने कहा कि "वोह जन्नत में जहां चाहें रहते हैं और उस की ने'मतों में से जो चाहें खाते हैं। लेकिन दोनों के मरातिब में बड़ा फ़र्क़ है।" इस के बा'द ख़्वाब देखने वाले ने फिर पूछा कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को येह मक़ाम कैसे ह़ासिल हुवा ?" जवाब दिया : "फ़िक्रे आख़िरत में शदीद ख़ौफ़ज़दा और ग़मगीन रहने की वजह से।"[1]

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

❁❁❁❁❁❁

[1] ......سیراعلام النبلاء للذهبی، الرقم:۲۱۳ محمد بن سرین، ج۵،ص۴۹۷۔

﴾11﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने ज़माने में अहले शाम के बहुत बड़े बुज़ुर्ग, फ़सीह़ो बलीग़ वाइ़ज़ और आ़लिम थे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز के दौरे गवर्नरी और दौरे ख़िलाफ़त दोनों में इन के मुसाह़िब रहे। ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने आप को अपना कातिब मुक़र्रर किया और आप ही ने इसे ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز को ख़लीफ़ा बनाने का मश्वरा दिया था।[(1)]

मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक ने कहा कि क़बीला किन्दह में 3 अश्ख़ास ऐसे हैं जिन की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बारिश बरसाता और दुश्मनों पर ग़लबा अ़ता फ़रमाता है : (1) रजा बिन हैवत (2) उ़बादा बिन नुसय्यी और (3) अ़दी बिन अ़दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم[(2)]

नोऐ़म बिन सलामा कहते हैं : "मुल्के शाम में ऐसा कोई शख़्स नहीं जिस की इत्तिबाअ़ मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ज़ियादा पसन्द हो।"[(3)]

अबू उसामा कहते हैं : "इब्ने औ़न رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब अपने पसन्दीदा लोगों का ज़िक्र करते तो ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ज़िक्र भी करते थे।"[(4)]

---

1 ......الأعلام للزركلى، رجاء بن حيوة، ج٣،ص١٧۔

2 ......تاريخ مدينة دمشق،الرقم:٢١٦٢رجاء بن حيوة بن جندل، ج١٨، ص١٠٣۔

3 ......المرجع السابق، ص١٠٥۔

4 ......حلية الاولياء، رجاء بن حيوة، الرقم:٦٧٩٤،ج٥،ص١٩٣۔

सुहैल क़ुत़ई बयान करते हैं कि इब्ने औ़न फ़रमाते हैं : “मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन और ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत (رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْهِم) से बढ़ कर मुसलमानों में अ़ज़मत वाला कोई इन्सान नहीं पाया।”(1)

अस्मई कहते हैं कि इब्ने औ़न ने फ़रमाया : “मैं ने तीन अश्ख़ास ऐसे देखे हैं जिन की मिषाल नहीं मिलती। इराक़ में ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन, ह़िजाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद और शाम में ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत (رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْهِم)”(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه **112** हि. ब मुत़ाबिक़ **730** ई. में इस दारे फ़ानी से पर्दा फ़रमा गए।

फ़रामीन :

۞....ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं मन्क़ूल है कि “इस्लाम कितना ह़सीन है और ईमान इसे मुज़य्यन करता है, ईमान कितना ह़सीन है और तक़्वा इसे मुज़य्यन करता है, तक़्वा कितना ह़सीन है और इल्म इसे ज़ीनत देता है, इल्म कितना ह़सीन है और बुर्दबारी इसे आरास्ता करती है और बुर्दबारी में कितना ह़ुस्न है और नर्मी इसे ज़ीनत बख़्शती है।”(3)

۞....बन्दा जब मौत का ज़िक्र ब कषरत करता है तो उस से ह़सद और त़ा'न व तशनीअ़ की आ़दत निकल जाती है।(4)

---

1 ......حلیة الاولیاء، رجاء بن حیوة، الرقم:۶۸۰۳، ج۵، ص۱۹۵۔

2 ......تاریخ مدینة دمشق، الرقم:۲۱۶۲ رجاء بن حیوة، ج ۱۸، ص۱۰۷۔

3 ......المرجع السابق، ص ۱۱۱۔ 4 ......المرجع السابق، ص ۱۱۳۔

﴾15﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

थोड़ी देर की घबराहट :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बैतुल मुक़द्दस की एक औ़रत कह रही थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमारे हम नशीन थे और वोह अच्छे हम नशीन थे। मैं ने उन की वफ़ात के एक माह बा'द उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबल मिक़दाम ! क्या अन्जाम हुवा ?" जवाब दिया : "बहुत अच्छा, लेकिन तुम्हारे बा'द हम ने एक घबराहट वाली आवाज़ और शोरो गुल सुना तो समझे कि क़ियामत क़ाइम हो गई है (लेकिन ऐसा नहीं था)।" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह आवाज़ और शोरो गुल कैसा था ?" इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते जर्राह़ बिन अ़ब्दुल्लाह ह़कमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और इन के रुफ़क़ा अपने आ'माल के इवज़ मिलने वाले भारी अज्रो षवाब के साथ जन्नत में दाख़िल हो रहे थे और जन्नत के दरवाज़े पर उन का हुजूम हो गया था (येह उसी की आवाज़ थी)।"[1]

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो इन्सान दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने में कामयाब हो गया जन्नत उस का ठिकाना होगी, रह़मत से भर पूर उस मक़ाम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी ऐसी ने'मतें तय्यार की हुई हैं कि दुन्या में जिन का तसव्वुर करना भी मुमकिन नहीं, जैसा कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۳۷، ج۳، ص۴۳۔

इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये वोह ने'मतें तय्यार की हैं जो न किसी आंख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न किसी इन्सान के दिल पर इन का ख़याल गुज़रा।"(1) इन ने'मतों के पेशे नज़र हर मुसलमान को चाहिये कि दुन्या में ऐसे आ'माल इख़्तियार करे कि जो जन्नत के हुसूल में मुआविन व मददगार हों।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर ह़ैरत बालाए ह़ैरत है कि अगर हमारा कोई पड़ोसी या अ़ज़ीज़ बुलन्दो बाला कोठी तय्यार कर ले या बेहतरीन कार ख़रीदे या किसी भी सूरत से अपनी दुन्यावी आसाइश का मे'यार बुलन्द कर ले तो हम फ़ौरन उस से आगे बढ़ने की जुस्तजू में मगन हो जाते हैं, एक धुन सी लग जाती है और बसा अवक़ात ह़सद के बाइ़स ज़िन्दगी परेशान हो जाती है। लेकिन हाए अफ़्सोस ! कि हम मुत्तक़ी व परहेज़गार बन्दों को देख कर येह तमन्ना क्यूं नहीं करते कि जिस त़रह़ येह इस्लामी भाई जन्नत के दरजों की बुलन्दी की त़रफ़ बढ़ रहा है, मैं भी इसी त़रह़ कोशिश करूं, मैं भी नमाज़े बा जमाअ़त का पाबन्द बनूं, कुरआने पाक की तिलावत करूं, सुन्नतों का पैकर बनूं, मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िलों का पाबन्द बनूं, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूं और दीगर मदनी कामों में शिर्कत की बरकतें ह़ासिल करूं।

मत लगा दिल यहां पछताएगा !
किस त़रह़ जन्नत में भाई जाएगा ?

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰہ تعالٰی یریدون ان یبدلوا کلام اللّٰہ، ج۴، ص ۵۷۳۔

﴾12﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या सलमा बिन कुहैल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन कुहैल बिन हुसैन ह़ज़्रमी तिनई कूफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कुन्यत अबू यह़्या है। ह़ज़्रमौत में रहते थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत से 13 साल पहले 47 हि. को पैदा हुवे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ تعالٰی عنہما की ज़ियारत व मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया और ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہما से ह़दीष समाअ़त की। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़हीन, षिक़ह, षबत फिल ह़दीष (ह़दीष में पुख़्ता) थे। आप फ़रमाते हैं कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर मुबारक को नेज़े पर देखा और सर मुबारक से येह आवाज़ आ रही थी :

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿۱۳۷﴾ (پ۱، البقرۃ:۱۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ मह़बूब अ़न क़रीब अल्लाह इन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है सुनता जानता।"*

और आप का विसाल आ़शूरा के रोज़ 121 हि. को हुवा।[1]

﴾16﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

मेहरबान रब عَزَّوَجَلَّ :

इब्नुल अजलह़ कहते हैं कि मेरे वालिद (अल अजलह़) ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन कुहैल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा कि हम में से जो पहले फ़ौत हो वोह ख़्वाब में दूसरे को अपने देखे हुवे

1 ......تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم:۲۶۳۴ سلمۃ بن کھیل، ج۲۲، ص۱۱۶تا۱۲۸۔

अह़वाल पर मुत्तलअ़ कर दे। ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन कुहैल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अल अजलह़ से पहले इन्तिक़ाल कर गए इब्नुल अजलह़ कहते हैं कि मेरे वालिद ने मुझ से कहा : ऐ मेरे बेटे ! ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन कुहैल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक दिन मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए। तो मैं ने कहा : "क्या आप विसाल नहीं फ़रमा गए ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ज़िन्दा कर दिया।" मैं ने पूछा : "आप ने अपने रब को कैसा पाया ?" फ़रमाया : "ऐ अबू ह़ुजय्यह ! बहुत ही मेहरबान पाया।" मैं ने पूछा : "जिन आ'माल के ज़रीए़ बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करता है उन में सब से अफ़्ज़ल कौन सा है ?" फ़रमाया : "मैं ने सलातुल लैल से बेहतर कोई अ़मल नहीं पाया।" मैं ने पूछा : "मुआ़मले को कैसा पाया ?" फ़रमाया : "आसान पाया मगर आप लोग भरोसे पर न रहें।"(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से पता चला कि बुज़ुर्गाने दीन, रातों को जाग कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करते थे। बा'द नमाज़े इ़शा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं इन को सलातुल लैल कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़्ज़ल हैं कि ह़दीष शरीफ़ में है कि "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।"(2) इसी सलातुल लैल की एक क़िस्म तहज्जुद है कि नमाज़े इ़शा के बा'द रात में सो कर उठें फिर

---

1 ......تاریخ مدینة دمشق،سلمة بن کھیل...الخ،ج۲۲، ص۱۳۲۔

2 ......صحیح مسلم، الحدیث:۱۱۶۳،ص۵۹۱۔

नवाफ़िल पढ़े और सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़े वोह तहज्जुद नहीं । ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि क़ियामत के दिन लोग एक मैदान में जम्अ़ किये जाएंगे, उस वक़्त एक मुनादी पुकारेगा : "कहां हैं वो जिन की करवटें ख़्वाबगाहों से जुदा होती थीं ?" वोह लोग खड़े होंगे और थोड़े होंगे । वोह जन्नत में बिग़ैर ह़िसाब दाख़िल होंगे फिर और लोगों के लिये ह़िसाब का हुक्म होगा ।(1)

सय्यिदी व मुर्शिदी, आ़शिक़े रसूले अ़रबी, मुह़िब्बे हर सय्यिद व सह़ाबी व वली, सुन्नतों के दाई, दा'वते इस्लामी के बानी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ मदनी इन्आ़म नम्बर 19 में इरशाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने नमाज़े तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन अदा फ़रमाई ?

﴾13﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्तहिल कुमैत बिन ज़ैद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

ह़ालात :

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का नाम कुमैत बिन ज़ैद असदी और कुन्यत अबू मुस्तहिल है । आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की शहादत के दिनों में 60 हि. को पैदा हुवे । क़बीला बनी असद से तअ़ल्लुक़ रखते थे । आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के चचा अपनी क़ौम के सरदार थे । आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ क़बीला बनी असद के ख़त़ीब, ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, अच्छी ख़त्त़ात़ी करने वाले, सख़ावत करने वाले,

(1) شعب الایمان للبیہقی، الحدیث:۳۲۴۴، ج۳، ص۱۶۹۔

इ़ल्मुल अन्साब के बड़े माहिर, बहादुर और बहुत बड़े शाइ़र थे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पांच हज़ार से ज़ियादा अश्आ़र हैं। अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِنَّ اَجْمَعِین की शान में भी अश्आ़र कहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने इन के अश्आ़र से खुश हो कर चार लाख दिरहम अ़त़ा किये तो इन्हों ने कहा कि "अगर आप पसन्द करें तो वोह कपड़े अ़त़ा फ़रमा दें जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्म मुबारक से मस हैं ताकि मैं इन से बरकत ह़ासिल करूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने कपड़े इन को अ़त़ा फ़रमा दिये और अपना जुब्बा जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे वोह भी अ़त़ा फ़रमा दिया और इन के लिये दुआ़ फ़रमाई। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं हमेशा इन की दुआ़ओं की बरकतें ह़ासिल करता रहा।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल **126** हि. को मरवान बिन मुह़म्मद की ख़िलाफ़त में हुवा।[1]

﴾17﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आले रसूल की मद्ह़ बख़्शिश का ज़रीआ़ बन गई :

षौर बिन यज़ीद शामी कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना कुमैत बिन ज़ैद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : बख़्श दिया, और मेरे लिये एक कुरसी रखी गई मुझे इस पर बिठाया गया और हुक्म हुवा कि "मैं अश्आ़र पढ़ूं।" चुनान्चे, मैं ने पढ़ना शुरूअ़ किये, जब मैं इस शे'र पर पहुंचा :

1 ......تاریخ مدینۃدمشق، الرقم:۵۸۲۸ کُمَیت بن زید، ج۵۰،ص۲۲۹تا۲۴۷۔

حَنَانَیْکَ رَبَّ النَّاسِ مِنْ اَنْ یَّغُرَّنِیْ　　　كَمَا غَرَّهُمْ شُرْبُ الْحَيَاةِ الْمُصَرَّدِ

तर्जमा : या'नी ऐ लोगों के रब ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि ज़िन्दगी का फ़ानी घूंट मुझे धोका दे जैसा कि उस ने लोगों को धोका दिया ।"

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "कुमैत ने सच कहा जिस त़रह़ दूसरे लोग धोके में पड़ गए कुमैत बचा रहा । ऐ कुमैत ! मैं ने तुझे बख़्श दिया क्यूंकि तू ने मेरी मख़्लूक़ के बेहतरीन लोगों से महब्बत की और जो शख़्स भी तेरे आले मुह़म्मद की ता'रीफ़ में कहे हुवे शे'र को पढ़ेगा, मैं तुझे एक रुत्बा अ़त़ा करूंगा और आख़िरत में इसे मज़ीद बुलन्द कर दूंगा ।"(1)

*﴿**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । **आमीन**﴾*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो दुन्या की नेरंगियां देखने के बा वुजूद दुन्यावी ज़िन्दगी के धोके में पड़ कर अपनी मौत और क़ब्रो ह़श्र को भूल जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने के लिये अ़मल न करे, निहायत ही क़ाबिले मज़म्मत है । इस धोके से हमें ख़बर दार करते हुवे हमारा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ पारा 22 सूरए फ़ात़िर की आयत नम्बर 5 में इरशाद फ़रमाता है :

"يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٝ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝"

*__तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :__ ऐ लोगो बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी ।"*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआ़मलात से सह़ीह़ मा'नों में आगाह है वोह दुन्या की

---

(1) ......تاریخ مدینة دمشق، الرقم:٥٨٢٨، كميت بن زيد، ج٥٠، ص٢٤٦۔

रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ सकता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम को दुन्या के धोके से बचाए। (اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

नीज़ इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि आले रसूल (رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِنَّ اَجْمَعِین) की मह़ब्बत दुन्या व आख़िरत में कामयाबी और ह़ुसूले मरातिब का ज़रीआ़ है।

﴾14﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़दीष के राविय़ों में से हैं। निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। **131** हि. ब मुत़ाबिक़ **748** ई. को बसरा में फ़ौत हुवे।[1] आप की कुन्यत अबू यह़्या है। ख़्वाहिशाते दुन्या के तारिक और ग़ुस्से के वक़्त अपने नफ़्स को क़ाबू में रखते थे।[2] उजरत पर मसाह़िफ़ लिखा करते और सिर्फ़ अपने हाथ की कमाई से खाते थे।[3] ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ज़माने में पैदा हुवे और आप को क़ाबिले ए'तिमाद ताबेईन में शुमार किया गया है।[4] आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तौबा से पहले मह़कमए पोलीस में सिपाही थे और शराब के आ़दी थे।[5]

---

1 ......الاعلام للزرکلی، مالک بن دینار، ج۵، ص ۲۶۰،۲۶۱۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، الرقم ۲۰۰، مالک بن دینار، ج۲، ص ۴۰۶۔

3 ......وفیا ت الاعیان، الرقم: ۵۵۱، ج۴، ص ۶۔

4 ......سیر اعلام النبلاء، الرقم: ۷۷۹ مالک بن دینار، ج۶، ص ۱۲۲۔

5 ......روض الریاحین، ص ۱۷۳۔

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तौबा का तफ़्सीली वाक़िआ़ मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले “**नेक बनने का नुस्ख़ा**” सफ़्ह़ा 2 ता 5 से मुत़ालआ़ कीजिये।

फ़रामीन :

❁....जिस दिल में हुज़्न व ग़म न हो वोह वीरान हो जाता है जैसा कि किसी घर में कोई रिहाइश पज़ीर न हो तो वोह वीरान हो जाता है।(1)

❁....एक मरतबा आप से कहा गया : “क्या आप निकाह़ नहीं करेंगे ?” फ़रमाया : “अगर मेरे बस में होता तो अपने आप को भी त़लाक़ दे देता।”(2)

❁....माले ह़लाल से एक खजूर सदक़ा करना मुझे माले ह़राम से एक लाख सदक़ा करने से ज़ियादा मह़बूब है।(3)

﴾18﴿ रह़मत भरी हि़कायत

नेकों की मजालिस की मिष्ल कोई मजलिस नहीं देखी :

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हमारे एक रफ़ीक़ थे जो हमारे साथ ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار की मजलिस में ह़ाज़िर हुवा करते थे, उन्हों ने बयान किया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار को ख़्वाब में देख कर पूछा : “یَااَبَایَحْیٰی!مَاصَنَعَ اللّٰہُ بِكَ या'नी ऐ अबू यह़्या ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?” जवाब दिया : “बहुत अच्छा, हम ने अच्छे अ़मल की मिष्ल कोई चीज़ नहीं देखी, हम ने सह़ाबए

---

1 ......حلیۃ الاولیاء،الرقم:۲۷۵۶،ج۲،ص۴۰۹۔
2 ......حلیۃ الاولیاء،الرقم:۲۷۸۳،ج۲،ص۴۱۴۔
3 ......حلیۃ الاولیاء،الرقم:۲۸۱۳،ج۲،ص۴۲۰۔

किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की मिष्ल किसी को नेक नहीं देखा, हम ने सलफ़े सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की मजालिस की मिष्ल कोई मजलिस नहीं देखी और हम ने नेकों की मजालिस की मिष्ल कोई मजलिस नहीं देखी।"(1)

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छे माह़ोल से अच्छी सोह़बत मुयस्सर होती है। अच्छे माह़ोल से वाबस्ता होने पर ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ होती है क्यूंकि अच्छा माह़ोल अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है और कौन नहीं जानता कि अच्छी सोह़बत के षमरात व बरकात निहायत ही मुफ़ीद होते हैं अ़ल्लामा जलालुद्दीन रूमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ے صُحبتِ صَالِح تُرا صَالِح کُنَد — صُحبتِ طَالِح تُرا طَالِح کُنَد

या'नी अच्छों की सोह़बत तुझे अच्छा बना देगी और बुरों की सोह़बत तुझे बुरा बना देगी।

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि "नेक सोह़बत सारी इ़बादात से अफ़्ज़ल है, देखो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सारे जहां के औलिया से अफ़्ज़ल हैं क्यूं ? इस लिये कि वोह सोह़बत याफ़्तए जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।"(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी का मदनी कारवां इ़बादात व मुआ़मलात की निगहदाश्त और सुन्नतों की मुह़ाफ़ज़त का जज़्बा लिये हुवे सूए मदीना रवां दवां है लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा और रूह़ परवर माह़ोल से वाबस्ता होना भी सआ़दते दारैन है।

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم: ۲۰۸، ج۳، ص۱۱۲۔

2 ......مراٰۃ المناجیح، ج۳، ص ۲۱۲۔

जन्नतियों में हो गए :

महदी बिन मैमून बयान करते हैं कि जिस रात ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار का विसाल हुवा उस रात मैं ने ख़्वाब में देखा गोया कोई निदा दे रहा है कि "सुनो ! मालिक बिन दीनार जन्नतियों में हो गए।"(1)

*《अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**》*

《15》 ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कूफ़ा के बुलन्द पाया राविियाने ह़दीष में से एक थे। कूफ़ा में इन से बढ़ कर कोई ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष न था और आप मुस्तनद और षबत फ़िल ह़दीष (ह़दीष में पुख़्ता) थे।(2)

दरख़्त का तना :

मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी छत पर नमाज़ पढ़ा करते थे। आप के इन्तिक़ाल के बा'द एक बच्चे ने अपनी मां से कहां : "मां ! आले फ़ुलां की छत पर जो दरख़्त का तना था वोह आज नज़र नहीं आ रहा।" मां ने जवाब दिया : बेटा ! वोह दरख़्त का तना नहीं था बल्कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر थे। अब उन का इन्तिक़ाल हो चुका है।"(3)

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۱۰۱، ج۳، ص ۷۱، ۷۲۔

2 ......الاعلام للزرکلی، ابن المعتمر(منصور بن المعتمر)، ج۷، ص ۳۰۵۔

3 ......حلية الاولياء، منصور بن المعتمر، الرقم: ۱۲۲۶۰، ج۵، ص ۴۶

मन्कूल है कि आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 40 साल तक दिन को रोज़ा रखा और शब इबादत में बसर की । आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुसलसल रोते रहते थे, इन की वालिदा मोह्तरमा इन से इरशाद फ़रमातीं : "बेटा ! क्या तुम किसी को क़त्ल कर बैठे हो ?" जवाबन अ़र्ज़ करते : "मैं जानता हूं जो सुलूक मैं ने अपने नफ़्स के साथ किया है ।" जब सुब्ह होती तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी आंखों में सुर्मा, सर में तेल लगाते और होंटों को (तरी से) आरास्ता करते फिर लोगों के पास तशरीफ़ ले जाते (ऐसा इस लिये करते ताकि लोग आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इबादत पर मुत्तलअ़ न हों) ।"[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह्मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन﴿

﴾19﴿ रहमत भरी हिकायत

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात 132 हि. ब मुताबिक़ 750 ई. में हुई । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान फरमाया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "क़रीब था कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किसी नबी (عَلَیْہِ السَّلَام) का सा अ़मल ले कर ह़ाज़िर होता ।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना

[1] سیر اعلام النبلاء، الرقم:٧٩٦ منصور بن المعتمر، ج٦،ص١٩٧

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 60 साल इस तरह गुज़ारे कि रात में क़ियाम किया और दिन में रोज़ा रखा।[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾16﴿ हज़रते सय्यिदतुना राबिआ अदविय्या बसरिय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا

हालात :

हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बिन्ते इस्माईल अदविय्या बसरिय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا बसरा की निहायत ही मश्हूरो मा'रूफ़ नेक ख़ातून थीं। आप की जाए विलादत बसरा है, इबादत व रियाज़त और ज़ोहदो तक़्वा के मुतअ़ल्लिक़ आप के कसीर वाक़िआत मश्हूर हैं। 135 हि. ब मुताबिक़ 752 ई. को मक़ामे क़ुद्स में विसाल हुवा और मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार "क़ुद्स" के मशरिक़ी मज़ाफ़ात में "जबले तूर" की चोटी पर बना।[2]

सारी रात इबादत :

हज़रते सय्यिदतुना अ़ब्दा बिन्ते अबू शव्वाल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नेक बन्दी और हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की ख़ादिमा थीं, आप बयान करती हैं कि हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا सारी रात नवाफ़िल अदा फ़रमातीं और सुब्हे सादिक़ की इब्तिदा में मुसल्ले ही पर कुछ देर नींद कर लेतीं और जब रोशनी फैलने लगती तो

---

1 ......سیر اعلام النبلاء للذہبی، الرقم:۷۹۶منصور بن المعتمر، ج۶،ص۱۹۹۔

2 ......الأعلام للزرکلی، رابعۃ العدویۃ، ج۳، ص۱۰۔

घबरा कर नींद से बेदार हो जातीं और फ़रमाने लगतीं : "ऐ नफ़्स ! तू कब तक सोता रहेगा और कब उठेगा ? अ़न क़रीब तू ऐसी नींद सोएगा कि फिर क़ियामत तक न उठ सकेगा।" सारी ज़िन्दगी येही मा'मूल रहा यहां तक कि इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गईं।[1]

फ़रामीन :

....जब बन्दा नेक काम (इख़्लास के साथ) करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के अ़मल के उ़यूब व नक़ाइस उस पर ज़ाहिर कर देता है पस वोह दूसरों के उ़यूब को छोड़ कर अपने उ़यूब व नक़ाइस दूर करने में मश्ग़ूल हो जाता है।[2]

....मैं ने जब भी अज़ान सुनी क़ियामत के दिन के मुनादी को याद किया और मैं ने जब भी गर्मी महसूस की महशर की गर्मी को याद किया।[3]

....आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْهَا को जिन्न नज़र आया करते थे, और फ़रमाती हैं कि "मैं हूरे ऐ़न को अपने घर में आते जाते देखती हूं और वोह अपने कपड़ों से मुझे ढांप लेती हैं।"[4]

मोहलत बहुत थोड़ी है :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि मसमअ़ बिन आ़सिम कहते हैं कि हज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْهَا ने मुझे बताया कि एक मरतबा मैं इतनी बीमार हुई कि नमाज़े तहज्जुद अदा करना दुश्वार हो गया तो

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا،كتاب التهجد...، الرقم:١١٢، ج١،ص٢٦٨۔

2 ......طبقات الصوفية ، الرقم: ٩٢رابعة بنت اسماعيل، ج١،ص ٢٩١۔

3 ......المرجع السابق 4 ......المرجع السابق

मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है : "जब तमाम लोग सो रहे हों उस वक़्त तुम्हारा नमाज़ पढ़ना नूर है और तुम्हारी नींद उस नमाज़ की ज़िद है जो तुम्हारे लिये सुतून है और अगर तुम समझो तो तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारे लिये बहुत बड़ी ग़नीमत है और मोहलत बहुत थोड़ी है और किसी काम का आ़दी या तो उस काम के सबब फ़ाइदा उठाता है या नुक़्सान।" फिर वोह मेरी नज़रों से ओझल हो गया और अज़ाने फ़ज्र के सबब मेरी आंख खुल गई।[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾20﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सब्ज़ रंग की उ़म्दा पोशाक :

इन की ख़ादिमा बयान करती हैं कि जब विसाल का वक़्त क़रीब आया तो मुझे बुला कर इरशाद फ़रमाया : 'ऐ अ़ब्दा ! मेरी मौत की ख़बर किसी को न देना, और मुझे मेरे इसी जुब्बे में कफ़न दे देना।" येह बालों से बना हुवा जुब्बा था, इसी में आप शब बेदारी फ़रमाया करती थीं, हम ने इसी जुब्बे और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهَا की एक चादर में आप को कफ़न दे दिया जिसे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهَا ओढ़ा करती थीं।

तक़रीबन एक साल बा'द मैं ने इन्हें ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهَا ने मोटे रेशम की सब्ज़ पोशाक पहन रखी थी और बारीक रेशम की सब्ज़ चादर ओढ़ी हुई थी, इस से पहले मैं ने कभी ऐसा ख़ूब सूरत लिबास न देखा था। मैं ने पूछा : "ऐ राबिआ़ ! वोह जुब्बा और ओढ़नी कहां गए जिस में हम ने आप को कफ़न दिया था ?" इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम !

---

1 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۲۳، ج۳،ص ۱۱۹ ۔

उस कफ़न के बदले मुझे येह अ़ज़ीमुश्शान लिबास अ़त़ा कर दिया गया है जिसे तुम देख रही हो और मेरे उस कफ़न को लपेट कर मह़फ़ूज़ कर दिया गया है और मुझे आ'ला इ़ल्लिय्यिन में पहुंचा दिया गया है ताकि क़ियामत के दिन इसी कफ़न के बदले मुझे पूरा पूरा षवाब अ़त़ा किया जाए।" मैं ने पूछा : "दुन्या में आप इसी करम नवाज़ी की ख़ात़िर अ़मल किया करती थीं ?" इरशाद फ़रमाया : " येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के दोस्तों के लिये इन्आ़म व इकराम है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अ़ब्दा बिन्ते अबी किलाब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْهَا के साथ क्या मुआ़मला पेश आया ?" इरशाद फ़रमाया : "अफ़्सोस हम तो पीछे रह गए और वोह बुलन्द दरजात पाने में हम से भी सबक़त ले गई।" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह कैसे ? ह़ालांकि लोगों में तो आप का मक़ामो मर्तबा उन से ज़ियादा था।" इरशाद फ़रमाया : "उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं होती थी कि उन की सुब्ह़ और शाम किस ह़ाल में होती है।" मैं ने फिर पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक ज़ैग़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का क्या हुवा ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह जब चाहते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार कर लेते हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر का क्या ह़ाल है ?" इरशाद फ़रमाया : "वाह वाह ! उन के तो क्या कहने ! उन्हें उन की उम्मीदों से कहीं बढ़ कर अ़त़ा किया गया।" मैं ने कहा : "मुझे ऐसा अ़मल बताइये ! जिस के सबब मैं क़ुर्बे इलाही ह़ासिल कर सकूं।" इरशाद फ़रमाया : "कषरत के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करो, अ़न क़रीब इस की बरकत से तुम क़ब्र में ख़ुश ह़ाल हो जाओगी।"[1]

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب المنامات، الرقم:۵۱،ج۳،ص۵۱۔

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن कषरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुरजानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास सत्तू देखे, जिन्हें आप फांक रहे थे। मैं ने पूछा : "आप ऐसा क्यूं कर रहे हैं ?" तो फ़रमाया : "मैं ने (रोटी वग़ैरा) चबाने और येह सत्तू खा कर गुज़ारा कर लेने के दरमियान **70** तस्बीह़ात का फ़र्क़ पाया (या'नी इस ग़िज़ा को इस्ति'माल करने की बदौलत मैं सत्तर मरतबा ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान कर लेता हूं) लिहाज़ा **40** साल से मैं ने रोटी नहीं चबाई।"(1)

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र इस कषरत से करो कि लोग तुम्हें दीवाना कहने लगें।"(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि हम अपनी ज़बान को हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह से तर रखें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें कषरत से ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾21﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

नूरानी त़बाक़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग का बयान है : मैं ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के ह़क़ में दुआ़

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشھوتین، ج۳، ص۱۰۷۔

2 ......المسند للامام احمد، مسند ابی سعید، الحدیث: ۱۱۶۷۴، ج۴، ص۱۴۱۔

किया करता था। एक दफ़्आ़ मैं ने इन्हें ख़्वाब में देखा, फ़रमा रही थीं : “तुम्हारे तह़ाइफ़ (या'नी दुआ़एं और ईसाले षवाब) नूर के त़बाक़ों में हमारे पास आते हैं जो नूर के रूमालों से ढांपे होते हैं।”[1]

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन*﴿

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि षवाब फ़ौत शुदा मर्हूमीन को पहुंचता है। हमें भी चाहिये कि हम फ़ौत शुदा मुसलमानों को ईषाले षवाब करते रहें इस लिये कि जब कोई शख़्स मय्यित को ईसाले षवाब करता है तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام उसे नूरानी त़बाक़ में रख कर क़ब्र के किनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : “ऐ क़ब्र वाले ! येह हदिय्या (तोह़्फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।” येह सुन कर वोह ख़ुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं।[2]

क़ब्र में आह ! घुप अन्धेरा है
फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब

मौत को याद करने का फ़ाइदा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : जिसे मौत की याद ख़ौफ़ज़दा करती है क़ब्र उस के लिये जन्नत का बाग़ बन जाएगी।”

(جمع الجوامع،الحدیث:۳۵۱۶، ج۲، ص ۱۴)

---

1 ......الرسالة القشیریة، باب رؤیا القوم، ص ۴۲۴۔

2 ......المعجم الاوسط للطبرانی،الحدیث:۶۵۰۴، ج۵، ص ۳۷۔

﴾17﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब बिन मिस्कीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम अय्यूब बिन मिस्कीन क़स्साब, तमीमी, वासित़ी और कुन्यत अबुल अ़ला है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل ने फ़रमाया : आप अहले वासित़ के मुफ़्ती थे। ह़ज़रते सय्यिदुना मुर्राह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नेक इन्सान और षिक़ह (क़ाबिले ए'तिमाद रावी) थे।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा, सईद मक़्बुरी और अबू सुफ़्यान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن वग़ैरा से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इस्ह़ाक़ बिन यूसुफ़, यज़ीद बिन हारून, ख़लफ़ बिन ख़लीफ़ा और हुशैम (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) वग़ैरा ने इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **140** हि. को विसाल फ़रमाया।[1]

﴾22﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

नमाज़ रोज़े की बरकत :

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ला अय्यूब बिन मिस्कीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी आप के रब ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' इरशाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से दरगुज़र फ़रमाया।'' मैं ने पूछा : ''किस सबब से ?''

---

1 ......ميزان الاعتدال، الرقم:۱۲۸۵ ايوب بن مسكين، ج ۱، ص۳۰۷۔
تهذيب التهذيب،الرقم:۷۲۵ايوب بن ابی مسكين،ج۱،ص۴۲۶.

इरशाद फ़रमाया : ''रोज़े और नमाज़ की बरकत से।'' मैं ने फिर पूछा : ''क्या आप ने मन्सूर बिन ज़ाज़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को देखा है ?'' उन्हों ने फ़रमाया : ''उन के महल्लात को तो हम दूर से देखते हैं।''[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾18﴿ सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

हालात :

क़श्फ़ुल ग़ुम्मा, सिराजुल उम्मा, इमामुल अइम्मा हज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का नाम नो'मान बिन षाबित तैमी और कुन्यत अबू हनीफ़ा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 70 हि. में कूफ़े में पैदा हुवे और 150 हि. में वफ़ात पाई।[2] इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने हज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन अबी रबाह़, अ़ल्क़मा बिन मर्षद, सलमा बिन कुहैल, अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन अ़ली, हिश्शाम बिन उ़र्वा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم और इस के इलावा दीगर बड़े बड़े ताबेईन से इल्म हासिल किया। हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ुफ़र, इमाम अबू यूसुफ़, इमाम मुहम्मद, वकीअ़ ईसा बिन यूनुस, मुहम्मद बिन बिशर और बे शुमार उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इल्म हासिल किया। इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुज्तहिद फ़िल मज़हब, बहुत बड़े फ़क़ीह, साहिबे कश्फ़, परहेज़गार, सख़ावत करने वाले और मसाइल में

---

1 ......موسوعة للامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم: ٨٢، ج٣، ص٦٥۔

2 ......نزهة القاری، ج ١، ص ١٦٥، ٢١٩۔

गहरी नज़र रखते थे।[1] इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुतअ़द्दद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुलाक़ात की और रिवायात भी सुनीं। जिन के नाम येह हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष बिन जज़ ज़ुबैदी, अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा, वाषिला बिन अस्क़अ़, अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस और मा'क़िल बिन यसार (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان)[2] इस के इ़लावा अबू तुफ़ैल आ़मिर बिन वाषिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और एक सह़ाबिय्या ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा बिन्ते अ़जरद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मुलाक़ात की और रिवायत भी सुनी।[3] इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रेशम के कपड़ों का कारोबार करते थे। इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि "मैं जब भी इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखता तो आप की आंखों और गालों में रोने के आषार होते।"[4] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی इरशाद फ़रमाते हैं कि "तमाम लोग फ़िक़्ह में इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मोह़ताज हैं।" इब्राहीम बिन इकरिमा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से बड़ा फ़क़ीह और परहेज़गार नहीं देखा।"[5]

---

1 ......تہذیب التہذیب،الرقم: ۷۴۳۳ النعمان بن ثابت،ج۸،ص ۵۱۶،۵۱۷۔

2 ......مناقب الامام الاعظم للموفق،الجزء الاول،ص ۲۹،۳۶۔

3 ......مناقب الامام الاعظم للکردی، الجزء الاول،ص ۱۲،۱۹۔

4 ......مناقب الامام الاعظم للموفق، الجزء الاول،ص ۱۹۸ ، ۲۱۴۔

5 ......تاریخ بغداد، الرقم:۷۲۹۷ النعمان بن ثابت، ج ۱۳،ص ۳۴۵،۳۴۷۔

फ़रामीन :

۞....आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अकसर येह दुआ़ किया करते थे : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस का दिल हम से तंग हो उस के लिये हमारा दिल कुशादा फ़रमा ।"(1)

۞....ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने शागिर्दे रशीद यूसुफ़ बिन ख़ालिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिह़ाज़ से इ़ज़्ज़त देना, शुरफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना, बड़ों का अदब व एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना, आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, ताजिरों से प्यार व मह़ब्बत से पेश आना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्त़ान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दत में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना ।"(2)

मदनी इल्तिजा : इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के मजीद फ़रामीन और नसीह़तों को जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **43** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "**इमामे आ'ज़म की वसिय्यतें**" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

---

(1)......تاریخ بغداد، الرقم:۷۲۹۷ النعمان بن ثابت، ج۱۳، ص۳۵۱۔

(2)......مناقب الامام الاعظم للکردی،الجزء الثانی،ص۸۹۔

﴾23﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

मुझे बख़्श दिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन ह़सन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया गया।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾19﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमा मिस्अ़र बिन किदाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ का पूरा नाम मिस्अ़र बिन किदाम बिन ज़ुहैर बिन उ़बैद बिन ह़ारिष है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ इराक़ के शैख़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ बयान करते हैं कि हम में जब किसी मुआ़मले में इख़्तिलाफ़ होता तो हम ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के पास आते। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ कहते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ से अफ़्ज़ल किसी को नहीं देखा।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने 152 हि. ब मुत़ाबिक़ 769 ई. को मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में वफ़ात पाई।(2)

---

1 ......الروض الفائق فی المواعظ والرقائق،المجلس الثانی والثلاثون،ص ۱۷۴۔

2 ......سیر اعلام النبلاء،الرقم:۱۰۵۶ مسعر بن کدام ،ج۷،ص۱۲۷۔

حلیۃ الاولیاء،الرقم:۳۸۹مسعر بن کدام ،ج۷،ص۲۴۶،۲۵۰۔

फ़रामीन :

۞....मेरी येह ख़्वाहिश है कि मैं रोने वाली ग़मगीन आवाज़ को सुनूं।

۞....बेशक जन्नत और दोज़ख़ बनी आदम के ज़िक्र को सुनती हैं जब बन्दा येह दुआ करता है : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से जन्नत का सुवाल करता हूं। तो जन्नत कहती है : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू इसे पहुंचा दे।" और जब बन्दा येह दुआ करता है : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं जहन्नम से तेरी पनाह मांगता हूं तो जहन्नम कहती है : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की हिफ़ाज़त फ़रमा।" जब बन्दा इन दोनों को याद नहीं करता तो फ़िरिश्ते कहते हैं : "लोग दो अज़ीम चीज़ों से ग़ाफ़िल हो गए।"(1)

﴾24﴿ रहमत भरी हिकायत

अहले आस्मान की ख़ुशी :

हज़रते सय्यिदुना मुस्अब बिन मिक़दाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام बयान करते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में इस हाल में देखा कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते अक़्दस थामा हुवा है और दोनों तवाफ़े ख़ानए का'बा में मसरूफ़ हैं। हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या मिस्अ़र बिन किदाम इन्तिक़ाल कर गए हैं?" इरशाद फ़रमाया : "हां और इन की वफ़ात पर अहले आस्मान को ख़ुशी हासिल हुई।"(2)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

(1)......حلية الاولياء،الرقم ٣٨٩ مسعر بن كدام ، ج٧،ص ٢٥٦ـ

(2)......حلية الاولياء، مِسعَر بن كِدام، الرقم:١٠٣٧٥، ج٧،ص٢٤٧ـ

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बे नियाज़ में दुआ़ गो हैं :

वासित़ा प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया
अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

﴾20﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ह़ालात :

इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र बिन अबू अ़म्र युह़मद, कुन्यत अबू अ़म्र और दिमश्क़ की एक मश्हूर जगह **औज़ाअ़** की वजह से **औज़ाई** कहलाए **88** हि. को पैदा हुवे। जलीलुल क़द्र अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया जिन में चन्द नाम येह हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबी रबाह़, ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِين और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम षौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْهِم) जैसे बड़े बड़े अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया।

मुल्के शाम में आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से बढ़ कर सुन्नत का कोई आलिम न था। अहले शाम फ़त्वा लेने में आप ही की त़रफ़ रुजूअ़ करते थे। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तक़रीबन 70 हज़ार मसाइल के जवाबात दिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी की मलामत से नहीं डरते थे, ह़क़ बात कहते और मुश्किल मुआ़मलात से नहीं घबराते थे। आख़िरी उ़म्र में लबनान के शहर बैरूत आ गए थे और यहीं 158 हि. को आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल हुवा।[1]

फ़रामीन :

۞....मोमिन बात कम और अ़मल ज़ियादा करता है और मुनाफ़िक़ बात ज़ियादा और अ़मल कम करता है।

۞....जो साअ़त भी बन्दा दुन्या में गुज़ारेगा, कल बरोज़े क़ियामत (दुन्यावी दिनों और लम्ह़ों के ए'तिबार से) हर रोज़ और हर लम्हे बन्दे पर पेश की जाएगी तो जो साअ़त उस ने बिग़ैर ज़िक्रुल्लाह के गुज़ारी होगी उसे देख कर उस का दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएगा उस पर ह़सरत त़ारी होगी, तो अब बन्दा ग़ौर कर ले कि उस वक़्त क्या कैफ़िय्यत होगी जब हर दिन और रात, हर साअ़त उस पर पेश की जाएगी।

۞....आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि "पांच चीज़ें ऐसी हैं जिन पर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और भलाई के साथ उन की पैरवी करने वाले लोग कारबन्द हैं : जमाअ़त को लाज़िम पकड़ना, सुन्नत की पैरवी करना, मस्जिद आबाद करना, क़ुरआने मजीद की तिलावत करना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना।"[2]

---

1 ......تهذيب التهذيب، الرقم: ۴۰۷۸ عبدالرحمن بن عمرو، ج۵،ص۱۴۸،۱۵۰۔

2 ......حلية الاولياء، الرقم:۳۵۴ ابوعمرو الاوزاعی، ج۶، ص۱۵۲،۱۵۳۔

﴾25﴿ रहमत भरी हिकायत

उ-लमा का दरजा :

यज़ीद बिन मज़्ऊर कहते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को उन के विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू अ़म्र ! कोई ऐसा अ़मल बताइये कि जिस के ज़रीए मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल कर सकूं।" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने यहां उ़-लमा के दरजे से बड़ा दरजा नहीं देखा और इन के बा'द ग़मज़दा लोगों का दरजा है।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन और उ़-लमाए हक़ के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं और इल्मे दीन के बाइ़स आ़लिम अ़वाम से अफ़्ज़ल होता है मगर अफ़्सोस कि आज कल इल्मे दीन की त़रफ़ हमारा रुजहान बिल्कुल कम होता चला जा रहा है। आज अपने होनहार बच्चों को मग़रिबी ता'लीम ज़रूर दिलाई जाती है मगर सुन्नतों की तर्बिय्यत की कोई परवाह नहीं की जाती। ज़हीन बच्चे के बारे में हर मां की येही आरज़ू होती है कि मेरा बच्चा डॉक्टर बने हर बाप की तमन्ना होती है कि मेरा लाल इन्जिनियर बन जाए। बच्चा अगर ज़ियादा ज़हीन हो तो मज़ीद आ'ला ता'लीम दिलवाने के लिये अमरीका, लन्दन वग़ैरा के काफ़िरों के सिपुर्द करने से भी गुरेज़ नहीं किया जाता। मगर आह ! अ़दमे दिल चस्पी है तो इस्लामी माहोल व दर्सगाहों से है। अगर बच्चा बिल

(1) ......تاریخ مدینة دمشق، الرقم: ۳۹۰۷،عبد الرحمن بن عمرو بن یُحمَد ابی عمرو ابوعمرو الاوزاعی،ج۳۵،ص ۲۲۹۔

फ़र्ज़ ज़ियादा शरारती है या मा'ज़ूर है तो बा'ज़ अवक़ात जान छुड़ाने के लिये ना चार किसी दर्सगाह में दाख़िल करवा दिया जाता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इल्म और उ़-लमा की ता'ज़ीम करने और इख़्लास के साथ इल्मे दीन सीखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

﴾21﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बिस्त़ाम इमाम वासित़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बिस्त़ाम शो'बा बिन ह़ज्जाज बिन वर्द अ़तकी वासित़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ह़दीष के बहुत बड़े इमाम थे, ह़ाफ़िज़, अ़क़्ल व फ़हम और पुख़्तगी में अपनी मिषाल आप थे । **82** हि. ब मुत़ाबिक़ **701** ई. को मक़ामे वासित़ में पैदा हुवे और वहीं जवान हुवे । फिर पूरी ज़िन्दगी बसरा में रिहाइश पज़ीर रहे । ह़त्ता कि **160** हि. ब मुत़ाबिक़ **776** ई. को बसरा में इन्तिक़ाल फ़रमा गए । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ही वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने इराक़ में मुह़द्दिषीन के मरातिब की जांच पड़ताल की और ज़ईफ़ और मतरूक रावियों को ज़ाहिर किया । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : ह़दीष के मुआ़मले में ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तन्हा एक जमाअ़त के क़ाइम मक़ाम हैं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "अगर ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

न होते तो इराक़ में ह़दीष की मा'रिफ़त न पहुंचती।" ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत बड़े अदीब और शाइ़र भी थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हम ने इ़ल्मे शे'र में ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ज़ियादा इ़ल्म वाला किसी को नहीं देखा।"(1)

﴾26﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

ख़िदमते ह़दीष के सबब मग़फ़िरत हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ुद्दूस बिन मुह़म्मद अल ह़ब्ह़ाबी कहते हैं कि मैं ने अपने वालिद को येह कहते हुवे सुना : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना शो'बा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उन के इन्तिक़ाल के 7 दिन बा'द ख़्वाब में देखा कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हाथ पकड़े हुवे हैं और उन दोनों पर नूर की क़मीसें हैं। मैं ने पूछा : " ऐ अबू बिस्त़ाम ! مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" मैं ने पूछा : "किस सबब से ?" इरशाद फ़रमाया : रिवायते ह़दीष में सच्चाई से काम लेने, इस की नश्रो इशाअ़त और इस मुआ़मले में अमानत का ह़क़ अदा करने के सबब।" फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह अश्आ़र कहे (जिन का तर्जमा येह है :)

(1).....मुझे मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में एक मह़ल अ़त़ा फ़रमाया जिस के एक हज़ार दरवाज़े हैं और वोह चांदी और जवाहिरात से बने हुवे हैं।

(2).....मुझे जन्नत में ख़ालिस शराब (त़हूर), ख़ालिस सोने का ज़ेवर और जगमगाता ताज अ़त़ा किया गया है।

---

1 ......الأعلام للزرکلی، شعبۃ بن الحجاج، ج۳،ص ۱۶۴ ۔

(3)......मेरे लिये शराबे त़हूर के साथ फल के बजाए हूरों का बोसा था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ख़ास तूर पर मुझे अ़क़ीक़ (या'नी सुर्ख़ हीरों) का ऐसा महल अ़त़ा हुवा है जिस की मिट्टी अ़म्बर की है।

(4)......और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ तमाम उ़लूम के माहिरे शो'बा ! मेरे कुर्ब से लुत्फ़ अन्दोज़ हो क्यूंकि मैं तुम से और शब बेदारी करने वाले अपने बन्दे मिस्अ़र से राज़ी हूं।

(5)......मिस्अ़र के लिये येह ए'ज़ाज़ काफ़ी है कि वोह अ़न क़रीब मेरी ज़ियारत करेगा। मैं उसे अपना कुर्ब अ़त़ा करूंगा तो वोह बिला हि़जाब मेरा दीदार करेगा।"[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾22﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ्यान बिन सईद सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अमीरुल मोअमिनीन फ़िल ह़दीष थे।[2] 97 हि. ब मुत़ाबिक़ 716 ई. को कूफ़ा में पैदा हुवे। वहीं ज़िन्दगी गुज़ारी। उ़लूमे दीनिय्या और तक़्वा व परहेज़गारी में अपने ज़माने के इमाम थे। अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मन्सूर ने आप को गवर्नर बनाना

1......سیر اعلام النبلاء للذھبی،الرقم:۱۰۸۱ شعبۃ بن الحجاج بن الورد، ج۷،ص۱۶۷ ۔

2......उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام ने ह़दीष के रावियों के दरजे, फ़हम की कुव्वत और कषरते ह़िफ़्ज़ वग़ैरा की बिना पर उन के कुछ अल्क़ाब रखे हैं और वोह येह हैं :

(I)....**मुस्निद :** जो ह़दीष को उस की अस्नाद के साथ रिवायत करे ख़्वाह वोह ह़दीष की मुराद जानता हो या न जानता हो।

(II).....**मुह़द्दिष :** जो रिवायत व दरायत के ए'तिबार से ह़दीष में मश्ग़ूल हो और उस ने रावियों के नामों को जम्अ़ किया हो और वोह अपने ज़माने में ......,

चाहा लेकिन आप ने इन्कार कर दिया। 144 हि. ब मुताबिक़ 761 ई. में कूफ़ा से तशरीफ़ ले गए और पहले मक्कए मुकर्रमा फिर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا में रिहाइश पज़ीर हो गए। फिर ख़लीफ़ा महदी ने आप को अपने अ़हद में त़लब किया मगर आप रूपोश हो गए। फिर ह़रमैन शरीफ़ैन से बसरा तशरीफ़ ले गए और वहीं 161 हि. ब मुताबिक़ 778 ई. को गुमनामी की ह़ालत में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। ह़दीष में दो किताबें "जामेअ़ कबीर" और जामेअ़ सग़ीर" और इल्मे फ़राइज़ में एक किताब तालीफ़ फ़रमाई।(1)

.....कषीर राविया़ें और रिवायात पर मुत्त़लअ़ हो और इस मुआ़मले में वोह नुमायां व मुमताज़ हो ह़त्ता कि इस बारे में उस की किताबत और ज़ब्त़ मश्हूरो मा'रूफ़ हो।

(III)....**ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष :** वोह मुह़द्दिष जो एक लाख अह़ादीष की असानीद व मतून का आ़लिम हो।

(IV).....**हुज्जत फ़िल ह़दीष :** वोह मुह़द्दिष जिसे तीन लाख ह़दीषें असानीद व मतून के साथ याद हों।

(V).....**ह़ाकिम फ़िल ह़दीष :** वोह मुह़द्दिष जिसे जुम्ला अह़ादीष मरविय्या असानीद व मतून के साथ याद हों और वोह राविया़ें के ह़ालात से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ हो।

(VI).....**अमीरुल मोअमिनीन फ़िल ह़दीष :** जो हिफ़्ज़ और इतक़ान के ए'तिबार से इल्मे ह़दीष में फ़ाइक़ हो। इस मन्सब पर फ़ाइज़ बा'ज़ के नाम येह हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी, ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी और मुजद्दिदे आ'ज़म सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान (رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِم)

(نصابِ اصول حدیث، ص ۲۰ـتذکرۃ الحفاظ، ج ۱، ص ۳-۴ـجامع الاحادیث، ج ۱، ص ۴۰۷)

(1)......تہذیب التہذیب، الرقم: ۲۵۱۹ سفیان بن سعید، ج ۳، ص ۳۹۹ـالاعلام للزرکلی، سفیان الثوری، ج ۳، ص ۱۰۴

फ़रामीन :

۞....आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कुव्वते ह़ाफ़िज़ा में आ'ला नमूना थे, ख़ुद फ़रमाते हैं :"मैं ने जो बात भी याद की उसे भुला नहीं ।"

۞....जो नेक काम में ह़राम माल ख़र्च करता है वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो पेशाब से कपड़े को पाक करता है, कपड़ा पानी से ही पाक होता है और गुनाहों को सिर्फ़ ह़लाल ही मिटाता है ।(1)

﴾27﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

रोज़ाना दो मरतबा दीदारे इलाही :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "मुझ पर रह़्म फ़रमाया ।" पूछा गया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क्या ह़ाल है ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह उन लोगों में से हैं जो हर रोज़ दो मरतबा अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हां ह़ाज़िर होते हैं ।"(2)

﴾28﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

त़लबे ह़दीष के सबब बख़्शिश :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अ़ली बिन बुदैल ने कहा कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी

1 ......الأعلام للزركلى،سفيان الثورى،ج٣،ص١٠٥۔
كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة الثامنة و العشرون،ص١٣٥۔

2 ......احياء علوم الدين ،باب منامات المشائخ ،ج٥،ص٢٦٦۔

आप के साथ क्या मुआ़मला किया गया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने त़लबे ह़दीष के सबब मेरी बख़्शिश फ़रमा दी ।"(1)

﴾29﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कु़र्ब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी आप के साथ क्या मुआ़मला किया गया ?" जवाब दिया : "मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से जा मिला हूं ।"(2)

﴾30﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

तक़्वा के सबब नजात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन ह़म्माद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد ने फ़रमाया : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देखा कि जन्नत में एक दरख़्त से दूसरे दरख़्त तक उड़ते फिर रहे हैं तो अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप को येह मक़ाम कैसे ह़ासिल हुवा ?" फ़रमाया : "तक़्वा व परहेज़गारी की वजह से ।" फिर पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन आ़सिम

---

1 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم: ۲۶، ج۳، ص ۴۹ـ

2 ......المرجع السابق، الرقم:۴۵ـ

رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क्या ह़ाल है ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह हम से इतने बुलन्द हैं कि हम उन्हें ऐसे ही देखते हैं जैसे ज़मीन से सितारे को देखा जाता है ।"(1)

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तक़्वा कहते हैं हर उस चीज़ से बचना जिस से दीन को नुक़्सान पहुंचने का ख़ौफ़ व अन्देशा हो । तक़्वा एक ऐसी ख़स्लत है कि जो इसे इख़्तियार कर लेता है दुन्या व आख़िरत की भलाइयां उस में जम्अ़ हो जाती हैं, ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ ने अगले पिछले तमाम लोगों को तक़्वा व परहेज़गारी की ताकीद फ़रमाई है और जा बजा इस का आ़म हुक्म भी इरशाद फ़रमाया है । चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَقَدۡ وَصَّیۡنَا الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡکِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ وَ اِیَّاکُمۡ اَنِ اتَّقُوا اللّٰہَ (پ٥،النساء: ١٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि अल्लाह से डरते रहो ।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी गोरे को किसी काले पर कोई फ़ज़ीलत नहीं और न किसी अ़रबी को किसी अ़जमी पर कोई फ़ज़ीलत है मगर तक़्वा के साथ, तुम सब आदम عَلَیْہِ السَّلَام की अवलाद हो और वोह मिट्टी से बनाए गए हैं ।"(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (ता'लीमे उम्मत के लिये) इस त़रह़ दुआ़ मांगा करते थे :

1 ......المرجع السابق، باب ما روى من الشعرفى المنام،الرقم:٢٧٥،ص١٣٥ـ

2 ......المعجم الكبير، الحديث:١٦،ج١٨،ص١٣،مفهومًا ـ

“اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡـئَلُکَ الۡھُدٰی وَالتُّقٰی وَالۡعَفَافَ وَ الۡغِنٰی” या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा, पाक दामनी और तवंगरी का सुवाल करता हूं।”[1] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें तक़्वा इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾31﴿ रहमत भरी हिकायत

दूसरा क़दम जन्नत में :

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : “مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?” जवाब दिया : “मैं ने पहला क़दम पुल सिरात़ पर रखा और दूसरा जन्नत में।”[2]

﴾32﴿ रहमत भरी हिकायत

रात में इबादत के सबब बख़्शिश हो गई :

अबू ह़ातिम राज़ी कहते हैं क़बीसह ने बयान किया कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को उन के इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : “مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?” जवाब दिया : मैं ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ को बिला ह़िजाब देखा। उस ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “ऐ इब्ने सईद ! मुबारक हो ! मैं तुझ से राज़ी

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء...الخ، باب التعوذ من شرماعمل الخ، الحدیث: ۲۷۲۱، ص۱۴۵۷۔

2 ......الرسالۃ القشیریۃ، باب رؤیا القوم، ص ۴۲۲۔

हूं क्यूंकि जब रात हो जाती थी तुम आंसूओं और रिक़्क़ते क़ल्बी के साथ मेरी इ़बादत करते थे। (जन्नत) तुम्हारे सामने है जो मह़ल लेना चाहो ले लो और मेरी ज़ियारत करो क्यूंकि मैं तुम से दूर नहीं हूं।''(1)

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

﴾24﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना हम्माम बिन यह़्या बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम हम्माम बिन यह़्या बिन दीनार अल औ़ज़ी, अल मुह़ल्लिमी, अल बसरी, कुन्यत अबू बक्र है और येह भी कहा गया कि अबू अ़ब्दुल्लाह है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ग़ुलाम नाफ़ेअ़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी, अनस बिन सीरीन, अ़त़ा बिन अबी रबाह़, क़तादा, षाबित बुनानी (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) और इन के इ़लावा कषीर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से इ़ल्मे ह़दीष ह़ासिल किया। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक, वकीअ़, अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी, अबू दावूद, शैबान बिन फ़र्रुख़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم) और इस के इ़लावा ख़ल्क़े कषीर ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इ़ल्मे ह़दीष ह़ासिल किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीष के मुआ़मले में क़ाबिले ए'तिमाद थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 164 हि. को रमज़ानुल मुबारक के महीने में विसाल फ़रमाया।(2)

---

1 ......حلية الاولياء، سفيان الثورى، الرقم: ٩٧٠٠، ج٧، ص٧٧۔

2 ......سيراعلام النبلاء، الرقم: ١٠٩٣ همام بن يحيى، ج٧، ص٢٢٨-٢٢٥۔

﴾33﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

एह़सान जताने वाला जहन्नम में :

मुअम्मल बिन इस्माईल कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना हम्माम बिन यह़्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا صَنَعَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : बख़्श दिया और मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमाया और अ़म्र बिन उ़बैद को जहन्नम में जाने का हुक्म दिया गया और उस से कहा गया कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में येह येह कहा करता था और उस की मशिय्यत को झुटलाता था और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने के ज़रीए एह़सान जताता था।[1]

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

﴾24﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन नुसैर ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दावूद बिन नुसैर ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सूफ़ी इमाम थे। अ़ब्बासी ख़लीफ़ा "महदी" के दौर के हैं, आबाई वत़न ख़ुरासान है जब कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत कूफ़ा में हुई। त़लबे इ़ल्म में बग़दाद का सफ़र किया, सिराजुल उम्मा, काशिफ़ुल ग़ुम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से इक्तिसाबे इ़ल्म किया फिर कूफ़ा में गोशा नशीनी इख़्तियार

1 ......ميزانِ الاعتدال، الرقم: ٦٨٤٤عمرو بن عبيدبن باب، ج٣، ص٢٦٨۔

फ़रमा ली और सारी ज़िन्दगी इबादत में गुज़ार दी यहां तक कि **165** हि. ब मुत़ाबिक़ **781** ई. को इस दारे फ़ानी से रिह़लत फ़रमा गए। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के एक हम अ़स्र आ़लिम बयान करते हैं कि "अगर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पिछली उम्मतों में होते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर उन का कोई वाक़िआ़ (क़ुरआने मजीद में) बयान फ़रमाता।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अपने ज़माने के हुक्मरानों और उ़-लमाए दीन के साथ कई अहम वाक़िआ़त मन्क़ूल हैं।[1]

फ़रामीन :

....दुन्या से इस त़रह़ दूर रहो जिस त़रह़ दरिन्दे से दूर रहते हो।

....अकषर फ़रमाया करते : "ज़ोहद के लिये यक़ीन काफ़ी है, इबादत के लिये इल्म काफ़ी है और किसी काम में मश्ग़ूल होने के लिये इबादत काफ़ी है।"

....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : "दुन्या को उस एक दिन की त़रह़ बनाओ जिस में रोज़ा रखो और इफ़्त़ार मौत पर करो।"[2]

﴾34﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आख़िरत की भलाई :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि

---

1 ......الأعلام للزركلی، ابو سلیمان الطائی، ج۲، ص۳۳۵۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، الرقم:۳۹۳داود بن نصیر الطائی، ج۷، ص۳۹۹۔

ह़फ़्स बिन बुग़ैल मुरहिबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : “ऐ अबू सुलैमान ! आप ने आख़िरत की भलाई को कैसा पाया ?” फ़रमाया : “आख़िरत में तो भलाई ही भलाई है।” मैं ने फिर पूछा : “आप कहां तक पहुंचे ?” फ़रमाया : “اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं भलाई तक पहुंच चुका हूं।” फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन सईद षौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जो भलाई और भलाई वालों से मह़ब्बत करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुस्कुरा कर फ़रमाया : “इन्हें भलाई ने भलाई वालों तक पहुंचा दिया।”(1)

﴾35﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

इस्तिक़्बाल के लिये जन्नत सजाई गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : “एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल की रात मैं ने ख़्वाब में नूर की बारिश और आस्मान से फ़िरिश्तों को नीचे उतरते और ऊपर चढ़ते देखा तो पूछा : “आज कौन सी रात है ?” उन्हों ने कहा : “आज रात ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی का इन्तिक़ाल हो गया है और इन के इस्तिक़्बाल के लिये जन्नत सजाई जा रही है।”(2)

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:٦٤، ج٣،ص٥٨۔

2 ......الرسالة القشیریة، باب رؤیا القوم،ص ٤٢٠۔

﴾25﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा बसरी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی

ह़ालात :

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का नाम ह़म्माद बिन सलमा बिन दीनार बसरी और कुन्यत अबू सलमा है। ह़ज़रते सय्यिदुना हु़मैदुत्त़वील عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الوَكِيۡل आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मामूं और उस्ताज़ हैं। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ षिक़ह (क़ाबिले ए'तिमाद रावी), फ़सीह़ कलाम करने वाले, कषीर अह़ादीष रिवायत करने वाले और बसरा के मुफ़्ती थे। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कषरत से तिलावते क़ुरआन, इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ अ़मल और भलाई के काम करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना शिहाब बिन मुअ़म्मर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अब्दालों में शुमार किये जाते थे।" आप का इन्तिक़ाल ज़ुल ह़िज्जा 167 हि. को मस्जिद में नमाज़ की ह़ालत में हुवा।(1)

फ़रामीन :

۞....अगर मुझे इख़्तियार दिया जाए कि मेरा ह़िसाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ले या मेरे वालिदैन, तो मैं येह इख़्तियार करूंगा कि मेरा ह़िसाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ले क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे वालिदैन से ज़ियादा मुझ पर रह़्म फ़रमाने वाला है।

۞....आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुझे ह़ाकिम बुलाए कि तू उस को قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ सुना दे तो तू उस के पास मत जाना।"(2)

---

(1)......تہذیب التہذیب، الرقم:۱۵۵۸ حمّاد بن سلمۃ،ج۲،ص۴۲۲-۴۲۳۔
میزان الاعتدال، الرقم:۲۲۵۰، حمّاد بن سلمۃ،ج۱،ص۵۷۷۔

(2)......حلیۃ الاولیاء، الرقم:۳۷۲-حمّاد بن سلمۃ،ج۶،ص۲۷۰۔

﴾36﴿ रहमत भरी हिकायत

जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़ता फ़रमाई :

एक शख़्स का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : ''مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' जवाब दिया : ''बख़्श दिया, मुझ पर रह़म फ़रमाया और जन्नतुल फ़िरदौस में मुझे जगह अ़ता फ़रमाई।'' मैं ने कहा : ''किस सबब से ?'' फ़रमाया : ''येह कलिमात कहने के सबब :

(یَاذَا الطَّوْلِ ، یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ،یَاکَرِیْمُ اَسْکِنِّیْ الْفِرْدَوْس)

***तर्जमा :** ऐ बड़े इन्आ़म वाले, ऐ अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले, ऐ सब ख़ूबियों वाले, मुझे जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़ता फ़रमा।*

पस उस ने मुझे जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़ता फ़रमाई।''(1)

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन***﴿

۞۞۞۞۞۞

﴾26﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ बिन ह़य्य عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़क़ीह, ज़ाहिद और इबादत गुज़ार थे और रिवायते ह़दीष में षिक़ह व मो'तमद रावी और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष हैं। यह़्या बिन बुकैर कहते हैं कि हम ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की, कि ''ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा बयान फ़रमा दीजिये मगर आप रोने की वजह से बयान पर क़ादिर न हो सके।''

(1) ......موسوعۃ للامام ابن ابی الدنیا، کتا ب المناما ت، الرقم:۳۴۰،ج۳،ص۱۵۷۔

वकीअ़ कहते हैं आप, आप की वालिदा और भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इ़बादत के लिये रात को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम कर रखा था (कि रात का एक तिहाई आप, एक तिहाई आप की वालिदा, और एक तिहाई आप के भाई इ़बादत करते थे) जब आप की वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया तो दोनों भाइयों ने रात को दो ह़िस्सों में तक़्सीम कर लिया। फिर जब आप के भाई का इन्तिक़ाल हो गया तो आप पूरी रात इ़बादत करते थे।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ाफ़िज़ अबू नोएम कहा करते थे : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इ़लावा आज तक कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा जिस से किसी मुआ़मले में कोई ख़त़ा न हुई हो।"(2)

169 हि. ब मुत़ाबिक़ 786 ई. को आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दुन्याए नापाईदार से सफ़रे आख़िरत पर रवाना हुवे।(3)

फ़रामीन :

۞....नेक अ़मल बदन में क़ुव्वत, दिल में नूर और आंखों में रोशनी का सबब है और बुरा अ़मल बदन में कमज़ोरी, दिल की सियाही और बीनाई से मह़रूमिय्यत का सबब है।

---

1 ......تذکرۃ الحفاظ، ج ۱، ص ۱۵۹۔

تہذیب التھذیب، الرقم: ۱۳۰۷ حسن بن صالح، ج ۲، ص ۲۶۶۔

2 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم: ۴۴۸ الحسن بن صالح، ج ۳، ص ۱۴۷۔

3 ......تہذیب التھذیب، الرقم: ۱۳۰۷ حسن بن صالح، ج ۲، ص ۲۶۷۔

....बा'ज़ अवक़ात शैत़ान किसी के लिये बुराई का एक दरवाज़ा खोलने के लिये अच्छाइयों के 99 दरवाज़े खोल देता है ।[1]

....इस्ह़ाक़ बिन ख़लफ़ कहते हैं एक मरतबा मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ बाज़ार गया । देखा कि लोग अपने अपने कारोबार में मश्ग़ूल हैं तो आप रोने लगे फिर इरशाद फ़रमाया : "लोग अपने अपने मुआ़मलात में मश्ग़ूल हैं ह़त्ता कि इसी ह़ालत में इन्हें मौत आ जाएगी ।"[2]

....एक वोह वक़्त था मैं इस ह़ालत में सुब्ह़ करता कि मेरे पास एक दिरहम भी न होता था और अब गोया तमाम दुन्या मेरे लिये इकठ्ठी कर दी गई है और मेरी मुठ्ठी में है ।[3]

﴾37﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सब से बेहतर अ़मल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन सैफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर कहा : "मुझे आप से मिलने की बड़ी ख़्वाहिश थी, बताइये आप के पास क्या ख़बरें हैं ?" फ़रमाया : "तुम्हें खुश ख़बरी हो ! मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने ज़न रखने से बेहतर कोई अ़मल नहीं पाया ।"[4]

---

1 ......حلية الاولياء، الرقم:۳۹۲علی والحسن، الحديث:۱۰۹۴۱،۱۰۹۴۳،ج۷، ص۳۸۵

2 ......المرجع السابق،الحديث:۱۰۹۳۲، ج۷، ص ۳۸۴۔

3 ......المرجع السابق، الحديث:۱۰۹۳۴، ج۷،ص ۳۸۴۔

4 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، کتاب المنامات، الرقم:۴۸،ج۳،ص ۵۰۔

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़-लमा फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ हुस्ने ज़न रखने का मा'ना येह है कि बन्दा येह गुमान रखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म फ़रमा कर उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा।" और फ़रमाते हैं कि ह़ालते सिह़्ह़त में बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाबात का ख़ौफ़ भी रखे और उस की रह़मत का उम्मीद वार भी रहे और उस की येह दोनों ह़ालतें बराबर रहें और एक क़ौल येह भी मिलता है कि "ह़ालते सिह़्ह़त में ख़ौफ़ ज़ियादा ग़ालिब रहे और जब मौत की अ़लामतें ज़ाहिर हों तो उम्मीद ज़ियादा ग़ालिब हो जाए या सिर्फ़ और सिर्फ़ उम्मीद बाक़ी रहे।" क्यूंकि ख़ौफ़ से मक़्सूद गुनाहों से बचना और नेक आ'माल की कषरत पर उभारना होता है और अब येह मुतअ़ज़्ज़र हैं (या'नी नहीं हो सकते)। इसी त़रह़ मरीज़ के ह़क़ में भी ह़ालते उम्मीद बेहतर है।(1)

﴾38﴿ रह़मत भरी हि़कायत

कषरते गिर्या व ज़ारी के सबब मग़्फ़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ बनू तमीम के एक शख़्स के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ सुब्ह़े सादिक़ तक नवाफ़िल अदा फ़रमाया

1 ......شرح النووی علی مسلم، ج۹، جزء۱۷، ص۲۱۰ـفیض القدیر، ج۲، ص۵۲۶

करते थे। फिर अपनी नमाज़ की जगह पर बैठ कर ज़ारो क़ित़ार रोते और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के भाई अपने हुजरे में बैठ कर रोते थे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदए मोह़तरमा दिन रात ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोती रहती थीं फिर उन का इन्तिक़ाल हो गया, इन के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन सालेह़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा और इन के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए। ख़्वाब में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देख कर आप की वालिदा के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : "ख़ौफ़े ख़ुदा में हमेशा रोने के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अबदी सुरूर अ़त़ा फ़रमाया है।" फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के भाई के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया : "वोह भी ख़ैरिय्यत से हैं।" और जब ख़ुद आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो येह फ़रमाते हुवे चले गए कि "हम तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़फ़्वो करम पर भरोसा रखते थे।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

❁❁❁❁❁❁

कामिल मोमिन की निशानी

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो नेकी पर ख़ुश और बुराई पर ग़मगीन होता है, वोह (कामिल) मोमिन है।"

(المستدرک، کتاب الایمان، باب لیس المومن......الخ، الحدیث:۳۶، ج۱، ص۱۶۳)

---

1 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۶۷، ج۳، ص۵۹۔

﴾27﴿ हज़रते ख़लील बिन अहमद बिन अम्र बिन तमीम अल फ़राहीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى

हालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लुग़त व अदब के इमाम थे। इल्मे उरूज़ के बानी और मश्हूर नह्वी सीबवियह के उस्ताज़ भी थे। हज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد बसरा में सि. **100** हि. ब मुताबिक़ सि. **718** ई. को पैदा हुवे और सारी ज़िन्दगी हालते फ़क्र व सब्र में गुज़ार दी। सादगी और आजिज़ी का आलम येह था कि बाल बिखरे हुवे, कपड़े फटे पुराने और पाऊं मैले होते और लोगों में इस तरह गुमनाम थे कि पहचाने नहीं जाते थे। नज़र बिन शुमैल कहते हैं : "देखने वालों ने हज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد की मिष्ल कोई शख़्स नहीं देखा, यहां तक कि ख़ुद उन्हों ने अपना कोई षानी नहीं पाया।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लोगों की सहूलत के लिये इल्मे हिसाब में एक नया तरीक़ा ईजाद करने पर ग़ौरो फ़िक्र शुरूअ़ किया और एक दफ़्आ़ इसी में ग़ौरो ख़ौज़ करते हुवे जा रहे थे कि इसी दौरान एक मस्जिद में दाख़िल हुवे तो बे ख़याली में मस्जिद के एक सुतून से टकरा गए, जिस के सबब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **170** हि. ब मुताबिक़ सि. **786** ई. को शहीद हो गए। सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द हज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد के वालिदे गिरामी से पहले किसी और का नाम **अहमद** नहीं रखा गया था।[1]

1 ......الأعلام للزركلي، الخليل بن احمد، ج ٢، ص ٣١٤ـ

फ़रामीन :

❁....इन्सान अपने मुअ़ल्लिम की ख़ता को उस वक़्त तक नहीं जानता जब तक कि वोह किसी दूसरे मुअ़ल्लिम के पास न बैठे।

❁....इन्सान अपनी अ़क़्ल और ज़ेहन के ए'तिबार से उस वक़्त कामिल व अकमल होता है जब वोह **40** साल की उ़म्र को पहुंचता है और येही वोह उ़म्र है जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़ष फ़रमाया।

❁....इन्सान का ज़ेहन सब से ज़ियादा पाक व साफ़ (तरो ताज़ा) सह़र के वक़्त होता है।(1)

«39» रहमत भरी हिकायत

अफ़्ज़ल अ़मल :

अ़ली बिन नस्र कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد को ख़्वाब में देखा तो कहा : "मैं ने आप से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द किसी को नहीं देखा।" फिर मैं ने उन से पूछा : "مَاصَنَعَ اللّٰہُ بِکَ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "हम जो दुन्या में अ़मल किया करते थे वोह कुछ नहीं, हम ने "سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکْبَرُ" से बढ़ कर अफ़्ज़ल कोई अ़मल नहीं पाया।"(2)

*«**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**»*

---

(1)......وفیات الاعیا ن،الرقم:۲۲۰،ج۲،ص۲۰۷۔

(2)......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا،کتاب المنامات، الرقم:۷۳،ج۳،ص۱۲۔

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन कलिमात को पढ़ने की अह़ादीष में बड़ी फ़ज़ीलत आई है हमें भी चाहिये कि इन कलिमात को विर्दे ज़बान रखें कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल कलिमात चार हैं : سُبْحٰنَ الله और اَلْحَمْدُ لِله और لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله और اَللهُ اَكْبَرُ" (1)

और एक रिवायत में यूं है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को प्यारे कलिमात चार हैं : "سُبْحٰنَ الله और اَلْحَمْدُ لِله और لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله और اَللهُ اَكْبَرُ जिस कलिमे से इब्तिदा करो नुक़्सान देह नहीं ।"(2)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "येह तरतीब अ़ज़ीमत है और इस के ख़िलाफ़ रुख़्सत है या'नी बेहतर येह है कि इस तरतीब से इन का विर्द करे, (या'नी पहले سُبْحٰنَ اللّٰهِ" फिर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ फिर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ फिर اَللّٰهُ اَكْبَرُ) अगर इस के ख़िलाफ़ भी किया तो ह़रज नहीं ।"(3)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ" कहना मुझे उन सब से प्यारा है जिन पर सूरज तुलूअ़ होता है ।(4)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन कलिमात को पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

❁❁❁❁❁❁

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب الايمان والنذور، ج ۴، ص ۲۹۷ ـ

2 ......صحيح مسلم، كتاب الاداب، الحديث: ۲۱۳۷، ص ۱۱۸۱ ـ

3 ......مراة المناجيح، ج ۳، ص ۳۳۶ ـ

4 ......صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء ..الخ، الحديث: ۲۶۹۵، ص ۱۴۴۶ ـ

﴾28﴿ हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

हालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम मालिक बिन अनस बिन अबी आमिर बिन अम्र है। मज़हबुल मुहज़्ज़ब मालिकिय्या के अज़ीमुल मर्तबत पेशवा, कामिल अक़्ल वाले, पुर वक़ार, परहेज़गार और ह़दीष का बहुत अदब करने वाले थे। एक मरतबा ह़दीष का दर्स देते हुवे बिच्छू काटने लगा तो शायद दस मरतबा आप को काटा उस तक्लीफ़ के सबब आप का चेहरा कुछ मुतग़य्यर हो कर माइल ब ज़र्दी हो जाता था लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने न दर्से ह़दीष ख़त्म फ़रमाया और न कुछ लग़्ज़िश आप के कलाम में ज़ाहिर हुई, मजलिस ख़त्म होने के बा'द चेहरा मुतग़य्यर होने का सबब पूछा गया तो सारा वाक़िआ़ बयान कर के फ़रमाया : येह सब्र अपनी ताक़त की वजह से न था बल्कि मह़्ज़ ह़दीषे नबवी की ता'ज़ीम की वजह से था।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में कभी सुवार हो कर न निकलते थे और इस की वजह येह बयान फ़रमाते थे कि "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि मेरे जानवर के पाउं ऐसी ज़मीन को रौंदें जिस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ हो।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की विलादत **93** हि. में हुई और विसाल रबीउ़ल अव्वल **179** हि. को हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की किताब "अल मुअत़्त़ा" बहुत मश्हूरो मा'रूफ़ है।[1]

---

(1)......تذکرۃ الحفاظ للذہبی، الرقم:۱۹۹ مالک بن انس، ج ۱، الجزء الاول، ص ۱۵۷۔
بستان المحدثین، ص ۲۰، ۲۲۔

फ़रामीन :

۞....इल्म एक नूर है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है अ़ता फ़रमाता है और येह कषरते रिवायत से ह़ासिल नहीं होता।

۞....मुझे येह बात पहुंची है कि बेशक बरोज़े क़ियामत उ़-लमा से उस चीज़ के बारे में सुवाल होगा जिस चीज़ के बारे में अम्बिया से सुवाल होगा।[1]

﴾40﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

जनाज़ा देख कर दुआ़ पढ़ने की बरकत :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "मुझे इस दुआ़ की बदौलत बख़्श दिया गया जो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जनाज़ा देख कर पढ़ा करते थे :

"سُبْحٰنَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَایَمُوْتُ"

तर्जमा : वोह ज़िन्दा पाक है जिसे कभी मौत नहीं आएगी।[2]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

۞۞۞۞۞۞

---

1 ......حلية الاولياء، الرقم:٣٨٦ مالک بن انس،ج٦، ص٣٤٨۔

2 ......الرسالة القشيرية،باب رؤيا القوم، ص٤١٨۔

﴾29﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बिशर सीबवैह رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

ह़ालात :

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का नाम अ़म्र बिन उ़षमान बिन कुम्बर, कुन्यत अबू बिशर है। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के गाल चूंकि सेब की त़रह़ थे इस लिये आप को सीबवैह कहा जाता है। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इल्मे नह़्व के बहुत बड़े इमाम थे इसी लिये आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को इमामुन्नह़्व के लक़ब से याद किया जाता है। बसरा में आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इल्मे फ़िक़्ह और इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया और इल्मे नह़्व ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अह़मद, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन ह़बीब رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِم वग़ैरा से ह़ासिल किया। बसरा से बग़दाद आए फिर फ़ारस की त़रफ़ सफ़र किया। **32** साल की उ़म्र में **180** हि. को शीराज़ में इन्तिक़ाल हुवा। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की लिखी हुई "किताबुस्सीबवैह" बहुत मश्हूर है।(1)

﴾41﴿ रह्मत भरी हि्कायत

इमामुन्नह़्व की बख़्शिश का सबब :

हि़कायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सीबवैह رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे कषीर भलाई

(1) سیر اعلام النبلاء، الرقم: ۱۲۶۹ سیبویہ، ج۷، ص ۵۸۳۔

अ़ता फ़रमाई क्यूंकि मैं ने उस के नामे पाक को **आ'रफुल मआ़रिफ़** (ख़ासुल ख़ास) क़रार दिया था।"(1)

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

﴾30﴿ हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर सलीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی

ह़ालात :

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर सलीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की कुन्यत अबू मुहम्मद है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे। बसरा के नेकूकार और इबादत गुज़ार लोगों में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का शुमार होता था। मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रोज़ाना **500** रक्अ़त नवाफ़िल और एक तिहाई क़ुरआने मजीद तिलावत फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी, सईद जुरैरी और आ़सिम अल अह़वल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم वग़ैरा से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी, फ़ुज़ैल बिन इयाज़ और बिशर ह़ाफ़ी, शैबान बिन फ़र्रुख़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) वग़ैरा ने इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया। **180** हि. को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वफ़ात पाई।(2)

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ पहले के मुसलमानों को इबादत का किस क़दर ज़ौक़ होता था और अफ़्सोस ! आज कल

1 ......اللباب فی علوم الکتاب، ص ۱۳۸۔

2 ......تهذیب التهذیب، الرقم: ۷۴۹ بشر بن منصور، ج ۱، ص ۴۷۸۔

के मुसलमानों को ज़ियादा तर ह़ुसूले माल ही का शौक़ होता है अव्वल तो इबादत करते ही नहीं और अगर टूटी फूटी इबादत कर भी लें तो नाज़ करते फूले नहीं समाते और अपने नेक आ'माल मषलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, मसाजिद की ख़िदमत, ख़ल्क़े ख़ुदा की मदद और समाजी फ़लाह़ व बहबूद के कामों वग़ैरा को अपने ख़याल में "कारनामा" तसव्वुर करते हुवे हर जगह चहकते ए'लान करते फिरते ढंडोरा पीटते नहीं थकते। आह ! उन का ज़ेहन किस त़रह़ बनाया जाए, उन को ता'मीरी और अख़्लाक़ी सोच किस त़रह़ फ़राहम की जाए, उन्हें किस त़रह़ बावर कराया जाए कि मेरे नादान भाइयों ! इस त़रह़ बिला ज़रूरते शरई अपनी नेकियों का ए'लान रियाकारी है और रियाकारी सरासर तबाहकारी है ऐसा करने से न सिर्फ़ आ'माल बरबाद होते हैं बल्कि रियाकारी का गुनाह नामए आ'माल में दर्ज कर दिया जाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रियाकारी से हम सब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रामीन :

❁....मैं जब किसी दुन्यवी काम के बारे में सोचता हूं तो आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल हो जाता हूं और मुझे येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हो जाता है कि कहीं मेरी अ़क़्ल ज़ाएअ़ न हो जाए।

❁....जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की गई कि "आप अपने दैन (क़र्ज़) के बारे में वसिय्यत फ़रमा दीजिये।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जब मैं अपने रब से येह उम्मीद रखता हूं कि वोह मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा तो क्या मैं येह उम्मीद न रखूं कि वोह मेरे दैन

को भी मुआफ़ फ़रमा देगा।" जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल हो गया तो बा'ज़ लोगों ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का दैन अदा कर दिया।[1]

....आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ त़वील नमाज़ पढ़ा करते थे। एक मरतबा एक शख़्स पीछे खड़ा देख रहा था। आप जान गए। जब फ़ारिग़ हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "मेरी इबादत तुझे ह़ैरत व तअ़ज्जुब में न डाले कि शैत़ान ने भी मलाइका के साथ ज़मानए दराज़ तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत की है।"

....मैं जिस शख़्स के पास भी बैठा जब उस से जुदा हुवा तो मैं ने येह जान लिया कि अगर इस के साथ न बैठता तो येह मेरे लिये बेहतर होता।[2]

﴾42﴿ रह़मत भरी हिकायत

मुआ़मले को आसान पाया :

बिशर बिन मुफ़ज़्ज़ल कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं ने मुआ़मले को उस से ज़ियादा आसान पाया जितना मैं खुद को थका दिया करता था।"[3]

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

---

1 ......حلية الاولياء، الرقم : ٣٦٨ بشربن منصور، الحدیث:٨٥٣٠، ٨٥٣٢، ج٦، ص ٢٦٠۔

2 ......سير اعلام النبلاء، الرقم:١٢٧٦، بشر بن منصور، ج٧، ص ٥٩٠۔

3 ......المرجع السابق۔

﴾31﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पूरा नाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक बिन वाज़ेह़ ह़न्ज़ली عَلَیْہِ رَحمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی है और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष, शैख़ुल इस्लाम, मुजाहिद, ताजिर और साह़िबे तसानीफ़ थे। आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी सारी ज़िन्दगी ह़ज, तिजारत और जिहाद के लिये सफ़र करते गुज़ारी। ह़दीष, फ़िक़्ह, अ़रबी लुग़त, अय्यामुन्नास, शुजाअ़त और सख़ावत के मुतअ़ल्लिक़ कई कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। **118** हि. ब मुत़ाबिक़ **736** ई. को ख़ुरासान में पैदा हुवे और **181** हि. ब मुत़ाबिक़ **797** ई. को रूम की जंग से वापसी पर फ़ुरात के किनारे मक़ामे हीत पर इन्तिक़ाल फ़रमा गए। आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने जिहाद के मुतअ़ल्लिक़ किताब तस्नीफ़ फ़रमाई और "अर्रक़ाइक़" नामी एक किताब भी आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तस्नीफ़ है।[1]

फ़रामीन :

....जिस ने उ़-लमा को ह़क़ीर समझा उस की आख़िरत को नुक़्सान होगा, जिस ने ह़ाकिम को ह़क़ीर जाना उस की दुन्या को नुक़्सान होगा और जिस ने अपने भाइयों को ह़क़ीर समझा उस की मुरव्वत ख़त्म हो जाएगी।[2]

....मोमिन मुआ़फ़ी का बहाना तलाश करता है और मुनाफ़िक़ ग़लत़ियां तलाश करता है। [3]

1 ......الأعلام للزركلی، ابن المبارك (عبد الله بن المبارك)، ج۴، ص۱۱۵۔

2 ......تاريخ الاسلام للذهبی، عبد الله بن المبارك، ج۱۲، ص۲۳۲۔

3 ......احياءِ علوم الدين، كتاب آداب الالفة، الباب الثانی، ج۲، ص۲۲۱۔

﴾43﴿ रहमत भरी हिकायत

जंग में शिर्कत के सबब मग़फ़िरत :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَافَعَلَ بِكَ رَبُّكَ" या'नी आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।" अ़र्ज़ की गई : "ह़दीष की ख़िदमत करने की वजह से ?" फ़रमाया : "रूम की जंग में शिर्कत करने की वजह से।"(1)

﴾44﴿ रहमत भरी हिकायत

बेहतरीन रफ़ीक़ :

हज़रते सय्यिदुना सख़्र बिन राशिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاجِد बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "क्या आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه विसाल नहीं फ़रमा गए हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "مَافَعَلَ بِكَ رَبُّكَ या'नी आप के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" मैं ने पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का क्या ह़ाल है ?" इरशाद

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، كتاب المنامات، الرقم: ٢٧٣، ج٣، ص١٣٥ ـ

फ़रमाया : "वाह वाह ! वोह तो उन लोगों के साथ हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्आ़म फ़रमाया है या'नी अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) सिद्दीक़ीन, शोहदाए किराम और सालिह़ीन (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) और येह कितने बेहतरीन रफ़ीक़ हैं ।"(1)

«45» रह़मत भरी ह़िकायत

अ़ज़ीम मग़फ़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़ुज़ैल बिन इयाज़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْهِمَا) फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल पाया ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह जो मैं दुन्या में करता था ।" मैं ने कहा : "क्या सरह़द की निगेहबानी और जिहाद ?" फ़रमाया : "जी हां ।" मैं ने फिर पूछा : "आप के साथ क्या मुआ़मला किया गया ?" इरशाद फ़रमाया : मुझे दाइमी मग़फ़िरत अ़त़ा की गई और मुझ से एक जन्नती औ़रत और एक हूर ने कलाम किया ।"(2)

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरह़द की निगहबानी और जिहाद करने की अह़ादीषे मुबारका में बड़ी फ़ज़ीलत आई है जिन में से चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:٦٣، ج٣، ص٥٧۔

2 ......المرجع السابق، الرقم:٧٢، ص٦١۔

۞....“अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन सरह़द की हि़फ़ाज़त करना दुन्या व माफ़ीहा (और जो कुछ इस में है) से बेहतर है ।”(1)

۞....“एक दिन और एक रात सरह़द पर पहरा देना, एक माह के रोज़ों और क़ियाम से बेहतर है और अगर वोह मर गया तो उस का येह अ़मल जारी रहेगा, उस का रिज़्क़ जारी किया जाएगा और वोह क़ब्र के फ़ितनों से मह़फ़ूज़ रहेगा ।”(2)

۞....“उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तुम में से जो शख़्स भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ज़ख़्मी होगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ख़ूब मा'लूम है कि कौन उस की राह में ज़ख़्मी हुवा है, तो वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा (कि उस के ज़ख़्म से ख़ून बह रहा होगा), रंग ख़ून का होगा और ख़ुश्बू मुश्क की होगी ।”(3)

۞....“उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुझे येह पसन्द है कि मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल कर दिया जाए, फिर मैं ज़िन्दा किया जाऊं फिर मुझे क़त्ल किया जाए, फिर मैं ज़िन्दा किया जाऊं फिर मुझे क़त्ल किया जाए, फिर मैं ज़िन्दा किया जाऊं फिर मुझे क़त्ल किया जाए ।”(4)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجھاد و السیر، باب فضل رباط یوم فی سبیل اللّٰہ، الحدیث: ۲۸۹۲، ج۲، ص۲۷۹ ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الرباط فی..الخ، الحدیث: ۱۹۱۳، ص ۱۰۵۹ ۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الجھاد و السیر، باب من یجرح فی سبیل اللّٰہ، الحدیث: ۲۸۰۳، ج۲، ص ۲۵۴ ۔

4 ......المرجع السابق، باب تمنی الشھادۃ، الحدیث: ۲۷۹۷، ج۲، ص ۲۵۲ ۔

﴾46﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

ह़दीष की ख़ाति़र सफ़र :

ज़करिय्या बिन अ़दी कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : ''مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' इरशाद फ़रमाया : ''ह़दीष की ख़ाति़र सफ़र करने की वजह से मुझे बख़्श दिया ।''(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । आमीन﴿*

❁❁❁❁❁❁

﴾32﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विय्या यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हाफ़िज़ुल ह़दीष और बसरा के मुह़द्दिष थे । 101 हि. में पैदा हुवे । ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इल्मे ह़दीष में महारत रखने वाले और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष हैं, मैं ने आप की मिष्ल किसी को नहीं देखा और जिस त़रह़ आप ह़दीष की सिह़्ह़त का लिहाज़ रखते थे इस त़रह़ किसी को नहीं देखा ।'' आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद ''उबुल्लह'' के ह़ाकिम थे । उन्हों ने तरके में 5 लाख दिरहम छोड़े लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन में से कुछ न लिया । 182 हि. में आप का विसाल हुवा ।(2)

---

1. الرحلة فی طلب الحدیث، باب ذکر الرحلة فی طلب الحدیث...الخ، ص ۹۰۔
2. سیراعلام النبلاء للذھبی، الرقم:۱۲۵۰ یزید بن زُریع، ج۷،ص ۵۴۵،۵۴۷۔

﴾47﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

नवाफ़िल की कषरत जन्नत में ले गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन उ़षमान ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं कि नस्र बिन अ़ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "किस सबब से ?" फ़रमाया : "कषरत से नवाफ़िल अदा करने की वजह से।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ारिग़ वक़्त यूं ही पड़े पड़े गुज़ारने के बजाए ज़िक्रो दुरूद और नवाफ़िल वग़ैरा में गुज़ारना चाहिये कि फिर मरने के बा'द मौक़अ़ नहीं मिल सकेगा। ज़िन्दगी में काफ़ी वक़्त फ़ारिग़ मिल सकता है लिहाज़ा "फ़रागत को मसरूफ़िय्यत से पहले ग़नीमत जानो" के तह़्त हो सके तो नवाफ़िल की कषरत कीजिये। नवाफ़िल का शौक़ बढ़ाने के लिये नवाफ़िल की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल ह़दीष शरीफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद

(1)......سیر اعلام النبلاء للذھبی، الرقم: ۱۲۵۰ یزید بن زُریع، ج۷، ص۵۴۶۔

फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे उस को मैं ने ए'लाने जंग दे दिया और मेरा बन्दा मेरी किसी महबूब शै से इस क़दर कुर्ब हासिल नहीं करता जितना कि फ़राइज़ से और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए मेरा कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे महबूब बना लेता हूं।"(1)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नवाफ़िल की कितनी बरकतें हैं कि नवाफ़िल पढ़ने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपना महबूब बना लेता है। लिहाज़ा अभी ज़िन्दगी में मौक़अ़ है कुछ कर लीजिये वरना मरने के बा'द बन्दा तरसेगा कि काश ! मुझे दो रक्अ़त नमाज़ का मौक़अ़ मिल जाए मगर आह ! उस वक़्त इजाज़त नहीं मिलेगी। लिहाज़ा अभी ज़िन्दगी में जो चाहें नेकियां कमा लें बा'द में मौक़अ़ हाथ न आएगा।

ता'रीफ़ और सआ़दत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیر البیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ:۷۱، ج۴، ص۳۸۸)

---

(1) صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث:۶۵۰۲، ج۴، ص۲۴۸۔

﴾33﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन ह़ारिष हुजैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हाफ़िज़ुल ह़दीष थे, कुन्यत अबू उ़षमान और बसरा के रहने वाले थे। इ़ल्म के मम्बअ़ व सर चश्मा, हर मुआ़मले में सूझ बूझ से काम लेने वाले, कामिल महारत रखने वाले और दियानत दारी के आ'ला मर्तबे पर फ़ाइज़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद क़त्तान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन ह़ारिष (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) से बेहतर किसी को नहीं देखा।" **119** हि. ब मुत़ाबिक़ **737** ई. को विलादत हुई और **186** हि. ब मुत़ाबिक़ **802** ई. को विसाल हुवा। बसरा में आप जैसा मुस्तक़िल मिज़ाज कोई शख़्स न था, इन्तिहाई अ़क़्लमन्द और दाना थे।[1]

﴾48﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आख़िरत का मुआ़मला सख़्त मगर बख़्शिश हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मदीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने बयान किया : मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन ह़ारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَارِث को सफ़ेद लिबास में मल्बूस देखा तो पूछा :

---

1 ......الأعلام للزركلی، الهُجَيمی، ج۲، ص۲۹۵۔

سیر اعلام النبلاء، الرقم: ۱۳۵۵ خالد بن الحارث، ج۸، ص۷۷۔

مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया : जवाब दिया : "अगर्चे आख़िरत का मुआमला निहायत ही सख़्त है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" फिर पूछा : हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सईद क़त्तान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ क्या मुआमला पेश आया ? फ़रमाया : "उन का मक़ामो मर्तबा हम से बुलन्द है।" मैं ने फिर पूछा : हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कैसे हैं ? इरशाद फ़रमाया : "वोह इल्लिय्यीन में हैं और रोज़ाना दो मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ होते हैं।"(1)

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿

﴾34﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हालात :

शैख़े ह़रम हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली फुज़ैल बिन इयाज़ बिन मसऊ़द तमीमी यरबूई मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बड़े इबादत गुज़ार और नेक आदमी थे। रिवायते ह़दीष में षिक़ह (बा ए'तिमाद) थे। बे शुमार लोगों ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया जिन में से हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی भी हैं।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 105 हि. ब मुत़ाबिक़ 723 ई. को समरक़न्द में पैदा हुवे। अबी वर्द में परवरिश पाई। जवानी में कूफ़ा तशरीफ़ लाए फिर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में मुस्तक़िल सुकूनत

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، باب ما روی من الشعر فی المنام، الرقم:۲۶۸، ج۳، ص ۱۳۴۔

इख़्तियार की। पहले आप अबी वर्द और सरख़स के दरमियानी अ़लाक़े में डाके डालते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तौबा का सबब येह बना कि आप को एक लौंडी से इ़श्क़ हो गया था। उस से मिलने के लिये दीवार पर चढ़ रहे थे कि आप ने एक तिलावत करने वाले को इस आयते मुबारका की तिलावत करते हुवे सुना :

اَلَمۡ یَاۡنِ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُہُمۡ لِذِکۡرِ اللّٰہِ (پ۲۷،الحدید:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं* ***अल्लाह*** *की याद के लिये।"*

तो आप ने कहा : ऐ मेरे रब वोह वक़्त आ गया है फिर आप वहां से लौट गए और रात गुज़ारने के लिये एक विराने में तशरीफ़ ले गए वहां एक क़ाफ़िला रुका हुवा था उन क़ाफ़िले वालों में से बा'ज़ ने कहा कि चलो हम यहां से रवाना होते हैं तो बा'ज़ ने कहा कि : "हम सुब्ह़ को रवाना होंगे क्यूंकि इस रास्ते पर फ़ुज़ैल नामी एक डाकू है जो हमें लूट लेगा।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जब उन की गुफ़्तगू सुनी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा की और उन क़ाफ़िले वालों को अमान दी फिर ह़रम में तशरीफ़ ले गए और मरते दम तक वहीं रहे। अबू अ़ली राज़ी कहते हैं कि मैं 30 साल तक ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बत में रहा मगर मैं ने आप को न कभी हंसते देखा और न ही मुस्कुराते देखा सिवाए उस दिन के जिस दिन आप के बेटे अ़ली का विसाल हुवा मैं ने आप से इस का सबब पूछा तो इरशाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस मुआ़मले को पसन्द फ़रमाया तो मैं ने भी इसे पसन्द किया।"

187 हि. ब मुत़ाबिक़ 803 ई. को मक्का ही में विसाल हुवा।[1]

---

[1] ......الاعلام للزرکلی، الفضیل بن عیاض، ج۵، ص ۱۵۳ ـ تاریخ دمشق، ج۴۸، ص ۳۸۲ ـ

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहा करते थे और मुसीबत पर सब्र कर के अज्रो षवाब के ख़ज़ाने लूटा करते थे हमारे अस्लाफ़ की तो येह शान होती थी कि तक्लीफ़ का भी इसी त़रह इस्तिक़्बाल करते थे जैसे राह़त का।

آنچہ اَزدوست مِیرَسَد نیکوست

या'नी वोह चीज़ जो दोस्त की त़रफ़ से पहुंचती है, अच्छी होती है।

मगर हम जैसे कम से कम इतना तो करें कि सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लें और जज़्अ़ फ़ज़्अ़ कर के आते हुवे षवाब को हाथ से न जाने दें और इतना तो हर शख़्स जानता है कि बे सब्री से आई हुई मुसीबत जाती न रहेगी फिर इस बड़े षवाब से मह़रूमी दोहरी मुसीबत है। किसी अ़ज़ीज़ के इन्तिक़ाल पर गिरेबान फाड़ना, मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना कूटना, रान पर हाथ मारना येह सब जाहिलिय्यत के काम और ह़राम हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के बेटे को दफ़्न किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुस्कुराने लगे जब इस का सबब पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : "मैं ने सोचा कि शैत़ान को रुस्वा करूं।"[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अव्वल सदमे पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रामीन :

۞....अपने मुसलमान भाइयों की ग़लत़ियों को मुआ़फ़ करना बहादुरी है।[2]

---

1 ......الزواجرعن اقتراف الکبائر، کتاب الصلوۃ، باب الجنائز، ج ۱، ص ۳۱۰۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ، الباب الثانی، ج ۲، ص ۲۲۱۔

۞....अगर तुम से पूछा जाए कि क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखते हो ? तो तुम ख़ामोश रहना, क्यूंकि अगर तुम कहोगे "नहीं" तो येह कुफ़्र होगा और अगर कहोगे "हां" तो झूट होगा।[1]

۞....अगर तुम से पूछा जाए कि क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हो ? तो तुम ख़ामोश रहना, क्यूंकि अगर कहोगे "नहीं" तो येह कुफ़्र होगा और अगर कहोगे "हां" तो तुम्हारा अन्दाज़ मह़ब्बत करने वालों जैसा नहीं है पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से डरो।[2]

۞....जिस ने लोगों को जान लिया उस ने राह़त व सुकून को पा लिया।[3]

۞....जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उस के ग़म कषीर हो जाते हैं और जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को नापसन्द फ़रमाता है तो उस पर दुन्या वसीअ़ हो जाती है।[4]

۞....लोगों की वजह से अ़मल छोड़ देना रिया है और लोगों के लिये अ़मल करना शिर्क है।[5]

﴾49﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

मुसीबत पर सब्र :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मक्की शख़्स ने बयान किया कि मैं ने सईद बिन सालिम को ख़्वाब में देख कर पूछा : "इस क़ब्रिस्तान में सब से अफ़्ज़ल कौन है ?"

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب الخوف و الرجاء، بیان درجات الخوف، ج۴، ص ۱۹۳ ۔

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب المحبۃ و الشوق، باب القول فی علامۃ ..الخ، ج۵، ص ۴۹ ۔

3 ......الاعلام للزرکلی، الفضیل بن عیاض، ج۵، ص ۱۵۳ ۔

4 ......تاریخ دمشق، الرقم : ۵۶۳۰ فضیل بن عیاض، ج۴۸، ص ۳۸۲ ۔

5 ......المرجع السابق ۔

जवाब दिया : ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ।" मैं ने पूछा : "वोह आप पर किस सबब से फ़ज़ीलत पा गए ?" उन्हों ने जवाब दिया : "इस लिये कि जब उन पर कोई मुसीबत आती तो वोह इस पर सब्र करते थे ।" मैं ने फिर पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन ईयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क्या हुवा ?" फ़रमाया : "उन्हें ऐसा लिबास पहनाया गया है जिस के किनारों के मुक़ाबले में दुन्या की कोई ह़ैषिय्यत नहीं ।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन﴿

﴾35﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد

ह़ालात :

मुह़र्रिर मज़्हबे ह़नफ़ी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد का मुकम्मल नाम मुह़म्मद बिन ह़सन बिन फ़रक़द शैबानी और कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है। आबाओ अजदाद "दिमश्क़" के शहर ह़रस्ता से तअ़ल्लुक़ रखते थे। वालिदे गिरामी दिमश्क़ से इराक़ के शहर वासित़ में आ गए और यहीं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد 132 हि. को पैदा हुवे फिर कूफ़ा चले आए और यहीं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नश्व नुमा हुई । इल्मे फ़िक़्ह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म से और इल्मे ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا से ह़ासिल किया । इन के इलावा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़, सुफ़्यान षौरी, मिस्अ़र बिन

(1) موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:٢٧٠، ج٣، ص١٣٢۔

किदाम, उ़मर बिन ज़र और मालिक बिन मिग़्वल (رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علَیْھِم) से भी इ़ल्म ह़ासिल किया। आप बहुत बड़े आ़लिम और मुज्तहिद फ़िल मसाइल थे। बेशुमार कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं कि "मुझ पर फ़िक़्ह में सब से ज़ियादा एह़सान ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد का है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد ने "रै" में 189 हि. को इन्तिक़ाल फ़रमाया और यहीं आप का मज़ार है।(1)

फ़रामीन :

....आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक मरतबा अपने घर वालों से फ़रमाया : दुन्या की किसी ह़ाजत के बारे में मुझ से सुवाल न करो ताकि मेरा दिल मश्ग़ूल न हो जाए जिस चीज़ की ज़रूरत हो मेरे वकील से ले लिया करो क्यूंकि इस से मेरी फ़िक्र कम और दिल को फ़राग़त नसीब होती है।(2)

....आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस शख़्स के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ूंगा जो कहता है कि क़ुरआन मख़्लूक़ है और अगर कोई ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ पढ़ने के बा'द मुझ से फ़तवा त़लब करेगा तो मैं नमाज़ के लौटाने का हुक्म दूंगा।"(3)

---

1 ......لسان المیزان، الرقم: ۷۲۵۷محمد بن الحسن، ج۶،ص ۲۴ - ۲۷۔
تاریخ بغداد، الرقم:۵۹۳محمد بن الحسن، ج ۲، ص ۱۶۹ تا ۱۷۸۔

2 ......تاریخ بغداد، الرقم:۵۹۳محمد بن الحسن،ج۲،ص ۱۷۳۔

3 ......شرح اصول اعتقاد اھل السنّت،سیاق ماروی من افتی فی...الخ،ج ۱،ص۲۶۵۔

﴾50﴿ रह़मत भरी हिकायत

मेरी रूह़ कब निकली :

किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد को ख़्वाब में देख कर पूछा : (كَيْفَ كُنْتَ فِيْ حَالِ النَّزْعِ) या'नी नज़्अ़ के वक़्त आप की क्या कैफ़िय्यत थी ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं उस वक़्त मुकातब ग़ुलाम[1] के मुतअ़ल्लिक़ एक मस्अले में ग़ौरो फ़िक्र कर रहा था मुझे तो पता ही नहीं चला कि मेरी रूह़ कब निकली।"[2]

हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां इस वाक़िए़ से हमारे बुज़ुर्गाने दीन के वक़्त की क़द्र के बारे में पता चलता है वहां येह भी पता चलता है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन को इ़ल्मे दीन से किस क़दर मह़ब्बत हुवा करती थी कि मरते वक़्त भी इ़ल्मे दीन सीखने में मश्ग़ूल रहा करते थे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन ह़ज़रात ने वक़्त की क़दर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये बड़े बड़े काम आसान कर दिये और उन के लिये अपनी तौफ़ीक़ की राहें खोल दीं और उन के हाथों अपने दीन के बड़े बड़े काम लिये। ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد के बारे में आता है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 999 कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं हैं।

---

❶.....**मुकातब ग़ुलाम की ता'रीफ़ :** "आक़ा अपने ग़ुलाम से माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो तू आज़ाद है और ग़ुलाम इस को क़बूल भी कर ले तो ऐसे ग़ुलाम को मुकातब कहते हैं।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 2 हिस्सा. 9 स.292)

❷.....राहे इ़ल्म, स. 82

«51» रहमत भरी हिकायत

इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم आ'ला इल्लिय्यीन में :

किसी ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से फ़रमाया : "मैं ने तेरे सीने को इल्म का मख़्ज़न इस लिये न बनाया था कि अ़ज़ाब दूं।" पूछा : "इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह मुझ से ऊपर दरजे में हैं।" दरयाफ़्त किया : "हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह तो आ'ला इल्लिय्यीन में हैं।"(1)

*«अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**»*

«36» हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन ख़ालिद बरमकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

हालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुकम्मल नाम यह्या बिन ख़ालिद बिन बरमकी और कुन्यत अबुल फ़ज़्ल है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत अ़क़्लमन्द, फ़सीहो बलीग़ थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा ने ख़लीफ़ा हारून रशीद को दूध पिलाया था, इस लिये ख़लीफ़ा

(1) الخیرات الحسان، ص ۹۶۔

हारून रशीद आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को या अबी (ऐ मेरे वालिद) कह कर पुकारते थे। हारून रशीद ने ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अपना वज़ीर मुक़र्रर किया और अपनी अंगूठी आप के सिपुर्द कर दी। आख़िरी उम्र में ख़लीफ़ा हारून रशीद ने किसी वजह से नाराज़ी के सबब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और आप के बेटे को क़ैद कर लिया और इसी क़ैद में मुहर्रमुल हराम **190** हि. को **70** साल की उम्र में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल हो गया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा आप के बेटे फ़ज़्ल बिन यह्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पढ़ाई और दरयाए फ़ुरात के किनारे "रबज़े हर्षमा" के मक़ाम पर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दफ़्न किया गया।[1]

फ़रामीन :

❁....जो अच्छी बात सुनो उसे लिख लिया करो और जब लिख लो तो उसे याद कर लिया करो और जब याद कर लो तो बयान कर दिया करो।

❁....दुन्या आने जाने वाली चीज़ है और माल आ़रिज़ी है, हम से पहले लोग हमारे लिये नमूना हैं और हम अपने बा'द वालों के लिये इब्रत हैं।[2]

---

1 ......وفيات الاعيان لابن خلكان، الرقم:٨٠٦،ابوالفضل يحيى بن خالد، ج۵، ص ۱۸۲،۱۹۰۔

اعلام للزركلى، يحيى البرمكى، ج۸،ص ۱۴۴۔

2 ......وفيات الاعيان لابن خلكان، الرقم:٨٠٦،ابوالفضل يحيى بن خالد،ج۵، ص ۱۸۴۔

﴾52﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आ़लिमे दीन की ख़िदमत का सिला :

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ख़ालिद बरमकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی हारून रशीद के वज़ीर थे आप हर महीने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی को एक हज़ार दिरहम भेजते थे और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی अपने सजदों में उन के लिये येह दुआ़ किया करते थे : "اَللّٰهُمَّ اِنَّ يَحْيٰى كَفَانِى اَمْرَ دُنْيَایَ فَاكْفِهِ اَمْرَ آخِرَتِهٖ तर्जमा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यह़्या ने दुन्यावी मुआ़मलात में मुझे दूसरों से बे नियाज़ कर दिया है तू भी आख़िरत के मुआ़मले में इसे काफ़ी हो जा।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ख़ालिद बरमकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को ख़्वाब में देख कर पूछा : " مَا صَنَعَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی की दुआ़ की बरकत से मुझे बख़्श दिया।"(1)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन*﴿

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि हमें उ़-लमा की ख़िदमत करते रहना चाहिये कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 140-141 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی

(1)......وفیات الاعیان،الرقم: ۸۰۲،ابو الفضل یحیی بن خالدبن برمک،ج۵،ص۱۹۰۔

फ़रमाते हैं : “(बरोज़े मह़शर) उ़-लमा के पास कुछ लोग आ कर अ़र्ज़ करेंगे : हम ने आप के लिये फुलां वक़्त में पानी भर दिया था कोई कहेगा : कि मैं ने आप को इस्तिन्जे के लिये ढेला दिया था, उ़-लमा उन तक की शफ़ाअ़त करेंगे।”

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ज़ाइले उ़-लमा के पेशे नज़र इन की ख़िदमत की तरग़ीब दिलाते हुवे मदनी इन्आ़म नम्बर **62** में फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस माह किसी सुन्नी आ़लिम (या इमामे मस्जिद, मुअज़्ज़िन, ख़ादिम) को **112** या **12** रूपे तोह़फ़तन पेश किये ? (नाबालिग़ अपनी ज़ाती रक़म से नहीं दे सकता)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उ़-लमा की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾37﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यज़ीद वासिती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम मुह़म्मद बिन यज़ीद बिन सईद किलाई वासिती़ और कुन्यत अबू सईद है। आबाओ अजदाद “मुल्के शाम” से तअ़ल्लुक़ रखते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **मुस्तजाबुद्दा'वात**, षिक़ह, षब्त फ़िल ह़दीष (ह़दीष में पुख़्ता) थे। ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने आप को अब्दालों में शुमार किया है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल वासित़ (इराक़) में **190** हि. को हुवा।[1]

1 ......تاریخ مدینۃ دمشق ، الرقم:۷۱۰۹ محمد بن یزید، ج۵۶،ص ۲۳۹،۲۴۵۔

﴾53﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

दुआ़ए वली की तासीर :

यज़ीद बिन हारून कहते हैं मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यज़ीद वासिती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى को उन की मौत के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا صَنَعَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "बख़्श दिया।" मैं ने पूछा : "किस सबब से ?" फ़रमाया : "एक मरतबा जुमुआ़ के दिन बा'द नमाज़े अ़स्र मजलिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى हमारे पास तशरीफ़ लाए। पस दुआ़ फ़रमाई और हम सब ने आमीन कहा। बस इसी सबब से हम सब को बख़्श दिया गया।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की दुआ़ का कैसा फ़ाइदा हुवा कि तमाम ह़ाज़िरीन की बख़्शिश हो गई। मुजद्दिदे आ'ज़म सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : पहली बार की ह़ाज़िरी में मिना शरीफ़ की मस्जिद में मग़्रिब के वक़्त ह़ाज़िर था, उस वक़्त मैं वज़ीफ़े बहुत पढ़ा करता था अब तो बहुत कम कर दिया है। بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰى मैं अपनी ह़ालत वोह पाता हूं जिस में फ़ुक़हाए किराम ने लिखा है कि "सुन्नतें भी ऐसे शख़्स को मुआ़फ़ हैं।" लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुन्नतें कभी न छोड़ीं।

---

1 ...... موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، الرقم:٣٣٧، ج٣، ص١٥٦، ١٥٧۔

नफ़्ल अलबत्ता उसी रोज़ से छोड़ दिये हैं, ख़ैर जब सब लोग मस्जिद से चले गए तो मस्जिद के अन्दरूनी ह़िस्से में एक साह़िब को देखा कि क़िब्ला रू वज़ीफ़े में मसरूफ़ हैं। मैं सेह़ने मस्जिद में दरवाज़े के पास था और कोई तीसरा मस्जिद में न था। यका यक एक आवाज़ गुनगुनाहट की सी अन्दर मस्जिद के मा'लूम हुई जैसे शहद की मख्खी बोलती है। फ़ौरन मेरे क़ल्ब में येह ह़दीष आई : "अहलुल्लाह के क़ल्ब से ऐसी आवाज़ निकलती है जैसे शहद की मख्खी बोलती है।" मैं वज़ीफ़ा छोड़ कर उन की त़रफ़ चला कि उन से दुआ़ए मग़्फ़िरत कराऊं, कभी मैं किसी बुज़ुर्ग के पास بِحَمْدِاللهِ تَعَالٰی दुन्यावी ह़ाजत ले कर न गया, जब गया इसी ख़याल से कि उन से दुआ़ए मग़्फ़िरत कराऊंगा। ग़र्ज़ दो ही क़दम उन की त़रफ़ चला था कि उन बुज़ुर्ग ने मेरी त़रफ़ मुंह कर के आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर तीन मरतबा फ़रमाया :

"اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَخِيْ هٰذَا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَخِيْ هٰذَا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَخِيْ هٰذَا"

(ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे इस भाई को बख़्श दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे इस भाई की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे इस भाई को मुआ़फ़ फ़रमा।)

मैं ने समझ लिया कि फ़रमाते हैं : "हम ने तेरा काम कर दिया अब तू हमारे काम में मुख़िल न हो।" मैं वैसे ही लौट आया।[1]

हमें भी चाहिये कि जब हम बुज़ुर्गाने दीन से दुआ़ करवाया करें तो कोशिश करें कि ख़ातिमा बिल ख़ैर, मग़्फ़िरत और आख़िरत की बेहतरी की दुआ़ करवाएं।

❁❁❁❁❁❁

1 ......ملفوظات اعلی حضرت،حصه چهارم،ص ۴۸۹۔

﴾38﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ الحَاكِم

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दियारे मिस्र के आ़लिम व मुफ़्ती थे। इल्मे फ़िक़ह में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَــيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَالِك के शागिर्द थे। बड़े मालदार थे लेकिन अपना सारा माल तह़सीले इल्म में ख़र्च कर दिया था। बादशाह के इन्आ़मात व अ़त़िय्यात से इजतिनाब फ़रमाते थे। सख़ावत करने वाले, इ़बादत गुज़ार, बहादुर, मुत्तक़ी और परहेज़गार शख़्स थे। **132** हि. में पैदा हुवे और **191** हि. माहे सफ़र में वफ़ात पाई।(1)

फ़रामीन :

❁....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ! बेशक रात की क़लील इ़बादत तक़्वा के साथ कसीर है और बिग़ैर तक़्वा के कसीर इ़बादत क़लील है।(2)

❁ ....ह़ारिस़ बिन मिस्कीन बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह दुआ़ फ़रमाते हुवे सुना : "اَللّٰھُمَّ امْنَعِ الدُّنْيَا مِنِّی وَامْنَعْنِی مِنْھَا या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या को मुझ से और मुझे दुन्या से दूर रख।"(3)

---

(1)......سیراعلام النبلاء ، الرقم:۱۳۵۳ عبد الرحمٰن بن القاسم،ج۸،ص ۷۲،۷۶۔
تذ کرۃ الحفاظ،الرقم:۳۴۶،عبد الرحمن بن القاسم،ج ۱ ، الجزء الاوّل، ص ۲۶۰۔
(2)......سیر اعلام النبلاء، الرقم:۱۳۵۳ عبد الرحمٰن بن القاسم،ج۸،ص ۷۴۔
(3)......سیر اعلام النبلاء، الرقم:۱۳۵۳ عبد الرحمٰن بن القاسم،ج۸،ص ۷۳۔

﴾54﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

इस्लामी सरह़द पर पहरादारी :

अ़ली बिन मा'बद कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने क़ासिम عليه رحمة الله الحاكم को ख़्वाब में देख कर पूछा कि "आप ने मसाइल को कैसा पाया ?" इस पर उन्हों ने उफ़ उफ़ कहा । मैं ने कहा कि "फिर किस अ़मल को आप ने सब से अच्छा पाया ?" फ़रमाया : "इस्लामी सरह़द पर पहरादारी को सब से अफ़्ज़ल पाया ।"(1)

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन*﴿

﴾39﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब मालिकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ह़ालात :

ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष, फ़क़ीहुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब बिन मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَالِك के शागिर्दों में से हैं । 17 साल की उ़म्र में त़लबे इ़ल्म में मसरूफ़ हुवे । जलीलुल क़द्र फ़क़ीह और मुह़द्दिष होने के साथ साथ बड़े इ़बादत गुज़ार भी थे । 125 हि. ब मुत़ाबिक़ 743 ई. में पैदा हुवे । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तसानीफ़ में से "**अल जामेउ़फ़िल ह़दीष**" और "**अल मुवत्त़ा**" हैं । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ओ़हदए क़ज़ा की पेशकश की गई लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे ठुकरा दिया और गुमनाम हो गए और अपने आप को अपने घर तक मह़दूद कर लिया ।(2)

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، الرقم:۱۳۵۳عبد الرحمن بن القاسم،ج۸،ص۷۳۔

2 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۱۳۷۷عبد اللّٰہ بن وھب بن مسلم، ج ۸،ص ۱۴۰۔

الأعلام للزرکلی، ابن وھب(عبد اللّٰہ بن وھب بن مسلم الفھری)،ج۴،ص ۱۴۴

बहरे इल्म :

हाफ़िज़ुल हदीष अहमद बिन सालेह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि इब्ने वहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक लाख हदीषें बयान की हैं। मैं ने इन से ज़ियादा कषीरुल हदीष किसी को नहीं देखा, इन से मरवी 70 हज़ार हदीषें हमें हासिल हुई हैं। हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बिन उ़षमान ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कैसे इल्म का समन्दर न हों कि इन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक, हज़रते सय्यिदुना लैष, हज़रते सय्यिदुना यह़या बिन अय्यूब और हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन हारिष (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) जैसे जलीलुल क़द्र अइम्मा से इल्म हासिल किया है।"[1]

ज़िन्दगी की तक़्सीम :

हज़रते सय्यिदुना सुहनून رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी ज़िन्दगी को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर रखा था। एक तिहाई सरहदों की हिफ़ाज़त में, एक तिहाई अहले मिस्र को इल्मे दीन सिखाने में और एक तिहाई बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करने में। मन्क़ूल है कि "आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 36 बार हज्जे बैतुल्लाह की सआ़दत हासिल की।" इब्ने ज़ैद ने कहा कि "हम इब्ने वहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को "इल्म का दीवाना" कहा करते थे।"[2]

---

1 ......سیر اعلام النبلاء للذهبی، الرقم:۱۳۷۷ عبد اللّٰه بن وهب بن مسلم،ج ۸، ص ۱۴۲۔

2 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۱۳۷۷ عبد اللّٰه بن وهب بن مسلم،ج۸،ص ۱۴۳

ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब ग़शी त़ारी हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन सईद हम्दानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی ने बयान किया कि "एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वह्‌ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़म्माम में दाख़िल हुवे तो एक क़ारी को येह आयते मुबारका पढ़ते सुना :

وَ اِذْ یَتَحَآجُّوْنَ فِی النَّارِ (پ۲۴، الغافر:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब वोह आग में बाहम झगड़ेंगे।*

तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़शी त़ारी हो गई।"[1]

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल **197** हि. ब मुत़ाबिक़ **813** ई. को मिस्र में हुवा।[2]

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लर्ज़ां व तर्सां रहा करते थे। हमें भी चाहिये कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ अपने दिल में बिठाएं और क़ुरआने पाक की इन आयात और उन अह़ादीषे मुबारका का मुत़ालआ़ करते रहें जिन से हमारे अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो। ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब येह होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए। अगर हमारे दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें वहां से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां हमारा

---

1 ......حلیۃ الاولیاء،عبد اللّٰہ بن وھب، الرقم: ۱۲۵۱۱، ج۸، ص ۳۶۳

2 ......الأعلام للزرکلی، ابن وھب، ج۴، ص ۱۴۴۔

गुमान भी न होगा जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारा 28, सूरए तलाक़ में इरशाद फ़रमाता है وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ یَرۡزُقۡہُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।" हमारे दुन्या व आख़िरत के मुआमले को आसान फ़रमा देगा जैसा कि आगे इरशाद फ़रमाता है : "وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مِنۡ اَمۡرِہٖ یُسۡرًا ﴿۴﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के काम में आसानी फ़रमा देगा।" और गुनाहों को मिटा कर बड़ा षवाब अ़ता फ़रमाएगा जैसा कि आगे फ़रमाया : "وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یُکَفِّرۡ عَنۡہُ سَیِّاٰتِہٖ وَ یُعۡظِمۡ لَہٗۤ اَجۡرًا ﴿۵﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस की बुराइयां उतार देगा और उसे बड़ा षवाब देगा।"

फ़रामीन :

❁....आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने नज़्र मानी कि जब भी किसी की ग़ीबत करूंगा तो एक रोज़ा रखूंगा। इस काम ने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया पस अगर ग़ीबत हो जाती तो मैं एक रोज़ा रख लेता, फिर मैं ने निय्यत की, कि जब भी किसी इन्सान की ग़ीबत करूंगा तो एक दिरहम सदक़ा करूंगा तो दराहिम की महब्बत की वजह से मैं ने ग़ीबत छोड़ दी।"(1)

❁....आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق से इल्म के मुक़ाबले में अदब ज़ियादा सीखा।"(2)

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، الرقم:۱۳۷۷ عبد اللّٰہ بن وھب، ج۸، ص۱۴۴۔

2 ......جامع بیان العلم، باب جامع فی آداب العالم و المتعلم، الحدیث:۵۹۹، ص۱۷۲۔

﴾55﴿ रहमत भरी हिकायत

सब से अफ़्ज़ल अमल :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बिन उषमान ज़हबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सुह़नून बिन सईद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمَجِيۡد ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम عليه رحمة الله الحاكم को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : मैं ने उस की बारगाह से वोही पाया जो मैं पसन्द करता था।" उन्हों ने फिर पूछा : "अपने आ'माल में से किस अमल को अफ़्ज़ल पाया ?" इरशाद फ़रमाया : "कुरआने हकीम की तिलावत को।" फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : "और मसाइल के बारे में क्या ख़याल है ?" तो उंगली से इशारा करते हुवे फ़रमाया : "इन को रहने दो।" फिर हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वहब رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया : "वोह आ'ला इल्लिय्यीन में हैं।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الۡمُبِيۡن कुरआने मजीद की तिलावत कषरत से किया करते थे। चुनान्चे, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : "बुज़ुर्गाने दीन की आदतें तिलावते कुरआने पाक के मुतअ़ल्लिक़ जुदागाना थीं बा'ज़ हज़रात तो एक दिन रात में आठ ख़त्म कर लेते थे

(1) سیر اعلام النبلاء للذہبی، الرقم:۱۳۷۷ عبد اللہ بن وھب...، ج۸، ص۱۴۵۔

चार दिन में और चार रात में। बा'ज़ ह़ज़रात चार, बा'ज़ दो और बा'ज़ एक और बा'ज़ लोग दो दिन में एक ख़त्म और बा'ज़ तीन दिन में, बा'ज़ पांच दिन, बा'ज़ सात दिन में और सात दिन में ख़त्म करना अकषर सह़ाबए किराम का मा'मूल था इस में लोगों के ह़ालात मुख़्तलिफ़ हैं बा'ज़ तो निहायत तेज़ पढ़ने की सूरत में भी ह़ुरूफ़ को इन के मख़रजों (मख़ारिज) से अदा करने और सह़ीह़ पढ़ने पर क़ादिर होते हैं और बा'ज़ लोग अकषर तेज़ पढ़ें तो सह़ीह़ नहीं पढ़ सकते लिहाज़ा तिलावत करने वालों को चाहिये कि सह़ीह़ पढ़ने की कोशिश करें क्यूंकि षवाब सह़ीह़ पढ़ने में है न कि मह़्ज़ जल्दी पढ़ने में।"(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने मजीद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब षवाब का काम है क़ुरआने पाक का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियों का षवाब मिलता है चुनान्चे, ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलनशीन है :"जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि اَلِف एक ह़र्फ़, لَام एक ह़र्फ़ और مِيْم एक ह़र्फ़ है।"(2)

मा'लूम हुवा कि الٓمّٓ पढ़ने वाले को 30 नेकियां मिलती है और अगर हम الٓمّٓ के हर ह़र्फ़ या'नी اَلِف और لَام और مِيْم को मज़ीद फैलाने का ए'तिबार करें तो इन तीनों के अपने ह़ुरूफ़ 9 बनेंगे तो यूं तमाम के मजमूए़ के बराबर 90 नेकियां होंगी।"(3)

---

1 ......تفسیر نعیمی، مقدمہ، ج۱، ص۳۵، ۳۶۔

2 ......سنن الترمذی، الحدیث:۲۹۱۹، ج۴، ص۴۱۷۔

3 ......الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ، ج۱، ص۲۸۔

﴾40﴿ शाइर अबू नुवास हसन बिन हानी

हालात :

अबू नुवास हसन बिन हानी की विलादत **146** हि. ब मुताबिक़ **763** ई. को "ख़ूज़िस्तान" के शहर "अहवाज़" में हुई। बसरा में जवान हुवे और फिर बग़दाद चले गए और **198** हि. ब मुताबिक़ **814** ई. को वहीं इन्तिक़ाल हुवा। जाहिज़ मो'तज़िली ने इन के मुतअ़ल्लिक़ कहा कि "मैं ने अबू नुवास से बढ़ कर फ़सीह और इन से बड़ा लुग़त का कोई आ़लिम नहीं देखा।" अबू उ़बैदा कहते हैं : "दौरे जाहिलिय्यत के शोअ़रा में जो मक़ाम इमरउल क़ैस का था वैसा ही मक़ाम दौरे इस्लाम के शोअ़रा में अबू नुवास का है।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़फ़्वो करम बहुत बड़ा है :

सरकारे वाला तबार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़फ़्वो करम तुम्हारे गुनाहों से बहुत बड़ा है।"

शैख़ इस्माईल बिन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल हादी जर्राही अ़जलूनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीषे पाक को ज़िक्र करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : इस ह़दीष को अ़स्करी" अबू नोए़म और दैलमी ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰه تعَالٰى عَنها से रिवायत किया, आप رَضِىَ اللّٰه تعَالٰى عَنها फ़रमाती हैं : येह फ़रमान हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन ह़र्ष رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से इरशाद फ़रमाया। अ़स्करी कहते हैं कि इसी फ़रमान के मफ़्हूम को अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान

---

1 ......الأعلام للزركلى، ابو نُواس، ج ٢، ص ٢٢٥ ـ

ने बर सरे मिम्बर कहा : ''اَللّٰھُمَّ اِنَّهٗ قَدْ عَظُمَتْ ذُنُوْبِی وَکَثُرَتْ وَاِنَّ عَفْوَكَ لَاَعْظَمُ مِنْھَا وَاَکْثَر'' या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेशक मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा हो गए मगर तेरा अ़फ़्व इस से कहीं बढ़ कर है।" और इसी फ़रमान को सामने रखते हुवे अबू नुवास ह़सन बिन हानी ने (अपने आप को मुख़ात़ब कर के) कहा : ''يَا كَثِيْرَ الذُّنُوْبِ عَفْوُ اللهِ اَكْبَرُ مِنْ ذَنْبِك'' या'नी ऐ कसीर गुनाहों वाले ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़फ़्व तेरे गुनाहों से बड़ा है।" फिर इन्हें अश्आ़र में बयान किया जिन का तर्जमा व मफ़्हूम दर्जे ज़ैल है :

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर्चे मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा हैं लेकिन मुझे मा'लूम है कि तेरा अ़फ़्वो करम इन से बहुत बड़ा है। अगर तू सिर्फ़ नेकों की बख़्शिश फ़रमाएगा तो तेरे गुनहगार बन्दे किस के दर पर जा कर दुआ़ करेंगे और किस से उम्मीद रखेंगे। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से गिड़गिड़ा कर दुआ़ करता हूं जैसा तू ने हुक्म दिया। अगर तू ने मेरी दुआ़ क़बूल न की तो मुझ पर कौन रह़्म करेगा ? मेरे पास तेरी बारगाह में उम्मीद और तेरे अ़फ़्वो करम के सिवा कुछ नहीं है और मैं मुसलमान हूं।[1]

﴿56﴾ रह़मत भरी हि़कायत

अच्छे अश्आ़र बख़्शिश का ज़रीआ़ बन गए :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा कमालुद्दीन मुह़म्मद बिन मूसा दमैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि अबू नुवास ह़सन बिन हानी को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा गया : ''مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे

1 ......كشف الخفاء للعَجْلونی، حرف العين المهملة، تحت الحديث:۱۷۳۷، ج۲، ص۵۷۔

तौबा करने और उन (मज़्कूरा) अश्आर की वजह से बख़्श दिया जो मैं ने बीमारी की हालत में कहे थे ।"(1)

﴾57﴿ रह्मत भरी हिकायत

बख़्शिश का सबब :

हाफ़िज़ इब्ने कषीर ने बयान किया कि अबू नुवास हसन बिन हानी के किसी दोस्त ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उन अश्आर के सबब बख़्श दिया जो मैं ने नरगिस के फूल के बारे में कहे थे (इन का तर्जमा है) कि "ज़मीन की नबातात में ग़ौरो फ़िक्र करो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बनाई हुई अश्या को देखो ! आंखों से दिखाई देने वाले चश्मे और वोह साफ़ धुला हुवा सोना, ज़बरजद की टहनियों पर येह सब गवाही दे रहे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई शरीक नहीं ।"(2)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह्मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन*﴿

❁❁❁❁❁❁

लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचाने का इन्आम

हज़रते सय्यिदुना अबू काहिल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ब्र की तक्लीफ़ से बचाएगा ।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۹۲۸،ج۱۸،ص۳۶۱)

---

1 ......کشف الخفاء للعَجلونی، حرف العین المھملۃ، تحت الحدیث۱۷۳۲، ج۲، ص۸۵۔

2 ......البدایۃ والنھایۃ لابن کثیر،أحداث سنۃ خمس وتسعین ومائۃ،ج۷، ص۴۳۲۔

﴾41﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ बिन फ़ीरोज़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बहुत बड़े ज़ाहिद और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा बिन मूसा काज़िम (رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْهِمَا) के गुलामों में से थे। बग़दाद के अ़लाक़े करख़ में पैदा हुवे और बग़दाद में अपनी ज़िंदगी गुज़ारी। लोग बरकत ह़ासिल करने की ग़रज से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل भी हुसूले बरकत के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में आया करते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बहुत अ़र्सा ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में गुज़ारा और इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने करख़ में **200** हि. ब मुत़ाबिक़ **815** ई. को वफ़ात पाई।

फ़रामीन :

❁....नेक आ'माल के बिग़ैर जन्नत की त़लब, इत्तिबाए़ सुन्नत के बिग़ैर शफ़ाअ़त की उम्मीद और नाफ़रमानी के बा'द रह़मत की तमन्ना करना ह़माक़त है।

❁....दुन्या की मह़ब्बत से दूर रहने वाला मह़ब्बते इलाही के ज़ाइक़े से लज़्ज़त ह़ासिल करता है लेकिन येह मह़ब्बत भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के करम से नसीब होती है।

❁....ह़ज़रते सय्यिदुना सर्री सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बयान करते हैं कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझे नसीह़त फ़रमाई कि "जब तुम्हें कुछ

तलब करना हो तो इस तरह तलब किया करो, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मा'रूफ़ करख़ी के सदक़े मुझे फ़ुलां चीज़ अता फ़रमा तो यक़ीनन वोह चीज़ तुम्हें मिल जाएगी।"(1) (2)

महब्बते इलाही में मदहोश :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना

1....इरशादे बारी तआला है : يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ...الاية इस आयत के फ़वाइद बयान करते हुवे हज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में फ़रमाते हैं कि मुसलमानों को नेक आ'माल के साथ कोई और वसीला भी ढूंढना ज़रूरी है। सिर्फ़ नेक आ'माल पर ही क़नाअत न करे येह फ़ाइदा اتَّقُوا اللّٰهَ के बा'द وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ फ़रमाने से हासिल हुवा। सारे नेक आ'माल तो اتَّقُوا اللّٰهَ में दाख़िल हैं फिर वसीला क्या चीज़ है वोह वसीला मक़्बूलीन ही तो है इस लिये बुज़ुर्गाने दीन की बैअत अहदे सहाबा से आज तक की जाती है मज़ीद फ़रमाते हैं ज़िन्दा बुज़ुर्गों से मुलाक़ात के लिये सफ़र करना, वफ़ात याफ़्ता बुज़ुर्गों के मज़ारात पर सफ़र कर के हाज़िरी देना, वहां जा कर रब तआला से उन के वसीले से दुआ करना और मदीनए मुनव्वरा सफ़र करके जाना उर्से बुज़ुर्गाने दीन में सफ़र कर के हाज़िर होना सब बहुत ही बेहतर है। इन सब सफ़रों का माख़ज़ येही आयत है मज़ीद शामी के हवाले से लिखते हैं कि जब डोंकटरों हकीमों के पास इलाज के लिये सफ़र कर के जाना जाइज़ है तो मक़्बूल बन्दों के पास क़ब्रों पर सफ़र कर के जाना भी जाइज़ है कि साहिबे मज़ारात के फ़ुयूज़ तफ़ावुत हैं बल्कि बुज़ुर्गों के उर्सों में औलिया उल्लाह का, उ-लमा का इजतिमाअ होता है। वहां हाज़िरी से बहुत से बुज़ुर्गों से मुलाक़ात हो जाती है इब्तिग़ा वसीले का येह बेहतरीन तरीक़ा है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी वालिदए माजिदा की क़ब्रे अन्वर पर मदीनए पाक से तशरीफ़ ले गए हालांकि अबवा शरीफ़ जहां जनाबे आमिना की क़ब्र है मदीनए मुनव्वरा से क़रीबन दो सो मील दूर है येह फ़क़ीर (अहमद यार ख़ान) वहां हाज़िर हुवा है।
(तफ़्सीरे नईमी, जि.6, स. 395, 396)

2......تذکرۃ الاولیاء، ذکرمعروف الکرخی، الجزء الاول، ص ۲۴۱، ۲۴۴۔
الاعلام للزرکلی، معروف الکرخی، ج۷، ص ۲۶۹

सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा गोया कि वोह अ़र्श के नीचे हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से इरशाद फ़रमाता है : "येह कौन है ?" वोह अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू इन के मुतअ़ल्लिक़ खूब जानता है।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "येह मा'रूफ़ करख़ी है, मेरी मह़ब्बत में मदहोश है। इसे मेरी मुलाक़ात से ही इफ़ाक़ा होगा।"(1)

﴾58﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

फ़ुक़रा से मह़ब्बत :

ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को उन के विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "बख़्श दिया।" मैं ने पूछा : "आप के ज़ोहदो तक़्वा की वजह से ?" फ़रमाया "नहीं ! बल्कि इस लिये कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नसीह़त को क़बूल किया, फ़क़्र को इख़्तियार किया और फ़ुक़रा से मह़ब्बत की।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नसीह़त : "जो शख़्स मुकम्मल तौर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुंह फेर लेता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की त़रफ़ तवज्जोह कम कर देता है और जो शख़्स दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत को उस की त़रफ़ मुतवज्जेह कर

1 ......الرسالة القشيرية، ابو محفوظ معروف بن فيروز الكرخى، ص٢٧۔

देता है और तमाम मख़्लूक़ का रुख़ उस की त़रफ़ फेर देता है और जो कभी कभी ऐसा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी कभी कभी उस पर रहमत फ़रमाता है।"[1]

《अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**》

《42》 ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى हालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का नाम मुह़म्मद बिन इदरीस बिन अ़ब्बास और कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है मक़ामे ग़ज़्ज़ा में 150 हि. में पैदा हुवे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बा अ़मल आ़लिमे दीन, बुलन्द शरफ़ वाले, अच्छे अख़्लाक़ वाले, सख़ावत करने वाले, तारीकियों में रोशनी और तबए ताबेईन में से हैं। रमज़ानुल मुबारक में 60 क़ुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا से भी इल्म ह़ासिल किया। मज़हबुल मुहज़्ज़ब शाफ़िइय्या के अ़ज़ीमुल मर्तबत पेशवा हैं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मिस्र में 204 हि. को रजबुल मुरज्जब की आख़िरी तारीख़ में जुमा'रात की रात विसाल फ़रमाया और जुमुआ़ के दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को दफ़्न किया गया।[2]

---

1. ......الرسالة القشيرية، ابو محفوظ معروف بن فيروز الكرخى، ص۲۷۔
2. ......حلية الاولياء، الرقم:۴۴۲ الامام الشافعى، ج۹، ص۱۴۳، ۱۷۱۔
مرقاة المفاتيح،شرح مقدمة المشكاة، ج ۱ ، ص ۶۲۔

फ़रामीन :

❁....इ़ल्म वोह नहीं जो याद किया बल्कि इ़ल्म वोह है जो नफ़्अ़ दे ।[1]

❁....इ़ल्म ह़ासिल करना नफ़्ल नमाज़ से अफ़्ज़ल है ।[2]

❁....अगर उ़-लमा वली नहीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई वली नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी जाहिल को अपना वली नहीं बनाता ।[3]

﴾59﴿ रह़मत भरी हि़कायत

सोने की कुरसी :

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सुलैमान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی के विसाल के बा'द उन को ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! مَا صَنَعَ اللّٰہُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "मुझे सोने की कुरसी पर बिठाया और मुझ पर नफ़ीस मोती बिखेरे ।"[4]

﴾60﴿ रह़मत भरी हि़कायत

दुरूदे पाक के सबब बख़्शिश :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़कम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی को देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी

---

1 ......حلیة الاولیاء وطبقات الاصفیاء، الرقم:۱۳۳۲۶، ج۹، ص۱۳۱۔

2 ......المرجع السابق، الرقم:۱۳۳۴۷، ج۹، ص۱۲۶۔

3 ......مرقاۃ المفاتیح، شرح مقدمة المشکاۃ، ج ۱، ص ۲۶۔

4 ......احیاء علوم الدین، باب منامات المشائخ، ج۵، ص۲۶۷۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "मुझ पर रह्म फ़रमाया और बख़्श दिया और मेरे लिये जन्नत यूं सजाई गई जैसे कि दुल्हन को सजाया जाता है और मुझ पर ने'मतें यूं निछावर की गईं जैसे कि दुल्हा पर निछावर करते हैं।" मैं ने पूछा : "किस सबब से आप ने येह मक़ाम पाया ?" फ़रमाया : "मेरी किताब "اَلرِّسَالَة" में जो दुरूदे पाक लिखा है उस के सबब से।" मैं ने पूछा : "वोह किस त़रह़ है ?" फ़रमाया : "वोह यूं है

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَعَدَدَ مَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करने वालों और उन के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहने वालों की ता'दाद के बराबर उन पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।"

सुब्ह़ को मैं ने किताब "अर्रिसाला" को देखा तो वोही दुरूदे पाक लिखा हुवा था जो आप ने ख़्वाब में बताया था।(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

﴾43﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू ख़ालिद यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

हालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम यज़ीद बिन हारून बिन ज़ाज़ी बिन षाबित और कुन्यत अबू ख़ालिद है। वासित़ में 118 हि. को पैदा हुवे और आबाओ अजदाद "बुख़ारा" के रहने वाले थे। नेकी की दा'वत देने वाले, बुराई से मन्अ़ करने वाले, इबादते इलाही में आ'ला मक़ाम रखने वाले और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष थे, ख़ुद फ़रमाते हैं

(1) ......سعادة الدارين، الباب الرابع فيما ... الخ، اللطيفة الحادية والعشرون، ص ۱۳۴ ـ

कि मैं ने **25** हज़ार (एक रिवायत के मुत़ाबिक़ **24** हज़ार) अह़ादीषे मुबारका की अस्नाद याद कीं हैं और कोई फ़ख़्र नहीं । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बग़दाद आए और वहां अह़ादीष बयान कीं फिर वापस वासित़ लौट आए । बग़दाद में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मजलिस **70** हज़ार लोगों पर मुश्तमिल होती थी । आप नमाज़ में इस त़रह़ खड़े होते गोया कोई सुतून है ।

ह़सन बिन अ़रफ़ा कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को वासित़ में देखा । आप की आंखें लोगों में सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत थीं, फिर मैं ने देखा कि आप एक आंख से नाबीना हो गए, कुछ अ़र्से बा'द देखा तो आप दोनों आंखों से नाबीना हो गए थे, मैं ने आप से पूछा : "ऐ अबू ख़ालिद ! आप की दोनों ख़ूब सूरत आंखों को क्या हुवा ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "रात के आख़िरी ह़िस्से में रोने के सबब दोनों आंखें चली गईं ।" रबीउ़ल आख़िर **206** हि. को वासित़ में वफ़ात पाई ।(1)

फ़रामीन :

❁....हारून ह़म्माल कहते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की अवलाद से एक शख़्स जिस की इ़ल्म की एक मजलिस फ़ौत हो गई थी उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की, कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वोह मुझे दोबारा बयान कर दें आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू फ़ुलां ! क्या तुझे मा'लूम नहीं, जो शख़्स (इ़ल्म की मजलिस से) ग़ैर ह़ाज़िर रहा वोह मह़रूम हो गया और उस के दोस्तों ने उस का ह़िस्सा ले लिया ।"(2)

---

1 ......تاریخ بغداد، الرقم: ۷۶۶۱یزید بن ھارون، ج ۱۴، ص ۳۳۸ ۔۳۴۷

2 ...... الجامع لاخلاق الراوی للخطیب، والمحفوظ عن ابن شھاب، الحدیث: ۱۴۲۴، ج ۲، ص۱۳۷

❁....जिस ने बे वक़्त हुकूमत त़लब की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे वक़्त में हुकूमत से महरूम कर देगा।(1)

﴾61﴿ रहमत भरी हिकायत

क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ :

वह्ब बिन बयान कहते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू ख़ालिद ! क्या आप विसाल नहीं फ़रमा गए ?" फ़रमाया : "मैं अपनी क़ब्र में हूं और मेरी क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।"(2)

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ब हैसिय्यते मुसलमान हमारा ईमान है कि मरने के बा'द और बरोज़े क़ियामत उठने से क़ब्ल भी एक ज़िन्दगी है, जिस का नाम "बरज़ख़ी ज़िन्दगी" रखा गया है उस ज़िन्दगी में लोगों की मुख़्तलिफ़ हालतें होती हैं। कोई ख़ुशी में है तो कोई ग़म में किसी की क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है तो किसी की दोज़ख़ के गढ़ो में से एक गढ़ा, कोई रो रहा है तो कोई हंस रहा है। कोई अपनी साबिक़ा दुन्यावी ज़िन्दगी के बारे में मुत़मइन है तो कोई शदीद ग़म व पछतावे की आग में जल रहा है। ग़रज़ येह की वहां की ज़िन्दगी का दारो मदार, अकषर दुन्यवी आ'माल पर मौक़ूफ़ है। यहां जैसे अ़मल किये होंगे, वहां वैसा ही बदला मिलेगा।

---

(1) ......صفة الصفوة، الرقم:٧٧٣يزيد بن هارون، ج٢، الجزء الثالث، ص١٠۔

(2) ......موسوعةلابن ابى الدنيا، كتاب المنامات، الرقم:٢٩٩، ج٣، ص١٤٣۔

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम ऐसे काम करें जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राज़ी हो जाएं ताकि हमारी क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ बन जाए। सहीह इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्लामी भाइयों के लिये 72 और इस्लामी बहनों के लिये 63 मदनी इन्आमात ब सूरते सुवालात दिये गए हैं कई खुश नसीब रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" करते हुवे हस्बे तौफ़ीक़ जवाबात की ख़ाना पूरी करते और हर मदनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाते हैं हमें भी चाहिये कि मक्तबतुल मदीना से "**मदनी इन्आमात**" का रिसाला हदिय्यतन हासिल कर के इस की ख़ाना पूरी किया करें।

﴾62﴿ रहमत भरी हिकायत

ज़िक्र की महाफ़िल इख़्तियार करने की फ़ज़ीलत :

हौषरह बिन मुहम्मद मिन्क़री बसरी कहते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उन के विसाल की 4 रातों के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "मेरी नेकियों को क़बूल फ़रमाया और मेरे गुनाहों से चश्म पोशी फ़रमाई और हुक़ूक़ुल इबाद मेरे सिपुर्द कर दिये (कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हुक़ूक़ वालों से हुक़ूक़ मुआफ़ करवा देगा)।" मैं ने कहा : "इस के बा'द क्या हुवा ?" फ़रमाया : "करीम सिर्फ़ करम फ़रमाता है उस ने मेरे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा कर मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।" मैं ने कहा : "किस सबब से आप ने येह मक़ाम

पाया ?" फ़रमाया : "ज़िक्र की महाफ़िल इख़्तियार करने, हक़ बात कहने, गुफ़्त्गू में सच बोलने, नमाज़ में त़वील क़ियाम करने और फ़क्र पर सब्र करने के सबब।" मैं ने कहा : "मुन्कर नकीर हक़ हैं ?" फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! हां ! हक़ हैं, उन्हों ने मुझे बिठा कर सुवालात करते हुवे पूछा : "مَنْ رَّبُّكَ وَمَادِيْنُكَ وَمَنْ نَبِيُّكَ؟ या'नी तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? तेरे नबी कौन हैं ?" मैं ने अपनी दाढ़ी को मिट्टी से साफ़ करते हुवे कहा : "क्या मेरे जैसे शख़्स से भी अब सुवालात किये जाएंगे कि मैं यज़ीद बिन हारून हूं, मैं दुन्या में **60** साल से लोगों को तुम्हारे सुवालात के जवाबात सिखा रहा हूं।" उन दोनों में से एक ने कहा : "यज़ीद बिन हारून ने सच कहा।" फिर कहा : "सो जा जिस त़रह़ दुल्हन सोती है आज के बा'द तुझ पर कोई ख़ौफ़ नहीं।"[1]

﴾63﴿ रह़मत भरी हिकायत

दुगना अज्र अ़ता फ़रमाया :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पोते या नवासे अबू नाफ़ेअ़ ने येह बात बयान की, कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। वहां दो शख़्स और भी थे उन में से एक ने कहा : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟

1 ......الحاوی للفتاوی للسیوطی، ج٢، ص٢٣٥۔

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी, मुझे दुगना अज्र अ़ता फ़रमाया और मुझ पर इताब करते हुवे फ़रमाया : "तुम ह़रीज़ बिन उ़षमान से अह़ादीष बयान करते थे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं उसे भला समझा था।" इरशाद फ़रमाया : "वोह अ़ली से बुग़्ज़ रखता था।"

फिर दूसरे शख़्स ने बयान किया कि मैं ने भी उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : "क्या मुन्कर नकीर आप के पास आए थे ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह आए थे और उन्हों ने मुझ से सुवाल किया : "तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ?" मैं ने कहा कि "क्या मुझ जैसे शख़्स से भी येह सुवालात किये जाते हैं कि मैं दुन्या में लोगों को इसी की तो ता'लीम देता रहा हूं।"' "तो उन्हों ने कहा : "येह सच कहते है।"(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

सब से ज़ियादा अ़ज़ाब

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिस के इ़ल्म ने उसे नफ़्अ़ न दिया होगा।"

(شعب الایمان،فی نشر العلم،الحدیث:۱۷۷۸،ج۲،ص۲۸۵)

(1) سیر اعلام النبلاء للذھبی، الرقم:۱۶۳۲ یزید بن ھارون، ج۸،ص ۲۳۲۔

﴾44﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान अ़ब्दुर्रह़मान बिन अह़मद बिन अ़तिय्या رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ज़ाहिद, इ़बादत गुज़ार और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों में से एक हैं। दारिया में रहने की वजह से दारानी कहलाते हैं और दारिया दिमश्क़ में एक बस्ती है। 215 हि. ब मुत़ाबिक़ 830 ई. में आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का विसाल हुवा।[1]

फ़रामीन :

❁....जब उम्मीद, ख़ौफ़ पर ग़ालिब आ जाती है तो वक़्त बरबाद हो जाता है।[2]

❁....जो दुन्या से मुक़ाबला करता है येह उसे पछाड़ देती है।[3]

❁....जो दिन में नेकी करेगा उसे रात में बदला दिया जाएगा और जो रात में नेकी करेगा उसे दिन में बदला दिया जाएगा और जो तर्के ख़्वाहिश में सच्चा होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के दिल से निकाल देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की येह शान नहीं कि किसी दिल को उस ख़्वाहिश की वजह से तक्लीफ़ दे जिसे उस की रिज़ा के लिये तर्क कर दिया गया हो।[4]

---

1 ......طبقات الصوفیة للسُّلمَی، الطبقة الاولی،الرقم:۹ ابوسلیمان الدارانی(عبد الرحمن بن عطیة)،ص۷۴۔

2 ......المرجع السابق، ص۷۵۔

3 ......المرجع السابق، ص۷۶۔

4 ......المرجع السابق۔

....बेहतरीन सख़ावत वोह है जो ह़ाजत के मुत़ाबिक़ व मुवाफ़िक़ हो । (कि जिस चीज़ की सामने वाले को ह़ाजत हो वोह दी जाए ।) (1)

....सच्चा इन्सान वोह है जिस का ज़ाहिर व बात़िन एक हो ।(2)

....जो सच बोलेगा उसे बदला दिया जाएगा और जो नेकी करेगा उसे आ़फ़िय्यत दी जाएगी ।(3)

....बसा अवक़ात मेरे दिल में (तसव्वुफ़ का) कोई नुक्ता पैदा होता है जो कई दिनों तक रहता है लेकिन मैं उसे दो आ़दिल गवाहों या'नी क़ुरआन व ह़दीष (की ताईद) के बिग़ैर क़बूल नहीं करता ।(4)

....जिस अ़मल का दुन्या में षवाब नहीं, उस की आख़िरत में जज़ा नहीं ।(5)

....जब दिल भूका प्यासा होता है तो नर्म और साफ़ होता है और जब सैर व सैराब होता है अन्धा हो जाता है ।(6)

....बन्दे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से क़रीब तरीन करने वाली चीज़ मुह़ासबा है ।(7)

....हर चीज़ का महर होता है और जन्नत का महर दुन्या व माफ़ीहा को तर्क कर देना है ।(8)

....हर चीज़ का एक ज़ेवर है और सच्चाई का ज़ेवर ख़ुशूअ़ है ।(9)

....हर चीज़ का एक ठिकाना है और सच्चाई का ठिकाना परहेज़गारों के दिल हैं ।(10)

---

1 ......طبقات الصوفية للسُّلَمى، ص ٧٦۔ 2 ......المرجع السابق۔
3 ......المرجع السابق۔ 4 ......المرجع السابق۔
5 ......المرجع السابق، ص ٧٧۔ 6 ......المرجع السابق۔
7 ......المرجع السابق، ص ٧٨۔ 8 ......المرجع السابق۔
9 ......المرجع السابق۔ 10 ......المرجع السابق۔

....हर चीज़ की एक अ़लामत होती है और ज़िल्लत व रुस्वाई की अ़लामत गिर्या व ज़ारी को तर्क कर देना है ।(1)

....ख़्वाहिशे नफ़्स की ख़िलाफ़ वर्ज़ी अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है ।(2)

....जब दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा घर कर लेता है, तो वोह नफ़्सानी ख़्वाहिशात को जला डालता और दिल से ग़फ़्लत की चादर उतार देता है ।(3)

....हर चीज़ को ज़ंग लगता है और दिल की नूरानिय्यत को पेट भरने से ज़ंग लगता है ।(4)

....जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाने में ग़ालिब आना चाहता है उस के लिये ज़रूरी है कि अपनी गर्दन से ग़ैरों की मह़ब्बत के पट्टे खोल दे ।(5)

....सच्चाई जिस का वसीला होगा उस का इन्आ़म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है ।(6)

....हर चीज़ की एक सच्चाई है और यक़ीन की सच्चाई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है ।(7)

....जिस गुरौह के लिये कोई ग़मगीन शख़्स रोएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस गुरौह पर ज़रूर रह़्म फ़रमाएगा ।(8)

....इ़याल (बाल बच्चे) साह़िबे यक़ीन के यक़ीन को कमज़ोर कर देते हैं क्यूंकि अकेले में उसे भूक लगे तो वोह सब्र कर लेता है लेकिन जब इ़याल को भूक सताएगी तो वोह उन के लिये त़लब करेगा और जब त़लब आ जाती है यक़ीन कमज़ोर हो जाता है ।(9)

1......طبقات الصوفية للسُّلمَی، الطبقة الاولی،الرقم:۹ ابو سلیمان الدارانی،ص ۷۹۔
2......المرجع السابق۔
3......المرجع السابق۔
4......المرجع السابق۔
5......المرجع السابق۔
6......المرجع السابق۔
7......المرجع السابق۔
8......المرجع السابق۔
9......المرجع السابق،ص۷۸۔

दिल में मख़्लूक़ का ख़याल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबी ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی से अ़र्ज़ की, कि "जब मैं ने तन्हाई में नमाज़ पढ़ी तो बहुत लज़्ज़त मह़सूस की।" इरशाद फ़रमाया : "किस चीज़ की लज़्ज़त मह़सूस की ?" मैं ने कहा : "उस चीज़ की, कि वहां मुझे कोई देखने वाला नहीं था।" इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारा ईमान कमज़ोर है क्यूंकि दौराने नमाज़ तुम्हारे दिल में मख़्लूक़ का ख़याल रहता है।"(1)

﴾64﴿ रह़मत भरी हिकायत

मग़्फ़िरत हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी लेकिन मेरे लिये सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के इरशादात से बढ़ कर कोई चीज़ नुक़्सान देह षाबित न हुई।"(2)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

---

(1) ......طبقات الصوفية للسُّلمَی، الطبقة الاولی،الرقم: ۹ ابو سلیمان الدارانی،ص۷۷۔

(2) ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم،ص ۴۲۲۔

﴾45﴿ ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ुबैदा बिन्ते जा'फ़र बिन मन्सूर हाशिमिय्या رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهَا

ह़ालात :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهَا अपने ज़माने की अफ़्ज़ल और मश्हूरो मा'रूफ़ ख़वातीन में से हैं। अ़ब्बासी ख़लीफ़ा अमीन की वालिदा हैं । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهَا का नाम अ-मतुल अ़ज़ीज़ है लेकिन ज़ुबैदा के लक़ब से ज़ियादा मश्हूर हैं । 165 हि. में ख़लीफ़ा हारून रशीद ने आप से निकाह़ किया । आप इन्तिहाई मालदार ख़ातून थीं । ऐ़नु ज़ुबैदा (या'नी ज़ुबैदा का चश्मा) के इ़लावा भी कई नफ़्अ़ बख़्श यादगारें छोड़ी हैं ।

इब्ने तग़री बर्दी ने आप की ता'रीफ़ में कहा कि "ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ुबैदा رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهَا अपने ज़माने की औ़रतों में दीन, ह़सब-नसब, ह़ुस्नो जमाल, इ़फ़्फ़त व पाक दामनी और भलाई करने में अ़ज़ीम ख़ातून थीं ।"

इब्ने ज़ुबैर ने ह़ज के रास्तों का तज़्किरा करते हुवे कहा कि "येह ह़ौज़ व तालाब, कुंवें और चश्मे जो बग़दाद से मक्कए मुकर्रमा तक बने हुवे हैं, येह सब ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ुबैदा बिन्ते जा'फ़र رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهَا के बनवाए हुवे हैं । आप तमाम ज़िन्दगी ऐसे ही नेक कामों को सर अन्जाम देती रही हैं और इस रास्ते में कई ऐसी ज़रूरियात व लवाज़िमाते ज़िन्दगी छोड़ गईं कि आप की वफ़ात से अब तक हर साल ह़ुज्जाजे किराम इन से अपनी ज़रूरियात पूरी करते हैं । अगर आप की येह काविशें न होतीं तो येह रास्ते कब के वीरान हो जाते ।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهَا 216 हि. ब मुत़ाबिक़ 831 ई. को बग़दाद में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं ।[1]

[1] الأعلام للزركلی، زبیدۃ بنت جعفر، ج۳، ص ۴۲

﴾65﴿ रहमत भरी हिकायत

अच्छी निय्यत के सबब बख़्शिश हो गई :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना ज़ुबैदा رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْهَا को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکِ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।" पूछा गया : "क्या मक्कए मुकर्रमा के रास्ते में बकषरत माल ख़र्च करने की वजह से ?" इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! उस का अज्र तो उस के मालिकों को मिल गया और मुझे मेरी (नेक) निय्यत की वजह से बख़्श दिया गया।"(1)

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इन्सान को चन्द रोज़ के अ़मल से नहीं अच्छी निय्यत से जन्नत हासिल होगी।"(2) ह़दीषे मुबारका में है कि "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"(3)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी, उतना षवाब भी ज़ियादा मिलेगा। बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता। चुनान्चे, ह़दीषे

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ٤٢٢۔

2 ......كيميائے سعادت ، ج ٢، ص ٨٦١۔

3 ......المعجم الكبير للطبرانى، الحديث: ٥٩٤٢، ج ٦، ص ١٨٥

मुबारका में है कि إِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِیءٍ مَّا نَوٰی **तर्जमा :** आ'माल (के षवाब) का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की।(1) अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और मुख़्तलिफ़ आ'माल की निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरत्तब कर्दा कार्ड और पेमफ़्लेट मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाइये।

﴾66﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

एह़तिरामे अज़ान के सबब बख़्शिश हो गई :

मन्क़ूल है कि एक नेक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ुबैदा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا को उन के विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।" उस ने पूछा : "क्या उन हौज़ों की वजह से जो आप ने ह़रमैने शरीफ़ैन के माबैन बनवाए हैं ?" फ़रमाया : "नहीं, वोह तो ग़सब शुदा मालों से बने थे उन का षवाब उन के मालिकों को मिल गया।" पूछा : "किस सबब से आप की मग़्फ़िरत हुई ?" फ़रमाया : "एक दिन मैं और मेरी नोकरानियां और सहेलियां ख़ुश त़बई में मसरूफ़ थीं कि अज़ान शुरूअ़ हो गई। मुअज़्ज़िन ने जैसे ही अल्लाह अक्बर कहा, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़मत व जलाल की वजह से उन को ख़ामोश करा दिया यहां तक कि मुअज़्ज़िन

(1) صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، ج ۱، ص ۶۔

अज़ान से फ़ारिग़ हो गया।[1] बस इसी वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे येह मक़ाम अ़ता फ़रमाया है जिसे तुम देख रहे हो।"[2]

﴾67﴿ रहमत भरी हिकायत

चार दुआइय्या कलिमात :

हज़रते सय्यिदतुना ज़ुबैदा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکِ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : इन चार कलिमात की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी :

(1)..... لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اُفْنِی بِهَا عُمْرِی या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। मैं इसी पर अपनी ज़िन्दगी तमाम करूं।

(2).....لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اُدْخَلُ بِهَا قَبْرِی या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। इसी पर मुझे क़ब्र में दाख़िल किया जाए।

(3).....لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَخْلُوبِهَا وَحْدِی या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। इसी कलिमे के साथ मैं ख़ल्वत व तनहाई इख़्तियार करूं।

1...**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल, हिस्सा सिवुम के सफ़्हा 473 पर लिखा है कि "जब अज़ान हो तो इतनी देर के लिये सलाम कलाम और जवाबे सलाम, तमाम अश्ग़ाल मौक़ूफ़ कर दे यहां तक कि क़ुरआने मजीद की तिलावत में अज़ान की आवाज़ आए तो तिलावत मौक़ूफ़ कर दे और अज़ान को ग़ौर से सुने और जवाब दे। यूंहीं इक़ामत में। (الدرالمختار،کتاب الصلاۃ،باب الاذان،ج۲،ص ۸۱) जो अज़ान के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रहे, उस पर مَعَاذَاللّٰه ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है।" अज़ान और अज़ान व इक़ामत का जवाब देने के फ़ज़ाइल व त़रीक़ा जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ 32 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाला "**फ़ैज़ाने अज़ान**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

2......تفسیر روح البیان،ج۲،ص ۲۰ ملخصًا۔

(4)......لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ اَلْقٰی بِھَا رَبِّی या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, इसी कलिमे के साथ मैं अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करूं। (1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾46﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ बिन सई़द मौसिली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम फ़त्ह़ बिन सई़द मौसिली और कुन्यत अबू नस्र है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दुन्या से बे रग़बत, इ़बादत गुज़ार और अ़रब के मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स थे। मन्क़ूल है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दर्दे सर में मुब्तला हुवे तो ख़ुश हो कर इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस मरज़ में मुब्तला किया जिस में अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुब्तला किया, अब इस का शुक्राना येह है कि मैं 400 रक्अ़त नफ़्ल पढ़ूं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल 220 हि. में हुवा।(2)

फ़रामीन :

۞....जो हमेशा अपने दिल पर नज़र रखता है उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ मिलती है और जो अपनी ख़्वाहिशात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को तरजीह़ देता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत उस के दिल में डाल दी जाती है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का त़ालिब हो, उस के इ़लावा हर चीज़ से किनारा कशी

1......احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت... الخ،بیان منامات المشائخ،ج۵،ص۲۶۵۔

2......سیر اعلام النبلاء، الرقم:۱۹۷۰ فتح الموصلی، ج۹،ص۱۷۹۔

इख़्तियार कर ले, उस के ह़क़ की रिआ़यत करे और तन्हाई में उस से ख़ौफ़ रखे तो उसे हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात को पेशे नज़र रखने की तौफ़ीक़ अ़ता की जाती है :(1)

﴾68﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

ख़ून के आंसू :

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मौसिली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى का एक अ़क़ीदत मन्द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, उस ने आप को रोते हुवे इस ह़ाल में पाया कि आंसूओं में पीला पन वाज़ेह़ था। तो उस ने दरयाफ़्त किया : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ून के आंसू रो रहे हैं ?" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "हां" उस ने दोबारा अ़र्ज़ की : "किस बात पर रो रहे हैं ?" आप ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वाजिब कर्दा ह़क़ से कोताही बरतने पर।" फिर आप के इन्तिक़ाल के बा'द उसी शख़्स ने आप को ख़्वाब में देखा तो पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "उस ने मुझे बख़्श दिया।" उस शख़्स ने पूछा : "आप के आंसूओं का क्या हुवा ?" तो आप ने जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के सबब मुझे अपने क़ुर्ब से मुशर्रफ़ फ़रमाया और मुझ से पूछा : "ऐ फ़त्ह़ ! तू किस बात पर रोया करता था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं तेरे वाजिब कर्दा ह़ुक़ूक़ की अदाएगी में कोताही पर रोता था।" फिर पूछा : "ख़ून के आंसू क्यूं रोता था ?" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "इस

---

(1) ......صفة الصفوة، الرقم:٢٢٤فتح بن سعيد ، ج ٢،الجزء الرابع،ص ١٥٨ ـ

ख़ौफ़ से कि कहीं तू मेरे लिये तौबा का दरवाज़ा बन्द न कर दे।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़त्ह़ ! इस (रोने) से तेरा इरादा क्या था ? मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! 40 साल तक तेरे मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते आस्मानों पर इस त़रह़ आए कि तेरे आ'माल नामे में एक भी गुनाह नहीं था।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾47﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़य्याज़ ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़य्याज़ षौबान बिन इब्राहीम ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मश्हूर आ़बिदो ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे। साह़िबे फ़साह़त व ह़िक्मत और शाइ़र भी थे। अपने वक़्त में इ़ल्म और परहेज़गारी के ए'तिबार से यक्ता थे। इब्नुल जल्ला कहते हैं : "मैं ने 600 शुयूख़ से मुलाक़ात की है मगर मैं ने चार शुयूख़ की मिष्ल किसी को नहीं पाया इन में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى भी हैं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मक़ामे जीज़ा में 245 हि. ब मुत़ाबिक़ 859 ई. को विसाल फ़रमाया।(2)

(1) ......الزواجرعن اقتراف الکبائر،مقدمة المولف ، ج ۱، ص ۳۷۔

(2) ......اعلام للزرکلی،ذوالنون المصری،ج ۲، ص ۱۰۲۔

تاریخ دمشق،الرقم : ۲۱۱۱ذو النون بن ابراھیم، ج ۱۷، ص ۴۰۱،۴۰۲۔

फ़रामीन :

۞....तीन चीज़ें राहे रास्त पर होने की अ़लामत हैं :

(1).....मुसीबत के वक़्त اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ पढ़ना

(2).....ने'मत के वक़्त तौबा करना

(3).....ग़ज़ब के वक़्त एह़सान (अच्छा बरताव) बाक़ी रखना।

۞....तीन चीज़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ उन्सिय्यत की अ़लामत हैं :

(1)......ख़ल्वत में लज़्ज़त मह़सूस करना

(2)....लोगों की सोह़बत से वह़शत व घबराहट मह़सूस करना

(3).....तन्हाई को अच्छा समझना।

۞....तीन चीज़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब मुतवज्जेह रहने की अ़लामत हैं :

(1).....हर शै से किनारा कशी इख़्तियार करते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाना

(2).....हर शै का उस से सुवाल करना

(3)....हर वक़्त उस से मह़ब्बत करना।(1)

﴾69﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

तीन बातों का सुवाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : मैं दुन्या में उस से तीन बातों का सुवाल किया करता था तो उस ने मुझे बा'ज़ अ़ता कर दीं और उम्मीद है कि बाक़ी भी अ़ता फ़रमाएगा। मैं उस से सुवाल करता था :

1....تاریخ دمشق، الرقم:۲۱۱۱ ذو النون بن ابراهيم، ج۱۷، ص۴۱۴، ۴۱۵۔

(1)....कि वोह मुझे उन दस चीज़ों में से जो रिज़्वान عَلَيْهِ السَّلَام (जन्नत का दरबान फ़िरिश्ता) के हाथ में हैं, एक अ़ता करे नीज़ येह कि वोह ब ज़ाते खुद अ़ता करे।

(2)....जो अ़ज़ाब मालिक عَلَيْهِ السَّلَام (जहन्नम का दरबान फ़िरिश्ता) के हाथ में है इस के मुक़ाबले में दस गुना अ़ज़ाब दे लेकिन खुद दे और

(3).....येह कि मुझे अबदी ज़बान के साथ ज़िक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾48﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ता अल मर्वज़ी बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي की कुन्यत अबू नस्र है। "ह़ाफ़ी" के लक़ब से मशहूर हैं औलियाए सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن में शुमार किये जाते हैं और ह़दीष बयान करने में षिक़ह रावी हैं। मक़ामे "**मर्व**" में 152 हि. को पैदा हुवे और 227 हि. को जुमुआ़ के दिन रबीउ़ल अव्वल के महीने में बग़दाद में इन्तिक़ाल फ़रमाया। एक दफ़्आ़ ख़लीफ़ा मामून रशीद ने कहा : "इस अ़लाक़े में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي के सिवा कोई ऐसा नहीं जिस से ह़या की जाती हो।"[2]

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب رويا القوم، ص ٤١٩۔

2 ......سیراعلام النبلاء للذهبی، الرقم: ١٢٩١ بشر بن الحارث، ج٩، ص ١٧٠۔
تاریخ مدینة دمشق، الرقم: ٨٨١ بشر بن الحارث، ج١٠، ص ١٨٩، ٢٢١۔

फ़रामीन :

❁....जो दुन्या से महब्बत करता है वोह इबादत की मिठास नहीं पा सकता।

❁....तू इस लिये अमल न कर कि लोगों में तेरा चर्चा हो और अपनी नेकियों को ऐसे छुपा जैसे अपनी बुराइयों को छुपाता है।(1)

﴾70﴿ रहमत भरी हिकायत

लोबिया की ख़्वाहिश :

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के बारे में मन्कूल है कि आप को कई साल तक लोबिया की ख़्वाहिश रही लेकिन आप ने इसे न खाया। विसाल के बा'द आप को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "बख़्श दिया और मुझ से फ़रमाया : "ऐ न खाने वाले ! खाओ और ऐ न पीने वाले ! पियो।"(2)

﴾71﴿ रहमत भरी हिकायत

जनाज़े के साथ चलने वालों की मग़फ़िरत :

अबुल अब्बास कुरशी कहते हैं हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की मौत के चन्द दिन बा'द मैं हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र तम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के पास आया। उन की ढारस बन्धाई। हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र तम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने

---

1 ......سیراعلام النبلاء للذهبی، الرقم: ۱۲۹۱ بشر بن الحارث، ج۹، ص۱۷۲، ۱۷۳۔

2 ......الرسالة القشیریة، ابو نصر بشر الحافی، ص۳۲۔

फ़रमाया : मैं ने गुज़श्ता रात हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى को अच्छी हालत में देख कर उन से पूछा : "بِمَا صَنَعَ بِكَ رَبُّكَ" या'नी आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपने रब से हया आई क्यूंकि उस ने मुझे कषीर भलाई अता फ़रमाई और जो उस ने मुझे अता फ़रमाया उस में येह भी था कि उस ने मेरे जनाज़े के साथ चलने वालों की भी मग़फ़िरत फ़रमा दी ।"(1)

﴾72﴿ रहमत भरी हिकायत

कभी हक़ अदा न कर पाता :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उबैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِ फ़रमाते हैं : किसी ने हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى को ख़्वाब में देखा तो पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिशर ! अगर तू पथ्थरों पर भी मुझे सजदे करता तो भी उस मक़ामो मर्तबे का हक़ अदा न कर पाता जो मैं ने अपने बन्दों के दिलों में तेरे लिये पैदा किया है ।"(2)

﴾73﴿ रहमत भरी हिकायत

महबूबे इलाही :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى फ़रमाते हैं कि किसी ने हज़रते

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الرقم:۳۰۲، ج۳، ص۱۴۴ ـ

(2)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، باب ماروی من الشعرفی المنام، الرقم:۲۷۸، ج۳، ص۱۳۶

सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى को ख़्वाब में देख कर पूछा "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मरह़बा ऐ बिशर ! जिस दिन मैं ने तुझे वफ़ात दी उस दिन रुए ज़मीन पर मुझे तुझ से ज़ियादा कोई मह़बूब न था ।"(1)

﴾74﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

जन्नती ने'मतों के दस्तरख़्वान :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़रबी عَلَيْهِ رَحمةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى को ख़्वाब में देखा कि गोया मस्जिदे रुसाफ़ा से बाहर तशरीफ़ ला रहे हैं और दामन में कोई चीज़ ह़रकत कर रही है । मैं ने पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और मुझे ए'ज़ाज़ व इकराम से नवाज़ा ।" मैं ने फिर पूछा : "आप के दामन में क्या है ?" जवाब दिया : "गुज़श्ता रात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل की रूह़ हमारे पास तशरीफ़ लाई, उस पर मोतियों और याक़ूत की बारिश की गई, येह वोह मोती हैं जो मैं ने चुन लिये थे ।" मैं ने पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुईन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल (رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْهِمَا) के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया गया ?" जवाब

---

(1) الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۲۴۔

दिया : “मैं उन दोनों से इस हा़लत में जुदा हुवा था कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार कर रहे थे और उन के लिये (जन्नती ने'मतों के) दस्तर ख़्वान बिछाए गए थे।”

मैं ने कहा : “तो आप ने उन के साथ जन्नती ने'मतें क्यूं नहीं खाईं ?” जवाब दिया : “मेरे सामने वोह ने'मतें बिल्कुल बे वुक़्अ़त थीं क्यूंकि मैं तो खु़द दीदारे इलाही में गुम था।”(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾49﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ तम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار

ह़ालात :

आप का नाम अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز है और कुन्यत अबू नस्र है। अबू ह़ातिम ने कहा : “इन का शुमार अब्दालों में होता है।” इब्ने सा'द ने कहा : मन्क़ूल है कि आप अबू मुस्लिम के क़त्ल के छे माह बा'द पैदा हुवे और बग़दाद तशरीफ़ ला कर खजूरों की तिजारत फ़रमाई (शायद येही वजह है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नाम के साथ तम्मार आता है कि तम्मार ख़जूर फ़रोश को कहते हैं) आप फ़ाज़िल, क़ाबिले ए'तिमाद रावी, मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। 228 हि. को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल हुवा।(2)

---

1 ......وفيات الاعيان، الرقم:۲۰،ابن حنبل، ج ۱، ص ۸۸۔

2 ......تهذيب التهذيب،الرقم: ۴۳۱۸عبد الملك بن عبدالعزيز، ج۵،ص۳۰۷۔

﴾75﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सब्र और ग़रीबी का सिला :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अबिल वर्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَارِث के मुअज़्ज़िन ने बताया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَارِث को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل के साथ क्या मुआ़मला पेश आया ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दी ।" मैं ने फिर पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र तम्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار के साथ क्या हुवा ?" जवाब दिया कि "वोह आ'ला इ़ल्लिय्यीन में हैं ।" मैं ने पूछा : "उन्हें येह मक़ाम कैसे ह़ासिल हुवा जो आप दोनों न पा सके ?" इरशाद फ़रमाया : "उन के अपनी छोटी बच्चियों के मुआ़मले में सब्र करने और अपनी ग़रीबी की वजह से ।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । आमीन﴿

---

(1)......سیراعلام النبلاء، الرقم:۱۷۳۷ ابو نصر التمار(عبد الملک بن عبد العزیز)، ج۹، ص ۲۳۴۔

﴾50﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू अली हसन बिन ईसा नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

हालात :

हज़रते सय्यिदुना अबू अली बिन ईसा बिन मासरजिस नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अज़ीमुश्शान और जलीलुल क़द्र मुहद्दिष, मुत्तक़ी और परहेज़गार थे । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया । तलबे इल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया और मशाइख़े किराम से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया । इस्लाम लाने से पहले नस्रानी थे ।

आप के इस्लाम लाने का वाक़िआ कुछ इस तरह है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आप की गली में तशरीफ़ लाए और मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप सुवार हो कर क़रीब से गुज़रे इन्तिहाई ख़ूब सूरत नौजवान थे । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लोगों से पूछा : "येह कौन है ?" जवाब दिया : "येह नस्रानी है ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन के हक़ में दुआ की, कि "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।" दुआ की क़बूलिय्यत हाथों हाथ ज़ाहिर हुई और आप मुसलमान हो गए ।[1]

दुआए वली में येह तासीर देखी

बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

---

1 ......تاریخ بغداد، الرقم ٣٨٧٣ الحسن بن عیسی، ج٧، ص ٣٦٣۔

﴾76﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

जनाज़े में शिर्कत करने वालों की बख़्शिश :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुअम्मल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान किया : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या बज़्ज़ाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बताया कि मैं भी उन लोगों में से हूं जिन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ईसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ उन के विसाल के साल ह़ज किया । मैं अपने ऊंट की ह़िफ़ाज़त में मश्ग़ूल होने की वजह से उन के जनाज़े में शरीक न हो सका । मैं ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और उन तमाम लोगों की भी मग़फ़िरत फ़रमा दी जो मेरे जनाज़े में शरीक थे ।" मैं ने कहा : "मैं अपने ऊंट के भाग जाने के ख़ौफ़ से आप के जनाज़े में शरीक न हो सका ।" इरशाद फ़रमाया : "ग़म न करो उन को भी बख़्श दिया गया जिन्हों ने मेरे लिये रह़मत की दुआ़ की ।"[1]

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नेक बन्दों की नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िरी किस क़दर सआ़दत मन्दी की बात है ।

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۱۹۷۱ الحسن بن عیسی، ج۱۰، ص۴۹۔

जब भी मौक़अ़ मिले बल्कि मौक़अ़ निकाल कर मुसलमानों के जनाज़ों में शिर्कत करते रहना चाहिये, हो सकता है किसी नेक बन्दे के जनाज़े में शुमूलिय्यत हमारे लिये सामाने मग़फ़िरत बन जाए। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान कि जब वोह किसी मरने वाले की मग़फ़िरत फ़रमा देता है तो उस के जनाज़े का साथ देने वालों को भी बख़्श देता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मोमिन को बा’दे मौत सब से पहला सिला येह दिया जाता है कि उस के जनाज़े के पीछे चलने वाले सब लोगों को बख़्श दिया जाता है।”(1)

﴾51﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिय्या यह़्या बिन मई़न عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम यह़्या बिन मई़न बिन औ़न बिन ज़ियाद और कुन्यत अबू ज़करिय्या है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 158 हि. ब मुत़ाबिक़ 775 ई. को अम्बार के क़रीब निक़्या नामी गाउं में पैदा हुवे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद ने आप के लिये कषीर मालो ज़र छोड़ा जिसे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने त़लबे ह़दीष में ख़र्च कर दिया।(2) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ......شعب الایمان للبیهقی، الحدیث:۹۲۵۸، ج۷، ص۷۔

2 ......تاریخ بغداد، الرقم:۷۴۸۴یحیی بن مَعِین بن عون، ج۱۴، ص۱۸۲۔

अ़ब्दुस्सलाम बिन ह़र्ब, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन गि़याष, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़यैना, ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ (رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡھِم) वगै़रा से इ़ल्मे ह़दीष ह़ासिल किया और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, इमाम अबू दावूद رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡھِم वगै़रा ने इ़ल्मे ह़दीष ह़ासिल किया।[1] आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तन्क़ीदे रिवायत में माहिर और अह़वाले रिजाल की मा'रिफ़त रखते थे और कषीर मा'लूमात में अपनी मिषाल आप थे।[2] इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मईन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین अस्माए रिजाल के आ़लिम हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं कि "जिस ह़दीषे मुबारका को यह़्या बिन मईन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِین नहीं जानते वोह ह़दीष ही नहीं।"[3]

विसाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मईन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین ने ज़ुल क़ा'दा 233 हि. को विसाल फ़रमाया और जिस तख़्ते पर ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल दिया गया था उसी पर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ग़ुस्ल दिया गया।[4]

1 ......تہذیب التہذیب، الرقم:۷۹۳۰یحیی بن معین،ج۹،ص۲۹۸۔

2 ......بستان المحدّثین،یحیی بن معین، ص ۱۷۲۔

3 ......تہذیب التہذیب، الرقم:۷۹۳۰یحیی بن معین،ج۹، ص ۳۰۲،۲۹۹۔

4 ......بستان المحدثین،ص۱۷۳۔

फ़रामीन :

۞....आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "जब तक हम ह़दीषे मुबारका को 30 सनदों से न लिख लें उस को नहीं समझते हैं।"(1)

۞....ह़दीषे पाक की सब से पहली बरकत उस का बन्दे को फ़ाइदा पहुंचाना है।(2)

﴾77﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

300 हूरों के साथ निकाह :

हुबैश बिन मुबश्शिर कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِين को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया?" जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया और मुझे बहुत कुछ अ़त़ा किया गया। 300 हूरों के साथ मेरा निकाह़ कर दिया और मुझे दो मरतबा अपने हां ह़ाज़िरी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई।"(3)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾52﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम सुलैमान बिन दावूद बिन बिशर मिन्क़री बसरी शाज़कूनी है। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़लिमे दीन, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष और बा कमाल शख़्स थे। 236 हि. को आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा।

---

1 ......تہذیب التہذیب، الرقم:۷۹۳۰ یحیی بن معین، ج۹، ص۲۹۹ ۔

2 ......تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم:۸۲۱۴ یحیی بن معین، ج۶۵، ص۲۸ ۔

3 ......تہذیب التہذیب، الرقم:۷۹۳۰ یحیی بن معین، ج۹، ص۳۰۳ ۔

﴾78﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

किताबों की ता'ज़ीम के सबब बख़्शिश हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन उ़षमान ज़हबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन फ़ज़्ल رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शाज़कूनी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "किस सबब से ?" इरशाद फ़रमाया : "एक दफ़्अ़ा मैं अस्फ़हान जा रहा था कि अचानक बारिश शुरूअ़ हो गई। मेरे पास किताबें थीं और बारिश से बचाव के लिये कोई छत वग़ैरा नहीं थी तो मैं अपनी किताबों पर झुक कर खड़ा रहा यहां तक कि इसी ह़ालत में सुब्ह़ हो गई, बस येही अ़मल (या'नी किताबों की ता'ज़ीम) मेरी बख़्शिश का सबब बन गया।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : "وَلَا دِيۡنَ لِمَنۡ لَا اَدَبَ لَهٗ या'नी जो बा अदब नहीं उस का कोई दीन नहीं।"(2)

---

(1) ......سیر اعلام النبلاء، الرقم: ۴۷۸۹ الشاذکونی، ج۹، ص۳۰۵، ۳۰۸۔

(2) ......فتاویٰ رضویہ (مخرَّجہ)، ج۲۸، ص۱۵۸۔

प्यारे इस्लामी भाइयो ! "बा अदब बा नसीब" के मक़ूले पर अ़मल पैरा होते हुवे अपनी किताबों, कापियों और क़लम की ता'ज़ीम करनी चाहिये। इन्हें ऊंची जगह पर रखें, दौराने मुत़ालआ़ इन का तक़द्दुस बरक़रार रखें। किताबें ऊपर तले रखने की ह़ाजत हो तो तरतीब यूं होनी चाहिये। सब से पहले क़ुरआने ह़कीम, इस के नीचे तफ़ासीर, फिर कुतुबे ह़दीष, फिर कुतुबे फ़िक़ह, फिर दीगर कुतुब सर्फ़ नह़्व वग़ैरा। किताब के ऊपर बिला ज़रूरत कोई दूसरी चीज़ मषलन पथ्थर और मोबाइल वग़ैरा न रखें।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम हुल्वानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं कि "मैं ने इ़ल्म के ख़ज़ानों को ता'ज़ीमो तकरीम करने के सबब ह़ासिल किया, वोह इस त़रह़ कि मैं ने कभी भी बिग़ैर वुज़ू काग़ज़ को हाथ नहीं लगाया।"(1)

﴾53﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम अह़मद बिन मुह़म्मद बिन ह़म्बल बिन हिलाल बिन असद शैबानी और कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है। रबीउ़ल अव्वल के शुरूअ़ में 164 हि. को बग़दाद में पैदा हुवे। इब्तिदाई ता'लीम बग़दाद ही में ह़ासिल की इस के बा'द दीगर शहरों की त़रफ़ सफ़र इख़्तियार किया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुज्तहिद फ़िल मज़हब, बहुत बड़े फ़क़ीह, परहेज़गार, सुन्नत की पैरवी करने वाले, इस्तिक़ामत के साथ इ़बादतो रियाज़त करने वाले और अपने

(1) البحر الرائق، كتاب الطهارة، باب الحيض، ج ١، ص ٣٥٠

ज़माने के लोगों में सब से अफ़्ज़ल थे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक मूए मुबारक था इस को कभी अपने होंटों पर रख कर चूमते कभी आंखों पर रखते और बीमारी में पानी में डाल कर इस का धोवन पीते और शिफ़ा ह़ासिल करते। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल जुमुआ़ के दिन **241** हि. को हुवा। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र बिन अबी मूसा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आप के बराबर में दफ़्नाया जा रहा था तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र खुल गई तो क्या देखते हैं कि क़िब्ला रू लैटे हैं और कफ़न बिल्कुल सह़ीह़ व सालिम है। येह वाक़िआ़ इन्तिक़ाल के **230** साल बा'द पेश आया।(1) (2)

1.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इरशाद फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की दोनों ह़ालतों या'नी ह़यात व ममात में अस्लन फ़र्क़ नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर तशरीफ़ ले जाते हैं।" (مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوۃ، باب الجمعۃ، ج۳، ص۴۵۹)
जब सह़ाबा व औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का येह मर्तबा है तो ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क्या शान होगी ! फिर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर का क्या कहना ! यक़ीनन आप अपनी क़ब्रे मुनव्वर में जिस्मानी ह़याते मुक़द्दसा के साथ ज़िन्दा हैं। ह़दीषे मुबारका है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाना ह़राम फ़रमा दिया है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ज़िन्दा हैं और इन को रोज़ी भी दी जाती है।"
(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاتہ و دفنہ صلّی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث: ۱۶۳۷، ج۲، ص۲۹۱)

2.....تہذیب التہذیب، الرقم:۱۰۶ احمد بن محمد بن حنبل، ج۱، ص۹۷، ۱۰۰۔
حلیۃ الاولیاء، الرقم: ۴۴۳ الامام احمد بن حنبل، الحدیث:۱۳۶۲۸، ج۹، ص۱۹۵۔

फ़रमान :

۞....आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इरशाद है कि "जब तुम क़ब्रिस्तान जाओ तो सूरए फ़ातिहा, सूरए फ़लक़, सूरए नास और सूरए इख़्लास पढ़ो और क़ब्रिस्तान वालों को इस का षवाब ईसाल कर दो कि येह षवाब मुर्दों तक पहुंचता है।"(1)

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम अपने मुर्दों को ईसाले षवाब करते रहें और उन के मुआमले में गफ़्लत न बरतें कि हदीषे पाक में आता है : "मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की तरफ़ से हदिय्या किया हुवा षवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़ता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (तोहफ़ा) मुर्दों के लिये दुआए मग़फ़िरत करना है।"(2)

ईसाले षवाब का तरीक़ा और इस के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "फ़ातिहा और ईसाले षवाब का तरीक़ा" का मुतालआ़ किजिये ।

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت،بیان زیارت القبور،ج۵،ص ۲۴۵۔

2 ......شعب الایمان، الحدیث: ۷۹۰۵،ج۶،ص ۲۰۳۔

«79» रह़मत भरी ह़िकायत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम क़दीम है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل को बा'दे वफ़ात उन के एक मुसाह़िब ने ख़्वाब में देखा कि नाज़ो अन्दाज़ से चल रहे हैं। उन्हों ने पूछा : "येह कैसी चाल है ?" फ़रमाया : "ये दारुस्सलाम (जन्नत) में ख़ादिमों की चाल है।" पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "बख़्श दिया, सोने के जूते पहनाए और इरशाद फ़रमाया : "तुम ने जो कहा था कि कुरआन कलामुल्लाह ग़ैर ह़ादिष है, येह उस की जज़ा है।" और मुझे इजाज़त दी कि "ऐ अह़मद ! जहां चाहो जाओ।" पस मैं जन्नत में दाख़िल हुवा। वहां मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को देखा, उन के दो सब्ज़ पर हैं जिन के ज़रीए एक दरख़्त से दूसरे दरख़्त पर उड़ते फिर रहे हैं और येह आयत तिलावत कर रहे हैं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَیْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۷۴﴾ (پ ۲۴، الزمر: ۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का वारिष किया कि हम जन्नत में रहें जहां चाहें तो क्या ही अच्छा षवाब कामियों का।"*

मुसाह़िब ने दरयाफ़्त किया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की क्या ख़बर है।" फ़रमाया : "मैं ने उन्हें दरयाए नूर में कश्तिए नूर पर सुवार हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ियारत करते हुवे देखा है और इसी ह़ाल में उन्हें छोड़ कर आया हूं।" पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث

के साथ क्या मुआ़मला हुवा ?" फ़रमाया : वाह वाह ! उन की त़रह कौन हो सकता है ? मैं उन के पास से इस ह़ाल में वापस आया हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से इरशाद फ़रमा रहा था : "ऐ न खाने वाले ! खाओ और ऐ न पीने वाले ! पियो और ऐ परेशानी में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले ! अब ख़ुश ह़ाल और आसूदा रहो ।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । **आमीन**﴿*

﴾54﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मुसफ़्फ़ा बिन बुहलुल رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

ह़ालात :

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष, अहले ह़िम्स के आ़लिम और नेक आदमी थे । जुह़्फ़ा के मक़ाम पर बीमार हुवे और मिना में 246 हि. को आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का विसाल हुवा ।

﴾80﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

साह़िबे सुन्नत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन उ़षमान ज़हबी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल करते हैं कि मुह़म्मद बिन औ़फ़ त़ाई कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुसफ़्फ़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : 'ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या आप इन्तिक़ाल नहीं फ़रमा गए हैं ? आप का अन्जाम कैसा हुवा ?" फ़रमाया : "अच्छा ! और इस के साथ साथ

1 ......روض الریاحین،ص۱۸۸۔

हम हर दिन दो बार अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार करते हैं।" मैं ने अर्ज़ की : "ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप दुन्या में तो साहिबे सुन्नत थे क्या आख़िरत में भी साहिबे सुन्नत हैं ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुराने लगे।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

۞۞۞۞۞۞

﴾55﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद बिन ख़िदाश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

हालात :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हाफ़िज़ुल हदीष, षिक़ह (क़ाबिले ए'तिमाद) रावी थे, 160 हि. को पैदा हुवे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल 250 हि. को हुवा।

﴾81﴿ रहमत भरी हिकायत

पैरवी करने वालों की मग़फ़िरत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बिन उषमान ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि या'क़ूब दौरक़ी ने बयान किया कि "मैं उन लोगों में से हूं जिन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़िदाश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ग़ुस्ल दिया, मैं ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी और मेरे तमाम मुत्तबिईन की मग़फ़िरत फ़रमा दी।"

---

(1) سیراعلام النبلاء للذھبی، الرقم:۱۹۹۲ محمد بن مصفی، ج۱۰، ص۹۰۔

मैं ने अ़र्ज़ की : ‘‘मैं भी तो आप का पैरूकार हूं।’’ तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी आस्तीन से एक वरक़ निकाला जिस पर लिखा हुवा था : ‘‘या’कूब बिन इब्राहीम बिन कषीर (या’नी येह भी बख़्शे हुवों में शामिल थे)।’’[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾56﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद यह्या बिन अक्षम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم

हालात :

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन अक्षम बिन मुहम्मद बिन क़तन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कुन्यत अबू मुहम्मद है। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़िलाफ़ते महदी में पैदा हुवे। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) वग़ैरा से इल्म हासिल किया और हज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी, हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी और हज़रते सय्यिदुना अबू हातिम (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) वग़ैरा ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इल्म हासिल किया। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बसरा के क़ाज़ी, फ़िक़्ह में वसीअ़ इल्म रखने वाले, बहुत अदब करने वाले, उ़म्दा कलाम करने वाले और हर मुश्किल का सामना करने वाले थे। हज़रते सय्यिदुना इमाम हाकिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि ‘‘जिस ने इन की किताब **‘‘अत्तम्बीह’’**

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۲۰۲۷محمود بن خداش، ج۱۰،ص۱۴۴،۱۴۵۔

को तवज्जोह से पढ़ा वोह इन की इ़ल्मिय्यत को जान लेगा।" जुल ह़िज्जा 242 हि. को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन ह़ज से वापसी पर मक़ामे "रबज़ह" में विसाल फ़रमाया।(1)

फ़रमान :

....एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अकषम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि "أَصْلَحَ اللّٰهُ الْقَاضِى या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ाज़ी के मुआ़मलात को दुरुस्त फ़रमाए, मुझे कितना खाना चाहिये ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "जब भूक लगे तब खाओ और सैर होने से पहले हाथ रोक लो।"

उस ने अ़र्ज़ की : "मुझे कितना हंसना चाहिये ?" इरशाद फ़रमाया : "इतना कि तुम्हारा चेहरा खिल उठे और आवाज़ बुलन्द न हो।" अ़र्ज़ की : "मुझे कितना रोना चाहिये ?" इरशाद फ़रमाया : "इनता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोते रोते उक्ताहट का शिकार न हो जाओ।" उस ने फिर पूछा : "मैं अ़मल को कितना छुपाऊं ?" इरशाद फ़रमाया : "जितनी तुम त़ाक़त रखते हो।"

उस ने अ़र्ज़ की : "अपने अ़मल को कितना ज़ाहिर करूं ?" इरशाद फ़रमाया : "नेकी और भलाई में जितनी तुम्हारी पैरवी की जाती है और तुम लोगों की तन्क़ीद से मह़फ़ूज़ रहो।" उस शख़्स ने कहा سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ क्या ही मियानारवी की बात है।(2)

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، الرقم: ۱۹۲۶ یحیی بن اکثم، ج ۱۰، ص ۳۴، ۴۰۔

2 ......تاریخ بغداد، الرقم: ۷۴۸۹ یحیی بن اکثم، ج ۱۴، ص ۲۰۳۔

﴾82﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

वाह ! येह तो ख़ुशी की बात है :

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अकषम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के विसाल के बा'द किसी ने उन को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया : "ऐ बूढ़े ! तू ने फ़ुलां फ़ुलां काम किया ।" फ़रमाते हैं : मुझ पर इस क़दर रो'ब त़ारी हो गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है । फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ह़दीष शरीफ़ के ज़रीए़ मुझे तेरा येह ह़ाल नहीं बताया गया ।" इरशाद फ़रमाया : "तेरे सामने मेरे बारे में क्या बयान किया गया है ?" मैं ने कहा : मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बयान किया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मा'मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से और वोह तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से नक़्ल करते हैं कि (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) तू ने इरशाद फ़रमाया है : "मैं अपने बन्दे के गुमान के मुत़ाबिक़ हूं पस वोह मेरे साथ जो चाहे गुमान रखे ।" और मेरा गुमान येह था कि तू मुझे अ़ज़ाब नहीं देगा । तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "जिब्रील ने सच कहा, मेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सच कहा, अनस, ज़ोहरी, मा'मर, अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने भी सच ही कहा और मैं ने भी सच कहा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अकषम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : फिर

मुझे लिबास पहनाया गया और जन्नत तक मेरे आगे आगे गुलाम चले तो मैं ने कहा : "वाह ! येह तो खुशी की बात है।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

۞۞۞۞۞۞

﴾57﴿ हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन मिस्कीन उमवी मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

हालात :

हज़रते सय्यिदुना अबू अम्र हारिष बिन मिस्कीन बिन मुहम्मद उमवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपने वक्त के काज़ी, फ़िक्हे मालिकिय्या के बहुत बड़े आलिम और मिस्र के मुहद्दिषीन में षिक़ह व मो'तमद रावी थे। आप की विलादत 154 हि. ब मुताबिक़ 771 ई. को हुई। दोनों टांगों से मा'ज़ूर थे जिस की वजह से आप को पालकी में सुवार किया जाता था और कभी किसी जानवर पर चार ज़ानूं सुवारी भी फ़रमा लिया करते थे। उमरा व सलातीन से दूर ही रहना पसन्द करते थे। 250 हि. ब मुताबिक़ 864 ई. को इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की तरफ़ रवाना हो गए।(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम नसाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आप के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाते हैं कि "मो'तमद व मुस्तनद राविये हदीष थे।" हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद उषमान ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाया कि "इल्म व तक्वा और इबादत में सब से मुक़द्दम होने के साथ साथ बयाने हक़ में भी नुमायां थे और इन्साफ़ पसन्द क़ाज़ी थे।"

---

1 ......احياء علوم الدين،باب فضيلة الرجاء... الخ، ج ۴،ص ۱۷۸۔

2 ......الأعلام للزركلى، الحارث بن مسكين، ج ۲،ص ۱۵۷۔

﴾83﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सिफ़ारिश क़बूल कर ली गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : एक गुनहगार शख़्स को उस के मरने के बा'द ख़्वाब में देख कर ह़ाल पूछा गया तो उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस सबब से बख़्श दिया कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष बिन मिस्कीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن मेरे जनाज़े में शरीक हुवे थे। उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी सिफ़ारिश की तो मेरे ह़क़ में उन की सिफ़ारिश क़बूल कर ली गई।"(1)

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।* ***आमीन***﴿

﴾58﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْکَافِی

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नामे नामी इस्मे गिरामी मुह़म्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरह, कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और बुख़ारा की निस्बत से बुख़ारी मश्हूर हैं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत **13** शव्वालुल मुकर्रम **194** हि. को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन हुई। तक़रीबन **62** साल की उ़म्र में **256** हि. को हफ़्ते की रात

(1)......سیراعلام النبلاء، الرقم۱۹۷۷ الحارث بن مسکین، ج۱۰، ص۶۵،۶۶۔

विसाल फ़रमाया।[1] आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शाफ़ेई मज़्हब से तअ़ल्लुक़ रखते थे। बचपन में नाबीना हो गए थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदए मोह्तरमा ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी की जिस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बीनाई लौटा दी।[2] आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मईन और ह़ज़रते सय्यिदुना मक्की बिन इब्राहीम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) वग़ैरा से इल्म ह़ासिल किया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बुख़ारी शरीफ़ में हर ह़दीषे मुबारका लिखने से पहले ग़ुस्ल करते और दो रक्अ़त नफ़्ल अदा फ़रमाते। एक मरतबा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नमाज़ पढ़ रहे थे कि भेड़ (धमोड़ी) ने सतरह जगहों पर डंक मारा लेकिन आप ने नमाज़ नहीं तोड़ी।[3] आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कलाम बहुत कम करते थे, लोगों के अम्वाल में लालच नहीं करते थे, लोगों के मुआ़मलात में दख़्ल नहीं देते थे और इल्म ह़ासिल करने में मश्ग़ूल रहते थे। बहुत बड़े फ़क़ीह, परहेज़गार और दुन्या से बे रग़बत थे।[4] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने बे शुमार कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई हैं जिन में सब से ज़ियादा मक़्बूल **"सह़ीह़ बुख़ारी"** है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस किताब को

---

1 ......تاریخ بغداد، الرقم:۴۲۴ محمد بن اسماعیل، ج۲، ص۶،۵۔

2 ......طبقات الشافعیة الکبری، الرقم:۵۰ محمدبن اسماعیل، ج۲، ص۲۱۶،۲۱۴۔

3 ......تاریخ بغداد، الرقم:۴۲۴ محمدبن اسماعیل، ج۲، ص۱۳،۵۔

4 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۲۱۳۶ ابوعبد اللہ البخاری، ج۱۰، ص۳۰۸۔

तक़रीबन 16 साल में मुकम्मल फ़रमाया ।[1] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क़ब्र मुबारक की मिट्टी से बहुत अ़र्से तक मुश्क की ख़ुश्बू आती रही और लोग उसे बरकत के लिये ले जाते ।[2]

फ़रामीन :

❁....आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं कि "मैं उम्मीद करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस ह़ाल में ह़ाज़िर होऊंगा कि वोह मुझ से ग़ीबत का ह़िसाब नहीं लेगा क्यूंकि मैं ने किसी की ग़ीबत नहीं की ।"[3]

❁....मैं ने एक लाख सह़ीह़ और दो लाख ग़ैर सह़ीह़ ह़दीषें याद की हैं ।[4]

﴾84﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

बारगाहे मुस्त़फ़ा में इमाम बुख़ारी का इन्तिज़ार :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद त़वावीसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मैं ख़्वाब में ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के साथ एक मक़ाम पर खड़े थे । मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब मरह़मत

---

1 ......تاریخ بغداد، الرقم: ۴۲۴محمدبن اسماعیل، ج ۲، ص ۱۴ـ

2 ......طبقات الشافعیة الکبری، الرقم: ۵۰ محمد بن اسماعیل، ج ۲، ص ۲۳۴،۲۳۳

3 ......تاریخ بغداد، الرقم: ۴۲۴محمدبن اسماعیل، ج ۲، ص ۱۳

4 ......تاریخ بغداد، الرقم: ۴۲۴محمدبن اسماعیل، ج ۲، ص ۲۵

फ़रमाया। फिर मैं ने खड़े होने का सबब दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **"मैं मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी का इन्तिज़ार कर रहा हूं।"** कुछ दिन के बा'द मा'लूम हुवा कि इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का विसाल हो गया है। तह्क़ीक़ करने पर पता चला कि जिस रात आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा था उसी रात मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की थी।[1]

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह्मत हो और उन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन*﴿

﴾59﴿ हज़रते सय्यिदुना इमाम सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى

हालात :

हज़रते सय्यिदुना इमाम सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का नाम सरी बिन मुग़ल्लिस और कुन्यत अबू हसन है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मुरीद और हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى के मामूं और उस्ताज़ थे। सूफ़िया के इमाम, आ़बिदो ज़ाहिद और अहले बग़दाद के उस्ताज़ थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी दुकान में पर्दा डाल कर एक हज़ार नवाफ़िल अदा किया करते थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रमज़ानुल मुबारक 253 हि. को अज़ाने फ़ज्र के बा'द वफ़ात पाई और मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार शूनीज़िय्या के क़ब्रिस्तान में है।

---

[1]......سیر اعلام النبلاء، الرقم: ۲۱۳۶ ابو عبد اللّٰہ البخاری، ج۱۰، ص۳۱۹۔

फ़रामीन :

❁....काश सारे आ़लम के दुख मुझे मिल जाते ताकि तमाम लोगों को ग़मों से रिहाई ह़ासिल हो जाती।

❁....मख़्लूक़ से कुछ न त़लब करते हुवे दुन्या से मुतनफ़्फ़िर रहने का नाम ज़ोहद है।"

❁....आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ब वक़्ते वफ़ात ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی को नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि "मख़्लूक़ में रहते हुवे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल न होना।" येह फ़रमा कर आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दुन्या से रुख़्सत हो गए।[1]

﴾85﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

ह़ाशिये में नाम लिखा था :

अबू उ़बैद बिन ह़रबुवैह कहते हैं कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के जनाज़े में शरीक हुवा। रात को उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी और मेरे जनाज़े में शरीक होने वालों की मग़फ़िरत फ़रमा दी।" उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं भी आप के जनाज़े में शरीक था।" तो आप ने एक काग़ज़ निकाल कर उस में देखा लेकिन उस में उस का नाम न था। उस ने अ़र्ज़ कि

---

1 ......تذکرۃ الاولیاء، ذکر سری سقطی، الجزء الاول، ص۲۴۵، ۲۵۴۔
تاریخ بغداد، الرقم:۴۷۶۹ السری بن المغلس، ج۹، ص۱۸۶، ۱۹۱۔

हुज़ूर बेशक मैं ह़ाज़िर हुवा था। तो आप ने दोबारा नज़र की तो क्या देखते हैं कि उस का नाम ह़ाशिये में लिखा हुवा था !(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾60﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

ह़ालात :

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का मुकम्मल नाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज बिन मुस्लिम कुशैरी नैशापूरी और कुन्यत अबू हुसैन है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی की वफ़ात के साल 204 हि. को आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत हुई और वफ़ात रजबुल मुरज्जब 261 हि. को नैशापूर में हुई। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कपड़े का कारोबार करते थे।

इल्मे ह़दीष की त़लब में इराक़, ह़िजाज़, शाम, मिस्र और बग़दाद का सफ़र किया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन राहवैह, ह़ज़रते सय्यिदुना का'नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन यह़या, ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबी उवैस, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अ़म्र, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मन्सूर, ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान बिन फ़र्रूख़ (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) वग़ैरा से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया। बग़दाद का सफ़र कई बार किया और रिवायात बयान कीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तिर्मिज़ी, ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन सलमा, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अबी त़ालिब, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र ख़फ़्फ़ाफ़,

1......تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم:۲۴۰۶السری بن مغلّس،ج۲۰،ص۱۹۸ ۔

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ुज़ैमा, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने साइद, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ह़ातिम (رَحمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہم) और इस के इलावा ख़ल्क़े कषीर ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया।(1)

इल्म का ख़ज़ाना :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र मुस्तमली عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ القَوِی बयान करते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر हमें अह़ादीष लिखवा रहे थे और इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस में से अह़ादीषे मुबारका का इन्तिख़ाब कर रहे थे और मैं मुकम्मल लिखना चाह रहा था, अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر ने इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ नज़र उठाई और इरशाद फ़रमाया : "जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को बाक़ी रखेगा हम ख़ैर से मह़रूम नहीं होंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب फ़रमाते हैं कि "इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़लिम हैं और इल्म का ख़ज़ाना हैं, मैं ने इन में भलाई के इलावा कुछ नहीं पाया।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ह़ातिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَاکِم फ़रमाते हैं कि "मैं ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ह़दीषे मुबारका लिखी है, ह़ुफ़्फ़ाज़ में क़ाबिले ए'तिमाद और ह़दीष में मा'रिफ़त रखते थे।"(2)

उस्ताज़ का अदब :

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के पास आए और इन की दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया और कहा : "ऐ उस्ताज़ों

---

1 ......تہذیب التہذیب، الرقم:۶۸۹۴ مسلم بن حجّاج، ج۸،ص ۱۵۰،۱۵۱۔
مرقاۃ المفاتیح،شرح مقدمۃ المشکاۃ،ج ۱،ص ۲۰۔

2 ......تہذیب التہذیب، الرقم:۶۸۹۴ مسلم بن حجّاج،ج۸،ص ۱۵۰،۱۵۱۔

के उस्ताज़ ! ऐ मुह़द्दिषीन के सरदार ! ऐ इलले ह़दीष के त़बीब ! मुझे मौक़अ़ दीजिये कि मैं आप के दोनों पाउं को भी बोसा दूं।"(1)

विसाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकीम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि "इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मजलिसे मुज़ाकरे में एक ह़दीषे मुबारका के बारे में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया, उस वक़्त आप उसे पहचान न सके। अपने घर तशरीफ़ लाए तो खजूरों की टोकरी आप को पेश की गई, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़दीषे मुबारका की तलाश करते करते खजूर खाते रहे, ह़दीषे मुबारका मिलने तक तमाम खजूरें तनावुल फ़रमा गए। पस ज़ियादा खजूरें खा लेना ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाल का सबब बना।"(2)

﴾86﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

जन्नत मुबाह़ फ़रमा दी :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ातिम राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने जवाब दिया "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये जन्नत मुबाह़ फ़रमा दी है जहां चाहता हूं रहता हूं।"(3)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

(1) طبقات الحنابلة لابن ابی یعلی، الرقم: ۳۸۷ محمد بن اسماعیل، ج ۱، ص ۲۵۵۔

(2) تهذیب التهذیب، الرقم: ۶۸۹۴ مسلم بن حجّاج، ج ۸، ص ۱۵۰۔

(3) بستان المحدثین، ص ۲۸۱۔

﴾61﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन बुलबुल शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सक़्र इस्माईल बिन बुलबुल शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی 230 हि. को पैदा हुवे । 265 हि. में ह़सन बिन मख़्लद के बा'द मो'तमिद बिल्लाह के वज़ीर मुक़र्रर हुवे । मुवफ़्फ़क़ बिल्लाह ने भी आप को अपना वज़ीर मुक़र्रर किया । मुआ़मलात को समझने, बिल ख़ुसूस निज़ामे सल्त़नत को बेहतरीन त़रीक़े से चलाने और बादशाहे वक़्त के कामों को बेहतर त़रीक़े से सर अन्जाम देने में अपनी मिषाल आप थे । बहुत दिलेर और निहायत ही बा हिम्मत मर्द थे । दुन्या का मालो मताअ़ आप की नज़र में बे वक़्अ़त था । तमाम मुआ़मलात में आख़िरत को पेशे नज़र रखते । निहायत ही ख़ुश अख़्लाक़ और कम गो थे । अगर किसी मुजरिम को क़त्ल की सज़ा देते तो उस के साथ भी हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आते थे ।

मन्क़ूल है कि "एक मरतबा ख़ादिम ने क़लम सियाही में डबो कर पेश किया तो बे ख़याली में सियाही के चन्द क़त़रे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़ीमती जुब्बे पर गिर गए और इस पर निशान पड़ गए, ख़ादिम ख़ौफ़ से कांपने लगा (कि न जाने अब क्या सज़ा मिलेगी) लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरगुज़र करते हुवे फ़रमाया : "घबराओ नहीं !" फिर अश्आ़र पढ़े :

إِذَا مَا الْمِسْكُ طِيبُ رِيحِ قَوْمٍ ... كَفَانِي ذَاكَ رَائِحَةُ الْمِدَادِ
فَمَا شَيْءٌ بِأَحْسَنِ مِنْ ثِيَابٍ ... عَلَى حَافَاتِهَا حُمَمُ السَّوَادِ

तर्जमा : जब लोगों की ख़ुश्बू से मुश्क ज़ाइल हो जाएगी तो मेरे लिये येही सियाही काफ़ी होगी । उन कपड़ों से अच्छी कोई चीज़ नहीं जिन के कन्धों की जगह पर सियाह धब्बे हों ।

इन्तिक़ाले पुर मलाल :

सूली कहते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی इन्तिहाई ह़सीनो जमील और बुलन्द क़दो क़ामत के मालिक थे । सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 278 हि. में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को गिरिफ़्तार कर के क़ैद में डाल दिया गया । खजूर के शीरे और पाए के शोरबे में डबो कर जुब्बा पहनाया जाता फिर गर्म जगह बिठाया जाता और त़रह़ त़रह़ की तकालीफ़ दी जातीं । जिन की ताब न ला कर माहे जुमादल ऊला में इस फ़ानी दुन्या से कूच कर गए ।

﴾87﴿ रह़मत भरी हिकायत

तकालीफ़ बरदाश्त करने के सबब मग़्फ़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में मुसीबतें और तकालीफ़ बरदाश्त करने के सबब मुझे बख़्श दिया । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की येह शान नहीं कि वोह मुझ पर दुन्या और आख़िरत के अ़ज़ाब (या'नी तकालीफ़) को जम्अ़ फ़रमाए ।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । आमीन﴿

हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ मुसीबतों और परेशानियों को ख़ुशी ख़ुशी क़बूल किया करते थे । हमारा येह ज़ेहन होना चाहिये कि हमें जो मुसीबतें या तकालीफ़ पहुंचती हैं,

(1)......سیراعلام النبلاء، الرقم:۲۳۳۳اسماعیل بن بُلْبُل،ج۱۰،ص۵۱۵،۵۱۶۔

येह वक़्ती होती हैं लेकिन इस पर मिलने वाला षवाब व इन्आ़म हमेशा बाक़ी रहने वाला और मुद्दते ला मह़दूद तक नफ़्अ़ पहुंचाने वाला होता है । येह इन्सानी फ़ित़रत है कि अगर बड़ा फ़ाइदा ह़ासिल होने का यक़ीन हो तो छोटी तक्लीफ़ें बरदाश्त करने के लिये हंसी ख़ुशी तय्यार हो जाता है । झुलसा देने वाली धूप में काम करने वाले मज़्दूर को देखिये, चन्द रूपों की ख़ाति़र कितनी सख़्त मशक़्क़त ख़ुशी ख़ुशी बरदाश्त कर लेता है । बस और वेगन के कन्डक्टरों को मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, शाम को मिलने वाली दहाड़ी का ह़सीन मन्ज़र इन्हें किस त़रह़ सेंकड़ों गालियों, बे शुमार तक्लीफ़ों और दिन भर की अज़िय्यतों को बरदाश्त करने का ह़ौसला फ़राहम करता है । इसी त़रह़ अह़ादीषे मुबारका में मज़्कूर मुसीबतों के फ़ज़ाइल अगर हम अपने पेशे नज़र रखेंगे तो मुसीबतों पर सब्र करना हमारे लिये आसान हो जाएगा जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की एक ह़दीष है कि "मुसलमान को जो मुसीबत पहुंचती है ह़त्ता कि कांटा भी चुभता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की वजह से उस के गुनाह मिटा देता है ।"(1)

तकब्बुर किसे कहते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राग़िब अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی लिखते हैं : "ذَالِکَ(اَیِ الْکِبْرُ) اَنْ یَرَا الْاِنْسَانُ نَفْسَہٗ اَکْبَرَمِنْ غَیْرِہٖ" या'नी : तकब्बुर येह है कि इन्सान अपने आप को दूसरों से अफ़्ज़ल समझे ।" (المفردات للرّاغب،ص ٦٩٧)

1 ......صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب ماجاء فی کفارۃ المرض، الحدیث: ٥٦٤٠، ج٤،ص ٣۔

﴾62﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ासिम जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बिन मुह़म्मद बिन जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی और कुन्यत अबुल क़ासिम है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उ़-लमाए सूफ़िया के सरदार हैं। बग़दाद में पैदा हुवे और वहीं परवरिश पाई, **297** हि. ब मुत़ाबिक़ **910** ई. को वफ़ात हुई। आप के वालिद निहावन्द के रहने वाले थे और क़वारीरी (या'नी शीशा फ़रोश) के नाम से पहचाने जाते थे क्यूंकि आप शीशा फ़रोख़्त करते थे और ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی ख़ज़्ज़ाज़ (या'नी रेशम फ़रोश) के नाम से मा'रूफ़ थे क्यूंकि आप रेशम का काम करते थे।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के एक हम अ़स्र बुज़ुर्ग का बयान है कि "मैं ने इन जैसा शख़्स नहीं देखा क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बेहतरीन लफ़्फ़ाज़ी की वजह से कातिबीन, फ़साह़त की वजह से शोअ़रा और नफ़ीस मआ़नी की वजह से मुतकल्लिमीन आप की मजलिस में ह़ाज़िर होते और बग़दाद शहर में इ़ल्मे तौह़ीद पर सब से पहले गुफ़्तगू भी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही ने फ़रमाई।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی अपने ज़माने के बहुत बड़े इमाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू षौर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़हब पर फ़क़ीह थे और बीस साल की उ़म्र में इमाम अबू षौर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ल्क़ए दर्स में इन की मौजूदगी में फ़तवा दिया

करते थे । उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को शैखे़ तसव्वुफ़ क़रार दिया है क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तसव्वुफ़ को कु़रआन व ह़दीष के क़वानीन के ऐन मुत़ाबिक़ मुरत्तब किया, बुरे अ़क़ाइद से इस का दामन सुथरा किया, इस की बुन्यादें मज़बूत़ कीं और हर ख़िलाफ़े शरअ़ बात से इस को मह़फ़ूज़ कर दिया । चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही का इरशाद है कि "जिस ने कु़रआने पाक को याद न किया और ह़दीषे नबवी को (किताब या दिल में) जम्अ़ न किया उस की इक़्तिदा व पैरवी न की जाए क्यूंकि हमारा येह इ़ल्म और (तरीक़त का) रास्ता कु़रआन व सुन्नत का पाबन्द है ।"[1]

सिर्फ़ ह़क़ बात ही कहता हूं :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कु़शैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब देखा गोया मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर ह़ाज़िर हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : 'ऐ अबल क़ासिम ! जो बातें तुम लोगों को बयान करते हो कहां से ह़ासिल करते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं सिर्फ़ ह़क़ बात ही कहता हूं ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने सच कहा ।"[2]

सच्चाई क्या है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में देखा गोया कि आस्मान से

1 ......اعلام للزرکلی،الجنید البغدادی، ج ۲، ص ۱۴۱ ـ
الرسالة القشيرية، ابو القاسم الجنيد بن محمد،ص ۵۰، ۵۱ـ

2 ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۲۳ـ

दो फ़रिश्ते उतरे हैं। इन में से एक ने मुझ से पूछा : "सच्चाई क्या है ?" मैं ने कहा : "अ़हद पूरा करना।" तो दूसरे फ़िरिश्ते ने कहा : "सच कहा।" फिर वोह दोनों आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो गए।(1)

इल्हामी कलाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं लोगों के सामने वा'ज़ कर रहा हूं। इतने में एक फ़िरिश्ता मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया और कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल करने का बड़ा ज़रीआ़ क्या है ?" मैं ने कहा : "वोह अ़मल जो छुप कर किया गया हो और मीज़ान में पूरा हो।" फ़िरिश्ता येह कहते हुवे चला गया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह इल्हामी कलाम है।"(2)

फ़रामीन :

۞....आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "आ़रिफ़ वोह होता है जो खुद ख़ामोश रहे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के असरार बयान करे।"(3)

۞....हम ने तसव्वुफ़ बह़ष व मुबाह़षा से ह़ासिल नहीं किया बल्कि भूक, तर्के दुन्या और उ़म्दा व मह़बूब चीज़ों से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ के बाइ़ष ह़ासिल किया।(4)

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۲۲۔

2 ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۲۱۔

3 ......الرسالة القشيرية،باب المعرفة باللّٰه، ص ۳۴۶۔

4 ......سيراعلام النبلاء، الرقم:۲۵۵۵ جنيد بن محمد بن جنيد، ج ۱۱، ص ۱۵۵۔

«88» रह़मत भरी ह़िकायत

सुब्ह़ की तस्बीह़ात काम आ गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ الۡقَوِی बयान करते हैं कि मैं ने उस्ताज़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को फ़रमाते हुवे सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद जुरैरी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ الۡهَادِی को ख़्वाब में देख कर ह़ाल पूछा तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : “हमारे इशारात व इ़बारात ने हमें कोई फ़ाइदा नहीं पहुंचाया बल्कि हमें उन तस्बीह़ात ने नफ़्अ़ दिया जो हम सुब्ह़ के वक़्त पढ़ा करते थे ।”(1)

«89» रह़मत भरी ह़िकायत

सह़र के वक़्त की रक्अ़तें काम आ गईं :

ह़ज़रते सय्यिदुना जा’फ़र ख़ुल्दी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ الۡقَوِی बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللهِ الۡهَادِی को इन्तिक़ाल के बा’द ख़्वाब में देख कर पूछा : “مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या’नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?” इरशाद फ़रमाया : “इशारात ख़त्म हो गए, इ़बारात मिट गईं, उ़लूम फ़ना हो गए, अह़वाल भी न रहे और हमें फ़ाइदा नहीं दिया मगर उन रक्अ़तों ने जो हम सह़र के वक़्त अदा करते थे बस बारगाहे ख़ुदावन्दी में वोही काम आ गईं ।”(2)

«अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन»

---

(1) ......الرسالة القشيريه، ص ۴۱۹۔

(2) ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصلاۃ، الحدیث: ۳۲۵۶، ج۳، ص ۱۸۲۔

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि रातों को उठ कर कुछ न कुछ इबादत किया करें कि रात को नमाज़ पढ़ने के बड़े फ़ज़ाइल हैं और रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ बेहतरीन त़रीक़ा ह़दीषे पाक में येह बयान किया गया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से पसन्दीदा रोज़े ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हैं, वोह एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन इफ़्त़ार करते थे (या'नी बिग़ैर रोज़े के रहते थे) और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से पसन्दीदा नमाज़ ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की है, वोह निस्फ़ रात तक सोते थे, तिहाई रात में क़ियाम करते थे और फिर रात के आख़िरी छटे ह़िस्से में सो जाते थे।"[1]

इस को यूं समझिये कि फ़र्ज़ करें कि रात 6 घन्टे की है तो इस का निस्फ़ 3 घन्टे है तो आप 3 घन्टे सो कर फिर उठ जाएं और तिहाई रात नमाज़ पढ़ें और 6 घन्टों के तिहाई 2 घन्टे हैं, पस आप 2 घन्टे नमाज़ पढ़ें और फिर रात के छटे ह़िस्से में सो जाए और 6 घन्टे का छटा ह़िस्सा 1 घन्टा है, पस आप 1 घन्टा सो कर फिर नमाज़े फ़ज्र के लिये उठ जाएं।

---

1 ......صحیح البخاری ، کتاب احادیث الانبیاء، باب احب الصلاۃ الی اللّٰہ... الخ، الحدیث: ۳۴۲۰، ج۲، ص ۴۴۸۔

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़र का वक़्त बड़ा बा बरकत है कि इस वक़्त में दुआ़एं क़बूल होती हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कौन सी दुआ़ ज़ियादा मक़्बूल है ?" तो सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रात के आख़िरी ह़िस्से में और फ़र्ज़ नमाज़ों के बा'द की दुआ़।"(1)

۞۞۞۞۞۞

﴾63﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी और कुन्यत अबू या'क़ूब है, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सूफ़िया के सरदार और बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी करने वाले थे, कहा जाता है कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अश्आ़र सुनते तो रो पड़ते। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वक़्त के इमाम थे।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के मुरीदीन में होता है। **304** हि. को अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले।(2)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۵۱۰، ج۵، ص۳۰۰۔

2 ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۲۶۷۴ یوسف بن الحسین، ج۱۱، ص۲۷۷۔

फ़रमान :

❁.... ज़ाहिद वोही होता है जो खुद को खो कर खुदा को तलाश करता रहे और बन्दे को बन्दे की त़रह़ रहना चाहिये और जो ग़ौरो फ़िक्र के साथ खुदा को पहचान लेता है वोह इबादत भी बहुत ज़ियादा करता है ।(1)

﴾90﴿ रह़मत भरी हि़कायत

सन्जीदगी की बरकत :

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "बख़्श दिया ।" पूछा गया : "किस सबब से ?" फ़रमाया : "क्यूंकि मैं ने कभी भी सन्जीदगी को मज़ाक़ के साथ नहीं मिलाया (या'नी सन्जीदा बात को मज़ाक़ में नहीं डाला और हमेशा सन्जीदा रहा) ।"(2)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । **आमीन**﴿*

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम रन्जीदा रहा करें कि ज़ियादा हंसने से दिल मुर्दा हो जाता और बा'ज़ अवक़ात दिल में बुग़्ज़ पैदा हो जाता है नीज़ इस की वजह से रो'ब व दब-दबा भी चला जाता है । और मज़ाक़िया, बातूनी और ग़ैर सन्जीदा इन्सान अक्षर दिल आज़ारियां करता बल्कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस की ज़बान से कुफ़्रियात निकल जाने का अन्देशा रहता है ।

---

1 ......تذکرۃ الاولیاء، ذکر یوسف بن الحسین، الجزء الاول، ص۲۸۵۔

2 ......احیاء علوم الدین، باب منامات المشائخ، ج۵، ص۲۶۴۔

"किसी के उ़यूब व नक़ाइस को इस त़रह़ ज़ाहिर करना कि लोग हंसें मज़ाक़ उड़ाना कहलाता है।" इस के लिये कभी तो किसी के क़ौल या फ़े'ल की नक़्ल उतारी जाती है और कभी इस की त़रफ़ मख़्सूस अन्दाज़ में इशारे किये जाते हैं। येह नाजाइज़ है क्यूंकि इस में दूसरों की तह़क़ीर और इहानत है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّۚ (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों।*

﴾64﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैरुन्नस्साज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

आप बहुत बड़े ज़ाहिद, सूफ़ी बुज़ुर्ग और सूफ़िया की एक जमाअ़त के उस्ताज़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिब्ली और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने आप ही की मजलिस में तौबा की। 202 हि. ब मुत़ाबिक़ 817 ई. को पैदा हुवे। आप का नाम मुह़म्मद बिन इस्माईल है (मक्कए मुकर्रमा और मदीनए त़य्यिबा के दरमियान वाक़ेअ़ शहर) सामरा के रहने वाले थे। और ख़ैरुन्नस्साज (नस्साज कपड़ा बुनने वाले को कहते हैं) के नाम से मश्हूर हैं और इस नाम से मश्हूर होने की वजह येह है कि एक

मरतबा आप ह़ज के लिये निकले तो एक शख़्स ने बाबे कूफ़ा पर आप को पकड़ लिया और कहा : "आप मेरे ग़ुलाम हैं और आप का नाम ख़ैर है।" आप सियाह फ़ाम थे, आप ने उस की मुख़ालफ़त न की। उस ने आप को रेशमी कपड़ा बुनने पर लगा दिया। वोह आप से कहता, ऐ ख़ैर ! आप फ़रमाते : "लब्बैक" (मैं ह़ाज़िर हूं) फिर चन्द सालों के बा'द उस शख़्स ने आप से कहा कि मुझ से ग़लती हो गई, न तो आप मेरे ग़ुलाम हैं और न ही आप का नाम ख़ैर है। आप उसे छोड़ कर चले गए और फ़रमाया : "मैं उस नाम को नहीं बदलूंगा जिस नाम से मुझे एक मुसलमान शख़्स ने पुकारा है।"

विसाल से पहले नमाज़ पढ़ना :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हुसैन मालिकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैरुन्नस्साज رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के विसाल के वक़्त मौजूद था मैं ने उस से आप के विसाल के बारे में पूछा तो उस ने कहा : जब मग़रिब की नमाज़ का वक़्त हुवा तो आप पर बेहोशी त़ारी हो गई। फिर आप ने अपनी आंखें खोलीं और घर के एक कोने में (किसी को) इशारा किया और फ़रमाया : "ठहर जाओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ करे तुम भी हुक्म के पाबन्द बन्दे हो और मैं भी हुक्म का पाबन्द बन्दा हूं। तुम्हें जिस बात का हुक्म दिया गया है (या'नी रूह़ क़ब्ज़ करने का) वोह काम तुम से रह नहीं जाएगा और जिस बात का (या'नी नमाज़े मग़रिब का) मुझे हुक्म दिया गया है वोह काम फ़ौत हो जाएगा।" फिर आप ने पानी मंगवाया और नमाज़ के लिये वुज़ू किया फिर आंखों को बन्द कर के कलिमए शहादत पढ़ा और 322 हि. ब मुत़ाबिक़ 934 ई. को इस दुन्याए फ़ानी से कूच कर गए।

﴾91﴿ रहमत भरी हिकायत

मैली दुन्या से आराम पा चुका हूं

हज़रते सय्यिदुना ख़ैरुन्नस्साज رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "इस बारे में मुझ से न पूछो, मैं तुम्हारी मैली दुन्या से आराम पा चुका हूं।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या, दनी से बना है और दनी का मा'ना ज़लील और घटया है और दुन्या आख़िरत के मुक़ाबले में ज़लील और घटया है और आख़िरत अफ़्ज़ल और आ'ला है और दुन्या के घटया होने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीष में आता है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "ऐ दावूद ! दुन्या की मिषाल उस मुरदार की त़रह़ है जिस पर कुत्ते जम्अ़ हो कर उस को घसीट रहे हों क्या तू पसन्द करता है कि तू भी उन की त़रह़ दुन्या को घसीटे।"(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है : وَمَا هٰذِهِ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ (پ۲۱،العنکبوت:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद। इस आयते मुबारका में दुन्या की ज़िन्दगी को खेल और

(1) ......الرسالة القشيرية،خير النساج،ص۲۹،۷۰۔

(2) ......كنزالعمال،كتاب الاخلاق،الحديث:۶۲۱۲،ج۲،الجزء الثالث،ص۸۷۔

तमाशे के साथ तश्बीह दी गई है क्यूंकि खेल कूद बहुत जल्द ख़त्म हो जाता है और दाइमी नहीं होता, इसी त़रह़ दुन्या की ज़ैबो ज़ीनत और इस की बात़िल ख़्वाहिशें ख़त्म होने वाले साए की त़रह़ हैं, इन के लिये कोई बक़ा नहीं और येह इस बात के लाइक़ नहीं कि इन पर अपने दिल को मुत़मइन किया जाए और इस की त़रफ़ माइल हो जाए। नीज़ खेल कूद में मश्ग़ूल होना बच्चों और कम अ़क़्लों का काम है न कि अ़क़्ल वालों का इसी वजह से अ़क़्ल वाले दुन्या की रंगीनियों और दिल चस्पियों से दूर रहते हैं।(1)

﴾65﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मह़ामिली बग़्दादी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मह़ामिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی का नाम हुसैन बिन इस्माईल बिन मुह़म्मद ज़ब्बी शाफ़ेई, बग़्दादी और कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है। 235 हि. के शुरूअ़ में पैदा हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़ाज़ी, बहुत बड़े इमाम, अ़ल्लामा, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष, बग़्दाद के शैख़ और मुह़द्दिष थे। मुह़म्मद बिन इस्माईल, अबू हुज़ाफ़ा अह़मद बिन इस्माईल, अ़म्र बिन अ़ली अल फ़ल्लास, ज़ियाद बिन अय्यूब, अह़मद बिन मिक़्दाम, मुह़म्मद बिन मुषन्नी वग़ैरा से इ़ल्म ह़ासिल किया। दा'लज बिन अह़मद, इमाम त़बरानी, इमाम दारे क़ुत़्नी, अबू अ़ब्दुल्लाह बिन जुमैअ़, इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह, इब्ने शाहीन और बे शुमार उ़–लमा ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

---

(1) ......روح البیان،پ ۲۱، العنکبوت،تحت الآیۃ:۶۴،ج۶،ص ۴۹۰۔

से इल्म ह़ासिल किया। 20 साल की उ़म्र में क़ाज़ी के ओ़ह्दे पर फ़ाइज़ हो गए थे और 60 साल तक कूफ़ा के क़ाज़ी रहे। 320 हि. से पहले क़ज़ा के ओ़ह्दे से इस्ति'फ़ा दे दिया।

विसाल :

अबू बक्र दावूदी बयान करते हैं कि "इमाम मह़ामिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की मजलिस में 10 हज़ार लोग ह़ाज़िर हुवा करते थे।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने घर में फ़िक़्ह की मजलिस क़ाइम की जिस में अहले इल्म और अहले नज़र आते रहते थे। 330 हि. में एक दिन मजलिस से फ़ारिग़ होने के बा'द आप की त़बीअ़त ख़राब हो गई और ग्यारह दिन बा'द आप का विसाल हो गया।[1]

﴾92﴿ रह़मत भरी हिकायत

अहले बग़दाद की बलाओं से हि़फ़ाज़त :

मुह़म्मद बिन ह़ुसैन बयान करते हैं कि मैं ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को कहते हुवे सुना "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मह़ामिली के सदक़े अहले बग़दाद से बलाओं को दूर फ़रमाता है।"[2]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

---

1 ......تذكرة الحفاظ، الرقم:٨٠٨المحاملى القاضى،ج٢، الجزء الثالث،ص ٣١۔
سيراعلام النبلاء، الرقم: ٢٩٥٧المحاملى القاضى، ج ١١، ص ٢٣٩، ٢٤٠۔

2 ......سيراعلام النبلاء، الرقم: ٢٩٥٧المحاملى القاضى، ج ١١، ص ٢٤٠۔

﴾66﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली मालिकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی

ह़ालात :

आप का पूरा नाम अबू बक्र दुलफ़ बिन जह़दर शिब्ली मालिकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی है, مَاوَرَاءُ النَّهۡر के अ़लाक़ों में "शिबलिय्यह" नामी गाउं से निस्बत की वजह से शिब्ली कहलाए । आबाओ अजदाद ख़ुरासान के रहने वाले थे । **247** हि. ब मुत़ाबिक़ **861** ई, को पैदा हुवे और **334** हि. ब मुत़ाबिक़ **946** ई. बग़दाद में विसाल फ़रमाया । इब्तिदा में दुम्बावन्द अ़लाक़े के वाली थे फिर इक़्तिदार को ख़ैरबाद कह कर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए थे ।[1]

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه निहायत ही इ़बादत गुज़ार और परहेज़गार थे, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैर बिन अ़ब्दुल्लाह नस्साज عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق के हाथ पर बैअ़त की और इन्हीं के हुक्म से ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی की सोह़बत इख़्तियार की और ह़ाल व इ़ल्म के ए'तिबार से अपने ज़माने में यक्ता हो गए ।[2]

फ़रामीन :

۞....आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में फ़रमाते थे : "وَكَمْ مِنْ مَوْضِعٍ لَوْمُتُّ فِيْهِ لَكُنْتُ بِهٖ نَكَالًا فِي الْعَشِيْرَةِ" या'नी कितने ही मक़ामात हैं कि अगर मैं उन में फ़ौत हो जाऊं तो इस वजह से ख़ानदान वालों के लिये अ़ज़ाब बन जाऊं ।[3]

---

1 ......الأعلام للزركلی، ابو بكر الشبلی، ج ۲، ص ۳۴۱ ۔ سیر اعلام النبلاء، ج ۱۲، ص ۴۹ ۔

2 ......تذكرة الاولياء، جز ۲، ص ۱۳۶ ۔

3 ......الرسالة القشيرية، ابوبكر بن جحدر الشبلی، ص ۷۱ ۔

۞....आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से ज़ोहद के बारे में पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा हर चीज़ से बे रग़बत हो जाओ ।"(1)

۞....एक मरतबा अ़लालत के दौरान अतिब्बा ने आप को परहेज़ का मश्वरा दिया तो आप ने पूछा कि "उस चीज़ से परहेज़ करूं जो मेरा रिज़्क़ है या उस चीज़ से जो मेरे रिज़्क़ में दाख़िल नहीं, क्यूंकि जो मेरा रिज़्क़ है वोह तो मुझे खुद ही मिल जाएगा और जो मेरा रिज़्क़ नहीं है वोह नहीं मिलेगा और जो मेरा रिज़्क़ है उस में परहेज़ करना मेरे लिये मुमकिन नहीं ।"(2)

﴾93﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

बिल्ली पर रह़्म के सबब मग़फ़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی को ख़्वाब में देखा गया, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने दरबार में खड़ा कर के इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें मा'लूम है मैं ने तुम्हें क्यूं बख़्श दिया ?" मैं अपने नेक आ'माल शुमार करने लगा जो नजात का ज़रीआ़ बन सकते थे । तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने इन आ'माल में से किसी अ़मल के सबब तेरी बख़्शिश नहीं फ़रमाई ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ फिर तूने किस सबब से मेरी मग़फ़िरत फ़रमाई ?" इरशाद फ़रमाया : "एक मरतबा तुम बग़दाद की गली से गुज़र रहे थे कि तुम ने एक बिल्ली को देखा जिसे सर्दी ने कमज़ोर

---

(1) ......الرسالۃ القشیریۃ، باب الزھد، ص ۱۵۳ ۔

(2) ......تذکرۃ الاولیاء مترجم، ص ۳۵۳ ۔

कर दिया था तो उस पर तरस खाते हुवे तुम ने उसे अपने चौग़े (जुब्बे) में छुपा लिया ताकि वोह सर्दी से बच जाए, पस बिल्ली पर रह़्म की वजह से मैं ने आज तुम पर रह़्म फ़रमाया है ।''(1)

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत से मा'लूम हुवा कि जानवरों पर रह़्म और उन के साथ हुस्ने सुलूक करना चाहिये उन्हें अज़िय्यत व तक्लीफ़ नहीं देनी चाहिये । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि ''सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जानवरों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काने और लड़ाने से मन्अ़ फ़रमाया ।''(2) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि ''सरकारे वाला तबार हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चेहरे पर मारने और दाग़ लगाने से मन्अ़ फ़रमाया ।''(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि ''इन्सान और हर ह़ैवान या'नी गधा, घोड़ा, ऊंट, खच्चर और बकरी वग़ैरा के चेहरे पर मारना मन्अ़ है ख़ास कर इन्सान के चेहरे पर मारना शिद्दत से मन्अ़ है क्यूंकि चेहरा कई ख़ूबियों का मजमूआ़ है नीज़ येह लत़ीफ़ भी होता है कि इस में ज़र्ब (मारने) का अषर ज़ाहिर हो जाता है । कभी ऐसा होता है कि चेहरा

---

1 ......حیاۃ الحیوان للدمیری، باب الھاء تحت الھر، ج۲،ص ۵۲۲۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الجھاد،باب ما جاء فی کراھیۃ التحریش بین البھائم ... الخ،الحدیث ۱۷۱۴، ج ۳، ص ۲۷۱۔

3 ......صحیح مسلم،کتاب اللباس و الزینۃ،باب النھی عن ضرب الحیوان ... الخ ، الحدیث:۲۱۱۶،ص ۱۱۷۱۔

ऐबदार हो जाता है और कभी बा'ज़ हवास को तक्लीफ़ पहुंचती है। रहा चेहरे पर दाग़ लगाना तो येह ह़दीष की वजह से बिला इजमाअ़ मन्अ़ है।''(1)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1197** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द **3** सफ़ह़ा **660** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जानवर पर ज़ुल्म करना ज़िम्मी काफ़िर पर ज़ुल्म करने से ज़ियादा बुरा है और ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना मुस्लिम पर ज़ुल्म करने से भी बुरा क्यूंकि जानवर का कोई मोईन व मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं उस ग़रीब को इस ज़ुल्म से कौन बचाए ?''

आज के इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसी हस्तियां मौजूद हैं जो इन्सान तो इन्सान बिला वजह जानवरों बल्कि च्यूंटी तक को भी तक्लीफ़ देना गवारा नहीं करते, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **101** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **ताआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत** सफ़ह़ा **45** पर है : एक मरतबा आप (या'नी क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त) دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वॉश बेसिन पर हाथ धोने के लिये पहुंचे मगर रुक गए और इरशाद फ़रमाया कि ''वॉश बेसिन में चन्द च्यूंटियां रेंग रही हैं, अगर मैं ने हाथ धोए तो येह बह कर मर जाएंगी।'' लिहाज़ा कुछ देर इन्तिज़ार फ़रमाने के बा'द जब च्यूंटियां आगे पीछे हो गईं तो फिर आप ने हाथ धोए।

---

1 ......شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب اللباس والزینة، باب النھی عن ضرب الحیوان، ج۷، الجزء الرابع العشر، ص۹۷

﴾94﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सब से बड़ा सआ़दत मन्द :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के एक दोस्त ने आप को ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू बक्र ! आप के साथ रहने वाले दोस्तों में सब से ज़ियादा सआ़दत मन्द कौन है ?" फ़रमाया : "सब से ज़ियादा अह़कामे शरइय्या की पासदारी करने वाला, ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कषरत और हुक़ूक़ुल्लाह की रिआ़यत करने वाला, अपने नुक़्सान को जानने वाला और अल्लाह वालों की ता'ज़ीम व तौक़ीर करने वाला।"(1)

﴾95﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

सब से बड़ा ख़सारा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को उन के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : मेरे किसी दा'वे पर मुझ से दलील का मुत़ालबा नहीं किया गया सिवाए येह कि एक दिन मैं ने कहा था कि "जन्नत से मह़रूमी और जहन्नम में दाख़िले से बड़ा कोई ख़सारा नहीं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "मेरी मुलाक़ात से मह़रूमी से बढ़ कर कौन सा ख़सारा है ?"(2)

---

1 ......طبقات الصوفية للسُّلمی، الطبقة الرابعة من أئمة الصوفية، الرقم: ۷۱ ابو بکر الشبلی، ص ۲٦۰۔

2 ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۱۹۔

﴾96﴿ रह़मत भरी हिकायत

निहायत ही सख़्ती से हि़साब :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "उस ने मुझ पर इतनी सख़्ती की, कि मैं मायूस हो गया। फिर जब उस ने मेरी मायूसी देखी तो मुझे अपनी रह़मत में ढांप लिया।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾67﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد

ह़ालात :

आप का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन जा'फ़र बिन ह़य्यान, कुन्यत अबू मुह़म्मद और अबुश्शैख़ के लक़ब से मश्हूर हैं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत 274 हि. ब मुताबिक़ 887 ई. को और वफ़ात 369 हि. ब मुताबिक़ 980 ई. को मुह़र्रमुल ह़राम के महीने में हुई। बचपन ही से त़लबे ह़दीष में मश्ग़ूल हो गए थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हाफ़िज़ुल ह़दीष थे। अबुल क़ासिम सूज़रजानी कहते हैं : "अबुश्शैख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब

---

(1)......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۲۳۔

बन्दों में से थे।" एक त़ालिबे इ़ल्म का बयान है कि "मैं जब भी अबुश्शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास गया उन्हें नमाज़ अदा करते हुवे पाया।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नोऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अबुश्शैख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जय्यिद आ़लिम थे, अह़काम और तफ़्सीर में कई कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुख़्तलिफ़ शुयूख़ से इ़ल्म ह़ासिल किया और **60** साल तक इन ही के फ़ैज़ से तस्नीफ़ व तालीफ़ करते रहे और निहायत ही मो'तमद व मुस्तनद रावी हैं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चन्द कुतुब येह हैं : (۱)اَلسُّنَّۃ (۲)اَلعَظْمَۃ(۳)اَلسُّنَن (۴)اَلاذَان (۵) اَلْفَرَائِض (۶)ثَوَابُ الْاَعْمَال वग़ैरा।[1]

﴾97﴿ रह़मत भरी हि़कायत

ख़ूब सूरत बुज़ुर्ग :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़ाफ़िज़ यूसुफ़ बिन ख़लील رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि गोया मैं कूफ़ा की मस्जिद में दाख़िल हुवा हूं। फिर मैं ने एक लम्बे क़द वाले निहायत ही ख़ूब सूरत बुज़ुर्ग को देखा। उन से ज़ियादा ह़सीन मैं ने किसी को नहीं देखा। मुझे बताया गया कि येह अबू मुह़म्मद बिन ह़य्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان हैं। मैं उन के पास पहुंचा और अ़र्ज़ की : "क्या आप अबू मुह़म्मद बिन ह़य्यान हैं?" फ़रमाया : "जी हां।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या आप विसाल नहीं

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۳۹۴ ابو الشیخ(عبد اللّٰہ بن محمد)،ج۱۲،ص۳۶۹ تا ۳۷۱۔

फ़रमा गए हैं ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं ?" मैं ने पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَیْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۷۴﴾ (پ ۲۴، الزمر: ۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का वारिष किया कि हम जन्नत में रहें जहां चाहें तो क्या ही अच्छा षवाब कामियों का ।"*

मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरा नाम यूसुफ़ है मैं आप से ह़दीष सुनने और आप की किताबें लेने आया हूं ।" इरशाद फ़रमाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे सलामत रखे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तौफ़ीक़ बख़्शे ।" फिर मैं ने उन से मुसाफ़हा किया तो उन की हथेलियां इतनी नर्म थीं कि उन से ज़ियादा नर्म चीज़ मैं ने कभी नहीं देखी । पस मैं ने उन्हें बोसा दिया और अपनी आंखों से लगाया ।(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । **आमीन**﴿*

﴾......इल्म सीखने से आता है.....﴿

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं ।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۳۱۲، ج ۱۹، ص ۵۱۱)

(1)......سیر اعلام النبلاء، ج ۱۲، ص ۳۷۰۔

﴾68﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू अह़मद ह़ाकिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَاکِم

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पूरा नाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन इस्ह़ाक़ नैशापूरी कराबीसी, कुन्यत अबू अह़मद और लक़ब ह़ाकिमे कबीर है। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 285 हि. को पैदा हुवे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत बड़े मुह़द्दिष और अपने वक़्त के इमाम थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा, अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन हुसैन, अबुल क़ासिम बग़वी, यूसुफ़ बिन या'क़ूब, इब्ने अबी ह़ातिम (رَحْمَۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْھِم) वग़ैरा से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया और इस के इ़लावा मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا मुल्के शाम, इ़राक़, ह़िजाज़, ख़ुरासान वग़ैरा के कषीर उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कषीर किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन में किताब "اَلْکُنٰی" मश्हूर है। शहर शाश और तूस के क़ाज़ी भी थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रबीउ़ल अव्वल 378 हि. को 93 साल की उ़म्र में नैशापूर में विसाल फ़रमाया।[1]

﴾98﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

नजात पाने वाला फ़िर्क़ा :

फ़क़ीह इस्माई़ल बिन इब्राहीम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू अह़मद ह़ाकिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَاکِم को ख़्वाब में देख कर पूछा : "आप लोगों के नज़्दीक कौन सा फ़िर्क़ा नजात पाने वाला है ?" तो आप ने

---

[1] ......معجم المؤلفين، الرقم:٥٤٣٨ا محمد الحاكم،ج٣،ص١٢٠۔
سیراعلام النبلاء، الرقم:٣٤٦٥ ابواحمد الحاکم،ج١٢،ص٤٣٢،٤٣٦۔

अपनी शहादत की उंगली से इशारा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "आप लोग (या'नी अहले सुन्नत) ।"(1)

﴾69﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अहमद बिन हुसैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

हज़रते सय्यिदुना शैखुल इस्लाम अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन मेहरान नैशापूरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی 295 हि. ब मुताबिक़ 908 ई. को पैदा हुवे । बहुत बड़े इबादत गुज़ार और मुस्तजाबुद्दा'वात थे । क़िराअत में अपने ज़माने के इमाम थे । माहे शव्वालुल मुकर्रम 381 हि. ब मुताबिक़ 991 ई. को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा ।

﴾99﴿ रहमत भरी हिकायत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی फ़रमाते हैं : मुझे उ़मर बिन अहमद ने बताया कि उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन हुसैन बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحمٰن को उन की तदफ़ीन की रात ख़्वाब में देख कर पूछा : "اَيُّهَا الْاُسْتَاذُ! مَا فعَلَ اللّٰهُ بِكَ" "या'नी ऐ उस्ताज़े मोहतरम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अबू हसन आ़मिरी फ़लसफ़ी को मेरे बराबर खड़ा किया और फ़रमाया : "तेरी जगह इसे जहन्नम में डाला जाएगा ।" हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی फ़रमाते हैं कि "आ़मिरी फ़लसफ़ी उन के साथ ही दुन्या से गया था ।"(2)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । आमीन﴿

---

(1)......تاريخ مدينة دمشق،الرقم:٧٢٩٣،ج٥٥، ص ١٥٩ـ

(2)......سيراعلام النبلاء، الرقم:٣٤٩٢ ابن مهران احمدبن الحسين،ج١٢، ص٤٥٥ـ

﴾70﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मन्सूर शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुकम्मल नाम अह़मद बिन मन्सूर बिन षाबित शीराज़ी और कुन्यत अबुल अ़ब्बास है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जितनी अह़ादीष इन्हों ने जम्अ़ कीं इतनी किसी और ने नहीं कीं और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को शीराज़ में इतनी मक़्बूलिय्यत ह़ासिल थी कि लोग आप की मिषालें दिया करते थे।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى से (सुन कर) तीन लाख अह़ादीष लिखी हैं।" आप की वफ़ात 382 हि. ब मुत़ाबिक़ 993 ई. को हुई।

﴾100﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

दुरूदे पाक की वजह से बख़्शिश हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन उ़षमान ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि हुसैन बिन अह़मद शीराज़ी ने कहा : जब ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر का विसाल हुवा तो एक शख़्स मेरे वालिद साह़िब के पास आया और कहा कि मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر को देखा कि आप शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद के मेह़राब में सब्ज़ हुल्ला ज़ेबे तन किये और सर पर जवाहिरात से मुरस्सअ़ (या'नी जड़ा हुवा) ताज सजाए खड़े हैं। मैं ने पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया :

"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और मुझे ए'ज़ाज़ व इकराम से नवाज़ा।" मैं ने पूछा : "किस सबब से ?" फ़रमाया : "नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ने की वजह से।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! उ़म्र में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब ख़्वाह नामे अक़्दस खुद ले या दूसरे से सुने और अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए हर बार दुरूद शरीफ़ पढना चाहिये।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो! दुरूद शरीफ़ पढ़ना एक अ़ज़ीम इबादत हैं। बुज़ुर्गाने दीन ने इस को पढ़ने की जो ह़िक्मतें बयान फ़रमाई हैं उस का खुलासा येह है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जुम्ला मख़्लूक़ात में सब से ज़ियादा करीम, रह़ीम, शफ़ीक़, अ़ज़ीम, और सख़ी हैं। शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोमिनों पर सब से ज़ियादा अह़सानात हैं इस लिये मोह़सिने आ'ज़म के एह़सान के शुक्रिया में हम पर दुरूद पढ़ना मुक़र्रर किया गया है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस लिये हमें चाहिये कि ब कषरत दुरूदे पाक पढ़ा करें। उ़-लमा फ़रमाते हैं कि "जो रोज़ाना 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़े उसे भी कषरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों में शुमार किया जाएगा।" ब कषरत दुरूद शरीफ़ पढ़ने का

---

(1) ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۵۴۶ احمد بن منصور، ج ۱۲، ص ۵۰۰۔

(2) ......بہارشریعت، ج ۱، حصہ ۳، ص ۵۳۳۔

एक फ़ाइदा येह भी है कि दुरूदे पाक पढ़ने वाला शहादत की मौत मरता है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 860 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (शहीदों का तज़्किरा करते हुवे) फ़रमाते हैं : जो नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े (वोह भी शहीद है)।

﴾71﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दारेक़ुत़नी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दारे क़ुत़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى का नाम अ़ली बिन उ़मर बिन अह़मद बिन महदी शाफ़ेई, बग़दादी, दारे क़ुत़नी और कुन्यत अबू ह़सन है। 306 हि. को पैदा हुवे। बग़दाद के मह़ल्ला दारे क़ुत़न से तअ़ल्लुक़ रखते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दारे क़ुत़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى इल्म के समन्दर, बहुत बड़े इमाम, क़वी ह़ाफ़िज़े वाले, इलले ह़दीष और रिजाल की मा'रिफ़त, क़िराअत और इस के तुरुक़, फ़िक़ह, मग़ाज़ी वग़ैरा में महारत रखते थे।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ल्लिकान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत बड़े आ़लिम, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष और मज़हबे शाफ़ेई के फ़क़ीह थे। फ़िक़ह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद इस्त़ख़री शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى से ह़ासिल की।(2)

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۳۵۳۰ الدارقطنی، ج ۱۲، ص ۴۸۳۔

2 ......وفیات الاعیان، الرقم: ۴۳۴ الدارقطنی، ج ۳، ص ۲۶۰۔

इस के इलावा दीगर असातिज़ा में अबुल क़ासिम बग़वी, यहूया बिन मुहम्मद, अबू बक्र बिन अबी दावूद, मुहम्मद बिन नैरूज अन्माती, हुसैन बिन इस्माईल महामिली رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہِم वग़ैरा के नाम क़ाबिले ज़िक्र हैं। हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह हाकिम, हाफ़िज़ अब्दुल ग़नी, तम्माम बिन मुहम्मद, क़ाज़ी अबू तय्यिब तबरी, हाफ़िज़ अबू नोऐम अस्फ़हानी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہِم) और इन के इलावा कषीर लोग आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आ कर इल्म हासिल करते।[1]

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अब्दुल ग़नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि "अपने अपने वक़्त में हदीषे रसूल पर बेहतरीन कलाम करने वाले तीन अश्ख़ास हैं : हज़रते सय्यिदुना अली बिन मदीनी, हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन हारून और हज़रते सय्यिदुना दारे कुत़्नी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہِم)"[2]

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू तय्यिब तबरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम दारे कुत़्नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی अमीरुल मोअमिनीन फ़िल हदीष थे।" हज़रते सय्यिदुना अबू फ़त्ह बिन अबी फ़वारिस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "हम हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम बग़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की मजलिस में हाज़िर हुवा करते थे और दारे कुत़्नी रोटी पर चटनी लिये हमारे पीछे चलते थे और उस वक़्त आप का बचपन था।"[3]

विसाल :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 385 हि. को बुध के दिन बग़दाद में विसाल फ़रमाया। नमाज़े जनाज़ा मश्हूर फ़क़ीह अबू हामिद

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۵۳۰ الدارقطنی، ج۱۲، ص۴۸۳،۴۸۵۔

2 ......وفیات الاعیان، الرقم:۴۳۴ الدارقطنی، ج۳، ص۲۶۱۔

3 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۵۳۰ الدارقطنی، ج۱۲، ص۴۸۶۔

इसफ़राइनी ने पढ़ाई और बाबे दीर के क़ब्रिस्तान में हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى के क़रीब दफ़्न किये गए।(1)

﴾101﴿ रहमत भरी हिकायत

जन्नत में इमाम कह कर बुलाया जाता है :

अबू नस्र अ़ली बिन हिबतुल्लाह बयान करते हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा गोया मैं आप के ह़ाल के बारे में पूछ रहा हूं कि "आख़िरत में आप के साथ क्या मुआ़मला हुवा ?" तो मुझ से कहा गया : "जन्नत में इन को इमाम कह कर बुलाया जाता है।(2)

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

﴾72﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैद मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي

हालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुकम्मल नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैद क़ैरवानी मालिकी और कुन्यत अबू मुह़म्मद है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इल्मो अ़मल में नुमायां और मुमताज़ थे। हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "दीनो दुन्या की सरदारी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हिस्से में आई। लोग अत़राफ़े आ़लम से सफ़र कर के आप के पास आते थे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने रुफ़क़ा पर फ़ज़्लो कमाल में फ़ौक़िय्यत ले गए थे।"

---

1 ......وفیات الاعیان، الرقم:۴۳۴ الدارقطنی، ج۳،ص ۲۶۱۔

2 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۵۳۰ الدارقطنی، ج۱۲،ص۴۸۸۔

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "الرِّسَالَۃ" उस वक़्त लिखी जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 17 साल के थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 386 हि. को अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले।(1)

﴾102﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

मुझे बख़्श दिया गया :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़ैद मालिकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی के इन्तिक़ाल के बा'द उन्हें किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" तो आप ने जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया गया।" पूछा गया कि "किस वजह से ?" तो आप ने जवाब दिया : मेरे इस क़ौल की वजह से जो मैं ने इस्तिन्जा से मुतअ़ल्लिक़ अपने रिसाले में लिखा था कि "(कामिल त़हारत के लिये) त़हारत ह़ासिल करने वाले को चाहिये कि वोह अपनी शर्मगाह को ढीला छोड़ दे।"(2)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

मदनी मश्वरा : इस्तिन्जा के मसाइल सीखने के लिये क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का 18 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "**इस्तिन्जा का त़रीक़ा**" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۲۱۸ ابن ابی زید، ج ۱۲، ص ۵۲۴۔

2 ......الزواجرعن اقتراف الکبائر، کتاب الطھارۃ، باب قضاء الحاجۃ، ج ۱، ص ۲۷۰۔

﴾73﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल सो'लूकीशाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सह्ल बिन मुह़म्मद बिन सुलैमान सो'लूकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی की कुन्यत अबू त़य्यिब है और शाफ़ेई मज़्हब से तअ़ल्लुक़ रखते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़क़ीह, अदीब, नैशापूर के मुफ़्ती इब्ने मुफ़्ती और अपने वक़्त के इमाम बल्कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुजद्दिद मानते थे। आप के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सह्ल मुह़म्मद बिन सुलैमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी बहुत बड़े आ़लिम थे, इल्मे फ़िक़्ह अपने वालिद से ह़ासिल किया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मजलिस में 500 से ज़ियादा दवात रखी जाती थी। नैशापूर के फ़ुक़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इल्म ह़ासिल किया करते थे। रजबुल मुरज्जब 404 हि. को वफ़ात पाई।[1]

﴾103﴿ रह़मत भरी हिकायत

शरई मसाइल बताने की वजह से बख़्शिश :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद शह्ह़ाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम अबू त़य्यिब सह्ल सो'लूकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को ख़्वाब में देख कर कहा : "ऐ शैख़ !" फ़रमाया : "शैख़ को छोड़ो।" मैं ने कहा : "जिन अह़्वाल को मैं ने देखा है

---

1 ......وفیات الاعیان، الرقم:۲۸۴ ابو الطیب الصعلوکی، ج۲،ص ۳۶۲۔
سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۷۳۵ الصعلوکی العلامۃ،ج۱۳،ص ۱۲۶۔

उन का क्या बना ?" फ़रमाया : "उन्हों ने हमें कोई फ़ाइदा न दिया ।" मैं ने पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उन मसाइल की वजह से बख़्श दिया जो लोग मुझ से पूछते थे और मैं उन्हें जवाबात देता था ।"(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । **आमीन**﴿*

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन सिखाने और फैलाने की अ़ज़ीम तरीन फ़ज़ीलतों में से एक येह है कि जब तक वोह इ़ल्म आगे से आगे फैलता रहता है तब तक इ़ल्म फैलाने और सिखाने वाले को इस का षवाब मिलता रहता है । इस से दर्से निज़ामी पढ़ाने वाले उ़-लमा की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत का पता चलता है जो सारी ज़िन्दगी एक बहुत बड़ी ता'दाद को इ़ल्मे दीन सिखाते हैं फिर वोह फ़ारिग़ हो कर मज़ीद त़लबा को पढ़ाते हैं । यू येह सिलसिला चलता रहता है और इस तमाम सिलसिले का षवाब पहले वाले असातिज़ा को ब तदरीज मिलता रहता है । ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने इ़ल्म की इशाअ़त की तो उसे अ़मल करने वाले का भी षवाब मिलेगा और अ़मल करने वाले के अज्र में कुछ कमी न होगी ।"(2) यह़्या बिन यह़्या मसमूदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی कहते हैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना

---

1 ......الرسالة القشيرية ، باب رؤيا القوم ،ص ٤٢٠-

2 ......سنن ابن ماجه ، كتاب السنة، باب ثواب معلم الناس الخير، ج ١ ، ص ١٥٦-

रबीअ़ की एक रिवायत बयान फ़रमाई कि "किसी शख़्स को नमाज़ के मसाइल बतलाना रूए ज़मीन की तमाम दौलत सदक़ा करने से बेहतर है और किसी शख़्स की दीनी उलझन दूर कर देना **100** ह़ज करने से अफ़्ज़ल है।"(1)

❁❁❁❁❁❁

﴾74﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

ह़ालात :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम ह़सन बिन अ़ली बिन मुह़म्मद दक़्क़ाक़ और कुन्यत अबू अ़ली है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللّٰهِ الْقَوِى के उस्ताज़ थे। अपने वक़्त के इमाम थे। वा'ज़ फ़रमाया करते थे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मक़ामे "मर्व" की त़रफ़ सफ़र किया, और इल्मे फ़िक़ह ह़ासिल किया, तसव्वुफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना नस्र आबाज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى की सोह़बत इख़्तियार की। कहा जाता है कि अख़ीर उ़म्र में इन की गुफ़्तगू ऐसी हो गई थी कि कोई समझने की त़ाक़त न रखता था। नैशापूर में ज़ुल हि़ज्जा **405** हि. को विसाल फ़रमाया।(2)

फ़रामीन :

❁....जिस ने अपने ज़ाहिर को मुजाहदे के साथ मुज़य्यन किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बाति़न को मुशाहदे के साथ ह़सीन बना देगा।(3)

---

(1)......بستان المحدثين، ص ٣٩ ـ

(2)......تاريخ الإسلام للذهبي، حرف الحاء، ج٢٨، ص ١٤٠ ـ

نفحات الانس (مترجم)، الرقم: ٣٥٥ شيخ ابو على دقاق، ص ٣٢٩ ـ

(3)......الرسالة القشيرية، باب المجاهدة، ص ١٣٣ ـ

....जो हक़ बात कहने से ख़ामोश रहा वोह गूंगा शैतान है।"[1]

﴾104﴿ रहमत भरी हिकायत

मग़्फ़िरत का मुआमला बड़ी बात नहीं :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम कु़शैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना उस्ताज़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "यहां मग़्फ़िरत का मुआमला कोई बड़ी बात नहीं, जो लोग यहां हैं उन में कम मर्तबे का फ़ुलां शख़्स है जिसे ऐसे ऐसे इन्आमात दिये गए हैं।" फ़रमाते हैं : ख़्वाब ही में मेरे दिल में येह ख़याल आया कि उन्हों ने इस से वोह आदमी मुराद लिया है जिस ने किसी को नाहक़ क़त्ल किया था।[2]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से पता चला कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर किस क़दर मेहरबान है कि जब उस की रहमत जोश में आती है तो बड़े से बड़े गुनाहगार को भी बख़्श देता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है वोह चाहे तो बड़े से बड़े गुनाह को भी बख़्श दे और चाहे तो ब ज़ाहिर एक मा'मूली से गुनाह पर भी पकड़ फ़रमा ले येह सब उस की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है।

---

1 ......الرسالة القشيرية، باب الصمت، ص ۱۵۶۔

2 ......الرسالة القشيرية، باب رؤيا القوم، ص ۴۲۰۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये तमाम मुसलमान "مَحفُوظُ الدَّم" हैं या'नी बिग़ैर किसी शरई वजह के किसी मुसलमान का ख़ून बहाना ह़राम है और अगर किसी शरई वजह की बिना पर कोई मुसलमान "مُبَاحُ الدَّم" हो जाए या'नी उस की जान की ह़ुरमत बाक़ी न रहे फिर भी उसे क़त्ल करना अ़वाम का काम नहीं बल्कि येह इस्लामी ह़ुकूमत का मन्सब और उस की ज़िम्मेदारी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और* ***अल्लाह*** *ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब ।"*

ह़दीष शरीफ़ में है कि "दुन्या का हलाक होना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक एक मुसलमान के क़त्ल होने से ज़ियादा हल्का है ।"(1)

मक़्बूल अ़मल में कमी नहीं होती

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि "अ़मल करने से ज़ियादा उस के क़बूल हो जाने की सअ़्य करो क्यूंकि अ़मले मक़्बूल कम नहीं होता ।" (تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر ج۴۲،ص۱۱۵)

(1)......سنن الترمذی، کتاب، باب ماجاء فی تشدید قتل المومن، الحدیث:۱۴۰۰، ج۳،ص۹۹۔

﴾75﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकिम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ज़ब्बी, त़हमानी, नैशापूरी, शाफ़ेई, कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और इब्ने बय्यिअ़ के नाम से मश्हूर हैं।(1) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 3 रबीउ़ल अव्वल 321 हि. को पीर के दिन नैशापूर में पैदा हुवे।(2) और यहीं 405 हि. को वफ़ात पाई।(3) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुह़द्दिष, ह़ाफ़िज़ और मुअर्रिख़ थे।(4) क़ाज़ी होने की वजह से ह़ाकिम के नाम से मश्हूर हो गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने 2 हज़ार से ज़ियादा असातिज़ा से इल्मे ह़दीष ह़ासिल किया और इल्मे फ़िक़ह इब्ने अबी हुरैरा, अबू सह्ल सो'लूकी शाफ़ेई वग़ैरा رَحِمَهُمُ اللّٰه تعالٰی से ह़ासिल किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कषीर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन में चन्द के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (۱)فَضَائِلُ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاء (۲)مَعْرِفَةُ عُلُوْمِ الْحَدِيْث (۳)اَلْمُسْتَدْرَك عَلَى الصَّحِيْحَيْن (۴)تَارِيْخُ عُلَمَاءِ نَيْسَابُوْر (۵)فَضَائِلُ الْاِمَامِ الشَّافِعِي۔

---

1 ......معجم المؤلفين، الرقم: ۱۴۳۵۰ محمد الحاكم، ج۳، ص ۴۵۳۔

2 ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۳۷۱۴ الحاكم، ج ۱۳، ص ۹۷۔

3 ......الاعلام للزركلی، الحاكم النیسابوری، ج ۶، ص ۲۲۷۔

4 ......معجم المؤلفين، الرقم: ۱۴۳۵۰ محمد الحاكم، ج۳، ص ۴۵۴۔

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उ़लूमे ह़दीष में मुतअ़द्दद कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन की जिल्दों की ता'दाद एक हज़ार पांच सो तक है।[1] इमाम दारे कुत़्नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से पूछा गया कि "इब्ने मुन्दा ज़ियादा मज़्बूत़ ह़ाफ़िज़े वाले हैं या इब्ने बय्यिअ़ (या'नी इमाम ह़ाकिम) ?" फ़रमाया : "इब्ने बय्यिअ़ ज़ियादा मज़्बूत़ ह़ाफ़िज़े वाले हैं।"[2] ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ल्लिकान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَاکِم अपने ज़माने में मुह़द्दिषीन के इमाम थे और ऐसी कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं कि आप से पहले किसी ने इस की मिष्ल न लिखीं।" मज़ीद फ़रमाते हैं कि "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़लिम, आ़रिफ़ और वसीअ़ इ़ल्म वाले थे।"[3]

फ़रमान :

....ह़ाफ़िज़ अबू ह़ाज़िम अ़ब्दवी फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَاکِم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "मैं ने आबे ज़म ज़म पीने के बा'द दुआ़ की, कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़ुस्ने तस्नीफ़ अ़त़ा फ़रमा।"[4]

विसाल :

अबू मूसा मदीनी फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَاکِم एक दिन ह़म्माम में दाख़िल हुवे, ग़ुस्ल

---

(1) ......معجم المؤلفين، الرقم: ١٤٣٥٠ محمد الحاكم، ج٣، ص ٤٥٤۔
وفیات الاعیان، الرقم: ٢١٥ الحاكم النيسابوری، ج٤، ص ١٠٦۔
(2) ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ٣٧١٤ الحاكم، ج ١٣، ص ١٠٢۔
(3) ......وفیات الاعیان، الرقم: ٢١٥ الحاكم النيسابوری، ج٤، ص ١٠٦۔
(4) ......طبقات الشافعية الكبرى للسبكی، الرقم: ٣٢٩ محمد بن عبد اللّٰه، ج٤، ص ١٥٩۔

फ़रमाया और बाहर तशरीफ़ लाए इस के बा'द एक आह खींची और रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुध के दिन अ़स्र के बा'द सिपुर्दे ख़ाक किया गया। नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र हैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने पढ़ाई।(1)

«105» रह़मत भरी हिकायत

ह़दीष लिखने में नजात है :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अशअ़ष رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने इमाम ह़ाकिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَاکِم को ख़्वाब में घोड़े पर अच्छी ह़ालत में देखा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमा रहे हैं कि "नजात ह़ासिल कर लो।" मैं ने पूछा : "नजात किस चीज़ में है ?" फ़रमाया : "ह़दीष शरीफ़ लिखने में।"(2)

«अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन»

«76» ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम हिबतुल्लाह शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम हिबतुल्लाह बिन ह़सन बिन मन्सूर त़बरी, राज़ी, शाफ़ेई लालकाई और कुन्यत अबुल क़ासिम है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष और मुफ़्तिये वक़्त थे।

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۳۷۱۴ الحاکم، ج۱۳، ص۱۰۴۔

2 ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۳۷۱۴ الحاکم، ج۱۳، ص۱۰۴۔

फ़िक़्हे शाफ़ेई शैख़ अबू हामिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से हासिल की और मज़हबे शाफ़ेई में अपने हमसिरों से फ़ौक़िय्यत ले गए। "दीनवर" में रमज़ानुल मुबारक के महीने में **418** हि. ब मुताबिक़ **1027** ई. को हालते जवानी में इस फ़ानी दुन्या से पर्दा फ़रमाया।

﴾106﴿ रहमत भरी हिकायत

सुन्नत पर अमल की बरकत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक़्ल करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन बिन जद्दा उक्बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने बयान किया कि "मैं ने हज़रते सय्यिदुना हिबतुल्लाह तबरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।" अर्ज़ की : "किस सबब से ?" तो उन्हों ने राज़दाराना अन्दाज़ में कहा : "सुन्नत पर अमल की बरकत से।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

ख़बरदार !!!

ग़ीबत हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है

ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग ! जारी रहेगी ......,

"न ग़ीबत करेंगे न ग़ीबत सुनेंगे" (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

---

(1) ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۳۷۸۸ اللالکائی(ھبۃ اللّٰہ بن الحسن)،ج۱۳، ص۲۶۹،۲۷۰۔

﴾77﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त़ीब बग़दादी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْکَافِی

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम अह़मद बिन अ़ली बिन षाबित शाफ़ेई बग़दादी है। कुन्यत अबू बक्र और ख़त़ीबे बग़दादी के नाम से मश्हूर हैं। **392** हि. को पैदा हुवे और **463** हि. को विसाल फ़रमाया।(1) आप के वालिद अबुल ह़सन ह़ाफ़िज़े क़ुरआन थे। वालिद साह़िब ने अबू ह़फ़्स क़त्तानी से इ़ल्म ह़ासिल किया और बग़दाद के अ़लाक़े दरज़ीजान के ख़त़ीब थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त़ीब बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی का शुमार मश्हूर अइम्मा, कषीर तसानीफ़ वाले, नुमायां व मुमताज़ हुफ़्फ़ाज़ और ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ में होता है। अबू उ़मर बिन महदी, अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन मुह़म्मद बज़्ज़ार, अबुल हुसैन बिन बिश्रान, और ह़ाफ़िज़ अबू नोऐ़म अस्फ़हानी वग़ैरा से इ़ल्म ह़ासिल किया।(2) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه शाफ़ेई मज़्हब के बहुत बड़े इमाम थे और फ़िक़्हे शाफ़ेई अबू ह़सन बिन मह़ामिली और क़ाज़ी अबू त़य्यिब से ह़ासिल की।(3) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ली फ़ीरोज़ाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि "ख़त़ीबे बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ह़दीष की मा'रिफ़त और ह़िफ़्ज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दारे क़ुत़नी

---

1 ......الاعلام للزرکلی، الخطیب البغدادی، ج ۱، ص ۱۷۲

2 ......تاریخ مدینة دمشق، الرقم: ۶۱۱ احمد بن علی، ج ۵، ص ۳۱۔
تذکرة الحفاظ، الرقم: ۱۰۱۵ الخطیب الحافظ الکبیر، ج ۲، الجزء الثالث، ص ۱۲۲۱۔

3 ......المرجع السابق، ج ۲، الجزء الثالث، ص ۲۲۲۔

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के मुशाबेह हैं ।"[1] अबुल हसन ह–मज़ानी बयान करते हैं कि "येह इल्म हज़रते सय्यिदुना ख़तीबे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی की वफ़ात के साथ चला गया ।" शुजाअ़ ज़ुहली फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना ख़तीबे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इमाम, मुसन्निफ़, हाफ़िज़ुल हदीष थे और इन की मिषाल नहीं मिलती ।"[2]

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब हज किया तो तीन घूंट में आबे ज़म ज़म पिया और तीन दुआएं कीं । पहली दुआ येह कि "मैं तारीख़े बग़दाद को बग़दाद में बयान करूं, दूसरी येह कि जामेअ़ मन्सूर में हदीष इम्ला कराऊं (या'नी हदीष लिखवाऊं) और तीसरी येह कि हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के बराबर में दफ़्न किया जाऊं ।"[3] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह तीनों दुआएं मक़्बूल हुईं ।

﴾107﴿ रहमत भरी हिकायत

सफ़ेद इमामा और सफ़ेद लिबास :

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली हसन बिन अह़मद बिन हुसैन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی कहते हैं कि मैं ने शैख़ अबू बक्र ख़तीब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देखा कि ख़ूब सूरत सफ़ेद रंग का इमामा और सफ़ेद लिबास पहने हश्शाश बश्शाश मुस्कुरा रहे हैं । मैं नहीं जानता कि मेरे सुवाल करने पर कि "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" या फिर उन्हों ने ख़ुद

1 ......تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم:٦١١ احمد بن علی، ج٥، ص٣٦۔

2 ......تذکرۃ الحفاظ، الرقم:١٠١٥ الخطیب الحافظ الکبیر، ج٢، الجزء الثالث، ص٢٢٤۔

3 ......تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم:٦١١ احمد بن علی، ج٥، ص٣٤۔

ही मुझे बताया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।" या फ़रमाया : "मुझ पर रह़्म फ़रमाया और हर उस शख़्स की मग़्फ़िरत या हर उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाया जिस ने तौह़ीद व रिसालत की गवाही दी। पस तुम सब ख़ुश हो जाओ।"[1]

﴾108﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

चैन के बाग़ात में :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं कि अबुल फ़ज़्ल बिन ख़ैरून ने बताया कि एक नेक आदमी मेरे पास आए और मुझे बताया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़त़ीबे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی को ख़्वाब में देख कर ह़ाल पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "اَنَا فِی رَوْحٍ وَّرَیْحَانٍ وَّجَنَّةِ نَعِیْمٍ या'नी मैं राह़त व फूल[2] और चैन के बाग़ में हूं।"

﴾109﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन मरज़ूक़ ज़ा'फ़रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने फ़क़ीह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अह़मद बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के ह़वाले से बयान किया

---

1 ...... تاریخ مدینة دمشق، الرقم:٦١ احمد بن علی خطیب بغدادی، ج ٥، ص ٤٠ـ

2 ... فَرَوْحٌ وَّرَیْحَانٌ ۙ۬ وَّجَنَّتُ نَعِیْمٍ ﴿۸۹﴾ (پ ٢٧، الواقعه ٨٩) इस आयते मुबारका में लफ़्ज़ "رَیْحَانٌ" के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते सय्यिदुना नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि : अबुल आ़लिय्या ने कहा कि मुक़र्रबीन से जो कोई दुन्या से मुफ़ारक़त करता है उस के पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है। उस की ख़ुश्बू लेता है तब रूह़ क़ब्ज़ होती है।

कि उन्हों ने ख़त़ीबे बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی को ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा कि उन्हों ने ख़ूब सूरत सफ़ेद लिबास ज़ेबे तन किया है, सर पर सफ़ेद इमामा सजा है, बहुत ख़ुश हैं और मुस्कुरा रहे हैं। मैं ने पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और मुझ पर रह़्म फ़रमाया और जो भी उस की बारगाह में ह़ाज़िर होता है वोह उस पर रह़्म फ़रमाता और उसे बख़्श देता है। पस तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो।" येह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के चन्द दिन बा'द की बात है।(1)

*﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴾*

﴾78﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम क़ुशैरी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन बिन अ़ब्दुल मलिक क़ुशैरी शाफ़ेई और कुन्यत अबुल क़ासिम है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 376 हि. को पैदा हुवे। बचपन ही में आप के वालिद फ़ौत हो गए थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इ़ल्मे अदब और अ़रबी की ता'लीम ह़ासिल की। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق की मजलिस में ह़ाज़िर होने लगे।

(1) ......سیراعلام النبلاء، الرقم: ۴۲۱۰ الخطیب البغدادی، ج۱۳، ص۱۰۰۔

इल्मे फ़िक़ह अबू बक्र महम्मद बिन बक्र तूसी और इल्मे कलाम अबू बक्र बिन फ़ूरक رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِم से हासिल किया।(1) आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सूफ़ी, मुफ़स्सिर, फ़क़ीह, उसूली, मुहद्दिष, मुतकल्लिम, वाइज़, अदीब और शाइर थे। 465 हि. को नैशापूर में वफ़ात पाई।(2) और अपने शैख़ हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الرَّزَّاق के बराबर में दफ़्न किये गए। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अवलाद में से कोई भी एह़तिरामन चन्द सालों तक आप के घर में दाख़िल हुवा न आप की किताबों और कपड़ों को हाथ लगाया।(3) अबू ह़सन बाख़रज़ी बयान करते हैं कि "अगर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वा'ज़ का कोड़ा किसी पथ्थर की चट्टान पर मार दें तो वोह ख़ौफ़े ख़ुदा से घुलना शुरूअ़ हो जाए।"(4)

फ़रामीन :

....मुतवक्किल वोह होता है जिस का दिल रिज़्क़ का तक़ाज़ा करने से ख़ामोश रहता है।(5)

....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने का मत़लब येह है कि बन्दा दुन्या या आख़िरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पकड़ से डरे।(6)

---

1 ......المنتظم لابن جوزی، الرقم:۳۴۲۳ عبد الکریم بن ھوازن،ج۱۶،ص۱۴۸۔
2 ......معجم المؤلفین، الرقم: ۷۶۹۸عبد الکریم القشیری،ج۲،ص ۲۱۲ ۔
3 ......المنتظم لابن جوزی، الرقم:۳۴۲۳ عبد الکریم بن ھوازن، ج۱۶، ص ۱۴۹۔
4 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۴۱۸۲ القشیری، ج۱۳،ص۵۲۵۔
5 ......الرسالة القشیریة،باب الصمت،ص۱۵۷۔
6 ......الرسالة القشیریة،باب الخوف،ص ۱۶۱۔

﴾110﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

कामिल राह़त :

अबू तुराब मराग़ी ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देखा कि फ़रमा रहे हैं : "मैं पाकीज़ा ऐ़श और कामिल राह़त में हूं।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾79﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ अह़मद बिन मुअज़्ज़िन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम अह़मद बिन अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ली, कुन्यत अबू सालेह़ और मुअज़्ज़िन के नाम से मश्हूर थे। 388 हि. को पैदा हुवे। ख़ुरासान में अपने वक़्त के मुह़द्दिष थे। अमीन, सूफ़ी और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष थे। रिज़ाए इलाही के लिये कई साल अज़ान देते रहे, मद्रसए बैहक़िय्या के नाज़िम थे, ताजिरों और अमीरों से सदक़ात वुसूल फ़रमाते और मुस्तह़िक़ीन तक पहुंचाते थे। 7 रमज़ानुल मुबारक 470 हि. को विसाल फ़रमाया।(2)

---

1 ...... تاریخ الاسلام للذھبی، الرقم:۴۰ا عبد الکریم بن ھوازن، ج ۳۱،ص ۱۶۷۔

2 ......تذکرۃ الحفاظ، الرقم:۱۰۲۲ المؤذن ابوصالح، ج۲، ص ۲۳۶ ۔

﴾111﴿ रहमत भरी हिकायत

कषरते दुरूद ने हलाकत से बचा लिया :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ हुसैन बिन अहमद कव्वाज़ बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने फ़रमाया कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाब में अबू सालेह़ मुअज़्ज़िन को देखना चाहता हूं।" चुनान्चे, मेरी दुआ क़बूल हुई और मैं ने ख़्वाब में उन्हें अच्छी ह़ालत में देख कर पूछा : "ऐ अबू सालेह़ ! मुझे अपने यहां के ह़ालात की ख़बर दीजिये।" तो फ़रमाया : "ऐ अबू ह़सन ! अगर सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूदे पाक की कषरत न की होती तो मैं हलाक हो गया होता।"(1)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। **आमीन***﴿

۞۞۞۞۞۞

﴾80﴿ हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'द ज़न्जानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम सा'द बिन अ़ली बिन मुह़म्मद बिन अ़ली और कुन्यत अबुल क़ासिम है। 380 हि. के शुरूअ़ में या 379 हि. के आख़िर में पैदा हुवे। ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष, परहेज़गार, साहि़बे करामात और ह़रम शरीफ़ के शैख़ थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) سعادۃ الدارین، الباب الرابع فیما ورد من لطائف..الخ، اللطیفۃ الثلاثون، ص ۱۳۶

ने इल्मे ह़दीष ह़ासिल करने के लिये मिस्र, ग़ज़्ज़ा, ज़न्जान और दिमश्क़ का सफ़र किया। आख़िर में मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में रहने लगे और शैख़े ह़रम शरीफ़ मश्हूर हो गए। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़रम शरीफ़ में तशरीफ़ लाते तो मत़ाफ़ ख़ाली हो जाता, लोग हजरे अस्वद से ज़ियादा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दस्त बोसी किया करते। इस्माईल तैमी फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इमामे कबीर, ह़दीष और सुन्नत को जानने वाले थे। 471 हि. के शुरूअ़ में या 470 हि. के आख़िर में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल हुवा।(1)

﴾112﴿ रह़मत भरी हिकायत

मुह़द्दिषीन की हर मजलिस के इ़वज़ जन्नत में घर :

अबुल क़ासिम षाबित बिन अह़मद बिन हुसैन बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی कहते हैं कि मैं ने अबुल क़ासिम सा'द बिन मुह़म्मद ज़न्जानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی को ख़्वाब में देखा, आप बार बार फ़रमा रहे थे कि "ऐ अबुल क़ासिम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुह़द्दिषीन के लिये उन की हर मजलिस के इ़वज़ जन्नत में एक घर बनाता है।"(2)

﴾*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

---

(1) ......تذکرۃ الحفاظ، الرقم:١٠٢٦، ج٢، الجزء الاول،ص٢٤٣، ٢٤٤۔

(2) ......تاریخ مدینۃ دمشق،الرقم:٢٣٢٢،سعد بن علی بن محمد ، ج٢٠،ص٢٧٥۔

﴾81﴿ हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى

हालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद तूसी ग़ज़ाली, कुन्यत अबू ह़ामिद और लक़ब हुज्जतुल इस्लाम है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत **450** हि. ब मुत़ाबिक़ **1058** ई. को "त़ाबरान" में हुई। इब्तिदाई ता'लीम अपने शहर में ह़ासिल की जहां फ़िक़ह की किताबें ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى से पढ़ीं। फिर जुर्जान तशरीफ़ ले गए वहां इमाम अबू नस्र इस्माईली عَلَيهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहे। इस के बा'द अपने शहर "तूस" वापस आ गए। नैशापूर में इमामुल ह़रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ज़ानूए तलम्मुज़ तै किया और उन से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुनाज़रा, मन्त़िक़, ह़िक्मत और फ़लसफ़ा वग़ैरा में महारते ताम्मा ह़ासिल की। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़ियुद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى कुतुब के दरजे पर फ़ाइज़ हैं।" बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "कुतुब **3** हैं। उ़लूम के कुतुब इमाम ग़ज़ाली, अह़वाल के कुतुब बायज़ीद बिस्त़ामी और मक़ामात के कुतुब ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم हैं।" आप के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यह़्या नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़ज़ाइल को सिर्फ़ कामिल अ़क़्ल वाला ही पहचान सकता है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने "सिय्यरे आ'लामुन्नबला" में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इन अल्क़ाबात से याद फ़रमाया :

اَلشَّيْخُ الْإِمَامُ الْبَحْرُ، حُجَّةُ الْإِسْلَامِ، أُعْجُوبَةُ الزَّمَانِ، زَيْنُ الدِّيْنِ، اَبُوْحَامِد مُحَمَّدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ اَحْمَدَ الطُّوْسِى، الشَّافِعِى، الغَزَالِي، صَاحِبُ التَّصَانِيْفِ، وَالذَّكَاءِ المُفرط.

तसव्वुफ़ में आप की किताब "**इह़याउल उ़लूम**" बहुत मश्हूरो मा'रूफ़ है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम सुब्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं : "इह़याउल उ़लूम उन कुतुब में से है जिन की हिफ़ाज़त और इशाअ़त मुसलमानों पर लाज़िम है ताकि ज़ियादा से ज़ियादा मख़्लूक़ हिदायत याफ़्ता हो जो भी इस किताब में ग़ौर करता है ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाता है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का **505** हि. ब मुत़ाबिक़ **1111** ई. को "त़ाबरान" में विसाल हुवा।[1]

फ़रामीन :

❁....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद करते हुवे अ़मल करना ख़ौफ़ के साथ अ़मल करने से आ'ला है क्यूंकि वोह बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब होते हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा मह़ब्बत करते हैं और मह़ब्बत उम्मीद के ज़रीए ग़ालिब होती है।[2]

---

1 ......الاعلام للزركلی، الغزالی، ج۷، ص۲۲۔

اتحاف السادة المتقين، ج۱، ص۹، ۱۳، ۳۷۔

سیراعلام النبلاء، الرقم:۴۲۰۳ الغزالی، ج۱۴، ص۳۲۰۔

2 ......احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان فضيلة الرجاء، ج۴، ص۱۷۷۔

....पीर का बातिनी अदब येह है कि उन से जो कुछ सुने उस को ज़ाहिर में क़बूल करे और बातिन में क़ौलन फ़े'लन इस का इन्कार न करे ताकि इस पर मुनाफ़क़त का दाग़ न लगे।[1]

﴾113﴿ रह्मत भरी हिकायत

मख्खी पर रह्म की बरकत :

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा किया और इरशाद फ़रमाया : "तुम मेरी बारगाह में क्या लाए हो ?" मैं ने मुख़्तलिफ़ इबादात का ज़िक्र किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम एक मरतबा बैठे लिख रहे थे कि एक मख्खी तुम्हारे क़लम पर आ गिरी तो तुम ने उस पर रह्म करते हुवे सियाही चूसने के लिये उसे छोड़ दिया और कुछ न कहा पस इसी की वजह से मैं आज तुम पर रह्म करता हूं। जाओ ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।"[2]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह्मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

ने'मतें महफ़ूज़ करने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को शुक्र के ज़रीए महफ़ूज़ कर लो।" (حلیة الاولیاء،عمربن عبدالعزیز،الرقم:۷۴۵۵،ج۵،ص۳۷۴)

1 ......مجموعۃ رسائل للامام الغزالی، ایھا الولد،ص ۲۶۳۔

2 ......فیض القدیرشرح جامع الصغیر، تحت الحدیث: ۱۹۴۱،ج ۱،ص ۲۰۲۔

﴿82﴾ हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

हालात :

आप का नाम इयाज़ बिन मूसा बिन इयाज़ बिन अ़म्र व सब्ती मालिकी, कुन्यत अबुल फ़ज़्ल और क़ाज़ी इयाज़ के नाम से मशहूर हैं। सब्तह में **476** हि. को पैदा हुवे। आबाओ अजदाद अन्दुलुस के रहने वाले थे। **20** साल की उ़म्र में हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू अ़ली ग़स्सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى से ह़दीष की समाअ़त की फिर उन के विसाल के बा'द अन्दुलुस तशरीफ़ ले गए। इल्मे फ़िक़्ह मुह़म्मद बिन ईसा तैमी और मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह मसीली (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْهِمَا) से ह़ासिल किया। अपने वक़्त के इमाम, कई उ़लूम के माहिर, आ'ला दरजे के ज़हीनो फ़त़ीन थे। बहुत अ़र्से तक सब्तह में क़ाज़ी के ओ़हदे पर फ़ाइज़ रहे फिर ग़र्नात़ा तशरीफ़ ले गए और वहां कुछ अ़र्से क़ाज़ी रहने के बा'द क़ुर्तुबा तशरीफ़ ले गए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जुमादिल आख़िर **544** हि. को शबे जुमुआ़ विसाल फ़रमाया और मर्राकुश में सिपुर्दे ख़ाक किये गए।[1] आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "اَلشِّفَاء بِتَعْرِيفِ حُقُوقِ الْمُصْطَفٰى" बहुत मशहूर और बरकत वाली किताब है। अगर किसी मकान में रखी जाए तो उस मकान को नुक़्सान न पहुंचे, अगर किसी कश्ती में हो तो न डूबे, अगर मरीज़ पढ़े या उस के पास पढ़ी जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मरीज़ को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए और येह तजरिबा शुदा बात है।[2]

---

1 ......تذكرة الحفاظ، الرقم: ١٠٨٣ عياض بن موسى، ج ٢ الجزء الرابع، ص٦٧، ٦٩ـ

2 ......نسيم الرياض، مقدمة الشارح، ج ١، ص ١٣

फ़रामीन :

۞....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का मतलब येह है कि फ़रमा बरदारी में इस्तिक़ामत इख़्तियार की जाए और हर शै के मुआमले में इस बात को लाज़िम पकड़ ले कि इस बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क्या हुक्म है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस के करने का हुक्म दिया है या इस से बचने का ।[1]

۞....उम्मत का इस बात पर इजमाअ़ है कि मुसलमानों में से जो शख़्स भी हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में कमी करे या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ना ज़ैबा कलिमात इस्ति'माल करे उसे क़त्ल कर दिया जाए ।[2]

﴾114﴿ रहमत भरी हिकायत

सोने का तख़्त :

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی के भतीजे ने एक रोज़ आप को ख़्वाब में देखा कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सोने के तख़्त पर बैठे हुवे हैं । येह देख कर उन पर एक तरह का ख़ौफ़ और तरद्दुद त़ारी हो गया । हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने उन की येह ह़ालत देख कर फ़रमाया : "ऐ मेरे भतीजे ! मेरी किताब "अश्शिफ़ा" को मज़बूत़ पकड़े रहो और इसे अपने लिये हुज्जत

---

1 ......عمدة القاری، کتاب الایمان، باب حلاوة الایمان، ج ۱، ص ۲۲۸۔

2 ......الشفا بتعریف حقوق المصطفی، القسم الرابع، الجزء الثانی، ص ۲۱۱۔

बनाओ।" गोया इस कलाम से आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इशारा फ़रमाया कि "मुझ को येह मर्तबा इसी किताब की बदौलत मिला है।"[1]

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴾

﴾83﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़नी ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى

ह़ालात :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पूरा नाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद तक़िय्युद्दीन अ़ब्दुल ग़नी बिन अ़ब्दुल वाह़िद बिन अ़ली जम्माईली ह़म्बली है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष थे और रिजाले ह़दीष के आ़लिम थे। 541 हि. ब मुत़ाबिक़ 1146 ई. को नाबुलुस के क़रीब मौज़ए जम्माईल में पैदा हुवे। बचपन में ही दिमश्क़ चले गए फिर वहां से इकन्दरिय्या और अस्फ़हान चले गए और बारहा आज़्माइशों में मुब्तला हुवे। बिल आख़िर 600 हि. ब मुत़ाबिक़ 1203 ई. को मिस्र में विसाल फ़रमा गए।[2] दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में शबे जुमुआ़ और यौमे जुमुआ़ दर्से ह़दीष दिया करते थे जिस में कषीर लोग शरीक होते। दर्से ह़दीष देते हुवे लोगों को बहुत रुलाया करते थे यहां तक कि जो शख़्स एक मरतबा ह़ल्क़ए दर्स में ह़ाज़िर होता फिर कभी नाग़ा न करता और दर्स से फ़ारिग़ हो कर त़वील दुआ़ भी फ़रमाया करते थे।[3]

1 ......بستان المحدثین، ص ۳۴۴۔

2 ......الاعلام للزرکلی، الجماعیلی، ج ۴، ص ۳۴۔

3 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۵۳۸۵عبد الغنی بن عبد الواحد، ج ۱۶، ص ۲۴۔

फ़रामीन :

۞....आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आधी रात के वक़्त उठते और वुज़ू फ़रमा कर सुब्ह़े सादिक़ तक नमाज़ पढ़ते रहते और एक रात में 7 या 8 मरतबा वुज़ू फ़रमाते आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं मुझे नमाज़ में उस वक़्त तक लुत़्फ़ आता है जब तक मेरे आ'ज़ा तर रहते हैं।

۞....मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ की, कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل जैसा ह़ाल अ़त़ा फ़रमा तो उस ने मुझे उन जैसी नमाज़ अ़त़ा फ़रमाई। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं इस दुआ के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आज़्माइशों और अज़िय्यतों में मुब्तला हो गए।(1)

﴾115﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

अ़र्श के नीचे कुरसी :

फ़क़ीह अह़मद बिन मुह़म्मद बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना कलाम अ़ब्दुर्रह़ीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِیْم को ख़्वाब में देखा, उन्हों ने बताया कि "ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के लिये हर शबे जुमुआ़ अ़र्श के नीचे एक कुरसी रखी जाती है, और उन के सामने ह़दीषे नबवी पढ़ी जाती है और उन पर मोती और जवाहिर निछावर किये जाते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना कमाल अ़ब्दुर्रह़ीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِیْم की आस्तीन में कोई चीज़ थी, फ़रमाया : "येह इन्ही जवाहिरात में से मेरा ह़िस्सा है।"(2)

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم:۵۳۸۵عبد الغنی بن عبد الواحد،ج۱۶،ص۲۵،۲۹۔

2 ......المرجع السابق،ص۳۵،۳۶ملخصًا۔

﴾84﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमादुद्दीन इब्राहीम बिन अ़ब्दुल वाह़िद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शैख़ इमादुद्दीन अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम बिन अ़ब्दुल वाह़िद बिन अ़ली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के छोटे भाई हैं। बहुत बड़े फ़क़ीह और मुफ़्ती थे। निहायत इबादत गुज़ार और परहेज़गार थे, नफ़्ली रोज़ों और नवाफ़िल की कषरत करते थे, एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। दो मरतबा बग़दाद शरीफ़ गए और अह़ादीष की समाअ़त की "किताबुल फ़ुरूअ़" के मुसन्निफ़ हैं। **614** हिजरी ब मुत़ाबिक़ **1215** ई. को दिमश्क़ में विसाल हुवा।

जामेअ़ मस्जिद उमवी के क़रीब नमाज़े जनाज़ा अदा की गई जनाज़े में लोगों का इतना हुजूम था कि सिब्त़ इब्ने जौज़ी ने कहा : पहाड़ के दामन से "मग़ारतुद्दम" (1) तक जिधर नज़र जाती सर ही सर नज़र आते थे ह़त्ता कि अगर उन के ऊपर से तल फेंके जाते तो वोह ज़मीन तक न पहुंच पाते।(2)

---

(1).....येह दिमश्क़ में एक जगह का नाम है, मन्क़ूल है कि इस जगह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा, ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब और ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ (عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने नमाज़ अदा फ़रमाई। इसी वजह से लोग क़ह़त़ में वहां जा कर बारिश के लिये दुआ़ करते तो फ़ौरन बारिश हो जाती। इस के बारे में येह भी मश्हूर है कि यहां ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बेटे क़ाबील ने अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना हाबील को क़त्ल किया था, इसी वजह से इसे "मग़ारतुद्दम" या'नी ख़ून से लिथड़ी हुई जगह कहा जाता है। (تاریخ مدینة دمشق، ج۲، ص ۳۲۳، ۳۳۸، ملخصًا)

(2).....البداية والنهاية لابن كثير، الشيخ الإمام العلامة الشيخ العماد، ج۸، ص ۵۸۴۔

﴾116﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

बा'दे विसाल सब्ज़ इमामा :

सिब्त़ इब्ने जौज़ी ने मज़ीद येह भी बयान किया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तदफ़ीन की रात जब मैं वापस लौटा तो इन के बारे में, इन के जनाज़े और इस में शिर्कत करने वाले कसीर लोगों के मुतअ़ल्लिक़ सोचने लगा। दिल में आया कि येह तो बहुत नेक इन्सान थे, जब इन्हें क़ब्र में रखा गया होगा तो इन्हों ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया होगा। इतने में मुझे वोह अश्आ़र याद आ गए जो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी वफ़ात के बा'द ख़्वाब में मुझे सुनाए थे। फिर मैं ने कहा : उम्मीद है ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی की त़रह़ इन्हों ने भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया होगा। इस के बा'द मुझे नींद आ गई तो मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमादुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن सब्ज़ रंग का हुल्ला ज़ेबे तन फ़रमाए, सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए** गोया एक वसीअ़ व अ़रीज़ बाग़ में हैं और वसीअ़ दरजात में बुलन्द हो रहे हैं।

मैं ने उन से कहा : "ऐ इमादुद्दीन ! क़ब्र की पहली रात कैसी गुज़री ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आप ही के मुतअ़ल्लिक़ सोच रहा था।" वोह मेरी त़रफ़ देख कर ह़स्बे आ़दत वैसे ही मुस्कुराए जैसे दुन्या में मुस्कुराते थे फिर येह अश्आ़र कहे (इन का मफ़्हूम है) कि जब मुझे क़ब्र में उतारा गया और मैं अपने दोस्तों, अहलो इयाल और पड़ोसियों से जुदा हुवा तो उस वक़्त मैं ने अपने

रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "तुझे मेरी तरफ़ से बेहतरीन बदला दिया जाएगा बेशक मैं तुझ से राज़ी हूं और मेरी बख़्शिश व रहमत तेरे साथ है। तू सारी ज़िन्दगी मेरे अफ़्वो करम और रिज़ा व ख़ुश्नूदी की उम्मीद में रहा पस तुझे जहन्नम से बचा कर जन्नत में पहुंचा दिया जाएगा।" सिब्त इब्ने जौज़ी ने कहा : इस के बा'द मैं नींद से बेदार हो गया। मुझ पर ख़ौफ़ तारी था और मैं ने इन अश्आर को लिख लिया।[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾85﴿ हज़रते सय्यिदुना बहराम शाह बिन फ़र्रुख़ शाह बिन शहनशाह बिन अय्यूब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

हालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अमजद के लक़ब से मश्हूर हैं। शाइर और सल्तनते अय्यूबिय्या के बादशाहों में से एक थे। 628 हि. ब मुताबिक़ 1231 ई. में वफ़ात पाई। अपने वालिद के पहलू में दफ़्न किये गए।

﴾117﴿ रहमत भरी हिकायत

हिफ़ाज़ते ईमान के लिये कुढ़न :

हाफ़िज़ इब्ने कसीर बयान करते हैं कि किसी ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब में येह अश्आर पढ़े

[1] البداية و النهاية لابن كثير، الشيخ الإمام العلامة الشيخ العماد، ج۸، ص ۵۸۴

(उन का तर्जमा है) कि "मैं अपने दीन के मुआ़मले में ख़ौफ़ज़दा था अब मुझ से वोह ख़ौफ़ दूर हो गया। मेरा नफ़्स गुनाहों से मह़फ़ूज़ हो गया। ऐ शख़्स! जब तुझे मौत आएगी तो दर ह़क़ीक़त तू ज़िन्दा हो जाएगा।"(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ईमान छिन जाने के ख़ौफ़ से लर्ज़ां व तर्सां रहा करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के पास ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه सारी रात रोते रहे। मैं ने दरयाफ़्त किया : "क्या आप गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं?" तो आप ने एक तिन्का उठाया और फ़रमाया कि "गुनाह तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस तिन्के से भी कम हैषिय्यत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए।"(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो! आह गुनाहों का सिलसिला रुकने का नाम नहीं लेता, मा'सिय्यत की मुसीबत जान नहीं छोड़ती, अफ़्सोस! गुनाहों की आ़दत ने कुछ ऐसा ढीट बना छोड़ा है कि गुनाह करने से दिल भी क़त्अ़न नहीं लरज़ता, हाए! हाए! गुनाहों की

(1) البداية والنهاية لابن كثير، بهرام شاه، ج ۹، ص ۱۱، ۱۳۔
الاعلام للزركلى، الملك الامجد، ج ۲، ص ۷۲۔

(2) منهاج العابدين، ص ۱۵۵۔

कषरत की नुहूसत कहीं बरबादिये ईमान का सबब न बन जाए ! काश ! ईमान की सलामती की मदनी सोच बन जाए, सद करोड़ काश ! हर वक़्त बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से दिल घबराता रहे, दिन में बारबार तौबा व इस्तिग़फ़ार का सिलसिला जारी रहे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबारे करम बार से ईमान की हि़फ़ाज़त की भीक मांगने की रट जारी रहे।

गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनाने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताबें :

(1) कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब

(2) बुरे ख़ातिमे के अस्बाब और

(3) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

﴾86﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अह़मद शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی

ह़ालात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अह़मद मअ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی आ़बिदो ज़ाहिद, मुतवाज़ेअ़, ईषार का जज़्बा रखने वाले बा अ़मल आ़लिमे दीन थे। एक अ़र्से तक तदरीस व इफ़्ता के मन्सब पर फ़ाइज़ रहे और एक बहुत बड़ी जमाअ़त ने आप से इल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल किया, ज़ोहदो तक़्वा में लोगों के मुक़्तदा व पेशवा थे। बड़े बड़े ओहदों की पेशकश की गई सब को ठुकरा दिया। अकषर रोज़े से रहते थे, अपनी आमदनी का तिहाई हि़स्सा राहे ख़ुदा में सदक़ा करते, रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करते और हर रमज़ानुल मुबारक में एक क़ुरआने पाक लिख कर वक़्फ़ करते थे। रंग गन्दुमी और क़द दराज़ था। ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 650 हि. ब मुत़ाबिक़ 1252 ई. को वफ़ात पाई।

﴾118﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आ़लिमे बा अ़मल के तुफ़ैल बख़्शिश :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अह़मद मअ़र्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का विसाल हुवा उस दिन दिमश्क़ के एक मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स का भी इन्तिक़ाल हुवा, एक मर्दे सालेह़ ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अह़मद मअ़र्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के सदक़े मुझे और उस दिन वफ़ात पाने वाले तमाम लोगों को बख़्श दिया ।"(1)

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । **आमीन**﴿*

❁❁❁❁❁❁

﴾87﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार बिन कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير

ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम मन्सूर बिन अ़म्मार बिन कसीर सुलमी और कुन्यत अबुस्सरी है । ख़ुरासान के रहने वाले थे येह भी कहा गया है कि आप बसरा के रहने वाले थे फिर बग़दाद मुन्तक़िल हो गए । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़सीह़ो बलीग़ वाइज़ और नेक बुज़ुर्ग थे । इराक़, शाम और मिस्र में वा'ज़ फ़रमाए । दूर दूर तक इन का

(1) ......سیراعلام النبلاء،الرقم۵۸۲۵الکمال اسحاق بن احمد،ج۱۶،ص۴۷۸۔

शोहरा था। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में लोगों का हुजूम रहता था और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मौज़ूए सुख़न परहेज़गारी, इबादत गुज़ारी और ख़शिय्यते बारी होता था। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वा'ज़ ताषीर का तीर बन कर दिलों में पैवस्त हो जाता था। ख़लीफ़ा हारून रशीद ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा : "आप ने इस तरह बयान करना कैसे सीखा ?" फ़रमाया : या अमीरल मोअमिनीन ! मैं ने ख़्वाब में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे मुंह में लुआबे दहन डाला और मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ मन्सूर ! कहो।" पस मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बयान करने लगा। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल बग़दाद में हुवा। मुहम्मद बिन अ़ली फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَفَّار की क़ब्र बाबे हर्ब के पास है, तख़्ती पर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम लिखा हुवा है और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र के एक तरफ़ आप के बेटे सुलैम बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَفُوْر की क़ब्र है।[1]

फ़रामीन :

....पाक है वोह ज़ात जिस ने आ़रिफ़ीन के दिलों को ज़िक्र की जगह, ज़ाहिदीन के दिलों को तवक्कुल की जगह, मुतवक्किलीन के दिलों को रिज़ा की जगह, फुक़रा के दिलों को क़नाअ़त की जगह और दुन्यादारों के दिलों को लालच की जगह बनाया है।[2]

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، الرقم:۱۳۴۵ منصور بن عمار، ج۸، ص۵۳، ۵۴۔
تاریخ بغداد، الرقم:۷۰۵۲ منصور بن عمار، ج۱۳، ص۷۲، ۷۹۔

2 ......کشف المحجوب، ص۱۳۳۔

۞....नफ़्स की पैरवी करना इन्सान को हलाकत में डाल देता है।
۞....तारिके दुन्या को किसी क़िस्म का ग़म नहीं रहता और ख़ामोशी इख़्तियार करने वाला मा'ज़िरत करने से मह़फ़ूज़ हो जाता है।(1)

﴾119﴿ रह़मत भरी हि़कायत

शुरकाए इजतिमाअ़ की मग़फ़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : मुझे अपना क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया और फ़रमाया : "ऐ बे अ़मल बुड्ढे ! तू जानता है ? मैं ने तेरी क्यूं मग़फ़िरत फ़रमाई ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "तूने एक इजतिमाअ़ में अपने रिक़्क़त अंगेज़ बयान से ह़ाज़िरीन को रुला दिया था और उस बयान में मेरा एक ऐसा बन्दा भी था जो तमाम उ़म्र कभी भी मेरे ख़ौफ़ से नहीं रोया था तो मैं ने उस बन्दे की गिर्या व ज़ारी पर रह़्म फ़रमा कर उस को और तमाम शुरकाए इजतिमाअ़ को बख़्श दिया। इसी लिये तेरी भी मग़फ़िरत हो गई।"(2)

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि उन मुबल्लिग़ीन का दरजा बहुत ही बुलन्दो बाला और अ़ज़मत वाला है जो अपने रिक़्क़त अंगेज़ और इ़ब्रत ख़ेज़ बयान से लोगों के क़ुलूब में रिक़्क़त पैदा करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे

❶......تذکرۃ الاولیاء،ذکرمنصور بن عمار،الجزء الاول،ص۲۹۸۔
❷......شرح الصدور،باب نبذمن اخبارمن رای الموت،ص۲۸۳۔

अ़ज़मत से बिछड़े हुवे बन्दों को अपने पुरसोज़ बयान की कशिश से खींच खींच कर दरबारे इलाही में लाते हैं। यक़ीनन नेकी की दा'वत की धूम मचाने वाले इस्लामी भाई दोनों जहान में कामयाब हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ (پ۴، اٰل عمران: ۱۰۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसे नेक मुबल्लिग़ीन के कलाम में एक ऐसी कशिश और जाज़िबिय्यत पैदा फ़रमा देता है कि उन के मुंह से निकला हुवा हर कलिमए ह़क़ सामेईन के कानों में अगर्चे लफ़्ज़ बन कर पहुंचता है मगर करामाती ताषीर का तीर बन कर उन के दिल की गहराइयों में पैवस्त हो जाता है और बड़े बड़े संग दिल इन्सान जज़्बाते तअष्षुर से तड़प तड़प कर मुर्ग़े बिस्मिल (ज़ब्ह़ किया हुवा परन्दा) बन जाते हैं।

﴾120﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ मन्सूर ! मैं ने तुझे इस लिये बख़्श दिया कि तेरे पास लोगों का हुजूम रहता था और तू उन्हें मेरी याद की त़रफ़ राग़िब करता था।"[1]

*﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

❁❁❁❁❁❁

---

(1) ......حلية الاولياء، منصور بن عمار، الرقم: ۱۴۰۸۱، ج۹، ص ۳۳۹۔

﴾88﴿ हज़रते सय्यिदुना उत्बा बिन अबान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَنَّان

हालात :

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه दुन्या से किनाराकशी इख़्तियार करने वाले, गिड़गिड़ाने वाले और हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाले थे। उत्बतुल ग़ुलाम के नाम से मश्हूर हैं। दो मटयाले रंग की चादरें पहना करते थे। एक को तहबन्द के तौर पर इस्ति'माल करते और दूसरी को ओढ़ लिया करते थे। हमेशा रोज़ा रखते। साहिले समन्दर, सहरा और क़ब्रिस्तान में क़ियाम किया करते थे। आप का कुल सरमाया एक सिक्का था जिस के ज़रीए खजूर के पत्ते ख़रीद कर उन पर काम कर के तीन सिक्कों के इवज़ बेचते थे फिर एक सिक्के को सदक़ा करते, एक को अपने सरमाए के तौर पर रखते और एक के ज़रीए इफ़्तारी का सामान ख़रीदते थे।(1)

एक मरतबा आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه एक मकान के पास से गुज़रे तो कांपने लगे और पसीना आ गया लोगों के इस्तिफ़सार पर फ़रमाया : "येह वोह जगह है जहां मैं ने छोटी उम्र में गुनाह किया था।"(2)

मदनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الۡمُبِيۡن अपनी कमसिनी के गुनाह भी याद

(1) ......حلية الاولياء،عتبة الغلام،الرقم:٣٦٧،ج٦،ص٢٤٨،٢٤٧،٢٥٠۔
سير اعلام النبلاء،الرقم:١٠٢٤ عتبة الغلام،ج٧،ص٥١۔

(2) ......تنبيه المغترين،ومن اخلاقهم كثرة خوفهم من الله تعالى...الخ،ص٤٩۔

रखते थे और इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किस क़दर ख़ौफ़ मह़सूस करते और एक हम बद नसीबों की ह़ालत है कि बालिग़ होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) किये हुवे गुनाह भी भूल जाते और नक़ाइस से भरपूर नेकियों को याद रख कर इन पर इतराते रहते हैं।

फ़रामीन :

....आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अकषर अपने सजदों में येह फ़रमाया करते थे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़श्र परन्दों और दरिन्दों के पेटों से फ़रमाना।"(1)

....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुहाजिर रियाह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक मरतबा फ़रमाया : "अगर मौत की तमन्ना करना जाइज़ होता तो मैं ज़रूर मौत की तमन्ना करता।" मैं ने कहा कि "आप क्यूं मौत की तमन्ना करते ?" फ़रमाया : "मेरे लिये इस में दो अच्छी बातें हैं।" मैं ने पूछा : "कौन सी ? फ़रमाया : "एक तो येह कि फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोगों की सोह़बत से नजात मिलेगी और दूसरी येह कि नेकों की सोह़बत की उम्मीद रहेगी।" अबू मुहाजिर फ़रमाते हैं कि फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोने लगे और फ़रमाने लगे कि "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं और मैं इस बात से बे ख़ौफ़ नहीं हूं कि मुझे और शैत़ान को लोहे की एक ज़न्जीर में साथ बांध कर आग में डाल दिया जाए।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर ग़शी त़ारी हो गई।(2)

---

1 ......حلية الاولياء،عتبة الغلام، الرقم:٨٤٦٧،ج٦،ص٢٤٥۔

2 ......حلية الاولياء،عتبة الغلام، الرقم:٨٤٩٤،ج٦،ص٢٥٢۔

﴾121﴿ रहमत भरी हिकायत

दुआ की बरकत से जन्नत में दाखिला :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उबैद अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक्ल करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उत्बतुल गुलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना कुदामा बिन अय्यूब अतकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने बयान किया कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना उत्बतुल गुलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अबू अब्दुल्लाह ! مَا صَنَعَ اللهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "ऐ कुदामा ! मैं उस दुआ की बरकत से जन्नत में दाखिल हो गया हूं, जो तुम्हारे (घर में) दाईं जानिब लिखी हुई है।" जब सुब्ह हुई तो मैं अपने घर आया तो क्या देखता हूं कि हज़रते सय्यिदुना उत्बतुल गुलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़त में घर की दीवार पर येह दुआ लिखी हुई थी :

يَا هَادِيَ الْمُضِلِّيْنَ،يَارَاحِمَ الْمُذْنِبِيْن ، وَمُقِيْلَ عَثَرَاتِ الْعَاثِرِيْن،اِرْحَمْ عَبْدَكَ ذَاالْخَطَرِ الْعَظِيْمِ وَالْمُسْلِمِيْنَ كُلَّهُمْ اَجْمَعِيْن، وَاجْعَلْنَامَعَ الْاَحْيَاءِ الْمَرْزُوْقِيْنَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِيْن،آمِيْن رَبَّ الْعٰلَمِيْن-

या'नी : ऐ गुमराहों को हिदायत देने वाले ! ऐ गुनहगारों पर रहम फ़रमाने वाले ! ऐ ख़ताकारों की ख़ताएं मुआफ़ फ़रमाने वाले। अपने इस बहुत बड़े मुजरिम बन्दे और तमाम मुसलमानों पर रहम फ़रमा और हमें उन के साथ मिला जो ज़िन्दा है और रिज़्क़ दिये जाते हैं। जिन पर तू ने इन्आम फ़रमाया है या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن)

ऐ तमाम जहानों के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरी दुआ क़बूल फ़रमा।"[1]

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन﴿

﴾89﴿ हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान उबुल्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى

हालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नाम ईसा बिन ज़ाज़ान उबुल्ली है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दिजला के किनारे उबुल्ला के मक़ाम पर ज़िक्र का हल्क़ा था। ब कषरत रोज़े रखा करते जिस की वजह से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कमर झुक गई और आवाज़ बन्द हो गई थी।[2]

शैतान आंखों में रहेगा :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया कि "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि शैतान उन की आंखों में रहेगा,[3] पस जो शख़्स रोना चाहे वोह रो ले (कि एक ज़माना ऐसा भी आएगा)।"[4]

---

1 ......موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، كتاب المنامات، الرقم:١٣٨، ج٣، ص٨٦۔

2 ......صفة الصفوة، الرقم:١١٧٦ مسكينة الطفاوية، ج٤، ص٣٦۔

3 ....आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का येह फ़रमाना : "शैतान उन की आंखों में रहेगा "हो सकता है इस से आप की मुराद येह हो कि आंखों से गुनाह बहुत ज़ियादा होंगे। निय्यत और नज़र दोनों ख़राब हो जाएंगी। जैसा कि हमारे ज़माने में हो रहा है। बे हयाई की कषरत है। औरतें बे पर्दा फिरती हैं। फ़िल्मे डिरामे आम हैं। इतनी पाबन्दी से लोग नमाज़ नहीं पढ़ते जितनी पाबन्दी से फ़िल्मे डिरामे देखते हैं। राह चलते औरतों को घूर घूर कर देखते और ख़ूब बद निगाही करते हैं (نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِكَ) आंखों के गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब", "ज़ख़्मी सांप" और "अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां" का मुतालआ़ कीजिये।

4 ......الزهد للامام احمدبن حنبل، اخبار الحسن بن ابی الحسن، الحديث:١٥٢٤ ص٢٨٣۔

﴾122﴿ रह्मत भरी हिकायत

रोज़ों ने बचा लिया :

हज़रते सय्यिदुना अम्मार राहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि उबुल्लह में हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان की मजलिस में हमारे साथ हज़रते सय्यिदतुना मिस्कीना तुफ़ाविय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھَا भी हाज़िर हुवा करती थीं। आप बसरा से आती थीं। इन के विसाल के बा'द मैं ने इन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان के साथ क्या मुआमला पेश आया ?" (क्यूंकि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का भी इन्तिक़ाल हो चुका था) तो मुस्कुराते हुवे जवाब दिया कि "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़ूब सूरत लिबास पहनाया गया और आप के इर्द गिर्द जन्नती ख़ुद्दाम आफ़्ताबे (ढक्कन और दस्ते वाले बरतन) लिये हाज़िर रहते हैं। आप को जन्नती ज़ेवर पहनाया गया और किसी ने कहा : ऐ क़ारी ! दरजात तै करता जा, (हज़रते सय्यिदतुना मिस्कीना तुफ़ाविय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھَا ने कहा) मेरी उम्र की क़सम ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को रोज़ों ने बचा लिया।"(1)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह्मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

۞۞۞۞۞۞

(1)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، باب ما روی من الشعر فی المنام، الرقم:۱۴۷، ج۳، ص۹۰، ملخصًا۔

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा नफ़्ल रोज़ों की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और षवाब तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं। मज़ीद दीनी फ़वाइद में ईमान की हि़फ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो रोज़े में दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से हि़फ़ाज़त का सामान है और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है। अह़ादीषे मुबारका में नफ़्ली रोज़ों की बड़ी फ़ज़ीलत आई हैं। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ढारस निशान है : "जिस ने षवाब की उम्मीद रखते हुवे एक नफ़्ल रोज़ा रखा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से 40 साल (की मसाफ़त तक) दूर फ़रमा देगा।"(1)

सजदए शुक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई ख़ुशी ह़ासिल होती तो सजदए शुक्र अदा करते।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب ماجاء فی الصلاۃ و السجدۃ......الخ، الحدیث:۱۳۹۴، ج۲، ص۱۲۳)

---

(1) ......کنزالعمال، ج۴، جزء ۸، ص ۲۵۵، الحدیث:۲۴۱۴۸۔

《90》 आ'ला ह़ज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت

ह़ालात :

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत का नामे मुबारक **मुह़म्मद** है और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दादा ने **अह़मद रज़ा** कह कर पुकारा और इसी नाम से मश्हूर हुवे।[1] आ'ला ह़ज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का पूरा नाम अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अह़मद रज़ा ख़ान बिन नक़ी अ़ली ख़ान बिन रज़ा अ़ली ख़ान बिन मुह़म्मद काज़िम अ़ली ख़ान बिन मुह़म्मद आ'ज़म ख़ान बिन मुह़म्मद सआ़दत यार ख़ान बिन मुह़म्मद सईदुल्लाह ख़ान (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के आबाओ अजदाद क़न्दहार के मौक़र क़बीला बड़हीच के पठान थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का तारीख़ी नाम "**अल मुख़्तार**" है। आ'ला ह़ज़रत की विलादते बा सआ़दत शहर बरेली शरीफ़ मह़ल्ला जसोली में 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हि. ब मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई।[2]

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आ़लिमे बा अ़मल, ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, मुत्तक़ी व परहेज़गार, फ़क़ीह. मुजद्दीदे वक़्त और बा करामत वली थे। फ़त्वा नवेसी में अपने हम अ़स्र उ़-लमा में मुमताज़ थे। 13 साल की उ़म्र में पहला फ़त्वा लिखा और तक़रीबन 54 साल तक येह फ़राइज़ ब हुस्ने ख़ूबी अन्जाम देते रहे। ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि "14 शा'बान 1286 हि (ब मुत़ाबिक 1869 ई.) को इस फ़क़ीर ने पहला फ़तवा लिखा और इसी 14 शा'बान 1286 हि. को मन्सबे इफ़्ता अ़त़ा हुवा और इसी तारीख़ से بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰی नमाज़ फ़र्ज़ हुई।"[3]

1 تذکرہ امام احمد رضا، ص ۲۔ 2 حیاتِ اعلیٰ حضرت، ج ۱، ص ۲۰،۵۲۔
3 الملفوظ، ص ۶۳، ملخصًا۔

जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साहिब का बयान है कि आ'ला हज़रत क़िब्ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बा'ज़ आ़दाते करीमा येह भी थीं कि ब शकले नामे अक़्दस (मुह़म्मद) صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्तिराह़त फ़रमाना, ठठ्ठा न लगाना, जमाही आने पर उंगली दांतों में दबा लेना और कोई आवाज़ न निकालना, कुल्ली करते वक़्त दस्ते चप (बायां हाथ) रीश मुबारक पर रख कर ख़मीदा सर हो कर पानी मुंह से गिराना, क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के कभी न थूकना, न का'बा शरीफ़ की त़रफ़ पाए मुबारक दराज़ करना, नमाज़े पंजगाना मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना, फ़र्ज़ नमाज़ बा इमामा पढ़ना, बिगै़र सोफ़ पड़ी दवात से नफ़रत करना, यूंहीं लोहे के क़लम से इजतिनाब करना, ख़त़ बनवाते वक़्त अपना कंघा व शीशी इस्ति'माल फ़रमाना, मिस्वाक करना और सर मुबारक में फुलैल (ख़ुश्बू दार तेल) डलवाना।[1]

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर कमो बेश एक हज़ार किताबें लिखीं। यूं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 1286 हि. से 1340 हि. तक लाखों फ़तवे लिखे लेकिन अफ़्सोस ! कि सब को नक़्ल न किया जा सका, जो नक़्ल कर लिये गए थे उन का नाम **"अल अ़त़ायन्नबविय्या फ़िल फ़तावर्रज़विय्या"** रखा गया। फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा) की 30 जिल्दें हैं जिन के कुल सफ़ह़ात : 21656, कुल सुवालात व जवाबात : 6847 और कुल रसाइल : 206 हैं।[2]

विसाल :

25 सफ़र 1340 हि. ब मुत़ाबिक़ 1921 ई. को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन हिन्दुस्तान के वक़्त के मुत़ाबिक़ 2 बज कर 38 मिनट

1 ......حیاتِ اعلیٰحضرت، ج ۱، ص ۹۲ ۔ 2 ......تذکرہ امام احمد رضا، ص ۱۸ ۔

पर ऐन अज़ान के वक़्त इधर मुअ़ज़्ज़िन ने حَیَّ عَلَی الْفَلَاح कहा और उधर इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने दाइये अजल को लब्बैक कहा।(1)

﴾123﴿ रह़मत भरी ह़िकायत

आ'ला ह़ज़रत पर करमे मुस्त़फ़ा :

इधर 25 सफ़र 1340 हि. जुमुअ़तुल मुबारक के दिन 2 बज कर 38 मिनट पर बरेली शरीफ़ में आ'ला ह़ज़रत दुन्याए नापाईदार से रवाना हो रहे हैं उधर बैतुल मुक़द्दस के एक शामी बुज़ुर्ग ठीक 25 सफ़र 1340 हि. को ख़्वाब में क्या देख रहे हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن ह़ाज़िरे दरबार हैं, मजलिस पर सुकूत त़ारी है ऐसा मा'लूम हो रहा है कि किसी आने वाले का इन्तिज़ार है वोह शामी बुज़ुर्ग बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं : فِدَاكَ اُمِّی وَ اَبِی मेरे मां-बाप हुज़ूर पर क़ुरबान ! किस का इन्तिज़ार हो रहा है ?" इरशाद फ़रमाया : "अह़मद रज़ा का इन्तिज़ार है।" उन्हों ने अ़र्ज़ कि : "अह़मद रज़ा कौन है ?" फ़रमाया : "हिन्दुस्तान में बरेली के बाशिन्दे हैं।" बेदारी के बा'द उन्हों ने पता लगाया तो मा'लूम हुवा अह़मद रज़ा ख़ान साह़िब बड़े ही जलीलुल क़द्र आ़लिम हैं और अब तक ब क़ैदे ह़यात हैं तो वोह शौक़े मुलाक़ात में हिन्दुस्तान की त़रफ़ चल पड़े जब बरेली पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि आप

(1) ......تذکرۂ امام احمد رضا، ص ۲۱، ۲۲۔

जिस आ़शिक़े रसूल की मुलाक़ात को तशरीफ़ लाए हैं वोह 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हि. को इस दुन्या से रवाना हो चुके हैं।(1)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴿

۞۞۞۞۞۞

﴾91﴿ अलह़ाज अबू उ़बैद मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی

ह़ालात :

षना ख़्वाने रसूल, बुलबुले रौज़ए रसूल, मद्दाहे़ सह़ाबा व आले बतूल, गुलज़ारे अ़त्तार के मुश्कबार फूल, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी अलह़ाज़ अबू उ़बैद क़ारी मुह़म्मद मुश्ताक़ अह़मद अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی बिन अख़्लाक़ अह़मद की विलादत ग़ालिबन बरोज़ इतवार 18 रमज़ानुल मुबारक 1386 हि. ब मुत़ाबिक़ यकुम जनवरी 1967 ई. को बन्नूं (सरह़द, पाकिस्तान) में हुई। एक इस्लामी भाई का बयान है कि "मैं ने उन्हें ग़ीबत करते या ग़ुस्से में आ कर किसी को झाड़ते लताड़ते कभी नहीं देखा।" बड़े से बड़ा मस्अला ह़िक्मते अ़मली के साथ ह़ल फ़रमाने वाले और ह़त्तल इम्कान वक़्त की पाबन्दी फ़रमाने वाले थे। बहुत अच्छे क़ारी थे। दर्से निज़ामी के चार दरजे पढ़े थे मगर दीनी मा'लूमात किसी अच्छे ख़ासे आ़लिम से कम नहीं थी। चार मरतबा ह़ज व ज़ियारते मदीना से मुशर्रफ़ हुवे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आवाज़ बहुत ही सुरीली बख़्शी थी। बड़े बड़े इजतिमाआ़ते ज़िक्रो ना'त में

---

(1) ......سوانح امام احمد رضا، ص ۳۹۱۔

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'तें सुनाते और आशिक़ाने रसूल के दिलों को तड़पाते थे। जनवरी **2000** ई. में शहर भर के निगरानों की मन्ज़ूरी से बाबुल मदीना कराची के निगरान बने और इसी बरस अक्टूबर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान के मन्सब पर मुतमक्किन हो गए। **29** शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म **1423** हि. ब मुताबिक़ **11** मय **2002** ई. सुब्ह़ सवा आठ से साढ़े आठ बजे के दरमियान ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی का विसाल हुवा।

﴾124﴿ रह़मत भरी हिकायत

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में इन्तिज़ार :

अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं मेरा हुस्ने ज़न है कि ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی पर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसी नज़रे करम थी। चुनान्चे, एक इस्लामी भाई ने मुझे कुछ इस त़रह़ लिखा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पीर और मंगल की दरमियानी शब मैं ने येह ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब देखा कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ में सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोनक़ अफ़रोज़ हैं और इर्द गिर्द अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुलफ़ाए राशिदीन, ह़सनैने करीमैन और बे शुमार औलियाए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) ह़ाज़िर हैं। हर त़रफ़ सुकूत (ख़ामोशी) त़ारी है। इतने में मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे, लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "(ऐ अबू बक्र !) मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी आने वाले हैं मैं उन से मुसाफ़ह़ा करूंगा । तुम भी मुसाफ़ह़ा करना । वोह यहां आ कर हमें ना'तें सुनाएंगे ।" फिर मेरी आंख खुल गई । जब दिन निकला तो ख़बर आई की आज सुब्ह़ सवा आठ से साढ़े आठ बजे के दरमियान ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की वफ़ात हो गई है ।

लब पर ना'ते नबी का नग़मा कल भी था और आज भी है
प्यारे नबी से मेरा रिश्ता कल भी था और आज भी है

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।* ***आमीन***﴿

﴾92﴿ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی

ह़ालात :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अ़ल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी मुहम्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारियुल मदनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की विलादत 26 अगस्त 1976 ई. माहे रजबुल मुरज्जब फ़ारूक़ नगर (लाड़काना) में हुई । सादा मिज़ाज, मिलनसार, मदनी इन्आ़मात के आ़मिल, मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर, ज़बान, पेट और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगाने वाले, निहायत आ़जिज़ी फ़रमाने वाले और बा अ़मल मुफ़्ती थे । अकषर क़ुरआने मजीद की तिलावत करते और बा वुज़ू रहा करते थे । तक़रीबन 4 हज़ार फ़तावे लिखे और तफ़्सीरे जलालैन का तक़रीबन 1200 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल ह़ाशिया भी लिखा । 2000 ई. में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर

सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न बने और तादमे हयात मजलिसे शूरा में शामिल रहे। आप के विसाल का वाक़िआ कुछ यूं है : 18 मुहर्रमुल हराम 1427 हि. ब मुताबिक़ 17 फ़रवरी 2006 ई. को बा'द नमाज़े जुमुआ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने खाना तनावुल फ़रमाया। इस के बा'द कुछ देर घर वालों से महवे गुफ़्तगू रहे फिर दीनी कुतुब के मुतालए में मसरूफ़ हो गए। साढ़े तीन बजे के लगभग आराम करने के लिये अपने घर की निचली मन्ज़िल में आ गए और घर वालों को ताकीद कर दी की इन्हें नमाज़े अस्र के लिये जगा दिया जाए। नमाज़ का वक़्त होने पर वालिदए मोहतरमा ने आप को पुकारा मगर कोई जवाब न आया तो वोह खुद नीचे तशरीफ़ लाईं और देखा कि मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी बे हिसो हरकत पड़े हुवे हैं। उन्हों ने फ़ौरन आप के बड़े भाई को फ़ोन किया वोह फ़ौरन घर पहुंचे और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी को ले कर हस्पताल की तरफ़ रवाना हो गए वहां पहुंचने पर डॉक्टरों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तिब्बी मुआइना किया और बताया कि येह तो हरकते क़ल्ब बन्द होने की वजह से तक़रीबन दो घन्टे पहले ही दाइये अजल को लबैक कह चुके हैं।

अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में फ़रमाते हैं कि येह दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बुज़ुर्ग थे और गोया इस हदीषे पाक के मिस्दाक़ थे كُنْ فِي الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْب या'नी दुन्या में इस तरह रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो।(1) विसाल के तक़रीबन 3 साल 7 महीने 10 दिन बा'द या'नी 25 रजबुल मुरज्जब

(1) ......صحيح البخاری، کتاب الرقائق، ج۴، ص ۲۲۳۔

1430 हि. ब मुताबिक़ 18 जुलाई 2009 ई. हफ़्ता और इतवार की दरमियानी रात बाबुल मदीना कराची में कई घन्टे तक मूसलाधार बारिश हुई जिस की वजह से मुफ़्ती साहिब की क़ब्र दरमियान से खुल गई तो देखने वालों ने देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुबारक लाश और कफ़न इस त़रह़ सलामत थे कि गोया अभी अभी इन्तिक़ाल हुवा हो, तक्फ़ीन के वक़्त सर पर रखा जाने वाला सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लूटा रहा था, इमामा शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़्दीक आप की ज़ुल्फ़ों का कुछ हिस्सा अपनी बहारें दिखा रहा था, पेशानी नूरानी थी और चेहरा मुबारक भी क़िब्ला रुख़ था। क़ब्र मुबारक से ख़ुश्बू की ऐसी लिपटें आ रही थीं कि मशामे जां मुअ़त्त़र हो गए।

जबीं मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता
ग़ुलामाने मुह़म्मद का कफ़न मैला नहीं होता

फ़रामीन :

❁....आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से अगर कोई मस्अला पूछा जाता तो मस्अला बयान फ़रमा कर कहते कि "मज़ीद मा'लूमात का जज़्बा बढ़ाने के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये।"

❁....मदनी मश्वरों में अकषर येह शे'र सुनाया करते :

फ़ना इतना तो हो जाऊं मैं क़ाफ़िले की तय्यारी में
जो मुझ को देख ले वोह क़ाफ़िले के लिये तय्यार हो जाए

❁....आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को अपने पीरो मुर्शिद, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه से बे पनाह मह़ब्बत थी। अकषर फ़रमाया करते कि "मुझे जो इ़ज़्ज़त मिली वोह मेरे मुर्शिद का सदक़ा है।"

﴾125﴿ रहमत भरी हिकायत

जनाज़ा सुन्हरी जालियों के सामने :

जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा मैट्रोवल बाबुल मदीना (कराची) के त़ालिबे इल्म ने ख़्वाब में देखा कि मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی का जनाज़ा सुन्हरी जालियों के सामने रखा हुवा है, और दीगर मुफ़्तियाने किराम और उ़-लमाए किराम भी वहां साथ थे तो इतने में फिर इस ख़्वाब ही में त़ालिबे इल्म ने मुफ़्ती साहिब के चेहरे से निक़ाब उठाया तो मुफ़्ती साहिब ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल थे और ए'लान किया गया कि सब ज़ियारत कर लें।

﴾126﴿ रहमत भरी हिकायत

फ़िरिश्तों के झुरमट में :

एक इस्लामी बहन का बयान है कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत का मन्ज़र है और जन्नत को सजाया जा रहा है। मैं ने किसी से दरयाफ़्त किया कि "येह क्यूं सजाई जा रही है ?" तो उस ने जवाब दिया कि "यहां फ़ारूक़ मदनी तशरीफ़ लाने वाले हैं।" फिर मैं ने दोबारा देखा कि जन्नत के ह़सीन नज़ारे हैं और मुफ़्ती फ़ारूक़ साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़िरिश्तों के झुरमट में झुला झूल रहे हैं।

﴾*अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन*﴿

......26 रहमत भरी हिकायात.....

यहां से उन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और दीगर लोगों के 26 वाक़िआत बयान किये जाएंगे जिन के नाम मा'लूम न हो सके और अगर नाम मिले तो हालात न मिल सके। नीज़ हस्बे साबिक़ कहीं कहीं हिकायत से हासिल होने वाला दर्स भी तहरीर किया गया है।

《127》......सूई न लौटाने का नतीजा :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "मुझे भलाई अ़ता फ़रमाई मगर (फ़िल हाल) एक सूई के सबब मुझे जन्नत में जाने से रोक दिया गया है जो मैं ने आ़रियतन ली थी और इसे दोबारा लौटा नहीं सका था।"(1)

《128》 हर अच्छे अ़मल पर षवाब दिया जाएगा :

हज़रते सय्यिदुना ज़मरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने अपनी फूफी को ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ फूफी आप कैसी हैं ?" उन्हों ने कहा : "ऐ मेरे भतीजे ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं ख़ैरिय्यत से हूं। मुझे आ'माल का पूरा पूरा षवाब दिया गया यहां तक कि सब्ज़ी के साथ दूध मिला कर खिलाने का षवाब भी दिया गया।"(2)

---

(1)......الزواجرعن اقتراف الکبائر،کتاب البیع،باب المناھی من البیوع،ج ۱،ص۵۰۴۔

(2)......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا،کتاب المنامات،باب ماروی من الشعر فی المنام، الرقم:۱۷۷،ج۳،ص۱۰۱۔

﴾129﴿ गन्दुम का दाना तोड़ने की सज़ा :

एक शख़्स को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : ''مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' कहा : ''मुझे बख़्श दिया और मुझ पर एह़सान फ़रमाया मगर येह कि उस ने मेरा ह़िसाब लिया यहां तक कि उस दिन के मुतअ़ल्लिक़ भी मुझ से पूछा गया जिस दिन मैं रोज़े से था। वाक़िआ़ येह है कि इफ़्त़ार का वक़्त था मैं ने अपने एक दोस्त की दुकान से गन्दुम का एक दाना ले कर उसे तोड़ दिया फिर मुझे याद आया कि येह मेरा नहीं है तो मैं ने उसे गन्दुम पर दोबारा रख दिया तो उस को तोड़ने की मिक़्दार जितना ह़िस्सा भी मेरी नेकियों से ले लिया गया।''(1)

﴾130﴿ बा आवाज़े बुलन्द दुरूद शरीफ़ की बरकत :

एक सूफ़ी बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने मिश्त़ाह़ नामी आदमी को उस की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा, वोह अपनी ज़िन्दगी में लोगों से हंसी मज़ाक़ किया करता था, मैं ने उस से पूछा : ''مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' उस ने जवाब दिया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।'' मैं ने उस से पूछा : ''किस वजह से ?'' जवाब दिया : ''मैं ने एक मुह़द्दिष साह़िब से ह़दीष शरीफ़ के इमला के लिये अ़र्ज़ की तो उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा, मैं ने भी बुलन्द आवाज़ से दरूदे पाक पढ़ा। सुन

---

(1)......مرقاۃ المفاتیح شرح مشکاۃ المصابیح،باب الرفق و الحیاء وحسن الخلق، الفصل الثانی،تحت الحدیث:۵۰۸۳،ج۸،ص ۸۱۱۔

कर अहले मजलिस ने भी दुरूदे पाक पढ़ा, इस की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हम सब को बख़्श दिया।"[1]

﴾131﴿.....एक मुठ्ठी मिट्टी :

एक शख़्स को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" कहा : "मेरी नेकियों का वज़्न किया गया तो मेरे गुनाह मेरी नेकियों पर ग़ालिब आ गए फिर मेरी नेकियों के पलड़े में एक थेली रखी गई तो मेरी नेकियों का पलड़ा भारी हो गया जब उस थेली को खोला गया तो क्या देखता हूं कि उस में वोह एक मुठ्ठी मिट्टी है जो मैं ने एक मुसलमान की क़ब्र पर डाली थी।"[2]

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन वाक़िआत से पता चला कि हमें कोई नेकी नहीं छोड़नी चाहिये, न जाने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कौन सी नेकी पसन्द आ जाए। जब वोह बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह उसी के सबब करम फ़रमा देता है। चुनान्चे, इस ज़िम्न में कषीर अहादीषे मुबारका वारिद हैं मषलन एक औ़रत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।[3]

---

1 ......القربة لابن بشكوال ص ٦٢ رقم ٦٣ ـ مسالك الحنفاء، المطلب الخامس في فضل الصلوة والسلام، الفصل الاول ،ص ١٢٠ ـ

2 ......مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح، كتاب الجنائز ، باب دفن الميت، الفصل الثاني،تحت الحديث:١٧٠٨ ،ج٤،ص ١٨٩ ـ

3 ......صحيح البخاري، كتاب بدء الخلق،باب اذا وقع الذباب...الخ، الحديث: ٣٣٢١، ج٢،ص ٤٠٩ ـ

एक शख़्स ने रास्ते में से एक दरख़्त को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को उस से ईज़ा न पहुंचे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुश हो कर उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।(1) और कोई छोटे से छोटा गुनाह भी नहीं करना चाहिये कि न जाने किस गुनाह पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो जाए और उस का दर्दनाक अ़ज़ाब आ कर घेर ले। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म सय्यिदुना अबू यूसुफ़ मुहम्मद शरीफ़ मुहद्दिषे कोटलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (पोशीदा) रखा है (1) अपनी रिज़ा को अपनी इत़ाअ़त में और (2) अपनी नाराज़ी को अपनी नाफ़रमानी में और (3) अपने औलिया को अपने बन्दों में।" येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़क़ीहे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "लिहाज़ा हर त़ाअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर बदी से बचना चाहिये क्यूंकि मा'लूम नहीं किस बदी पर वोह नाराज़ हो जाए। ख़्वाह वोह बदी कैसी ही सग़ीर (छोटी) हो मषलन (बिला इजाज़त) किसी के तिन्के का ख़िलाल करना ब ज़ाहिर एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाए की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है। मगर मुमकिन है कि इस बुराई में ही ह़क़ तआ़ला की नाराज़ी मख़्फ़ी (छुपी हुई) हो। तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।"(2)

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب البر و الصلة...الخ،باب فضل ازالة الاذى عن الطريق، ص ١٤١٠، الحديث: ١٩١٤۔

2 ......اخلاق الصالحين ص ٦٠۔

«132»....करीम सिर्फ़ करम करता है :

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन आसिम शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया :"مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "करीम तो सिर्फ़ करम करता है।"(1)

«133».... सिद्दीक़ व उमर का वसीला काम आ गया :

एक शख़्स का बयान है कि मेरे उस्ताज़ के एक रफ़ीक़ फ़ौत हो गए। उस्ताज़ साहिब ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।" पूछा : "मुन्कर नकीर के साथ कैसी रही ?" जवाब दिया : उन्हों ने मुझे बिठा कर जब सुवालात शुरूअ़ किये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में डाला और मैं ने फ़िरिश्तों से कह दिया : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के वासिते मुझे छोड़ दीजिये।" येह सुन कर एक फ़िरिश्ते ने दूसरे से कहा : "इस ने बड़ी बुज़ुर्ग हस्तियों का वसीला पेश किया है लिहाज़ा इस को छोड़ दो।" चुनान्चे, उन्हों ने मुझे छोड़ दिया और तशरीफ़ ले गए।(2)

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसलमान को चाहिये कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अ़क़ीदत व महब्बत को जगह दे। इन की महब्बत

---

1 ......الرسالة القشيرية،باب رؤيا القوم،ص۴۱۸۔

2 ......شرح الصدور،باب فتنة القبر و سوال الملكين، ص ۱۴۱۔

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत है। ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन या'नी अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बारे में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू बक्र और उ़मर से मोमिन मह़ब्बत रखता है और मुनाफ़िक़ इन से बुग़्ज़ रखता है।"(1)

जो शख़्स इन दोनों ह़ज़रात की बे अदबी व गुस्ताख़ी करता है उस का कैसा अन्जाम होता है इस वाक़िए से मुलाह़ज़ा कीजिये !

सिद्दीक़ व उ़मर के गुस्ताख़ का अन्जाम :

3 अफ़राद यमन के सफ़र पर निकले उन में एक कूफ़ी था जो शैख़ैने करीमैन (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का गुस्ताख़ था, उसे समझाया गया लेकिन बाज़ न आया। जब येह तीनों यमन के क़रीब पहुंचे तो एक जगह क़ियाम किया और सो गए। जब कूच का वक़्त आया तो उन में से दो ने उठ कर वुज़ू किया और फिर उस गुस्ताख़ कूफ़ी को जगाया। वोह उठ कर कहने लगा : अफ़्सोस मैं तुम से इस मन्ज़िल में पीछे रह गया हूं तुम ने मुझे ऐन उस वक़्त जगाया जब शनहशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने खड़े हो कर फ़रमा रहे थे : "ऐ फ़ासिक़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ासिक़ को ज़लील व ख़्वार करता है, इसी सफ़र में तेरी शक्ल बदल जाएगी।" जब वोह गुस्ताख़ उठ कर वुज़ू के लिये बैठा तो उस के पाउं की उंगलियां मस्ख़ होना (बिगड़ना) शुरूअ़ हो गईं, फिर उस के दोनों पाउं बन्दर के पाउं के मुशाबेह हो गए, फिर घुटनों तक बन्दर की त़रह

1 ......تاریخ دمشق، ج۴۴، ص۲۲۵۔

हो गया, यहां तक कि उस का सारा बदन बन्दर की त़रह़ बन गया। उस के रुफ़क़ा ने उस बन्दर नुमा गुस्ताख़ को पकड़ कर ऊंट के पालान के साथ बांध दिया और अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये। ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त वोह एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कुछ बन्दर जम्अ़ थे, जब उस ने उन को देखा तो मुज़्त़रिब (बेताब) हो कर रस्सी छुडाई और उन में जा मिला। फिर सभी बन्दर इन दोनों के क़रीब आए तो येह ख़ौफ़ज़दा हुवे मगर उन्हों ने इन को कोई अज़िय्यत न दी और वोह बन्दर नुमा गुस्ताख़ उन दोनों के पास बैठ गया और उन्हें देख देख कर आंसू बहाता रहा। एक घन्टे के बा'द जब बन्दर वापस गए तो वोह भी उन के साथ ही चला गया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का गुस्ताख़ बन्दर बन गया। किसी किसी को इस त़रह़ दुन्या में भी सज़ा दे कर लोगों के लिये इ़ब्रत का नमूना बना दिया जाता है ताकि लोग डरें, गुनाहों और गुस्ताख़ियों से बाज़ आएं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम को सह़ाबए किराम और अहले बैते अत़हार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِنَّ اَجْمَعِیْن से मह़ब्बत करने वालों में रखे।

हम को अस्ह़ाबे नबी से प्यार है ***اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है***
हम को अहले बैत से भी प्यार है ***اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है***

﴾134﴿....क़लमे क़ुदरत की तह़रीर :

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار कहते हैं कि मैं ने एक नौजवान को नमाज़ पढ़ते हुवे देखा। उन की नमाज़ का त़रीक़ा अहले ख़ुशूअ़ जैसा था। मैं ने सोचा यक़ीनन येह कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली हैं। जब वोह नमाज़ ख़त्म कर चुके तो मैं

[1] ......شواھد النبوۃ،ص۲۰۳۔

ने सलाम किया। उन्हों ने सलाम का जवाब दिया फिर मैं ने कहा : “क्या आप को मा’लूम नहीं कि जहन्नम में एक वादी है उस के बारे में कहा जाता है कि

لَظٰى ﴿۱۵﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿۱۶﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ تَوَلّٰى ﴿۱۷﴾ وَ جَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿۱۸﴾ (پ۲۹،المعارج:۱۶،۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो भड़कती आग है खाल उतार लेने वाली बुला रही है उस को जिस ने पीठ दी और मुंह फेरा और जोड़ कर सीनत रखा (मह़फ़ूज़ कर लिया माल को, और उस के हुक़ूक़े वाजिबा अदा न किये। ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)।” येह सुन कर उन्हों ने चीख़ मारी और ग़श खा कर गिर पड़े जब होश आया तो फ़रमाया : “कुछ और भी सुनाओ।” मैं ने येह आयाते मुबारका की तिलावत की :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۶﴾ (پ۲۸،التحريم:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालों अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं इस पर सख़्त करें फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।”

येह सुन कर वोह गिर पड़े और उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। जब मैं ने उन पर से कपड़े हटाए तो देखा कि उन के सीने पर क़लमे क़ुदरत से तह़रीर है :

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿۲۱﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿۲۲﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿۲۳﴾ (پ۲۹،الحاقة:۲۱-۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह मन मानते चैन में है बुलन्द बाग़ में जिस के ख़ोशे झुके हुवे। इन्तिक़ाल की तीसरी शब मैं ने उन को ख़्वाब में देखा कि एक तख़्त पर बैठे हैं और सर पर ताज चमक

रहा है। मैं ने पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "बख़्श दिया।"(1)

﴾135﴿.... फ़िरिश्तों ने फ़ख़्र किया :

एक नेक शख़्स को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी और मुझ पर और हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर फ़िरिश्तों ने फ़ख़्र किया और हम और वोह आ'ला इल्लिय्यीन में हैं।"(2)

﴾136﴿....इलाही ! इस के हाथों को भी बख़्श दे :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब मदीनए पाक की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई तो हज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हिजरत की और उन के साथ उन की क़ौम के एक शख़्स ने हिजरत की। फिर वोह शख़्स बीमार हो गए तो घबरा गए, तो उन्हों ने अपने तीर लिये उन से अपने पोरे काट लिये तो उन के हाथ से ख़ून बहने लगा यहां तक कि वोह इन्तिक़ाल कर गए तो उन्हें हज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़्वाब में देखा कि उन की हालत बहुत अच्छी है और उन्हें अपने हाथ ढांपे हुवे देखा, तो उन से पूछा

---

1 ......روض الریاحین،الحکایۃ الثالثۃ والستون بعد المائۃ ۱۶۳، ص ۱۸۱۔

2 ......الخیرات الحسان،الفصل السادس والثلاثون فی بعض منامات ...الخ،ص۹۷۔

कि "रब عَزَّوَجَلَّ ने तुम से क्या मुआमला किया ?" तो बोले कि "अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ हिजरत करने की बरकत से मुझे बख़्श दिया।" फिर पूछा कि "क्या वजह है मैं तुम्हें हाथ ढांपे देख रहा हूं।" बोले : मुझ से फ़रमाया गया कि "जिसे तुम ने खुद बिगाड़ लिया है हम उसे दुरुस्त नहीं करेंगे।" येह ख़्वाब हज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बयान किया, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ की : "इलाही عَزَّوَجَلَّ इस के हाथों को भी बख़्श दे।"(1)

﴾137﴿.... नूर चमक रहा है :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन षाबित मग़रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदी अ़ली अलहाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को उन के विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "या सय्यिदी مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्लो करम से मुझे इकराम अ़ता फ़रमाया और मैं ने रब तआला को बड़ा ही रहीमो करीम पाया।" फिर मैं ने उन दोस्तों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जो कि पास ही मदफ़ून थे। फ़रमाया : "वोह सब ख़ैरिय्यत से हैं।" फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "आप मुझे नसीहत कीजिये जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए।" फ़रमाया : "तुझ पर अपनी वालिदा की ख़िदमत लाज़िम है क्यूंकि वोह बड़ी नेक हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी मैं आप को

(1) ......مشکوۃ المصابیح، کتاب القصاص، الفصل الاوّل، الحدیث:۳۴۵۶، ج۱، ص۲۳۳۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा देता हूं कि हमारे अह़वाल और कोशिशों के बारे में कुछ बताइये।" फ़रमाया कि "तुझे बड़ी ताकीद से नसीह़त करता हूं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कषरत रख और जो तू ने दुरूदे पाक के मुतअ़ल्लिक़ लिखा है उस में इज़ाफ़ा कर और उस में ज़ियादती का ख़्वाहिश मन्द रह।" मैं ने पूछा : "आप को कैसे मा'लूम हुवा कि मैं ने दुरूदे पाक के मुतअ़ल्लिक़ किताब लिखी है ह़ालांकि मैं ने आप के इन्तिक़ाल के बा'द लिखी है।" फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस का नूर सातों आस्मानों और सातों ज़मीनों में चमक रहा है।"(1)

﴾137﴿.... नेक शख़्स के दुरूदे पाक पढ़ने का फ़ाइदा :

एक औ़रत ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई कि "मेरी बेटी फ़ौत हो गई है मैं चाहती हूं कि ख़्वाब में मेरी उस के साथ मुलाक़ात हो जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "बा'द नमाज़े इशा 4 रक्अ़त नफ़्ल इस त़रह़ पढ़ो कि हर रक्अ़त में फ़ातिह़ा शरीफ़ के बा'द सूरए तकाषुर (या'नी اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ (پ ٣٠، التكاثر: ١)) एक मरतबा पढ़ कर लैट जाओ और हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ती पढ़ती सो जाओ।" उस औ़रत ने ऐसा ही किया जब सो गई तो उस ने ख़्वाब में अपनी लड़की को देखा कि वोह अ़ज़ाब में मुब्तला है। तारकोल का

---

1 ......سعادة الدارين ، الباب الرابع فيما ورد من لطائف المرائی... الخ ، اللطيفة التاسعة، ص ١٢٨ ـ

लिबास पहना हुवा है, हाथों में हथकड़ियां, पाउं में आग की बेड़ियां हैं। येह देख कर घबरा कर बेदार हुई और फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में आ कर वाक़िआ बयान किया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "कुछ सदक़ा करो शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआफ़ कर दे।" इस के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है, बाग़ में तख़्त बिछा हुवा है और उस पर एक हसीनो जमील लड़की बैठी हुई है और उस के सर पर नूरानी ताज है। उस ने देख कर अ़र्ज़ की : "ऐ हसन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) क्या आप मुझे पहचानते हैं ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "नहीं !" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं उसी औ़रत की लड़की हूं जिसे आप ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का कहा था।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "बेटी ! तेरी वालिदा ने तो तेरी हालत कुछ और बताई थी मगर मैं इस के बर अक्स देख रहा हूं।" येह सुन कर लड़की ने अ़र्ज़ की : "जैसे मेरी वालिदा ने बयान किया था मुआ़मला ऐसा ही था।" आप ने फ़रमाया "किस सबब से तू ने येह मक़ाम पाया ?" लड़की ने अ़र्ज़ की : "हम 70 हज़ार मुर्दे अ़ज़ाब में मुब्तला थे। हमारी ख़ुश नसीबी कि हमारी क़ब्रों के पास से एक नेक शख़्स गुज़रा और उस ने दुरूदे पाक पढ़ कर इस का षवाब हमें बख़्श दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस दुरूदे पाक को क़बूल फ़रमा कर हम सब से अ़ज़ाब दूर कर दिया है और मेरा हिस्सा येह है जो आप देख रहे हैं।"(1)

(1)......سعادۃالدارین، الباب الرابع فیما ورد من لطائف المرائی... الخ، اللطیفة السادسة والثلاثون، ص ۱۳۸ ۔

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा दुरूद शरीफ़ की बड़ी बरकत है और वोह भी किसी आशिक़े रसूल की ज़बान से पढ़ा जाए तो इस की शान ही कुछ और होती है। हो सकता है वोह कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मक़्बूल बन्दा हो कि जिस के क़ब्रिस्तान से गुज़रने और दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से 70 हज़ार मुर्दों से अ़ज़ाब उठा लिया गया। अपने अ़ज़ीज़ों की क़ब्रों पर आशिक़ाने रसूल को बसद इह़तिराम ले जाना, उन से वहां ईसाले षवाब करवाना यक़ीनन नफ़्अ़ बख़्श है। अल्लाह वालों के क़दमों की बरकत के क्या कहने ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल ह़ज़्रमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى क़ब्रिस्तान से गुज़रे और एक क़ब्र के क़रीब खड़े हो कर बहुत रोए फिर थोड़ी देर बा'द बे साख़्ता हंसने लगे ! जब उन से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया : मैं ने देखा कि इस क़ब्रिस्तान वालों पर अ़ज़ाब हो रहा है तो मैं ने उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आहो ज़ारी (करते हुवे ख़ूब रो रो कर दुआ़ए मग़्फ़िरत) की तो मुझ से कहा गया कि "जाओ हम ने इन लोगों के बारे में तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल कर ली।" (फिर एक क़ब्र की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया) इस क़ब्र वाली औ़रत बोली कि "ऐ फ़क़ीह इस्माईल ! मैं एक गाने बजाने वाली औ़रत थी, क्या मेरी भी मग़्फ़िरत हो गई ?" तो मैं ने कहा कि "हां, तू भी इन्हीं (बख़्शे हुवों) में है। येही चीज़ मेरी हंसी का बाइ़ष हुई।"(1)

---

1 ......شرح الصدور،ص۲۰۶،۲۰۷۔

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी करम नवाज़ी है कि उस ने इन्सान के मरने के बा'द भी नेकियों का सिलसिला जारी रखने के अस्बाब मुहय्या फ़रमाए। जिन में से एक ज़िन्दों का अपने मुर्दों को "ईसाले षवाब" करना भी है। ईसाल का मत्लब होता है "भेजना" और षवाब का मत्लब है "आ'माल का बदला" चुनान्चे, अपने आ'माल का बदला मर्हूमीन के नामए आ'माल में भेजने का नाम "ईसाले षवाब" है। ईसाले षवाब से मुतअ़ल्लिक़ बे शुमार अहादीषे मुबारका मिलती हैं जिन में से एक मुलाहज़ा फ़रमाइये : हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी वालिदा फ़ौत हो गई हैं (मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करना चाहता हूं) कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "पानी।" चुनान्चे, उन्हों ने एक कुंवां खुदवाया और कहा : "येह उम्मे सा'द के लिये है।" (या'नी उन के ईसाले षवाब के लिये है) (1) मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ़ रिसाले "**ईसाले षवाब और फ़ातिहा का त़रीक़ा**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

﴾139﴿.... जनाज़ा पढ़ाने से इजतिनाब :

एक शख़्स ने अपने पड़ोसी का जनाज़ा पढ़ने से गुरैज़ किया क्यूंकि वोह शरीर था। उसे (शरीर शख़्स को) ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" कहा : मुझे बख़्श दिया और कहा : फ़ुलां से कह देना :

---

(1) ......سنن ابو داوٗد ، کتاب الزکاۃ،باب فی فضل سقی الماء،ج۲،ص۱۸۰، الحدیث:۱۶۸۱۔

"قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآىِٕنَ رَحْمَةِ رَبِّیْۤ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْیَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ" (پ۱۵،الاسراء: ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ानों के मालिक होते तो इन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च न हो जाएं।"(1)

﴾140﴿.... रोटी, चावल और मछली :

एक बसरी बुज़ुर्ग कहते हैं कि मेरे नफ़्स ने मुझ से रोटी, चावल और मछली का मुत़ालबा किया तो मैं ने उसे न दिया। इस का मुत़ालबा बढ़ गया और मैं भी 20 साल तक नफ़्स से मुजाहदा करता रहा। जब उन का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस क़दर ने'मतें और इ़ज़्ज़त मुझे अ़त़ा की मैं उसे बयान नहीं कर सकता और मुझे सब से पहले जो चीज़ दी गई वोह रोटी, चावल और मछली थी और इरशाद हुवा कि "आज अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ जिस क़दर दिल चाहे ख़ुश गवार लज़ीज़ खाना खाओ।"(2)

हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नफ़्स की पैरवी न करने वालों का किस क़दर आ'ला मक़ाम होता है। जो ख़ुश नसीब लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर नफ़्स को मारते हुवे और दुन्या की ने'मतों से परहेज़ करते हुवे भूक बरदाश्त

1 ......مرقاۃ المفاتیح، کتاب الدعوات، باب اسماء اللّٰہ تعالی، الفصل الثانی، ج۵، ص ۱۱۱۔

2 ......قوت القلوب فی معاملۃ المحبوب، الفصل التاسع والثلاثون فی ترتیب الاقوات...الخ، ج۲، ص ۳۳۶۔

करने में कामयाब हो जाते हैं उन को मुबारक हो कि मरने के बा'द उन को जन्नत की आ'ला ने'मते इनायत होंगी। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूरतुल हाक़्क़ह की आयत नम्बर 24 में इरशाद फ़रमाता है :

كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِیۡٓـئًۢا بِمَاۤ اَسۡلَفۡتُمۡ فِی الۡاَیَّامِ الۡخَالِیَۃِ ﴿۲۴﴾ (پ ۲۹، الحاقة:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।" अहादीषे तृय्यिबा भी नफ़्स को क़ाबू में रखने की तरग़ीब मौजूद है। चुनान्चे, एक ह़दीष शरीफ़ में है कि : "पहलवान वोह नहीं जो लोगों पर ग़ालिब आ जाए बल्कि पहलवान तो वोह है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले।"(1)

﴾141﴿.... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत :

हज़रते सय्यिदुना अबान बिन अबी अय्याश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه रजा व उम्मीद के बारे में ब कषरत बयान किया करते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़्वाब में देखा गया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और इरशाद फ़रमाया : "तू ऐसा क्यूं किया करता था?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं येह चाहता था कि तेरी मख़्लूक़ के दिल में तेरी महब्बत डाल दूं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने तेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।"(2)

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत व बख़्शिश की उम्मीद भी महब्बते इलाही का एक ज़रीआ़ है। आज हम में से हर कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत का दा'वा करता है। क्या हम अपने इस दा'वे में सच्चे हैं? देखिये! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में क्या इरशाद फ़रमाता है :

1 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، الحديث: ۱۷۷۱، ج۳، ص۲۰۹۔

2 ......احياء العلوم، كتاب الخوف و الرجاء، باب فضيلة الرجاء......الخ، ج۴، ص۱۷۸۔

قُلۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ وَيَغۡفِرۡ لَـكُمۡ ذُنُوۡبَكُمۡ‌ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۳۱﴾ (پ۲،البقرة۱۶۵:)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमांबरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।'' तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : ''इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** की महब्बत का दा'वा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत्तबेअ़ हो और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त इख़्तियार करे।'' हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत की अ़लामत येह है कि बन्दा उस का ज़िक्र दाइमी करे क्यूंकि जो किसी चीज़ से महब्बत करता है तो उस का ज़िक्र ब कषरत करता है।''(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की सच्ची महब्बत का सुवाल किया करें कि हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत का सुवाल किया करते थे।

''اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنۡ يُّحِبُّكَ وَالۡعَمَلَ الَّذِیۡ يُبَلِّغُنِیۡ حُبَّكَ اَللّٰهُمَّ اجۡعَلۡ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَیَّ مِنۡ نَفۡسِیۡ وَأَهۡلِیۡ وَمِنَ الۡمَاءِ الۡبَارِدِ

या'नी : इलाही मैं तुझ से तेरी महब्बत और तेरे महबूबों की महब्बत मांगता हूं और वोह अ़मल मांगता हूं जो तेरी महब्बत तक पहुंचा दे। इलाही अपनी महब्बत को मेरे लिये मेरी जान, घर -बार और ठन्डे पानी से ज़ियादा महबूब बना दे।''(2)

---

1 ......كنز العمال، باب فی محبة اللّٰه،الحديث: ۱۵۰۱، ج۱، ص۳۸۸۔

2 ......سنن الترمذی، كتاب الدعوات،الحديث: ۳۵۰۱، ج۵، ص۲۹۲۔

﴾142﴿.... वोह कुछ अ़ता फ़रमाया जिस की उम्मीद न थी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह रम्ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर दीनवरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "मुझे बख़्श दिया और मुझ पर रह़म फ़रमाया और मुझे वोह कुछ अ़ता फ़रमाया जिस की मुझे उम्मीद न थी।" मैं ने पूछा : "सब से अच्छी चीज़ जिस के साथ बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है वोह क्या है ?" फ़रमाया : "सच" और सब से बुरी चीज़ "झूट" है।"(1)

हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हमेशा सच बोलें, ह़दीषे पाक में आता है : "सच इन्सान को भलाई की त़रफ़ ले जाता और भलाई जन्नत की त़रफ़ ले जाती है। इन्सान सच बोलता रहता है यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सच्चा लिखा जाता है और झूट इन्सान को बुराई की त़रफ़ ले जाता है और बुराई जहन्नम की त़रफ़ ले जाती है, इन्सान झूट बोलता रहता है यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नजदीक झूटा लिखा जाता है।"(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें झूट से बचाए और सच बोलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب النیۃ والاخلاص والصدق، الباب الثالث فی الصدق وفضیلتہ... الخ، ج۵، ص ۱۱۲۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب قول اللّٰہ تعالٰی:یایھا الذین اٰمنوا... الآیۃ، الحدیث: ۶۰۹۴، ج۴، ص ۱۲۵۔

﴾143﴿....जन्नत में भी ग़मगीन :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने एक दोस्त को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया और जन्नत में दाख़िल किया नीज़ जन्नत में मेरे मक़ामात मेरे सामने पेश किये।" फ़रमाते हैं कि इन ने'मतों के बा वुजूद मैं ने उन्हें परेशान हाल और ग़मगीन देखा तो कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को बख़्श दिया और जन्नत में दाख़िल किया और आप ग़मगीन हैं ?" उन्हों ने दर्दमन्द दिल से एक सर्द आह भरी फिर फ़रमाया : "मैं क़ियामत तक ग़मगीन ही रहूंगा।" मैं ने पूछा : "क्यूं ?" फ़रमाया : जब मैं ने जन्नत में अपने मक़ामात देखे तो मेरे सामने इ़ल्लिय्यीन में ऐसे मक़ामात बुलन्द किये गए जिन की मिष्ल मैं ने नहीं देखे। मैं उन पर खुश हुवा लेकिन जब मैं ने उन में दाख़िल होने का इरादा किया तो उन के ऊपर से एक मुनादी ने निदा दी कि "इसे यहां से वापस कर दो, येह मक़ामात इस के लिये नहीं हैं। येह उस शख़्स के लिये है जो सबील (रास्ते) को पूरा करे।" मैं ने पूछा : "सबील को पूरा करना क्या है ?" मुझे कहा गया कि "तुम कहते थे येह चीज़ फ़ी सबीलिल्लाह (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में) है फिर उस में रुजूअ़ कर लेते अगर तुम इस सबील को पूरा करते तो हम भी तुम्हारे लिये पूरा करते।"(1)

1 ......قوت القلوب فی معاملة المحبوب، الفصل الثانی و الثلاثون، باب ذکر حکم المتوکل اذا کان ذا بیت، ج۲، ص۲۷، ۲۸

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो दूसरों के सामने जज़्बात में आ कर चन्दा लिखवा तो देते हैं मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड़ जाता है हत्ता कि कुछ तो देते ही नहीं। इस मुआमले में हमारे लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़मल क़ाबिले तक़्लीद है कि जब सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैशे उ़सरत (ग़ज़्वए तबूक) की तय्यारी के लिये सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तरग़ीब दे रहे थे तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीगर सामान समेत 100 ऊंट का ए'लान किया, दूसरी तरग़ीब पर मअ़ सामान 200 ऊंट का ए'लान किया और तीसरी पर सामान समेत 300 ऊंट का ए'लान किया।[1] मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ख़याल रहे कि येह तो ए'लान था मगर हाज़िर करने के वक़्त (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने) नव सो पचास ऊंट, पचास घोड़े और एक हज़ार अशरफ़ियां पेश कीं फिर बा'द में दस हज़ार अशरफ़ियां और पेश की।"[2]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी राह में बढ़ चढ़ कर ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾144﴿....सफ़ेद रोटियां :

हज़रते सय्यिदुना वालान बिन ईसा बिन अबू मरयम क़ज़्वीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی एक नेक शख़्स थे। आप फ़रमाते हैं कि

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب ج۵ ،ص ۳۹۱،الحدیث:۳۷۲۰۔

2 ......مرأة المناجیح، ج۸، ص۳۹۵۔

एक रात मैं चांद की वजह से मुग़ालते़ में आ गया पस मैं मस्जिद चला गया, नमाज़ पढ़ी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ की, दुआ़ मांगी और फिर मुझे अचानक नींद आ गई तो मैं ने देखा कि एक जमाअ़त जो इन्सानों की न थी अपने हाथों में त़बाक़ लिये है और त़बाक़ में चार रोटियां हैं जो सफ़ेदी में बर्फ़ की मानिन्द हैं और हर रोटी पर अनार की मिष्ल मोती रखे हुवे थे। उन्हों ने मुझ से कहा कि "खाओ।" मैं ने कहा : "मेरा इरादा तो रोज़े का है।" उन्हों ने कहा कि "इस घर वाले का हुक्म है कि तुम येह खाओ।" चुनान्चे, मैं ने खा लीं। फिर मैं ने वोह मोती उठाना चाहा तो मुझ से कहा गया कि "इस को छोड़ दो इस का हम दरख़्त लगा देंगे ताकि इस से बेहतर मोती तुम्हारे लिये निकल आएं।" मैं ने कहा : "इस का दरख़्त कहा लगाओगे।" उन्हों ने कहा : "ऐसे घर में जो कभी वीरान न होगा, जिस के फल कभी ख़राब न होंगे, जिस में मिल्किय्यत कभी ख़त्म न होगी, जिस में कपड़े कभी बोसीदा न होंगे जिस में (मुश्को अ़म्बर) के टीले और चश्मे होंगे, आंखों की ठन्डक बीवियां होंगी, फ़रमां बरदार, पसन्दीदा, राज़ी रहने वालियां जिन से क़ुर्बत नहीं की गई होगी। पस तुम पर लाज़िम हैं कि अपने अ़मल को बढ़ाओ दुन्या का अ़र्सा थोड़ा है ह़त्ता कि तुम यहां से रिह़लत कर के जन्नत में दाख़िल होगे।" ह़िकायत के रावी कहते हैं दो जुमुओं के बा'द उन का इन्तिक़ाल हो गया। सरी बिन यह़्या कहते हैं कि जिस रात उन का विसाल हुवा उसी रात मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा वोह कह रहे थे कि "क्या तुम उस दरख़्त से तअ़ज्जुब नहीं करते जो मेरे लिये उसी दिन लगाया गया था जिस दिन मैं ने तुम्हें बयान किया था उसे ह़ासिल कर लिया गया है।" मैं ने कहा : "कैसे ह़ासिल

कर लिया ?" कहा : "इस बारे में सुवाल न करो जिसे बयान करने पर कोई भी क़ादिर नहीं। (हां इतना ज़रूर है कि) जब भी कोई मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन्दा उस की बारगाह में ह़ाज़िर होता है (तो वोह उस पर इतना करम करता है कि) हम ने उस की मिष्ल करीम किसी को नहीं पाया।"(1)

﴾145﴿....बद मज़हबों से बचो :

अ़ब्दुल वह्हाब बिन यज़ीद किन्दी कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़मर ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَبِيْر को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "मुझ पर रह़्म फ़रमाया और मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।" मैं ने पूछा : "आप ने किस अ़मल को सब से अफ़्ज़ल पाया ?" फ़रमाया : "जिस सुन्नत और इ़ल्म पर तुम हो।" मैं ने दरयाफ़्त किया : "आप ने कौन सा अ़मल सब से बुरा पाया ?" फ़रमाया : "अस्मा से बचो।" मैं ने पूछा : "अस्मा क्या हैं ?" फ़रमाया कि "क़दरी, मो'तज़िली, मरजई। पस बद मज़ह़ब फ़िर्क़ों के अस्मा (नाम) गिनाना शुरूअ़ कर दिये।"(2)

﴾146﴿....साह़िबे क़ब्र से बात चीत :

मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि मैं ने क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास दो रक्अ़त मुख़्तसर इस त़रह़ पढ़ीं जिन से मैं मुत़मइन नहीं था। फिर मुझे ऊंघ आ गई तो मैं ने देखा कि साह़िबे क़ब्र मुझ से बात कर रहे हैं और कह रहे हैं कि "तुम ने दो रक्अ़त इस त़रह़ अदा कीं जिन से तुम मुत़मइन नहीं थे।" मैं ने कहा : "हां ! मुआ़मला येही है।" फ़रमाया : "तुम लोग अ़मल करते हो मगर

❶......شرح الصدور،باب نبذ من اخبار من رای الموت... الخ،ص ۲۷۹۔

❷......شرح الصدور،باب نبذ من اخبار من رای الموت... الخ،ص ۲۸۰۔

जानते नहीं और हम जानते हैं मगर अ़मल नहीं कर सकते।'' फिर फ़रमाया : ''तुम्हारी दो रक्अ़त की त़रह़ दो रक्अ़त अदा करना मुझे पूरी दुन्या से ज़ियादा मह़बूब है।'' मैं ने दरयाफ़्त किया : ''यहां कौन लोग मदफ़ून हैं ?'' फ़रमाया : ''सब मुसलमान हैं और सब को ख़ैर मिली है।'' मैं ने कहा : ''यहां सब से अफ़्ज़ल हौन है ?'' तो उन्हों ने एक क़ब्र की त़रफ़ इशारा किया। मैं ने दिल ही दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि ''येह बाहर तशरीफ़ ले आएं ताकि मैं इन से हम कलाम हो सकूं।'' तो क़ब्र से एक नौजवान लड़का निकला। मैं ने कहा : ''क्या आप इन क़ब्रिस्तान वालों में सब से अफ़्ज़ल हैं ?'' उस ने कहा : ''लोग तो ऐसे ही कहते हैं !'' मैं ने कहा : ''किस सबब से आप ने येह मर्तबा पाया ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम आप की उ़म्र तो येह बताती है कि आप ने येह मक़ाम न तो कषरते ह़ज व उ़मरह के सबब पाया होगा और न ही जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह और अ़मले सालेह़ की ज़ियादती की वजह से ह़ासिल किया होगा।'' तो उस ने कहा : ''मैं दुन्या में मुसीबतों में गिरिफ़्तार रहता था और इन मसाइब पर सब्र करता था बस इसी वजह से मेरा मक़ाम बुलन्द है।''(1)

﴾147﴿.... मरा हुवा कुत्ता होने की तमन्ना पर इन्आ़म :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बुदैरी दिमयात़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَاقِی ने बयान किया कि मेरे दादा जान की वफ़ात के बा'द किसी ने उन्हें रैत के टीले पर खड़ा देख कर अ़र्ज़ की : ''مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' जवाब दिया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी

1 ......شرح الصدور،باب نبذ من اخبار من رای الموت،ص ۲۸۰،۲۸۱۔

मग़्फ़िरत फ़रमा दी और रैत के जितने ज़र्रात मेरे क़दमों तले हैं उतने अफ़्राद की शफ़ाअ़त की इजाज़त भी मरहमत फ़रमाई है।" ख़्वाब देखने वाले ने पूछा : "किस नेकी के सबब येह मक़ाम पाया ?" फ़रमाया : मैं जब भी किसी मरे हुवे कुत्ते को देखता तो कहता : "काश ! येह मरा हुवा कुत्ता मैं ही होता।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा येह क़ौल मक़्बूल हो गया।[1]

ख़ुदा सगाने नबी से येह मुझ को सुनवा दे
हम अपने कुत्तों में तुझ को शुमार करते हैं (ज़ौक़े ना'त)

﴾148﴿....आतश परस्त पर रह़मत :

बुख़ारा में एक मजूसी (आतश परस्त) रहता था एक मरतबा रमज़ान शरीफ़ में वोह अपने बेटे के साथ मुसलमानों के बाज़ार से गुज़र रहा था। उस के बेटे ने कोई चीज़ अ़लानिय्या तौर पर खानी शुरूअ़ कर दी। मजूसी ने जब येह देखा तो अपने बेटे को एक त़मांचा रसीद कर दिया और ख़ूब डांट कर कहा : "तुझे रमज़ानुल मुबारक के महीने में मुसलमानों के बाज़ार में खाते हुवे शर्म नहीं आती ?" लड़के ने जवाब दिया : "अब्बा जान ! आप भी तो रमज़ान शरीफ़ में खाते हैं।" वालिद ने कहा : "मैं मुसलमानों के सामने नहीं अपने घर के अन्दर छुप कर खाता हूं। इस माहे मुबारक की बे हुरमती नहीं करता।" कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया। किसी ने ख़्वाब में उस को जन्नत में टहलते हुवे देखा तो हैरत से पूछा : "तू तो मजूसी था जन्नत में कैसे आ गया ?" कहने लगा : "वाक़ेई में मजूसी था लेकिन जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो अल्लाह

[1] ......جامع کرامات اولیاء، ج ۱، ص ۳۴۴ملخصًا۔

عَزَّوَجَلَّ ने एहतिरामे रमज़ान की बरकत से मुझे ईमान की दौलत से और मरने के बा'द जन्नत से सरफ़राज़ फ़रमाया।"(1)

हिकायत से हासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? रमज़ानुल मुबारक की ता'ज़ीम के सबब एक आतश परस्त को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने न सिर्फ़ दौलते ईमान से नवाज़ दिया बल्कि उस को जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों से भी माला माल फ़रमा दिया। इस हिकायत से खुसूसन हमारे उन गाफ़िल इस्लामी भाइयों को दर्से इब्रत हासिल करना चाहिये जो मुसलमान होने के बा वुजूद रमज़ानुल मुबारक का बिल्कुल एहतिराम नहीं करते। अव्वल तो वोह रोज़ा नहीं रखते, फिर चोरी और सीना ज़ोरी यूं कि रोज़ादारों के सामने ही सिगरेट के कश लगाते, पान चबाते हृत्ता कि बा'ज़ तो इतने बे बाक व बे मुरव्वत होते हैं कि सरे आम पानी पीते बल्कि खाना खाते भी नहीं शरमाते। याद रखिये ! फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त बिग़ैर किसी मजबूरी के अ़लल ए'लान जान बूझ कर खाए पिये उस को (बादशाहे इस्लाम की तरफ़ से) क़त्ल कर दिया जाए।"(2)

﴾149﴿....एक तिन्के का वबाल :

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल के एक नौजवान ने हर क़िस्म के गुनाहों से तौबा की। फिर 70 साल तक मुसलसल इबादत करता रहा। दिन को रोज़ा रखता, रात को जागता। उस के तक़्वा का येह आ़लम था कि

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, जि. 1 स.76

2.....الدرالمختارمع رد المحتار،ج٣،ص ٤٤٩۔

न किसी साए के नीचे आराम करता और न ही कोई उम्दा गिज़ा खाता। जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के बा'ज़ दोस्तों ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया?" उस ने बताया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा हिसाब लिया, फिर सब गुनाहों को बख़्श दिया मगर आह! एक तिन्का जिसे मैं ने उस के मालिक की मरज़ी के बिग़ैर ले किया था और उस से दांतों में ख़िलाल किया था वोह तिन्का उस के मालिक से मुआ़फ़ करवाना रह गया था। अफ़्सोस सद अफ़्सोस! इसी सबब से अभी तक मुझे जन्नत से रोका हुवा है।"(1)

हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! लरज़ जाइये! थर्रा उठिये! कि जब ग़ज़बे जब्बार और क़हरे क़हहार जोश पर आता है तो ऐसे गुनाह पर भी गिरिफ़्त हो जाती है जिसे दुन्या वालों के नज़्दीक बहुत ही मा'मूली तसव्वुर किया जाता है। एक आ़बिदो ज़ाहिद और नेक बन्दा सिर्फ़ और सिर्फ़ इस वजह से जन्नत से रोक दिया गया कि उस ने एक ह़क़ीर तिन्का उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर ले कर दांतों में ख़िलाल कर लिया और फिर बे मुआ़फ़ करवाए इन्तिक़ाल कर गया तो फंस गया। ज़रा सोचिये! ग़ौर कीजिये! एक तिन्का क्या शै है? आज कल तो लोग न जाने कैसी कैसी क़ीमती अमानतें हड़प कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते।

﴾150﴿....रमज़ान का दीवाना :

मुह़म्मद नामी एक आदमी सारा साल नमाज़ न पढ़ता था। जब रमज़ान शरीफ़ का मुतबर्रक महीना आता तो वोह पाक साफ़

(1)......تنبیہ المغترین،ومن اخلاقھم کثرۃ الخوف من اللّٰہ...الخ،ص ۵۱۔

कपड़े पहनता और पांचों वक़्त पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता और साले गुज़श्ता की क़ज़ा नमाज़ें भी अदा करता। लोगों ने उस से पूछा : "तू ऐसा क्यूं करता है ?" उस ने जवाब दिया : "येह महीना रह़मत, बरकत और तौबा का है शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरे इसी अ़मल के सबब बख़्श दे।" जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उस ने जवाब दिया : "मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे रमज़ान शरीफ़ का एह़तिराम बजा लाने के सबब बख़्श दिया।"(1)

हि़कायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान के क़द्र दान पर किस दरजे मेहरबान है कि साल के बाक़ी महीने छोड़ कर सिर्फ़ माहे रमज़ान में इ़बादत करने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा दी। इस हि़कायत से कहीं कोई येह न समझ बैठे कि अब तो (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) सारा साल नमाज़ों की छुट्टी हो गई ! सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा नमाज़ कर लिया करेंगे और सीधे जन्नत में चले जाएंगे।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दर अस्ल बख़्शिश या अ़ज़ाब येह सब कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है। वोह बे नियाज़ है अगर चाहे तो किसी मुसलमान को ब ज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल पर ही अपने फ़ज़्लो करम से बख़्श दे और अगर चाहे तो बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद किसी को मह़ज़ एक छोटे से गुनाह पर अपने अ़द्ल से पकड़ ले। पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 284 में इरशादे रब्बे बे नियाज़ है :

---

(1) ......درة الناصحين، ص٨۔

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ (پ۳،البقرۃ:۲۸۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जिसे चाहेगा (अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को) बख़्शेगा और जिसे चाहेगा (अपने अ़द्ल से) सज़ा देगा।"

﴾151﴿.... अम्रद को देखने का वबाल :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ज़र्राद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने दरबार में खड़ा किया और मेरे उन तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दिया जिन को दुन्या में करने का मैं ने इक़रार किया। सिवाए एक गुनाह के, जिस का इक़रार करते हुवे मुझे बहुत ह़या आई। पस इस एक गुनाह के सबब मुझे पसीने में खड़ा रखा गया यहां तक कि मेरे चेहरे का गोश्त झड़ गया।" पूछा गया : "वोह कौन सा गुनाह है ?" इरशाद फ़रमाया : "एक बार मैं ने एक अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) पर शहवत भरी नज़र डाल दी थी। बस इसी गुनाह का इक़रार करते हुवे मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ह़या आई।"[1]

हिकायत से ह़ासिल होने वाला दर्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अम्रद को शहवत के साथ देखने का कैसा अन्जाम होता है ! याद रहे ! सिर्फ़ अम्रद के चेहरे ही को शहवत के साथ देखना गुनाह नहीं, बिल फ़र्ज़ निगाहें नीची हों मगर अम्रद के सीने या हाथ या पाउं वग़ैरा बल्कि सिर्फ़ लिबास ही पर अगर नज़र पड़ रही हो और लज़्ज़त आ रही

1 ......الرسالۃ القشیریۃ، باب رؤیا القوم، ص ۴۲۰۔

हो तो उन आ'ज़ा या लिबास को देखना भी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अम्रद की एक अ़लामत येह भी है कि उस की त़रफ़ बार बार देखने को जी चाह रहा हो और लज़्ज़त के बाइ़ष वहां से हटने का दिल न करता हो अगर ऐसा है तो वहां से हट जाना वाजिब है वरना गुनाह का मीटर चलता रहेगा ! मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "**अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

﴾152﴿....काश ! ज़मानए नबवी में होता !

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی नक़्ल करते हैं कि किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन लैष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "एक दिन मैं ने पहाड़ के ऊपर से अपने लश्करों को मुलाह़ज़ा किया (क्यूंकि आप बादशाह थे) तो उन की कषरत ने मुझे ख़ुश कर दिया, पस मैं ने तमन्ना की, कि काश ! मैं सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका में होता तो उन की मदद व नुसरत का शरफ़ ह़ासिल करता। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मेरी येह तमन्ना पसन्द आ गई और उस ने मुझे बख़्श दिया।"[1]

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। **आमीन**﴿*

۞۞۞۞۞۞

تمت بالخير

[1] ......سیراعلام النبلاء للذھبی،الرقم:۲۱۵۷عمروبن اللیث الصفار،ج۱۰،ص۳۵۲۔

ماخذ و مراجع

کتاب	مصنف /مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلامِ باری تعالیٰ	مکتبۃالمدینہ
ترجمہ قرآن کنزالایمان	اعلیحضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن
تفسیر روح البیان	علامہ اسماعیل حقی بروسوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تفسیر نعیمی	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت
سنن ابی داوٗد	امام ابوداود سلیمان بن اشعث رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاءالتراث بیروت العر
سنن ترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکربیروت
سنن نسائی	امام احمدبن شعیب نسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت
الزھد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید
الزھد	امام عبد اللہ بن مبارک مروزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ
المصنف	امام عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دارالفکر بیروت
المستدرک	امام محمد بن عبداللہ حاکم رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ بیروت
مشکوۃ المصابیح	شیخ محمد بن عبداللہ خطیب تبریزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	دارالکتب العلمیۃ
الشمائل المحمدیہ	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	داراحیاء التراث العر
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابونعیم اصفہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ
دلائل النبوۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث
کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ
تاریخ مدینہ دمشق	ابو القاسم علی بن حسین المعروف بابن عساکررحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دارالکتب الفکر
کشف الخفاء	حافظ ابوبکرعبداللہ بن ابن ابی الدنیارحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیۃ
الموسوعۃ لابی الدنیا	امام اسماعیل بن محمد بن ھادی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ
مرقاہ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت
فیض القدیر	امام محمد عبدالرء وف مناوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ
عمدۃ القاری	علامہ ابومحمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ھ	دارالحدیث ملتان
شرح صحیح مسلم	امام یحی بن شرف الدین نووی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیۃ

الحاوی للفتاوی	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابوبکرسیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت
جامع الاحادیث	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابوبکرسیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت
الشفاء بتعریف حقوق المصطفٰی	قاضی ابوالفضل عیاض مالکی رحمۃاللہ علیہ متوفّٰی ۵۴۴ھ	مرکزاھل السنۃ برکات رضاھند
شواھد النبوۃ	عبدالرحمن جامی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۹۸ھ	....
معرفہ الصحابہ	ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفھانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ
اسد الغابہ	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ
الاستیعاب	ابوعمریوسف بن عبداللہ قرطبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ
الرسالۃ القشیریۃ	امام ابوالقاسم عبدالکریم ھوازن قشیری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ
نسیم الریاض	شھاب الدین احمد بن محمد خفاجی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۶۹ھ	دارالکتب العلمیہ
البدایۃ والنھایۃ	امام حافظ عمادالدین ابن کثیر متوفّٰی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیہ
الاصابۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجرعسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ
تھذیب التھذیب	امام حافظ احمد بن علی بن حجرعسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالفکربیروت
کتاب الکبائر	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	پشاورپاکستان
تاریخ اسلام	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	المکتبۃالشاملۃ
تذکرۃ الحفاظ	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دارالکتب العلمیہ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمد بن عبداللہ عدی الجرجانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ
میزان الاعتدال	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دارالفکربیروت
لسان المیزان	امام حافظ احمد بن علی بن حجرعسقلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	احیاء التراث العربی
تاریخ بغداد	امام ابوبکراحمد بن علی خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ
الجامع لاخلاق الراوی	امام ابوبکراحمد بن علی خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	المکتبۃالشاملۃ
الرحلۃ فی طلب الحدیث	امام ابوبکراحمد بن علی خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ
مناقب امام اعظم	الموفق بن احمد مکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۶۸ھ	کوئٹہ پاکستان
مناقب امام اعظم	محمدبن محمد المعروف بابن بزارکردری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۲۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابوبکرسیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
شرح الصدورمع بشر الکئیب بلقاء الحبیب	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابوبکرسیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	مرکزاھل السنۃ برکات رضا
احیاء العلوم الدین	امام محمد بن احمد غزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ھ	دارصادر بیروت
کیمیائے سعادت	امام محمد بن احمد غزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ

مجموعة رسائل	امام محمد بن احمد غزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالفکربیروت
منہاج العابدین	امام محمد بن احمد غزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ
اتحاف السادۃ المتقین	علامہ مرتضی زبیدی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ
سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذہبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دارالفکربیروت
وفیات الاعیان	ابوالعباس شمس الدین احمد بن محمد خلکان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ
صفۃ الصفوۃ	امام ابوالفرج ابن جوزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ
المنتظم	امام ابوالفرج ابن جوزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ
روض الریاحین	ابوالسعادات عبداللہ بن اسعد یافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیہ
طبقات الصوفیہ	ابوعبدالرحمن محمدبن حسینسلمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۱۲ھ	دارالکتب العلمیہ
الروض الفائق فی المواعظ و الرقائق	مبلغ اسلام الشیخ شعیب بن سعد عبدالکافی حریفیش رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۱۰ھ	داراحیاء التراث العربی
بستان المحدثین	شاہ عبدالعزیزمحدث دہلوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ھ	کراچی پاکستان
اللباب فی علوم الکتاب	امام المفسرابوحفص عمربن علی بن عادل دمشقی حنبلی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۸۰ھ	دارالکتب العلمیہ
الزواجرعن اقتراف الکبائر	شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجرہیتمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	دارالفکر بیروت
شرح اصول اعتقاد اہل السنۃ	شیخ امام علامہ حافظ ابوالقاسم ہبۃ اللہ طبری لالکائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۱۸ھ	دارالبصیرۃ اسکندریہ
الخیرات الحسان	علامہ شہاب الدین احمد بن حجرہیتمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	دارالکتب العلمیہ
جامع بیان العلم وفضلہ	امام حافظ ابن عبدالبرقرطبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ
کشف المحجوب	شیخ علی بن عثمان ہجویری المعروف داتا گنج بخش رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۸۱تا۵۰۰ھ	نوائے وقت پرنٹرلاہور پاکستان
قوت القلوب	ابو طالب محمد بن علی حارثی مکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۸۶ھ	مرکزاہل السنۃ برکات رضا
القربۃ الی رب العلمین	ابوالقاسم خلف بن عبدالملک بن مسعود بن بشکوال انصاری اندلسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۷۸ھ	المکتبۃالشاملۃ
مسالک الحنفاء	ابوالعباس احمدبن محمد قسطلانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۲۳ھ	دارالکتب العلمیہ
طبقات الشافعیۃ الکبری	علامہ تاج الدین سبکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۷۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
طبقات الحنابلۃ	قاضی ابوالحسین محمدالمعروف ابی یعلی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۲۶ھ	دارالکتب العلمیہ
حیاۃالحیوان الکبری	کمال الدین محمد بن موسی بن عیسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۰۸ھ	دارالکتب العلمیہ
سعادۃالدارین	قاضی شیخیوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	دارالکتب العلمیہ
تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دارالمعرفۃ

البحرالرائق	زین الدین بن ابراھیم نجیم مصری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۷۰ھ	کوئٹہ پاکستان
الدرالمختار	محمدامین ابن عابدین شامی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۵۲ ھ	دارالمعرفۃ بیروت
درۃ الناصحین	علامہ عثمان بن حسن بن احمدخوبوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۴۱ ھ	دارالفکربیروت
الحدیقۃ الندیۃ	امام عبدالغنی بن اسماعیل نابلسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۴۳ ھ	نوریہ رضویہ فیصل آ
الاعلام	خیرالدین زرکلی متوفّٰی ۱۳۹۶ ھ	دارابن حزم
معجم المولفین	عمررضاکحالۃ متوفّٰی ۱۴۰۸ ھ	موسۃ الرسالۃ
جامع کرامات الالیاء	علامہ محمد یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	مرکزاھل السنۃ برکات رضا ھند
تذکرۃالاولیاء	شیخ فریدالدین عطاررحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶/۶۱۶ھ	انتشارات گنجینہ تھران
تذکرۃالاولیاء (مترجم)	شیخ فریدالدین عطاررحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶/۶۱۶ھ	شبیربرادرلاھور
نفحات الانس(مترجم)	عبدالرحمن جامی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۹۸ھ	شبیربرادرلاھور
نزھۃ القاری	فقیہ اعظم ھندمفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۴۲۱ھ	فرید بک اسٹال
فتاوی رضویۃ(مخرجہ)	اعلی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضافاونڈیشن لاھور
مرآۃ المناجیح	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن
الملفوظ	اعلی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
حیات اعلحضرت	مولاناظفرالدین بہاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۸۲ھ	مکتبہ رضویہ لاھور
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ ھ	مکتبۃالمدینہ کراچی
ملفوظات اعلحضرت	مفتی اعظم ھند محمد مصطفٰے رضا خان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃالمدینہ کراچی
اخلاق الصالحین	علامہ محمد شریف محدث کوٹلوی رحمۃ اللّٰہ علیہ	مکتبۃالمدینہ کراچی
فیضان سنت	امیراھلسنت علامہ مولانا محمدالیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃالمدینہ کراچی
تذکرہ امام احمد رضا	امیراھلسنت علامہ مولانا محمدالیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃالمدینہ کراچی
سیدی قطب مدینہ	امیراھلسنت علامہ مولانا محمدالیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃالمدینہ کراچی
عاشق اکبر	امیراھلسنت علامہ مولانا محمدالیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃالمدینہ کراچی
کرامات فاروق اعظم	امیراھلسنت علامہ مولانا محمدالیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃالمدینہ کراچی

गुनाहों से नफ़रत करने का जेह्न

"दा'वते इस्लामी" के सुन्नतों की तर्बिय्यत के **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए **"मदनी इन्आमात"** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **"पाबन्दे सुन्नत"** बनने, **"गुनाहों से नफ़रत"** करने और **"ईमान की हिफ़ाज़त"** के लिये कुढ़ने का जेह्न बनेगा।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की तरफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुतालआ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह्कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़्हात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़्हात : 60)

(3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़्हात : 74)

(4) मआशी तरक़्क़ी का राज़

(हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़्हात : 41)

(5) शरीअत व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़्हात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़्हात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़्हात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह्लीलि मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़्हात : 55)

(9) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कह्ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़्हात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) (कुल सफ़्हात : 125)

(11) फ़ज़ाइले दुआ (अह्सनुल विआअ लि आदाबिदुआअ मअ़ शर्हे ज़ैलुल मुद्दआ लि अह्सनिल विआअ) (कुल सफ़्हात : 326)

शाएअ होने वाली अ़रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 132)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)

(70) उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हि़स्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)

(87) सहाबए किराम का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अत्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)

(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)

(92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)

(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त सिवुम (सुन्नते निकाह)(कुल सफ़हात : 86)

(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)

(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात :48)

(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)

(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)

(100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)

(102) मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)

(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)

(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त दुवुम (कुल सफ़हात : 48)

(105) गाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्हात : 36)

(106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्हात : 33)

(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्हात : 32)

(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त् अव्वल (कुल सफ़्हात : 49)

(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्हात : 33)

(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त् चहारूम (कुल सफ़्हात : 49)

(111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़्हात : 32)

(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्हात : 32)

(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्हात : 32)

(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़्हात : 32)

(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)

(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्हात : 32)

(117) आंखो का तारा (कुल सफ़्हात : 32)

(118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़्हात : 32)

(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़्हात : 32)

(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़्हात : 32)

(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)

(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)

(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़्हात : 32)

(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़्हात : 32)

(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़्हात : 32)

(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़्हात : 32)

(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़ह़ात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 101)
(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिषा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 32)
(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़ह़ात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़ह़ात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़ह़ात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़ह़ात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

आवाज़ बैठ जाए तो तीन इ़लाज

﴾1﴿ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर इस पानी को पी जाइये। दो तीन बार येह इ़लाज करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा हो जाएगा।

﴾2﴿ एक चमच जव शरीफ़ के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये।

﴾3﴿ ख़श्ख़ाश के छिलके और अजवाइन हम वज़्न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये। (नेकी की दा'वत, स. 601)

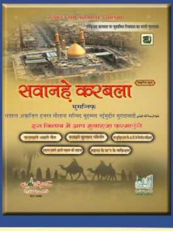

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

- ... अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
- ... मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- ... नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- ... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385
- ... हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ऑल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
- ... है़दराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, है़दराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net

MC 1286